

TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_184326

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—43—30-1-71—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **SI81-48**

Accession No. **P. G. S244C**

Author **SG2W/**
शिवसहाय

Title **वैदान्तसमाधाय 1838**

This book should be returned on or before the date last marked below.

॥ श्रीः ॥

पं० शिवसहायकृत-

वेदान्त रामायण ।

भाषाटीका सहित ।

Post Graduate Library
of Arts & Commerce 4985-

जिसको

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष 'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापेखानेमें

मेनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये

छापकर प्रकाशित किया.

शके १८३८ संवत् १९७३.

कल्याण-मुंबई.

सब हक यन्त्राधिकारीने अपने आधीन रखे हैं.

श्रीः ।

वेदान्तरामायण रचनेका कारण ।

वेदांतार्थानि गूढानि शीघ्रं सर्वैर्न ज्ञायते ॥

अतः सर्वार्थमाहृत्य जीवानां मोक्षहेतवे ॥ १ ॥

भाषा—वेदान्तका अर्थ बहुत कठिन है सब जीवोंसे जल्दी नहीं मालूम होवेगा जो जीव अनेक जन्मसे अभ्यास किया होगा उसको तो किंचित् मालूम भी पड़ेगा. औरको कुछ नहीं मालूम पड़ेगा. इस कारणसे सब ग्रंथोंका अर्थ लेके अपनी बुद्धिमाफिक मोक्ष होनेवास्ते ॥ १ ॥

रचितोऽयं मया ग्रंथो रामरावणकारणात् ॥

टीकाज्ञानार्णवीयुक्तः सर्वस्मान् मुक्तिदायकः ॥ २ ॥

भाषा—राम रावणके कारणसे यह ग्रंथको मैंने बनाया है और ज्ञानार्णवी टीकासे युक्त है इससे यह ग्रन्थ सब मनुष्योंको मुक्ति देनेवाला है ॥ २ ॥

अथ मया स्वकुलप्रस्तावः क्रियते ।

श्रीब्रह्मसरश्च्युतोत्तरतटे ये सन्ति वै ब्राह्मणास्तेषां पादरजोभि-
गाहनरतं मेऽभूत्कुलं निर्मलम् ॥ औपाध्यायमितीरितं क्षितितले
तस्मिन्प्रजातो बुधो टीकाराम इति प्रवृद्धिविभवस्तस्यात्मजो
बुद्धिमान् ॥ १ ॥

भाषा—बहुत सुंदर मानससरोवरसे निकसी जो सरयू नदी तिसके उत्तर-
देशमें जो द्विज बसते हैं जिन्हेंको देशभाषामें सरवरिया ब्राह्मण कहते हैं उन
सबकी चरणरजकी सेवामें निपुण मेरा कुल होता भया भूमितलमें मेरे कुलको
उपाध्याय कहते हैं तिस उपाध्यायकुलमें बड़े पंडित और बड़ा है ऐश्वर्य
जिन्हेंका ऐसे टीकारामजी जन्मते भये तिनके पुत्र बड़े बुद्धिमान् ॥ १ ॥

इच्छारामेति विख्यातो बुधस्तस्यात्मजः सुधीः ॥

हीरारामेति मतिमान् बुधश्चैव तदात्मजः ॥ २ ॥

भाषा—इच्छारामजी पंडित ऐसे नामसे विख्यात भये तिसके पुत्र सुंदर है बुद्धि जिन्होंकी बड़े ऐश्वर्यमान् पं० हीरारामजी भये तिनके पुत्र ॥ २ ॥

विश्वरामश्च तस्यासन्सुता निर्मलचेतसः ॥

शिवनारायणश्रेष्ठस्ततश्चाहं ममानुजः ॥

श्रीदत्तश्च त्रयाणां नो षट् पुत्राः पितृवल्लभाः ॥ ३ ॥

भाषा—पं० विश्वराम भये उनके तीन पुत्र भये बड़े पं० शिवनारायणजी तिन्होंका किंकर छोटा भाई मैं हूं मेरा छोटा भाई श्रीदत्त है मेरे तीन भाइयोंके छः पुत्र हैं कैसे पुत्र हैं पिताके प्यारे हैं ॥ ३ ॥

या लक्ष्मणस्य नगरी तत्पूर्वं सुलतापुरम् ॥

तस्य दक्षिणदिग्भागे क्रोशे युग्ममिते मम ॥

वासग्रामेति विमलो लोदीपुरमितीरितम् ॥ ४ ॥

भाषा—लक्ष्मणकी नगरी जिसको लखनौ कहते हैं तिसके पूर्व तरफ सुलता-पुर है तिसके दक्षिणदिशामें दो कोसपर मेरा वास करनेवाला ग्राम है उसका लोदीपुर नाम है ॥ ४ ॥

इति मम कुलप्रस्तावः ।



श्रीः ।

अथ वेदान्तरामायण प्रारम्भः ।

श्रीचंद्रशेखरं नमः ।

सन्नम्य विश्वेशतनुं स्वमानसे सुखाकरं ज्ञानविवेकसत्तरुम् ॥

कामादिवैश्वानरशुद्धवारिदं वेदान्तरामायणमादिशास्त्रजम् ॥ १ ॥

भाषा—निर्विघ्नपूर्वक ग्रंथकी समाप्ति होनेवास्ते ग्रन्थकार आदिमें जगदीश्वरको नमस्काररूप मंगल करता है. शिवसहाय पंडित मैं जो हों सो वेदान्तरामायणको करता हूं क्या करके जगत्के ईश भगवान्की मूर्तिको अपने मनमें नमस्कार करके कैसा वेदान्तरामायण है मोक्षरूप सुखको करनेवाला ज्ञान विवेकके दुःखको नाश करनेमें कल्पवृक्ष है काम क्रोध लोभ आदि जो अग्नि है तिसको बुझानेवास्ते सुन्दर मेघ है आदिशास्त्र जो महासांख्य तिससे उत्पन्न है ॥ १ ॥

कुर्वे जगच्चेतनकारकं प्रभुं शुद्धं सदानन्दमयं निरंजनम् ॥

यदीहया विश्वमिदं चराधरं प्रफुल्लितं वारिकर्णोर्मिचंचलम् ॥ २ ॥

भाषा—जडरूप संसारकूं चेतन करनेवाले प्रभुको इंद्रियके रोगोंसे शुद्धको नित्य आनंदरूपको प्रयंचरहितको नमस्कार करके वेदान्तरामायण करताहूं जिस भगवान्की छायासे यह संसार प्रफुल्लित होरहा है कैसा संसार है जलबिंदुकी लहरि सरीखा चंचल है ॥ २ ॥

तं वै नमस्कृत्य विभुं निजाश्रयं सच्चित्समानन्दमयं गुणारणिम् ॥

गता न चायान्ति पुनर्भवं नरा यत्तत्स्वरूपं पतितावतारकम् ॥ ३ ॥

भाषा—बहुत शोभायमान अपने आधीन जीव देह दोनोंको संभाल करनेमें आनंदरूप रजोगुण तमोगुण सत्वगुणको जलाने वास्ते अग्निस्वरूप ऐसे भगवान्को नमस्कार करिके वेदान्तरामायणको करता हूं जिस प्रभुके रूपको प्राप्त हुआ जो जीव सो संसारको कभी नहीं आता कैसा रूप है पतितजीवोंको उद्धार करनेवाला ॥ ३ ॥

निर्द्वन्द्वमत्यद्भुतमुज्ज्वलं शुभं वेदाद्यगम्यं मुनियोगिभिर्नुतम् ॥

स्वेच्छारमन्तं तनुभावनिर्गमं स्वानन्दतुष्टं समवारिधिं हरिम् ॥ ४ ॥

भाषा—सुखदुःखसे हीन बहुत अद्भुत असंख्य सूर्यसे दीप्तिमान् शुभरूप चारिहू वेदोंसे नहीं प्राप्त होनेयोग्य मुनि योगी जनोंसे नमस्कार योग्य अपना इच्छामें रमित देहके लक्षणसे रहित अपने आनंदमें संतोष समको समुद्र जन्म-बाधा हरनेवाला ऐसे भगवान्को नमस्कार करके वेदान्तरामायण करताहूं ॥४॥

विद्रांच्छिवसहायोऽहं सच्चिदानन्दमद्वयम् ॥

निराकारं निराधारं निरुपाधिं निराश्रयम् ॥ ५ ॥

भाषा—जीवदेहको चैतन्यरूप आनंद देनेवाले आकारसे रहित आधारसे वर्जित संसारके प्रपंचसे हीन आशासे हीन ऐसे भगवान्को नमस्कार है ॥ ५ ॥

पञ्चभिः कुलकम् । इतिहासपुराणानां वेदवेदान्तयोरपि ॥

सर्वशास्त्रमतं गृह्य कुर्वेऽहमिदमुत्तमम् ॥ ६ ॥

भाषा—इतिहासको पुराणको वेदको वेदान्तको सब शास्त्रको मत ग्रहण करिके यह वेदान्तरामायणको मैं करता हूं ॥ ६ ॥

वेदान्तरामायणमेतदुज्ज्वलं संसारतापापहमद्भुतं शिवम् ॥

प्रयान्ति यच्छ्रुत्य मुमुक्षवः पदं तद्यत्स्वयंज्योतिमकल्मषं शुभम् ॥ ७ ॥

भाषा—कैसा वेदान्तरामायण है बहुत शोभित संसारके तापको नाश करनेवाला अद्भुत है कल्याणको वृद्धि करता है जिस वेदान्तरामायणको मुनिके संसारसे मोक्षकी इच्छा करनेवाले जो जीव हैं सो उस स्वरूपमें मिलेंगे कि जो स्वरूप आपसे प्रकाश होताहै सब पापोंसे रहित है शुभ है ॥ ७ ॥

गत्वा न चायान्ति कदापि योगिनो यद्वचनशून्यं गहनं सुदुस्तरम् ॥

अनेकजन्मार्जितचिन्तनापरैस्तदप्यगम्यं मुनिर्वृंदसन्नुतम् ॥ ८ ॥

भाषा—कैसा स्वरूप है कि ध्यानमें नहीं आसक्ता बहुत जन्मसे एकठा किया जो विचार जिसमें चतुर जो प्राणी तिनसेभी नहीं प्राप्त होने योग्य बहुत मुनियों करके नमस्कार किया है ऐसे स्वरूपको गये हुए योगी जन हैं सो संसारमें कभी नहीं आवेंगे ॥ ८ ॥

पुनर्भवं मोहजलाभिपूरितं तृष्णोर्मिणा चंचलमूहयान्वितम् ॥

वितर्कयुक्तं बहुमानगर्वितं प्रचंडमायार्णवदुस्तरं घनम् ॥ ९ ॥

भाषा—कैसा संसार है मोहरूप जलसे भरा है तृष्णाकी लहरि करके चला-
यमान है तर्क वितर्कसे युक्त है बहुत अभिमान अहंकार करि रहा है बड़ी
जबर्दस्त मायाके प्रभाव समुद्र करिके दुःखसे पार जाने जोग्य है बड़ा
कठिन है ॥ ९ ॥

ब्रह्मावर्त्ते सुरम्ये विधिकृतविभवे ब्रह्मयज्ञो बभूव

तत्राणुर्भूमिसंस्था वितलतलगता नाकलोकाश्रिताद्याः ॥

ब्रह्मर्ष्याद्या मुनीशाः सुरपतिसहितास्सुज्ञदेवर्षयो वै

राजर्षीशा रमेशो विधिपवनभुजौ पार्वतीप्राणलग्नः ॥ १० ॥

भाषा—बहुत रमणीय ब्रह्मकी बनाये ऐश्वर्य संयुक्त ऐसे ब्रह्मावर्त क्षेत्रमें
सत्संगियोंने ब्रह्म निरूपण यज्ञ करते हुए तिस यज्ञमें तीन लोक चौदह भुवनके
बसनेवाला जो ब्रह्मऋषि मुनीश बड़े बड़े जो ज्ञानी देवर्षि राजर्षि इंद्र आदि
देवतासहित भगवान् विधि शेष महादेव ये सब आते हुए ॥ १० ॥

एते चान्ये समायाता बहवो धर्म्मलिप्सवः ॥

पूजिता दानमानाभ्यां सत्कृता ब्रह्मतत्परैः ॥ ११ ॥

भाषा—इन सबसे औरभी बहुत धर्मके ग्रहण करनेवाले सज्जन आते हुए
ब्रह्मके जाननेवाले मुनियोंने दान मान आदरसे सबका पूजन किया ॥ ११ ॥

ब्रह्मविज्ञानकुशलाः सर्वे भूपाः समाययुः ॥

आजगाम महाबुद्धिर्विदेहो मिथिलापतिः ॥ १२ ॥

भाषा—जो भूमितलमें ब्रह्मके जाननेवाले राजा हैं सो भी सब आते हुए
बड़े बुद्धिमान् जनकभी आये कैसे जनक हैं देहके अभिमानसे रहित हैं ॥ १२ ॥

यथायोग्यं स्थितास्तत्र समाजे ब्रह्मनिर्मिते ॥

परस्परं कथाश्चक्रुर्विविधा धर्मतत्पराः ॥ १३ ॥

भाषा—ब्रह्मज्ञानसे बनाई हुई समाजमें यथायोग्य सब बैठते हुए अपने
अपने धर्ममें तत्पर होकरके बहुत प्रकारकी कथा करने लगे ॥ १३ ॥

पौराणिकाः पुराणज्ञा वैदिका वेदपाठिनः ॥

धार्मिका धर्मशास्त्रज्ञा वेदान्तज्ञाः सदुद्भवाः ॥ १४ ॥

भाषा—पुराणी लोगोंने पुराणकी कथा वेदपाठी वेदकी कथा धर्मशास्त्रवाले धर्मशास्त्रकी कथा वेदान्तवाले सत्ज्ञानसे उत्पन्न कथा इस प्रकारसे सब कथा करते हुए ॥ १४ ॥

एवं समेधमाने तु महानन्दे सुविस्तरे ॥

मुनिः पप्रच्छ सम्बर्तो वरतन्तुं महामतिम् ॥ १५ ॥

भाषा—इस प्रकारसे बड़े आनंदकी वृद्धि होरही है, बहुत प्रकारसे ऐसी समयमें संवर्त नाथ मुनि जो हैं सो बड़ी है बुद्धि जिनकी सो वरतंतु मुनिसे पूछते हुए ॥ १५ ॥

संवर्त उवाच ।

को रावणोऽतिप्रबलोऽसिहन्ता कः कुम्भकर्णो मदपानमत्तः ॥

किं तन्मदं यस्तु सङ्कल्पपत्त्वा भवन्ति मत्ताः खलु ज्ञानवार्जिताः ॥ १६ ॥

भाषा—संवर्त मुनि बोलावे भये हे गुरुमहाराज ! बड़े बलवान वैरीको नाश करनेवाला रावण कौन है, मदको पीके रातदिन मत्त रहना ऐसा कुम्भकर्ण कौन है, जिस मदको एकदके पीकर दैत्यलोक निश्चय करके ज्ञानसे रहित और मत्त होजाते हैं, सो मद क्या है ? सो कहो ॥ १६ ॥

विभीषणः कश्च सुरेशजेता का कैकसी कश्च मुनिर्मरीचिः ॥

को वै पुलस्त्यः समचित्तवर्ती को विश्रवा विश्वसमैकदृष्टिः ॥

खरादयः के च प्रचंडवीर्याः का सूर्पविशा भुवनत्रयश्च किम् ॥ १७ ॥

भाषा—विभीषण क्या है, इंद्रजित क्या है, कैकसी क्या है, मरीचमुनि कौन है, सुखदुःखमें बरोबर चित्त जिनको ऐसे पुलस्त्य मुनि कौन हैं, संसारमें भगवान्‌को रूप देखनेवाले विश्रवा मुनि कौन हैं, खर आदि करके संसारमें जितने राक्षस हैं सो कौन हैं, शूर्पणखा क्या है, तीन भुवन क्या हैं ॥ १७ ॥

मन्दोदरी रावणवल्लभा च का चान्याः प्रियाश्चैव दशाननस्य काः ॥

किन्तिच्छिरो यद्दशसंख्ययान्वितम्भुजाश्च के विंशमितास्तु तस्य वै १८

भाषा—रावणकी प्यारी मंदोदरी क्या है, और जो बहुत रावणकी स्त्री हैं सो क्या है, रावणके दश मस्तक क्या हैं, रावणके बीस हाथ क्या हैं ॥ १८ ॥

लंका च का तत्परिखा च सिन्धुः कः को विरंचिर्वरदानदाता ॥

कावस्त्रशस्त्रौ विविधौ रथं किं के वाजिनो ह्युत्तमर्गदभाश्च के ॥ १९ ॥

भाषा—लंका क्या है लंकाकी खाई क्या है समुद्र कौन है रावणको वरदान देनेवाला ब्रह्मा कौन है, रावणके बहुत प्रकारके अस्त्र शस्त्र क्या है रावणके रथ घोड़े खच्चर ये सब क्या हैं ॥ १९ ॥

शक्तिश्च का किं सुमनोविमानं को वै कुबेरो जननी च तस्य का ॥

कः शंकरो यस्य करोति सेवनं दशाननः कानि मुखानि तस्य वै ॥ २० ॥

भाषा—रावणकी सांग जिससे लक्ष्मणकूं मारा सो क्या है पुष्पकविमान क्या है, कुबेरकी माता क्या है, कुबेर क्या है, शंकर क्या है, जिनका रावण नित्य सेवन करता है, रावणके दस मुख क्या हैं ॥ २० ॥

कः सारथिर्वाजिविचालनं च किं किं वाजिरंहोतिरजश्च किम्मुने ॥

कौ द्वौ रथाङ्गौ रथकूबरं च किं किं रश्मिबद्धं गमनाथयश्च किम् ॥ २१ ॥

भाषा—रावणका सारथी घोड़ोंको हांकनेवाला, चाबुक, घोड़ोंकी दौड़ और धूलि हे सुनिराज ! ये सब क्या हैं, रथके दो पैया रथमें बैठनेकी जगह रथकूं बांधनेकी रस्सी, रथकूं चलाना ये सब क्या हैं ॥ २१ ॥

के रावणस्यैव सुतास्सुतानां तत्पुत्रपौत्रा गणना न येषाम् ॥

एषां स्त्रियः का भुवनत्रयार्द्रकाः द्वयोरथान्ये भुवि राक्षसाश्च के ॥ २२ ॥

भाषा—रावणके लडका लडकोंका लडका तिनोंके पोता पड़पोता आदि जिनोंकी गिनती नहीं है ये सब क्या हैं. इन सबोंकी स्त्रियें क्या हैं कुंभकर्णकी स्त्री पुत्र क्या हैं और सब राक्षस जो रावणके कुलमें थे इनकी स्त्री पुत्र क्या हैं ॥ २२ ॥

किमामिषं तद्गुधिरं च तेषां का वारुणी तद्यजनञ्च किं मुने ॥

तेषां गुरुर्वै भृगुनन्दनश्च को निकुंभिला का हवनस्थलं च किम् ॥२३॥

भाषा—राक्षसोंका भोजन मांस रुधिर क्या है, मदिरा क्या है, रावणका यज्ञ क्या है राक्षसोंके गुरु शुक्राचार्य कौन हैं, निकुंभिला देवी कौन है, होमका स्थान क्या है ॥ २३ ॥

कः पावको हव्यविलक्षणाश्च के कौ दारुमंत्रौ विजयं च किम्मुने ॥

दासीश्वरी का त्रिजटा च वाटिका काशोकवृक्षैः परिवारिता च या २४ ॥

भाषा—अग्नि होमकी सामग्री क्या है, लकड़ी, मंत्र, क्या हैं, रावणकी विजय क्या है, दासियोंमें मालिक त्रिजटा क्या है, अशोक नाम बगीचा अशोक वृक्षोंसहित क्या है ॥ २४ ॥

सर्वाणि चान्यानि च यानि तेषां द्रव्याणि मे प्रश्नविवर्जितानि ॥

वदस्व चित्तम्मम कौतुकाकुल श्रुत्वा पुराणानि मुनीश तानि च ॥२५॥

भाषा—हे मुनिजी ! जो मैं पूछा हूँ और मेरे पूछनेसे बाकी जो प्रश्न रह्या होवे रावणादि राक्षसोंकी वार्ता सो विस्तार करके कहो हे गुरु ! पुराणोंमें रावणका चरित्र सुनके मेरा चित्त घबराय रहा है ॥ २५ ॥

इति श्रीवेदांतरामायणे बालकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे
रावणविभूतिप्रश्ने प्रथमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ १ ॥

संवर्त उवाच ।

के वेदशस्त्रावलिसंहितादयो ये पीडिता विंशतिबाहुनानिशम् ॥

के ब्राह्मणा ब्रह्मविदां वरिष्ठ गावश्च का वेद मखं च किम्मुने ॥ १ ॥

भाषा—संवर्त मुनि फेर पूछते हैं हे मुनिजी ! वेद, शास्त्र, पुराण संहिता बहुतसे बहुत कौन हैं कि जिनकूँ बारंवार रावण दुःख देता था हे मुनिजी ! ब्रह्मज्ञानियोंमें आप बड़े हो गो ब्राह्मण वेद यज्ञ क्या है जिनको रावण नाश करता था ॥ १ ॥

के ते पुराणा हरिकीर्तिवर्धना ये नष्टभावं गमिता निवारिताः ॥

दशानने नातिप्रचंडतेजसा भूमिश्च का के सुरसत्तमाश्च ये ॥ २ ॥

भाषा—भगवान्की कीर्ति बढ़ानेवाले पुराण क्या हैं. जिन्हेंको बड़ा तेजमान रावणने नाशको प्राप्त करदिया और भूमिदेवता क्या हैं जिन्हेंको रावणने बहुत दुःख दिया ॥ २ ॥

गंगादयः काः सरितो मुनीश विष्णुश्च को ब्रह्मसुतो वसिष्ठः ॥

पुरी त्वयोध्या रविवंशरक्षिता का सा च के तत्कुलसंभवा नृपाः ॥ ३ ॥

भाषा—हे सुनिराज ! गंगा आदि लेके नदी, विष्णु ब्रह्माको पुत्र वसिष्ठ सूर्य-वंशी राजों करके रक्षित अयोध्यापुरी और सूर्यवंशमें जन्मे जो राजा ये सब कौन हैं ॥ ३ ॥

कश्चाजसूनुर्वहुकामुको नृपः का कौशला का मगधेशनन्दिनी ॥

का कैकयी कश्च विभांडकात्मजो यज्ञश्च कः को हुतमुद्गुनीश ॥ ४ ॥

भाषा—अजराजाको पुत्र बड़ा कामी राजा दशरथ क्या है और कौसल्या सुमित्रा कैकयी और स्त्री दशरथकी क्या हैं और शृंगीकृषि तथा यज्ञकी अग्नि कौन हैं ॥ ४ ॥

कौ दारुमन्त्रौ हवनस्य द्रव्याः के यज्ञकुण्डं किमु पावकार्चिः ॥

किं पावकेनापि नृपाय दत्तन्तद्रक्षणं दोहदलक्षणञ्च किम् ॥ ५ ॥

भाषा—यज्ञकी लकड़ी, मंत्र होम सामग्री यज्ञको कुंड अग्निज्वाला ये सब क्या हैं दशरथको अग्निमें प्रसन्न होके क्या वस्तु दिया उस वस्तुको भक्षण रानियोंने किया सो क्या है और गर्भका लक्षण क्या है ॥ ५ ॥

का सा प्रसूतिस्सुखदायिनी या को रामचन्द्रः खलु लक्ष्मणश्च कः ॥

कौ भ्रातरौ द्वौ शुभलक्षणान्वितौ शत्रुघ्नकैकेयिसुतौ सुनिर्मलौ ॥ ६ ॥

भाषा—जो सुखको देनेवाला जन्म उत्सव क्या है रामचंद्र अरु लक्ष्मण क्या हैं सुंदर लक्षणयुक्त मलसे रहित दोभाई शत्रुघ्न और कैकयीका पुत्र भरत ये दोनो कौन हैं ॥ ६ ॥

रामस्य किं क्रीडनकौतुकम्मुने कश्चेतप्रासादखगोऽजिरं च किम् ॥

का धूलिराशिः सरयूस रित्का कौ तीरतोयौ पुरवासिनश्च के ॥ ७ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! दशरथराजाकी सफेद महल आकाशको मानो छूने चाहती है सो क्या है और रामके बालपनेका खेल तमासा क्या है और धूलिकी समूह सरयनदी तथा तटजल पुरवासी प्रजा ये सब क्या हैं ॥ ७ ॥

किं रामचन्द्रस्य धनुश्च खड्गं के वै शराः काविषुधी सुपूर्ण ॥

तद्वत्सुमित्रातनयस्य सर्वं किं शस्त्रवृन्दं वद तन्मुने मम ॥ ८ ॥

भाषा—राम लक्ष्मणका धनुषबाण तरकस खड्ग और अस्त्र क्या है मुनिजी कहो ॥ ८ ॥

संस्कारश्रेष्ठा मुनिना कृताश्च मुनिश्च को गाधिसुतो महामतिः ॥

तस्यापि को यज्ञसमुत्सवो मुने का ताडका यज्ञविनाशकारिणी ॥ ९ ॥

भाषा—वसिष्ठजीने राजाके पुत्रोंका संस्कार क्या किया और गाधिपुत्र बड़े बुद्धिमान् विश्वामित्र कौन हैं विश्वामित्रकी यज्ञका उत्सव क्या है और यज्ञकी नाश करनेवाली ताडका क्या है ॥ ९ ॥

कौ राक्षसौ द्वावतिदुर्मती मुने सुबाहुमारीचसमाख्यसंयुतौ ॥

विद्या च सा का मुनिना प्रदत्ता या रामचंद्राय प्रसन्नचेतसा ॥ १० ॥

भाषा—हे मुनिजी ! सुबाहु मारीच बड़े दुष्टमति कौन हैं विश्वामित्र मुनि प्रसन्न चित्तसे रामचंद्रको विद्या क्या दिया ॥ १० ॥

को गौतमः का गृहिणी च तस्य वै नाम्नाप्यहल्या सुरनायकश्च कः ॥

को जारिणीजारसमुद्रवो रसो किन्तद्रजो येन विनिर्गता च सा ॥ ११ ॥

भाषा—गौतम मुनि अरु उनकी स्त्री जिसका अहल्या नाम ये दोनों कौन है इन्द्र कौन है जारसे उत्पन्न भया जो रस सो क्या है वो धूलि क्या है, जिसके छुएसे अहल्या तर गई ॥ ११ ॥

का सा शिला यन्मिलिता च कामिनी को मैथिलेशो नगरी च तस्य का ॥

स्वयंवरं किं नृवराश्च के ते का जानकी तद्धनुरुत्तमश्च किम् ॥ १२ ॥

भाषा—जिस शिलामें अहल्या मिल गई थी वो शिला क्या है जनक राजा कौन है जनककी नगरी क्या है स्वयंवर क्या है जो राजा स्वयंवरमें आये थे वो सब कौन हैं और जानकी क्या है जो धनुषकी पण जनकने किया सो धनुष क्या है ॥ १२ ॥

किं त्रोटनन्तद्धनुषो मुनीन्द्र भो को भार्गवस्तद्धनुरोपणञ्च किम् ॥

को वै विवाहो जनतासमागमं गजाश्वसेनादिसुखासनञ्च किम् ॥ १३ ॥

भाषा—हे मुनीन्द्रजी ! धनुष तोड़ना क्या है, परशुरामजी कौन हैं, परशुराम-जीका धनुष रोपण क्या है और हाथी घोडा पालकी फौज इत्यादि बरात आई सो क्या है ॥ १३ ॥

काश्चोर्मिलाद्यास्तनुजा विदेहयोर्द्वयोः सुकेत्वोर्जनकस्य चोर्मिला ॥

विवाहितारामसहोदराणां कास्ताश्शुभानन्दक्षमास्सुलोचनाः ॥ १४ ॥

भाषा—जनक सुकेतु ये दोनों विदेहोंकी उर्मिला आदि कन्या क्या हैं जो रामके भाइयोंको भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न इनके संग विवाह भया ये कौन है शुभ आनन्द क्षमायुक्त ॥ १४ ॥

मुनीन्द्र को रामसहोदराणां विदेहजानां च विवाहकौतुकः ॥

रामस्य चैवम्पृथिवीसुताया विवाहहर्षोत्सवमंगलं च किम् ॥ १५ ॥

भाषा—हे मुनि ! रामके भाइयों समेत विवाहका तमासा क्या है तथा रामजीके विवाहमें हर्ष उत्सव मंगल भया सो क्या है ॥ १५ ॥

कानि प्रदत्तानि सुताविवाहे राज्ञा विदेहेन विचक्षणेन ॥

किं वै प्रयाणं च क्षितीश्वरस्य संगृह्यपुत्राञ्छुभकन्यकाभिः ॥ १६ ॥

भाषा—कन्याविवाहमें जनकने दायज दिया सो क्या है, पुत्रसहित तथा जो शुभ पुत्रोंकी स्त्री तिनकूं ग्रहण करके दशरथने प्रयाण किया सो क्या है ॥ १६ ॥

ससैन्ययुक्तस्य नृपोत्तमस्य पुनस्स्वभाय्यैस्समुतैस्सुखान्वितैः ॥

मुनीश्वरैः किं गमनं स्वपुर्याश्चोत्कण्ठभावो मिथिलाधिपस्य कः ॥ १७ ॥

भाषा—फेर विवाहसे बिदा होके सेनासहित राजोंमें उत्तम जो दशरथ सो अपनी अपनी स्त्रियोंसहित पुत्रोंको सुखयुक्त मुनीश्वर सहित पुरी अयोध्याको आये सो क्या है और जनक विह्वल हुए सो क्या है ॥ १७ ॥

कः सौख्यवासो रघुनन्दनस्य राज्ञो विचारश्च पटाभिषेकः ॥

का मन्थरा तद्विपरीतचारिणी कलंकभावं च विचक्षणश्च किम् ॥ १८ ॥

भाषा—अयोध्यामें रामचंद्र सुखसे रहे सो क्या है, दशरथको विचार तथा राज्य देना ये दोनों क्या हैं, रामके राज्यमें विघ्न करनेवाली मन्थरा क्या है, कैकेयीको सिखाया ऐसा कलंक क्या है ॥ १८ ॥

का क्रूरबुद्धिर्भतरस्य मातुर्विलापसिन्धुर्नृपतेर्मुने कः ॥

आज्ञा च का भूपतिसम्प्रदत्ता किं काननं कश्च रथो हयाश्च के ॥ १९ ॥

भाषा—भरतकी माताकी खोटी बुद्धि क्या है, दशरथको दुःखसमुद्र सरीके क्या है, दशरथने रामचंद्रको क्या आज्ञा दिया वन जानेकी जिस वनकूं रामचंद्रजी गये वह वन क्या है रामचंद्रके रथ घोडा क्या हैं ॥ १९ ॥

को वै सुमंतो रुदनं च किं मुने रथस्य द्रव्याणि च कानि रंहः ॥

एतत्समाब्रूहि द्विजेन्द्र निश्चितं का वै सरिद्या तमसेति शब्दिता ॥ २० ॥

भाषा—हे मुनि! सुमंत सारथी कौन है, रामजीको वन जाते देखके रुदन हुआ सो क्या है, रथकी सामग्री क्या है, रथका वेग क्या है, हे मुनिजी! यह संपूर्ण वार्ता निश्चय करिके कहो तमसा नदी क्या है ॥ २० ॥

तत्तीरवासो रघुनन्दनस्य को हयाशनं किम्पुरवासिनश्च के ॥

का तत्र निद्रा पुरवासिनाश्च किं रामवाक्यं भ्रमणं रथस्य ॥ २१ ॥

भाषा—तमसाके तीर रामचन्द्र बसेथे सो क्या है, घोडोंको क्या चारा खिलाया, पुरवासी कौन हैं पुरवासियोंके निद्रा आई सो क्या है, रामकी वाक्य क्या है, रथभ्रमण किया सो क्या है ॥ २१ ॥

भ्रान्त्वा पुनस्तद्भ्रमनं च किम्मुने निवर्तनं किम्पुरवासिनाम्पुनः ॥

पुरीं समागम्य विलापकारणं किं वेद दिग्वर्षकृतम्प्रमाणकम् ॥ २२ ॥

भाषा—रथके भ्रमण करके रामजी चलेगये सो क्या है पुरवासीलोग पीछे अयोध्यामें आये सो क्या है पुरवासी लोग अयोध्यामें आके विलाप किया सो क्या है और रामजीको वनवास चौदहवर्ष प्रमाण किया सो क्या है ॥ २२ ॥

वनेचरः को रघुवीरमित्रः किं शृंगवेरं द्विज शिशिपश्च कः ॥

किमासनं दर्भविनिर्मितम्मुने के ते कुशाः का च गुहस्य भावना २३ ॥

भाषा—हे ब्राह्मणजी ! वनमें भ्रमण करनेवाले रामजीका मित्र क्या है, शृंगवेरपुर शिशिपा वृक्ष क्या है, गुहने रामजीको कुशका आसन बना दिया सो क्या है कुश क्या है, गुहकी भक्ति क्या है ॥ २३ ॥

तिरस्कृतं यत्खलु लक्ष्मणेन वै किम्भूषणम्भूमिनिपातितं तथा ॥

के भूषणा वस्त्रसमन्विता मुने त्यक्ताश्च ये राघवसूनुना वै ॥ २४ ॥

भाषा—जो गहना लक्ष्मणेने अनादर करिके पृथिवीमें रखदिया सो क्या है, वो वस्त्र गहना क्या है जिसकूं दशरथके पुत्र रामजीने त्याग दिया ॥ २४ ॥

का सा जटायान्निबन्ध रामः का जाह्नवी पातकपुंजहारिणी ॥

कः स्वप्नभावो रघुनन्दनस्य वा विदेहजायास्सहितस्य भो मुने ॥ २५ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! वो जटा क्या है जिसको रामजीने शिरपर बांधी बहुत पाप नाश करनेवाली गंगाजी क्या है, जानकीसाहित रामजी सोये सो क्या है ॥ २५ ॥

संवादसंजागरणौ द्वयोः कौ बभूवतुर्लक्ष्मणराममित्रयोः ॥

श्रीजाह्नवीतोयतटोर्मयः के का नौर्गुहस्यैव च वंशयष्टिः ॥ २६ ॥

भाषा—लक्ष्मण तथा रामजीका मित्र गुह ये दोनों रातको जागे तथा वार्ता किया सो क्या है गङ्गाजीके तीर, जल और लहर क्या है नाव क्या है गुहकी बांस क्या है खेवनेवाले क्या है ॥ २६ ॥

किं तारणं किञ्च प्रयागकाननं का सा त्रिवेणी यमुना सरस्वती ॥

एकत्र संगं मिलिता प्रयागे या लोकलोकैः सततं विसेव्यते ॥ २७ ॥

भाषा—रामचंद्रको गृह गंगाके पार ले गया सो क्या है, प्रयागजीका वन क्या है, यमुना सरस्वती गंगा प्रयागमें इकट्ठा भई जिनकूं सब लोक सेवन नित्य-प्रति करतेहैं सो त्रिवेणी क्या है ॥ २७ ॥

वटश्च को यः प्रलयेऽपि नाशं न याति कश्चिन्मुनिवर्य मे श्रुतम् ॥

मुने भरद्वाजमुनिश्च को वै संसेवितो येन विदेहजापतिः ॥ २८ ॥

भाषा—हे मुनिश्रेष्ठ ! मैंने ऐसा सुना है कि प्रयागमें एक वटका वृक्ष है उसका नाश प्रलयमेंभी नहीं होता वह वट क्या है, भरद्वाज मुनि कौन हैं जिन्होंने जानकीपतिका पूजन किया ॥ २८ ॥

प्रीत्या स्वयं लक्ष्मणजानकीभ्यां युतोऽतिप्रेम्णा मुनिभिस्समाहितः ॥

को वै मुने स्नानविधिस्त्रिवेण्या कृतस्त्रिभी रामप्रियासहोदरैः ॥ २९ ॥

भाषा—प्रीतिसे अपने हाथसे प्रेम करके आदरसे मुनियोंको संग लेके लक्ष्मण जानकी सहित रामजीको पूजन किया त्रिवेणीमें जानकी लक्ष्मणसहित रामचंद्रने स्नान किया सो स्नानकी विधि क्या है ॥ २९ ॥

वाल्मीकिनाम्नेति मुनिर्महामतिर्भविष्यवक्ता मुनिसत्तमश्च कः ॥

मंदाकिनी का सरितां वरा मुने कश्चित्रकूटो मुनयश्च के ते ॥ ३० ॥

भाषा—अगाडी होनेवाली बात कहनेवाले बड़े बुद्धिमान् मुनियोंमें श्रेष्ठ ऐसे वाल्मीकि मुनि कौन हैं, नदियोंमें बड़ी मंदाकिनी नदी चित्रकूट पर्वत क्या है मुनिलोग कौन हैं ॥ ३० ॥

वनेचराः के रघुनन्दनप्रियाः कौ तौ कुटीरौ वसतिश्च तत्र का ॥

किन्तत्र सौख्यं रघुनन्दनेन प्राप्तं प्रियाभ्रातृसमन्वितेन ॥ ३१ ॥

भाषा—जो मुनि रामजीके बड़े प्यारे वनमें विचरते हैं रामचंद्र लक्ष्मणकी दो पर्णकुटी बनी सो क्या हैं, इन दोनोंकी बात क्या है. लक्ष्मण जानकीसहित चित्रकूटपर वास करनेसे क्या सुख प्राप्त हुआ ॥ ३१ ॥

युनस्सुमन्तागमनञ्च किम्प्रभो पुरीमयोध्यां सरयूसमन्विताम् ॥

मृते नृपे कः प्रमदाविलापः के दूतवर्या मुनिना सुप्रेरिताः ॥ ३२ ॥

भाषा—हे प्रभुजी ! रामजीको बिदा करिके सुमंत अयोध्यापुरीको आये सो क्या है, कैसी अयोध्या है सरयू नदी पास बहती है दशरथके मरण हुए पर स्त्रियोंने रुदन किया सो क्या है, वसिष्ठजीने दूत भेजा सो दूत क्या है ॥ ३२ ॥

सद्योगताः केकयपत्तनं किं कः केकयेशो वचनं किमूचुः ॥

द्रुतं गृहीत्वा भरतं सहानुजं तौ द्वौ च कौ राजपुरीम्प्रयातौ ॥ ३३ ॥

भाषा—दूत शीघ्रही कश्मीरको गए सो कश्मीरनगर क्या है, कश्मीरका राजा कौन है, राजासे दूत क्या बोले, जलदीसे भरत शत्रुघ्नको लेके अयोध्यामें आये सो भरत शत्रुघ्न कौन हैं ॥ ३३ ॥

आश्वासितौ द्वौ मुनिना प्रचक्रतुर्विरोदनं किञ्च किमाश्वसाशनम् ॥

किमूचतुः कोशलनन्दिनीम्प्रति बिभर्त्सयामास किमुत्स्वमातरम् ३४ ॥

भाषा—वसिष्ठजीसे भरत शत्रुघ्ने विश्वास पायके रोते भए सो क्या है, वसिष्ठजीने विश्वास दिया सो क्या है, भरत शत्रुघ्न कौशल्यासे क्या बोले और अपनी जो माता कैकेयी उसको त्रास दिया सो क्या है ॥ ३४ ॥

किं च प्रयाणं भरतेन वै कृतं ससैन्यमात्रानुजबांधवैस्सह ॥

गुह्येन संवादनिवासनौ च कौ स्वसैन्यविश्वासनमेव किम्मुने ॥

सुखेन गंगोत्तरणं किमद्भुतं प्रयागराजे मुनिसादरं च किम् ॥ ३५ ॥

भाषा—माता गुरु कुटुंब सेनासहित भरत रामके पास चले सो क्या है, गुह्यके संग भरतका संवाद हुवा तथा गुहने भरतको डेरा दिया और अपनी सब सेनाको विश्वास दिया सुखसे गंगाके पार भये प्रयागमें भरद्वाज मुनिने सेनासहित भरतकी मिहमानी किया ये सब क्या हैं ॥ ३५ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे बालकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतंतुसंवादे भर-
तागमने भरद्वाजाश्रमनिवासो नाम द्वितीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ २ ॥

संवर्त उवाच ॥

किं चित्रकूटे च समागमम्मुने परस्परं किं वचनं च तेषाम् ॥

के पादुके पादतलावरक्षिते श्रीरामदत्ते भरताय निर्मले ॥ १ ॥

भाषा—संवर्त मुनि पूँछते भये हे मुनिजी ! चित्रकूटपर सब मंडलीको मिलाप राम आदि लेके भरत वसिष्ठ और जो आये थे जिन्होंने आपुसमें बोले सो क्या हैं, रामजीने अपनी पादुका भरतकूँ दिया सो क्या हैं कैसी पादुका हैं पगकी रक्षा करनेवाली परम सुंदर हैं ॥ १ ॥

ये धृत्वा शिरसा प्रेम्णा ससैन्योगुरुणा सह ॥

शत्रुघ्नेन युतश्शीघ्रं पुनरायात्पुरीम्प्रति ॥ २ ॥

भाषा—जो पादुका भरतने प्रेमसे अपने शिरपर धरके वसिष्ठ शत्रुघ्न फौज संग लेके फिर अयोध्या पुरीको आये सो क्या है ॥ २ ॥

भरतस्य च का सेना यामादायागतः पुनः ॥

नन्दिग्रामञ्च किम्प्रोक्तं पादुकासेवनं च किम् ॥ ३ ॥

भाषा—रामजीके पाससे फौज संग लेके भरतजी फिर अयोध्यामें आये सो फौज क्या है, नन्दिग्राम क्या है, पादुका सेवन भरतने किया सो क्या है ॥ ३ ॥

किमयोध्यापुरीराज्यं चकार भरतस्सुधीः ॥

किम्प्रजारक्षणं विप्र किं मृगाहरणं गिरौ ॥ ४ ॥

भाषा—बड़े बुद्धिमान् भरत अयोध्याका राज किया सो क्या है, हे मुनिजी ! भरतने प्रजाकी रक्षा किया सो क्या है ॥ ४ ॥

रामेण लक्ष्मणेनैव चित्रकूटे कृतम्मुने ॥

किं जयन्तापराधं च जानकीचरणार्दनम् ॥ ५ ॥

भाषा—राम लक्ष्मण दोनों चित्रकूटपर नित्य मृग मारते रहे सो क्या है, जानकीके पगमें जयन्तनाम कागने चोंच मारा सो क्या है ॥ ५ ॥

रामेण त्यक्तः को बाण किमेकाक्षिनिपातनम् ॥

किं जयंतस्य भ्रमणं राक्षसागमनं च किम् ॥ ६ ॥

भाषा—रामजीने जयन्तको मारनेके वास्ते बाण छोड़ा सो क्या है, जयंतकी एक आंख काणी कर दिया सो क्या है, काकने सब लोकोंमें फिरता फिरा सो क्या है, चित्रकूटपर बहुत राक्षस आनेको लगे सो क्या है ॥ ६ ॥

उद्वेगश्च मुनीनां को येन तत्याज राघवः ॥

चित्रकूटस्य किं त्यागः कोऽत्रिस्तस्याश्रमं च किम् ॥ ७ ॥

भाषा—मुनि लोगोंको दुःख भया सो क्या है, जिस दुःखसे चित्रकूटकूं रामजी त्यागते भये सो क्या है; अत्रिमुनि कौन हैं, अत्रिका आश्रम क्या है ॥ ७ ॥

अनसूया च का देवी जानकी शिक्षिता यया ॥

पूजनं रामचंद्रस्य किमत्रिः कृतवान्मुने ॥ ८ ॥

भाषा—अत्रिकी स्त्री अनुसूयादेवी जिन्होंने जानकीको पतिव्रता धर्म सिखाया सो क्या है, रामजीका पूजन अत्रिमुनिने किया सो क्या है ॥ ८ ॥

को विराधो महाक्रूरो जानकी येन संहता ॥

शीघ्रं जघान यं रामो बाणैर्देहविकृन्तनैः ॥ ९ ॥

भाषा—विराध नाम राक्षस कौन है, जो जानकीको हर लेगया जिसको रामजीने शीघ्र बाणोंसे शरीर काटके मार डाला ॥ ९ ॥

मोक्षं प्राप तदा रक्षशश्चरभङ्गो मुनिश्च कः ॥

किन्ध्यानं स्तवनं का च चिता तस्य स्वमाश्रमे ॥ १० ॥

भाषा—तब राक्षस मोक्षकूं गया सो क्या है, शरभंग मुनिने रामजीका ध्यान स्तुति करके अपने घरपर चिता बनायके स्वर्गको गया सो कौन है ॥ १० ॥

कोऽग्निर्देदाह तं यस्तु कस्सुतीक्ष्णो महामुनिः ।

तेन संभाषणं किञ्च कः कुंभजसहोदरः ॥ ११ ॥

भाषा—शरभंगको जो अग्निने जलाया सो अग्नि क्या है सुतीक्ष्णमुनि कौन हैं सुतीक्ष्ण रामजीका संवाद भया सो क्या है, अगस्त्य मुनिके भाई क्या हैं ॥ ११ ॥

कोऽगस्त्यः का च तत्पत्नी लोपामुद्रा मुनीश्वर ॥

किं रामागस्त्यसंवादं धनुर्देन्द्रं च किम्मुने ॥ १२ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! अगस्त्य मुनि कौन हैं, अगस्त्यकी स्त्री लोपामुद्रा

जिसका नाम सो कौन है, हे मुनिजी ! रामजीको और अगस्त्य मुनिको संवाद हुवा सो क्या है इंद्रका धनुष क्या है ॥ १२ ॥

प्राप्तं रामेण तत्रैव सरिद्रोदावरी च का ॥

के तत्तीरजले शुभ्रे कुटीरौ कौ च द्वौ तयोः ॥ १३ ॥

भाषा—जो धनुष रामजीको अगस्त्य मुनिने दिया सो क्या है गोदावरी नदी क्या है, गोदावरीका तट जल क्या है, रामचंद्र लक्ष्मणकी दो पर्णकुटी ये क्या हैं ॥ १३ ॥

ज्ञानस्य का कथा तत्र रामचन्द्रेण वर्णिता ॥

लक्ष्मणं प्रति भो देव सुखेन वसताऽनिशम् ॥ १४ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! सुखसमेत ठहरे जो राम हैं सो बारंवार लक्ष्मणकूं ज्ञानकथा कही सो क्या है ॥ १४ ॥

दुःखिता केन कामेन रावणस्य सहोदरा ॥

आगता स्वपतिं कर्तुं श्रीरामं रतिवल्लभा ॥ १५ ॥

भाषा—रावणकी बहिनी रतिकूं प्यारी मानिके रामचंद्रको अपना पति बनानेके वास्ते कामसे दुःखित होके आई सो काम क्या है ॥ १५ ॥

रामेण भ्रामिता तत्र सा ययौ लक्ष्मणान्तिकम् ॥

का भ्रमिस्तस्य रामेण कृता तस्यातिहास्यतः ॥ १६ ॥

भाषा—रामजीके वचनकूं मानके लक्ष्मणके पास गई तिस राक्षसीके संग हास्य करके इधर उधर भ्रमाते भये सो क्या है ॥ १६ ॥

तस्याः के नासिकाकर्णे ये च्छिन्ने लक्ष्मणेन वै ॥

किं तद्गुधिरवृन्दं च रक्तांगी येन संकृता ॥ १७ ॥

भाषा—शूर्पणखाके नाक कान लक्ष्मणने काट लिये सो नाक कान क्या हैं, बहुत रक्त आया जिस रक्तसे शूर्पणखाकी देह लाल होगई ॥ १७ ॥

तरसा गमनं तेषां किन्तयोक्तम्बचश्च किम् ॥

हृता रामेण ते सर्वे ससैन्या राघवेण वै ॥ १८ ॥

भाषा—खर दूषण त्रिशिरा इन्होंकूं शूर्पणखा क्या वचन कहती भई राक्षस-
लोग बहुत जलदी रामजीसे युद्ध करनेको आये सो क्या है, सेनासहित राम-
जीने सब राक्षसोंका नाश किया सो क्या है ॥ १८ ॥

भयाद्यां जानकी प्राप्ता सा गुहा का मुनीश्वर ।

सहोदर्या सभां गत्वा रावणस्य च सन्निधौ ॥

यच्चोक्तं वचनं किन्तद्यच्छ्रुत्वा राक्षसोत्तमः ॥ १९ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! भयसे रामजीने जानकीको गुहामें भेजी सो गुहा क्या
है, रावणकी बहिनीने रावणकी सभामें जाय रावणके सामने खड़ी होके जो
वचन बोली सो क्या है, तिस वचनकूं सुनके राक्षसोंमें उत्तम जो रावण है ॥ १९ ॥

कः कामो मोहितो येन मारीचान्तिकमाययौ ॥

कः संवादो द्वयोस्तत्र को मृगो यस्य रूपधृक् ॥ २० ॥

भाषा—तुरंत कामसे मोहित हुवा सो काम क्या है मारीचके सामने रावण
गया सो मारीच रावणसंवाद क्या है, और मारीचने मृगको रूप धारण किया
सो मृग क्या है ॥ २० ॥

किं विचित्रमृगतनौ चंचला का गतिर्मुने ॥

को मोहो रामचन्द्रस्य वैदेहीलोभनं च किम् ॥ २१ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! मृगके शरीरपर चित्रविचित्र क्या रहा, मृगका बहुत
आगना क्या है मृगको देखके रामजी मोहित भये सो मोह कौन है और
जानकीको लोभ हुवा सो क्या है ॥ २१ ॥

निवारणं च सौमित्रेः रामचन्द्रस्य किम्मुने ॥

हतो रामेण तेनोक्तं किं लक्ष्मण इतीरितम् ॥ २२ ॥

भाषा—रामचंद्रको लक्ष्मणने मना किया मत जावो ये मृग नहीं राक्षस है सो
क्या है, रामजीने मारीचको मारया सो जमीनमें पडते बखत मारीचने हा
लक्ष्मण ! ऐसा बोला सो क्या है ॥ २२ ॥

जानकीलक्ष्मणस्यैव किं विवादं च निष्ठुरम् ॥

सौमित्रौ विगते दूरे किं धृतं रावणेन वै ॥ २३ ॥

भाषा—जानकी लक्ष्मणका बहुत विवाद हुआ सो क्या है, लक्ष्मणको दूर गया जानके रावणने रूप धारण किया सो क्या है ॥ २३ ॥

परिव्राजकवेषं च किं तत्साहित्यमंडलम् ॥

वैदेह्या कानि दत्तानि कंदमूलानि साधवे ॥ २४ ॥

भाषा—संन्यासीको भेष रावण बनायके जानकीके पास आया गेरूका कपड़ा विभूति कमंडलु आदि और जो संन्यासीलोग धारण करते हैं सो रावणने क्या धारण किया जानकीने साधु जानके कंद मूल फल दिया सो क्या है ॥ २४ ॥

संवादः क्रूरवचसा कस्तत्र मुनिसत्तम ॥

जानकी स्वरथे स्थाप्य गन्तुकामस्स्वपत्तनम् ॥ २५ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! जानकीको खोटी बात रावणने कही रावणकूं खोटी बात जानकीने कही सो क्या है, जानकीको रावणने अपने रथपर बैठायेके लंकाको ले चला सो क्या है ॥ २५ ॥

को गृद्धस्तस्य को तुंडौ पक्षौ च रावणार्दितौ ॥

पातितो रावणेनैव जानकीं हृत्य संगतः ॥ २६ ॥

भाषा—जिस गृद्धके पक्ष चोंचको रावणने काटके जमीनमें गिरा दिया जानकीको लेके लंकाकूं गया सो गीध कौन है ॥ २६ ॥

का दास्यस्तस्य दुष्टस्य यासाम्मध्ये च जानकी ॥

स्थापिता रक्षणं तत्र किं कृतं राक्षसीगणैः ॥ २७ ॥

भाषा—रावणदुष्टकी दासी क्या हैं, जिन दासियोंके बीच जानकीको बैठाया राक्षसियोंने जानकीकी क्या रक्षा किया ॥ २७ ॥

जानकीहरणं दृष्ट्वा रामलक्ष्मणयोरपि ॥

को विलापो मुनिश्रेष्ठ गृद्धसन्तारणं च किम् ॥ २८ ॥

भाषा—हे मुनिराज ! जानकीको हरी देखके राम लक्ष्मणने विलाप किया तथा गीधको संसारसे तारते भये सो क्या है ॥ २८ ॥

कः कबंधो भुजौ तस्य यौ रामेण निपातितौ ॥

का चिता तस्य को दाहः कबंधवचनं च किम् ॥ २९ ॥

भाषा—कबंध नाम राक्षस कौन है, कबंधकी भुजा क्या है, जिस भुजाकूं रामजी काटते भए और कबंधको जलाने वास्ते रामजीने चिता बनाया सो क्या है कबंधने रामजीसे वचन बोला सो क्या है ॥ २९ ॥

येनोक्तो रामचन्द्रस्तु तत्क्षणे शबरीङ्गन्तः ॥

का सा मुनिवरश्रेष्ठ यार्चित्वा रघुनन्दनम् ॥

कथित्वा कपिसद्भावं कां गतिम्प्रापिता सती ॥ ३० ॥

भाषा—जिस वचनकूं मानके रामजी उसी समय शबरीके पास गये हे मुनिजी ! सो शबरी क्या है, जो शबरी रामजीको पूजन करिके तथा रामजीको कहा आप सुग्रीवकूं मिलोगे तो सब काम हो जायगा ऐसा कहिके किस लोककूं गई ॥ ३० ॥

का पंपा नलिनीश्रेष्ठा कस्सरश्च तदुद्भवः ॥

का किष्किन्धा पुरी ख्याता के ते वै कपयस्स्मृताः ॥ ३१ ॥

भाषा—तलाइयोंमें बड़ी जो पंपानाम तलाई सो क्या है, उसी पंपा तलाईसे निकला जो पंपानाम तलाव सो क्या है, किष्किन्धा पुरी क्या है, जो कपियोंने रामजीकी सहायता किया ये सब बंदर कौन हैं सो निश्चय करके कहो ॥ ३१ ॥

को वालिः कश्च सुग्रीवो जाम्बवान् हनुमांस्तथा ।

नलनीलादयः सर्वेऽप्यंगदाद्याः कपीश्वराः ॥ ३२ ॥

भाषा—वाली सुग्रीव, जाम्बवान्, हनुमान्, नल, नील अंगद आदि बड़े बड़े बलवान् बंदर ये सब कौन हैं ॥ ३२ ॥

तारारुमे च के ख्याते दुन्दुभिः कश्च राक्षसः ॥

का सा गुहा दुन्दुभेश्च सुग्रीवो यत्र संस्थितः ॥ ३३ ॥

भाषा—तारा रुमा ये दोनों कौन हैं, दुंदुभी नाम राक्षस कौन है, दुंदुभीकी गुफा क्या है, जिसके दरवज्जेपर सुग्रीव खड़ा रहा ॥ ३३ ॥

को मासश्च कपेर्वासः किं मृतज्ञानमेव च ॥

का राज्यप्राप्तिस्सुग्रीवे किं सुखं प्रापितश्च तत् ॥ ३४ ॥

भाषा—एक महीना सुग्रीव गुफाके द्वारपर खड़ा रहा सो महीना क्या है, बालि मरगया ऐसा सुग्रीवने जाना सो क्या है, सुग्रीवको राज मिला तिसका सुख भया सो क्या है ॥ ३४ ॥

को दुन्दुभिवधश्चैव वालिनिर्यापणं च किम् ॥

सुग्रीवस्य प्रवासं च कृतं तद्वालिना च किम् ॥ ३५ ॥

भाषा—दुंदुभीको बालीने मारा मारके अपने घरकूँ आया ये दोनों क्या हैं, सुग्रीवको बालीने घरसे निकाल दिया सो क्या है ॥ ३५ ॥

किं सुग्रीवस्य भ्रमणं को मातंगो मुनिस्तथा ॥

किं शिरो वालिनाक्षितं सरक्तं मुनिमंडले ॥ ३६ ॥

भाषा—सब देश सुग्रीव फिरा सो क्या है, मातंगमुनि कौन हैं, मुनिकी पर्ण-कूटीके सामने बालीने रक्तसहित राक्षसका शिर फेंका वो शिर क्या है ॥ ३६ ॥

को रक्तो रंजितं येन मुनेराश्रममण्डलम् ॥

कः शापो मुनिना दत्तो भूधरः कः प्रवर्षणः ॥ ३७ ॥

भाषा—जिस रक्तसे मुनिकी पर्णकुटी भ्रष्ट हुई सो रक्त क्या है मुनिने बालीको शाप दिया सो क्या है, प्रवर्षण नाम पर्वत सो क्या है ॥ ३७ ॥

सुग्रीवक्य च को वासो गिरौ मंत्रिगणैः सह ॥

रामचन्द्रमिलापः को भूषणं वसनं च किम् ॥ ३८ ॥

भाषा—प्रवर्षण ऊपर सुग्रीव बसते थे सो वास क्या है, राम सुग्रीवकी मित्रता हुई सो क्या है, गहना वस्त्र क्या हैं ॥ ३८ ॥

त्यक्तं मैथिलराजस्य कन्यया किं प्रदर्शितम् ॥

का प्रतिज्ञा वालिवधे रामचन्द्रेण वै कृता ॥ ३९ ॥

भाषा—जो जानकीने सुग्रीवकूं देखके गहना वस्त्र त्याग दिया वह गहना वस्त्र सुग्रीवने रामजीको दिखाया सो क्या है, वालीको मारनेवास्ते रामजीने प्रण किया सो क्या है ॥ ३९ ॥

जानकीशोधने चैव कपिना का कृता मुने ॥

के सप्ततालाः किं शुष्कं दुन्दुभेः शिर एव च ॥ ४० ॥

भाषा—हे मुनिजी ! जानकीके शोधनेवास्ते सुग्रीवने प्रण किया सो क्या है, सात तालके वृक्ष तथा दुंदुभीका सूखा शिर क्या है ॥ ४० ॥

किमंगुष्ठं किमदृश्यं यमाश्रित्य रघूत्तमः ॥

जघान कपिराजं वै द्वंद्वयुद्धकरं शठम् ॥ ४१ ॥

भाषा—रघुवंशमें श्रेष्ठ रामजीने जिस अंगूठेसे दुंदुभीके शिरको उठायके दूर फेंक दिया सो अंगूठा क्या है जिस वृक्षकी आड़में होकर रामजीने दोके संग युद्ध करनेवाला शठ ऐसे वालीको मार डाला वो वृक्ष कौन है ॥ ४१ ॥

का पुष्पमाला तत्रासीत् चिह्नितो विहतो यया ॥

तारांगदविलापः कः का वालिदहनक्रिया ॥ ४२ ॥

भाषा—जिस फूलकी माला सुग्रीवको पहराया पिछानके वास्ते फिर रामजीने युद्ध करनेकूं भेजा सो माला क्या है तारा अंगदको विलाप तथा वालिकी दाह-क्रिया क्या है ॥ ४२ ॥

सुग्रीवराज्यप्राप्तिः का तस्य किम्मदवर्द्धनम् ॥

रामस्य गिरिवासः को लक्ष्मणेन युतस्य च ॥ ४३ ॥

भाषा—सुग्रीवको राज मिला सो क्या है, राज मिलनेसे अभिमान भया सो क्या है, रामजी लक्ष्मणसहित पर्वतपर बसे सो क्या है ॥ ४३ ॥

के चत्वारो गता मासा वार्षिकाः सुमनोहराः ॥

विलापो रामचन्द्रस्य पुनः को जानकीकृते ॥ ४४ ॥

भाषा—सुंदर मनको हरण करनेयोग्य ऐसे जो चारमास वर्षा ऋतुके गये सो क्या हैं फिर जानकीके वास्ते रामचंद्रजीने विलाप किया सो क्या है ॥ ४४ ॥

सुग्रीवत्रासनं किं च लक्ष्मणेन कृतं तथा ॥

राघवान्तिकमागत्य प्रेरयामास वै कपीन् ॥ ४५ ॥

भाषा—लक्ष्मणजीने सुग्रीवको त्रास दिया सो क्या है सुग्रीवने रामजीके सामने आयके कपियोंको भेजा सो क्या है ॥ ४५ ॥

चतुर्दिक्षु महावीरान्सुग्रीवस्तच्च किम्मुने ॥

किमंगुलीयकन्दत्तं रामेण वायुजे कपौ ॥ ४६ ॥

भाषा—बड़े बली वानरोंको चारों दिशाको सुग्रीवने भेजा सो क्या है, रामजीने हनुमान्कूँ मुंदरी दिया सो क्या है ॥ ४६ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे बालकाण्डे शिवसहायबुधविरचिते सीताशोधने
तृतीयो मोक्षारख्यः सोपानः ॥ ३ ॥

संवर्त उवाच ।

कावधिर्मासिका दत्ता शोधित्वा च त्रयो दिशः ॥

अप्राप्तिं पुनराचख्युर्जानक्यास्तच्च किम्मुने ॥ १ ॥

भाषा—संवर्तमुनि फिर पूछते हैं कि सुग्रीवने सब वानरोंको एक मासका प्रमाण करके भेजा सो क्या है, कपियोंने तीन दिशा शोधके आय कहा कि जानकी नहीं मिली सो क्या है ॥ १ ॥

योगिनी का समाख्याता पातालविवरं च किम् ॥

कः सम्पातिः पक्षिराजो यद्वाक्यमनुमान्य च ॥ २ ॥

भाषा—हनुमान आदि वानरोंको योगिनी मिली सो क्या है, पातालका रस्ता देख पडा सो क्या है, संपाति गीध पक्षियोंका राजा क्या है, जिसके वचन हनुमान्जीने माने ॥ २ ॥

यदा रुरोह हनुमान्समुद्रलंघनोद्यतः ॥

सगिरिः को पदापीड्य पारं गन्तुं मनो दधे ॥ ३ ॥

भाषा—जिस परबतको हनुमान् चढते भए पगसे दाबिके समुद्रको कूदके उस पार जानेको बिचार किया सो पर्वत क्या है ॥ ३ ॥

सिंहिका का जलचरा छाया का वा हनूमतः ॥

मारिता क्रोधयुक्तेन वीरेण मुष्टिना कथम् ॥ ४ ॥

भाषा—जलमें रहनेवाली सिंहिका क्या है हनुमानकी छाया क्या है और क्रोध करके हनुमान् वीरने हाथकी मुष्टी बांधके मारा सो मुष्टी क्या है ॥ ४ ॥

सुरसा का समाख्याता द्वयोः किम्मुखवर्द्धनम् ॥

किम्प्रविश्य गतः पारं विचारं किं हनूमतः ॥ ५ ॥

भाषा—सुरसाने मुख बढ़ाया और हनुमान् जीने देह बढ़ाया सो दोनों क्या हैं, सुरसाके मुखमें बैठके हनुमान् समुद्रके पार गये सो मुख क्या है ॥ हनुमान् ने सिंधुके दक्षिण तीर बैठके विचार किया सो क्या है ॥ ५ ॥

किं धृतं लघुरूपं च का लंका मुष्टिपातनम् ॥

विलोकिता समस्ता पूर्ण दृष्टा जानकीति किम् ॥ ६ ॥

भाषा—हनुमान् ने छोटा रूप धारण किया सो क्या है, हाथकी मुष्टी बांधके लंकानाम राक्षसीको मारा सो क्या है, तमाम लंकापुरीमें हनुमान् फिरे जानकीकूं नहीं देखे सो क्या है ॥ ६ ॥

पश्चादृष्टा जनकजा किं तरुस्थेन तेन वै ॥

किमागमनवेगञ्च रावणस्य तदा मुने ॥ ७ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! पीछे वृक्षपर बैठके जानकीकूं देखे सो क्या है, तब शीघ्र रावण आया सो क्या है ॥ ७ ॥

गते दुष्टे राक्षसीभिस्तर्जनं किं कृतन्तथा ॥

त्रिजटाश्वासनञ्चक्रे जानक्याः किं तदामुने ॥ ८ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! रावण दुष्टके गये पीछे राक्षसियोंने जानकीको डरवाती भई सो क्या है त्रिजटाने जानकीकूं विश्वास दिया सो क्या है सो कहो ॥ ८ ॥

किमूचे रामचरितं हनुमान्तरुसंस्थितः ॥

तेनोक्तं वचनं श्रुत्वा विश्वासं प्राप सा च किम् ॥ ९ ॥

भाषा—वृक्षपर बैठके रामजीके चरित्रकूं हनुमान् कहने लगे तथा कपिकी वाक्य सुनके जानकीके मन विश्वास भया ये दोनों क्या हैं ॥ ९ ॥

दत्तांगुलीयं संगृह्य संवादमभवत्तयोः ॥

का सा क्षुधा ययातौऽभूद्धनुमान्कपिसत्तमः ॥ १० ॥

भाषा—रामजीकी मुंदरी हनुमान्ने जानकीको दिया जानकी लेके खुसी भई दोनों माता पुत्र बात करनेलगे सो क्या है जिस भूखसे हनुमान् दुःखी भए वह भूख क्या है ॥ १० ॥

किं फलन्तरवः के च भक्षित्वोत्पाटितास्तथा ॥

राक्षसीभिः किमुक्तश्च रावणो मानगर्वितः ॥ ११ ॥

भाषा—जो फल हनुमान्ने खाये वृक्षोंको तोड़े सो फल और वृक्ष क्या हैं. रावणको राक्षसियोंने क्या कहा ॥ ११ ॥

प्रेरयामास तनयं स्वस्याक्षं राक्षसोत्तमः ॥

हतो हनुमताक्षश्च बद्धश्चेन्द्रजिता च कः ॥ १२ ॥

भाषा—राक्षसोंमें उत्तम जो रावण है सो अपने अक्ष नाम पुत्रको भेजता हुआ तिस अक्षको हनुमान्जीने मारडाला सो क्या है इन्द्रजीतने हनुमान्के बांधा सो क्या है ॥ १२ ॥

लंकाविदाहनं किञ्च ताडनम्पुच्छबंधनम् ॥

भ्रमणं हसनं चैव किन्तैलं रज्जु किम्मुने ॥ १३ ॥

भाषा—हनुमानकी पूछ बांधते भये, सारी लंकापुरीमें फिराय हंसी किये और तैल रस्सी कपडा ये सब क्या हैं ॥ १३ ॥

कोक्तिर्दशाननस्यैव वीरस्यैव बभूव ह ॥

राक्षसीनां प्रलापं किं किम्पुच्छशीतलन्तथा ॥ १४ ॥

भाषा—रावणकी हनुमान्की बातें भई सो क्या हैं, लंका जलती देखके राक्षसियोंने विलाप किया सो क्या है, हनुमान्ने पूछ बुझायके ठंडी किया सो क्या है ॥ १४ ॥

जानक्या या मणिर्दत्ता रामविश्वासकारणे ॥

गृहीता कपिना सा का जानक्याश्वासनञ्च किम् ॥ १५ ॥

भाषा—रामजीको विश्वास होनेवास्ते हनुमान्कूं मणि जानकीने दिया सो क्या है, कपिने मणिलेके जानकीको विश्वास दिया सो क्या है ॥ १५ ॥

किम्पुनर्लघनं सिन्धोरङ्गदाश्वासनं च किम् ॥

किं तन्मधुवनं शुद्धं तैः फलं किम्प्रभक्षितम् ॥ १६ ॥

भाषा—फिर हनुमान् समुद्र कूदके पार उतर आये सो क्या है अंगदको आश्वास किया सो क्या है. सुंदर सुग्रीवके मधुवनमें प्रवेश करके कपियोंने फल खाये सो मधुवन क्या है ॥ १६ ॥

तर्जिता वनपाः के च कपीशाय निवेदनम् ॥

को हर्षः कपिराजस्य रामप्रश्नं च किम्मुने ॥ १७ ॥

भाषा—वनके रखवालोंको मारा वे सुग्रीवसे जा पुकारे सुग्रीवको हर्ष भया सुग्रीवसे रामजीने पूछा ये सब क्या हैं ॥ १७ ॥

आगत्य हनुमानूचे तस्याप्यादरभावना ॥

सेनासंयोजना का च समुद्रतटसंस्थितिः ॥ १८ ॥

भाषा—हनुमान् आयेके सब हाल रामजीसे कहे हनुमान्का आदर रामजीने क्या किया फौजको इकट्ठी करके चलते हुए सो क्या है, समुद्रके तीर सेनासहित रामजीने डेरा किया सो क्या है ॥ १८ ॥

विभीषणस्य धिक्कारः किं कृतं रावणेन वै ॥

के विभीषणमंत्रज्ञास्तैः सार्द्धं रामसन्निधिम् ॥ १९ ॥

भाषा—रावणे विभीषणको कहा कि तेरेको धिक्कार है ऐसी बानी क्या है विभीषणका मंत्री कौन है जिनोंको संग लेके रामजीके पास आये ॥ १९ ॥

आययौ कपयश्चक्रुः किन्तस्य विनिवारणम् ॥

विभीषणाय किं दत्तं राज्यं रामेण वै तदा ॥ २० ॥

भाषा—आया जब कपियोंने आने नहीं दिया सो क्या है, तब रामजीने विभीषणको राज दिया सो क्या है ॥ २० ॥

समुद्रतरणे चैव को विचारश्च तैः कृतः ॥

किं च दर्भासनन्तत्र त्रिदिनं राघवस्य ह ॥ २१ ॥

भाषा—समुद्रके पार जानेके वास्ते विचार किया सो क्या है, हे मुनिजी ! रामजीका कुश आसन क्या है ॥ २१ ॥

त्यक्ता मूलफले रामो निराहारो बभूव च ॥

किम्मूलं किम्फलं चैव किमयाचत सागरम् ॥ २२ ॥

भाषा—मूलफलको रामजीने त्यागिके निराहार रहे सो मूल फल क्या हैं, समुद्रसे रामजीने याचना किया सो क्या है ॥ २२ ॥

कः क्रोधो रामचंद्रस्य किं सागरविशोषणम् ॥

के वै जलचराः सर्वे व्यथिताः शरकर्षणे ॥ २३ ॥

भाषा—रामजीने क्रोध किया सो क्या है, समुद्रकू शोष लेनेकू मन किया सो क्या है, समुद्रशोषणे वास्ते धनुषपर बाण चढायके खैंचा तब जलजीव बहुत दुःख पाये सो क्या है ॥ २३ ॥

किं सागरधृतं रूपं ब्राह्मणस्यातिकौतुकम् ॥

का पात्री के च ते रत्नाः समानीताश्च सिन्धुना ॥ २४ ॥

भाषा—समुद्रने तमाशा सरीके ब्राह्मणका रूप धारण किया सो क्या है, सिंधु थालीमें रत्न धरिके रामजीकी विनती किया सो रत्न तथा थाली ये सब क्या हैं ॥ २४ ॥

स्तवनं किञ्चकाराशु रामचंद्रस्य सागरः ॥

कश्चोत्तरतटस्थश्च सिन्धुशत्रुर्निपातितः ॥ २५ ॥

भाषा—समुद्रने रामजीकी स्तुति किया सो क्या है, समुद्रके उत्तर तीरमें समुद्रका बैरी सो रामजीने मारा सो क्या है ॥ २५ ॥

कः सेतुः कश्च पाषाणः के चान्ये सेतुबन्धने ॥

साहित्याश्चैव रामेण दुःखितेन सुखाय च ॥ २६ ॥

भाषा—बड़े दुःखी रामजीने सुख होनेवास्ते पुल बांधते भए सो पुल क्या है, पुलकी सामग्री क्या है ॥ २६ ॥

कश्च रामेश्वरो देवः स्थापितः पूजितोनिशम् ॥

किं सैन्योत्तारणं तस्य का सेना गणना तथा ॥ २७ ॥

भाषा—रामजीने अपना कुलदेव जानके रामेश्वरजीकी स्थापन किया और बारंबार पूजन किया सो क्या है, फौजकूं समुद्रके पार जाना तथा गिनती किया सो क्या है ॥ २७ ॥

कः सुबेलो गिरिर्ब्रह्मन् सैन्यानां का स्थितिस्तथा ॥

चतुर्षु द्वारदेशेषु लंकायाश्च चतुर्दिशः ॥ २८ ॥

भाषा—हे ब्राह्मणजी ! सुबेल पर्वत और सुबेलके ऊपर फौज टिकी ये दोनों क्या हैं, लंकाके चारों तरफ तथा चारों दरवाजोंको रोका सो क्या है ॥ २८ ॥

रोधनं किम्मुने ब्रूहि कोत्तरे राघवस्थितिः ॥

किं युद्धं रावणादीनां राक्षसानां परस्परम् ॥ २९ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! चारों दरवाजोंको घेर लेते भए सो क्या हैं, उत्तर दरवाजापर रघुनंदन आप खड़े हुए सो क्या हैं, रामजीके तथा रावण आदि गिनती नहीं जिन राक्षसोंकी जिसमें परस्पर युद्ध बहुत भया सो क्या है ॥ २९ ॥

कपीनां रामचन्द्रेण प्रेरितानां मुहुर्मुहुः ॥ (?)

रामस्य लक्ष्मणस्यैव राक्षसैश्च महाहवम् ॥ ३० ॥

भाषा—रामजीकी आज्ञा पायके बानरों तथा राक्षसोंका बड़ा प्रलय युद्ध भया तथा रामलक्ष्मणसे और राक्षसोंसे बड़ा युद्ध भया सो क्या है ॥ ३० ॥

किं शिरोवर्द्धनं छिन्ने रामेण रावणस्य च ॥

का माया राक्षसेन्द्रेण संग्रामे दर्शिता मुहुः ॥ ३१ ॥

भाषा—बारंबार रामजीने रावणका शिर काटकाटके जमीनमें पट दिया और

रावणके शिर फिर दूसरे तैयार होते भए उसीतरह शिरोंकी वृद्धि. होती भई सो क्या है, युद्धमें रावणने बहुत माया दिखाई सो माया क्या है ॥ ३१ ॥

का निद्रा कुंभकर्णस्य किं वै जागरणं तथा ॥

शक्त्या विधातिते तत्र लक्ष्मणे पतिते क्षितौ ॥ ३२ ॥

भाषा—कुंभकर्णकी निद्रा क्या है, रावणने कुंभकर्णको जगाया सो क्या है, इन्द्रजीतने लक्ष्मणको शक्तिसे मारा लक्ष्मण भूमिपर पड़गये सो क्या है ॥ ३२ ॥

को रामस्य विलापश्च कपीनाञ्चैव सर्वशः ॥

कः सुषेणो गिरिद्रोणो को मार्गः कश्च तापसः ॥ ३३ ॥

भाषा—तब रामजीने और सब वानरोंने बड़ा विलाप किया सो क्या है, सुषेण तथा द्रोणपर्वत क्या है, जिसके मार्गमें राक्षस कपटमुनि होके हनुमान्को विघ्न करने वास्ते बैठा सो रास्ता और मुनि कौन हैं ॥ ३३ ॥

किं कमंडलुतोयं च दर्शितस्तेन कः शरः ॥

का छाया कपिना मृत्युं प्राप्ता का गुरुदक्षिणा ॥ ३४ ॥

भाषा—दुष्ट मुनिने हनुमान्को अपने कमंडलुका जल देने लगा सो जल तथा कमंडलु क्या है, हनुमान्ने कमंडलुका जल नहीं पिया तो दुष्टने तलाव बताया सो तलाव क्या है, हनुमान् तलावमें जल पीने लगे तो छाया हनुमान्के खाने वास्ते आई उसको हनुमान्ने मार डाला सो छाया क्या है, दुष्ट मुनिने गुरुदक्षिणा मांगी सो गुरुदक्षिणा क्या है ॥ ३४ ॥

वनस्पतेरविज्ञानः को द्रोणोत्पाटनञ्च किम् ॥

किं पुनः स्थापनं तस्य लक्ष्मणोज्जीवनन्तथा ॥ ३५ ॥

भाषा—हनुमान्ने औषधी नहीं पिछानी तो द्रोणपर्वतको मूल सहित उखाड़के सेनामें ले आये सो उखाड़ना क्या है, लक्ष्मणको चैतन्य भए पीछे पर्वतकूं उसी जगहपर रख आये सो क्या है ॥ ३५ ॥

का रात्रिः किं दिनं युद्धं नागपाशविवन्धनम् ॥

रामलक्ष्मणयोः कश्च गरुडागमनञ्च किम् ॥ ३६ ॥

भाषा—रामजीका रावणसे रातदिन युद्ध भया सो रातदिन क्या है, मेघना-
दने रामलक्ष्मणको नागपाशमें बांध लिया सो क्या है, गरुडने आयके छुड़ाये
सो क्या है ॥ ३६ ॥

स्वस्त्रियं जानकीं कर्तुं रावणश्च भृशं मुने ॥

लोभादयः के कथिता रावणेन तदन्तिके ॥ ३७ ॥

भाषा—रावणने जानकीको अपनी स्त्री बनानेके वास्ते वारंवार लोभ आदि
दिखाता भया सो क्या है ॥ ३७ ॥

को जानकीविलापश्च मासे चैकादशे मुहुः ॥

त्रिजटाश्वसनं किं वै मन्दोदर्याः शुचश्च काः ॥ ३८ ॥

भाषा—११ मास वारंवार जानकीने विलाप किया सो क्या है, जानकीको
त्रिजटने विश्वास दिया सो क्या है, मंदोदरीको शोच भया सो क्या है ॥ ३८ ॥

मेघनादादिसर्वेषु हतेषु पुत्रभ्रातृषु ॥

विलापो दशकंठस्य को बभूव मुनीश्वर ॥ ३९ ॥

भाषा—हे मुनियोंके ईश्वर ! मेघनाद आदि लेके गिनती करने योग्य, नहीं जो
रावणके पुत्र, प्रपुत्र, भाई, राक्षस इन्होंके मरे पीछे रावणने विलाप किया सो
क्या है ॥ ३९ ॥

यज्ञस्थिते दशग्रीवे को विघ्नो वानरैः कृतः ॥

रामरावणयोर्युद्धे ये चान्ये भूरिकौतुकाः ॥

के ते सर्वे यथायोग्यं वदस्व मुनिसत्तम ॥ ४० ॥

भाषा—रावणने शत्रु जीतनेके वास्ते यज्ञ करनेकूं बैठा तब वानरोंने विघ्न
किया ये दोनों क्या हैं, रामरावणके युद्धमें और जो बहुत चरित्र भया सो
क्या है हे मुनिजी ! ये सब बात यथायोग्य कहो ॥ ४० ॥

रावणे सकुटुम्बे च सामात्यपुत्रपौत्रके ॥

हृते रामेण कपिभिर्लक्ष्मणे नावशेषिते ॥ ४१ ॥

भाषा—रावणके पुत्र पौत्र भाई कुटुंब मंत्री सहित रामने मारे और जो बाकी रहे सो कपि और लक्ष्मणने मारे सो क्या हैं ॥ ४१ ॥

राक्षसीनां विलापः को लंकाराज्यं विभीषणे ॥

दत्तं किं रामचंद्रेण सैन्यानां जीवनं च किम् ॥ ४२ ॥

भाषा—राक्षसियोंका विलाप क्या है. लंकाका राज्य विभीषणकूं दिया सो क्या है, और अपनी सेना मरी पड़ी थी. उसको जियाते भये ये सब काम राम-जीने किया सो क्या है ॥ ४२ ॥

का स्तुती रामचंद्रस्य कृता सर्वैश्वराचरैः ॥

जानक्या रामचंद्रस्य को मिलापोऽतिसौख्यदः ॥ ४३ ॥

भाषा—देवोंसहित तीन लोक चौदह भुवनने रामजीकी स्तुति किया तथा बहुत सुख देनेवाला मिलाप रामचंद्र जानकीका भया सो क्या है ॥ ४३ ॥

पुष्पके च समारुह्य रामः सर्वान्कर्पीस्तथा ॥

लक्ष्मणं जानकीं चैव किं रणस्थलदर्शनम् ॥ ४४ ॥

भाषा—रामजीने पुष्पक विमानमें लक्ष्मण जानकी तथा सब वानरोंको बैठा-र्थके अयोध्याकूं चले तब ऊपरसे रणभूमि दिखाई सो क्या है ॥ ४४ ॥

यथा यातो वनं रामस्तथा च पुनरागतः ॥

भरद्वाजाश्रमे स्थित्वा हनुमत्प्रेषणं च किम् ॥ ४५ ॥

भाषा—जैसा रामजी वनकूं गये तैसेही फिर अयोध्याकूं चले भरद्वाजसुनिके आश्रममें आयके हनुमान्को भरतके पास भेजा सो क्या है ॥ ४५ ॥

हनुमान् भरतोक्तिश्च किं पुष्पकसमागमम् ॥

सर्वासां च प्रजानां वै को हर्षः पुरवासिनाम् ॥ ४६ ॥

भाषा—हनुमान् और भरतका संवाद भया सो क्या है पुष्पक विमान भर-तके सामने आया सो क्या है पुरवासियोंको बड़ा हर्ष भया सो क्या है ॥ ४६ ॥

सर्वेषां चैव भ्रातृणां किं जटाकृतनं मुने ॥

पट्टाभिषेको रामस्य सर्वेषां सुखसंस्थितिः ॥ ४७ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! सब भाइयोंने जटा उतरायके क्षौर कर्म कराया सो क्या है, रामजीको राज्य प्राप्त हुवा और सबको आनंद भया सो क्या है ॥ ४७ ॥

विसर्जनञ्च सर्वेषां कपीनां मुनिसत्तम ॥

किं राज्यं रामचंद्रस्य किं प्रजानां सुखं तथा ॥ ४८ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! रामजीने राज पायके कुछ दिन पीछे सब कपियोंको तथा विभीषणको विदा किया सो क्या है, रामजीने राज किया सब प्रजा सुखं पाई सो क्या है ॥ ४८ ॥

रामेण के कृता यज्ञा जानकीत्यागनं च किम् ॥

कौ रामपुत्रौ संजातौ को दुर्वासा मुनिः प्रभो ॥ ४९ ॥

भाषा—रामजीने यज्ञ किया तथा जानकीको त्याग दिया, रामजीके दो लडके हुए, दुर्वासासुनि आये ये सब क्या हैं ॥ ४९ ॥

वियोगो रामचंद्रस्य लक्ष्मणस्य च को मुने ॥

को भूम्या विवरो दत्तो जानकी येन संगता ॥ ५० ॥

भाषा—लक्ष्मणको रामजीसे वियोग भया सो क्या है, जानकीकी सोगन सुनके भूमिने रास्ता दिया, जिस रास्तेसे जानकी जायके ज्योतिमें मिलगई सो क्या है ॥ ५० ॥

सर्वाः प्रजास्समादाय रामः कुत्र गतः प्रभो ॥

एवं चान्यानि रामस्य रावणस्य च भो मुने ॥ ५१ ॥

भाषा—सब चराचर प्रजाको संग लेके रामजी किस स्थानकूं गये? हे मुनिजी ! सो कहो रामरावणको चरित्र मैंने पूछा सो कहो ॥ ५१ ॥

अनापृष्टानि च मया वदस्व कृपया मुने ॥

पुराणे रामचरितं श्रुतं न तर्पितं मनः ॥ ५२ ॥

भाषा—जो मैंने पूछा सो भी आप कृपा करके कहो पुराणोंमें रामचरित्र मैंने सुना परंतु मेरा मन नहीं तृप्त भया ॥ ५२ ॥

वेदान्तमार्गेण वदस्व भो मुने सर्वं चरित्रं रघुनन्दनस्य वै ॥

श्रुत्वा मनो मे बहुतापतापितं प्रयाति शान्तिञ्च यमाशुनिश्चितम् ५३ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! रामजीका सम्पूर्ण चरित्र वेदांतमार्ग करके कहो जिसको मुनके मेरा मन शीघ्रही शांतिको प्राप्त होवे कैसा मन है बहुत भ्रमरूप अग्निसे जलता है ॥ ५३ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे बालकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसं-
वादे सर्वप्रश्नो नाम चतुर्थो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ४ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

साधु साधु महाबाहो धन्यौ ते पितरौ मुने ॥

वर्द्धयन्ति तव प्रश्नाः मम मोदन्तपोधन ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतु मुनि बोले हे संवर्त मुनि तुमने ! बहुत अच्छे अच्छे प्रश्न किया तुम्हारे प्रश्नसे हमारे मनके आनंदकी वृद्धि होती है तुमारे माता पीताको धन्य है ॥ १ ॥

न रामो मानुषो विप्र दशास्यो नच राक्षसः ॥

भूर्भुवःस्वरिति ब्रह्मन् न त्रिलोकी निगद्यते ॥ २ ॥

भाषा— हे मुनि ! रामजी मनुष्य नहीं और रावण राक्षस नहीं और आकाश पाताल मृत्युलोक इनकी तीन लोकतक संज्ञा नहीं है ॥ २ ॥

अष्टादशपुराणानां षट्शास्त्राणामिदं मतम् ॥

वेदान्तानां विशेषेण सर्वलोकमिदन्तनु ॥ ३ ॥

भाषा—अठारा पुराण षट्शास्त्र और विशेष करके वेदान्तका मत यह है कि तीन लोक चौदह भुवन ये देहही है ॥ ३ ॥

वर्णयामि द्विजश्रेष्ठ तव प्रश्नविभूषिताम् ॥

माथामेतां सुदुर्गम्यामपक्वमानसैर्नरैः ॥ ४ ॥

भाषा—हे द्विजोंमें बड़े मुनि ! तुम्हारे प्रश्न करके शोभित है यह कथा

जिसकूं मैं कहता हूं कैसी है कथा जिन्नरोंके हृदय ज्ञानमें परिपक्व नहीं है उन मनुष्यों करके बहुत दुःखसे प्राप्त होने योग्य है ॥ ४ ॥

यतो भगवतश्चैतजगदुत्पद्यते मुने ॥

पाल्यते यत्प्रपद्यंते पुनश्चान्ते त्वनेकधा ॥ ५ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! जिस भगवान् ने यह संसार जो अनेक प्रकारका उत्पन्न किया तथा पालन किया और अंतमें उसी भगवान् में लीन हो जाता है ॥ ५ ॥

सच्चिदानन्दरूपस्य निर्गुणस्य जगत्पतेः ॥

जडसंजीवनानन्दकारकस्य महाप्रभोः ॥ ६ ॥

भाषा—देह जीवके आनंद करनेवाले भगवान् के रजोगुण तमोगुण सत्त्व गुण करके रहित संसार पतिको जड संसारको बहुत प्रकारसे जीवनरूप आनंद करनेवालेके महाप्रभूके ॥ ६ ॥

ध्यानगम्यस्य सततं निराधारस्य निस्तनोः ॥

निर्विकल्पस्य नित्यस्य यत्तेजोऽखिलदुर्गमम् ॥ ७ ॥

भाषा—ध्यानसे प्राप्ति होने योग्य आधारसे रहितके शरीरसे हनिके तर्क वितर्कसे वर्जितके जन्मनाशसे रहितके ऐसे भगवान् का यो तेज कैसा तेज है संसारी जीवों करिके बड़े दुःखसे प्राप्त होने योग्य है ॥ ७ ॥

तस्याण्वर्बुदभागेन विस्तृतम्भुवनत्रयम् ॥

ब्रह्मविष्णुमहेशादियुतं सर्वं चराचरम् ॥ ८ ॥

भाषा—तिस तेजके अणुके अर्बुदभागसे इस तीन भुवनका विस्तार हो रहा है अणु किसकूं कहते हैं कि जो मकानके ऊपर छप्परके छेदमेंसे सूर्यके किरण पड़ते हैं उन किरणोंके भीतर धूलकी कणिका फिरती दीखती है उस कणिकामेंसे एक कणकी अणु संज्ञा है उस अणुको अर्बुद भाग करना १०००००००००० इसमेंसे निम्नानवे क्रीड निम्नानवे लाख निम्नानवे हजार नवसें निम्नानवे निकारिकै बाकी जो रहा १ भाग तिस भागका तीन

लोक चौदह भुवन चराचरको विस्तार भया है कैसे लोक हैं ब्रह्मा विष्णु महेश इन्हेंको आदि लेके अनेक प्रकारके जीवों करके संयुक्त है ॥ ८ ॥

उत्पत्य वनसंहारे तस्येच्छा न मुनीश्वर ॥

अणोरर्बुदभागस्तु द्विधाभून्मुनिसत्तम ॥ ९ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! संसारकी उत्पत्ति रक्षा नाश करना ऐसी भगवान्की इच्छा नहीं है परंतु वो जो अणुका अर्बुद भाग है सो अपनी इच्छासे दो भाग हो गया हे मुनिजी ! ॥ ९ ॥

प्रमदापुरुषौ विप्र ताभ्यां विस्तारितं त्विदम् ॥

मुनींद्र प्रमदा यासीत्सा शक्तिर्बहुरूपिणी ॥ १० ॥

भाषा—हे विप्र ! एक भाग करके स्त्री हुई दूसरे भाग करके पुरुष भया इन दोनोंके संयोगसे यह तिन लोक चौदह भुवनका विस्तार भया है, जो स्त्री हुई सो शक्तिका रूप है ॥ १० ॥

पुरुषो भगवान्प्रोक्तो विष्णुर्नारायणो हरिः ॥

अनेकरूपो गदितो मुनिभिर्योगतत्परैः ॥ ११ ॥

भाषा—जो पुरुष भया सो भगवान् विष्णु नारायण हरि इस प्रकारके बहुत नाम विख्यात भए योगके जाननेवाले मुनियोंने अनेक रूप भगवान्के कहे हैं ॥ ११ ॥

निराकारस्य देवस्य निर्गुणस्य जगत्प्रभोः ॥

तेजसः पश्य सामर्थ्यमणोरर्बुदभागिनः ॥ १२ ॥

भाषा—आकारसे रहित, गुणसे हीन, ऐसे भगवान्के तेजके अर्बुदभागकी सामर्थ्य देखो ॥ १२ ॥

येनेदं विस्तृतं सर्वं दृश्यते सचराचरम् ॥

ज्ञानिनो ध्यानयुक्ताश्च जगच्चैतच्चराचरम् ॥ १३ ॥

भाषा—जिस अर्बुदभागके तेज करके यह चराचर संसार विस्तार भया है ज्ञानी और ध्यान करनेवाले जो जीव हैं सो ध्यान कर्के युक्त इस चराचर जगत्को ॥ १३ ॥

ध्यानयोगेन स्वस्यैव पश्यन्ति हृदयेऽनिशम् ॥

ज्ञानध्यानविहीनाश्च हृद्बाह्यमनिशं ध्रुवम् ॥ १४ ॥

भाषा—ध्यान योग करके अपने हृदयमें वारंवार देखते हैं और जो जीव ज्ञान ध्यानसे रहित हैं सो जीव निश्चय करके वारंवार हृदयके बाहिर ॥ १४ ॥

पश्यन्ति चर्मचक्षुर्भ्यां मोहसंतापतापिताः ॥

बाह्यसृष्टेः प्रभावश्चेद्वर्णयामि सविस्तरम् ॥

भविष्यति तदा ग्रंथो महान्सज्जनसौख्यदः ॥ १५ ॥

भाषा—चर्मकी आंख करके देखते हैं कैसे जीव हैं मोहरूप अग्निकी ज्वालासे जले जाते हैं. बाहिर सृष्टिके प्रभावका विस्तार जो मैं वर्णन करूँ तो सज्जन जीवोंको सुख देनेवाला ग्रंथ बहुत बड़ा होजावेगा ॥ १५ ॥

ग्रंथे महति जाते वै न दोषोऽणुर्विदृश्यते ॥

तथापि मम सामर्थ्यं वृद्धस्य नास्ति वर्णने ॥ १६ ॥

भाषा—ग्रंथ बड़ा होनेमें कुछ दोष अणुमात्र भी नहीं है बड़ा आनंद है. परंतु मैं वृद्ध होगया विस्तार वर्णन करनेकी मेरी सामर्थ्य नहीं ॥ १६ ॥

शृण्विदानीमतो विप्र चरित्रं शूरवीरयोः ॥

रामरावणयोः सम्यक्पुमुक्षूणां सदा प्रियम् ॥ १७ ॥

भाषा—हे विप्र ! इस कारणसे अब राम रावण दोनों शूरवीरोंके चरित्रको सुनो कैसा चरित्र है मोक्षजाननेवाले जीवोंको सदा प्यारा लगेगा ॥ १७ ॥

पुरुषेच्छाप्रसूतस्तु शरीरः सर्वदेहिनाम् ॥

शक्त्यानुमानितं सत्यमसत्यमचलञ्चलम् ॥ १८ ॥

भाषा—सब जीवोंके वास करनेवास्ते वह जो पहिले अणुमात्र तेज अपनी इच्छासे स्त्रीपुरुष भंया उसकी इच्छासे यह देहरूप हवेली बनी है, कैसा शरीर है रूंठी स्थिर नहीं है परंतु स्त्री जो पेस्तर भई सोई माया है तिस करके साथ हुवा जो पुरुष तिसका अंश जो जीव सो सत्य मानता है अचलकी यह मेरी देहरूपी हवेली कभी नष्ट नहीं होगी ॥ १८ ॥

पुरुषप्रकृतिसंयोगात्तर्कभूच्च भवांकुरः ॥

स पुलस्त्य इति ख्यातो वितर्कश्च तदुद्भवः ॥ १९ ॥

भाषा—पहले अपनी इच्छासे हुवे जो पुरुष, प्रकृति उन दोनोंके संयोगसे जो वीर्य है तिस वीर्यमें संसारको उत्पन्न करनेवास्ते तर्क नाम अंकुर भया तर्क उसकूं कहते हैं कि एक मिनिटमें इतना विचार करे कि जिसकी गिनती शेष शारदा भी नहीं कर शकें संसारके पहिले भया उस वास्ते तर्ककूं पुलस्त्य नाम भया और पुलस्त्यके वितर्क नाम पुत्र भया वितर्क किसकूं कहते हैं यह काम होवेगा कि नहीं होवेगा ॥ १९ ॥

समरीचिमुनिः प्रोक्तश्चोद्वेगस्तस्य संभवः ॥

सविश्रवास्समाख्यातो दुर्मतिस्तस्य गेहिनी ॥ २० ॥

भाषा—वितर्क मरीचि मुनि हैं मरीचि मुनिके उद्वेग नाम पुत्र भया उद्वेगका क्या अर्थ है एक क्षणमें जीव अनेक चीजमें जाय लगे स्थिर न रहे उसको उद्वेग कहते हैं उद्वेग नाम विश्रवा मुनि हैं दुर्मति कहे खोटे कर्मकी जो इच्छा करना सो विश्रवा मुनिकी स्त्री है ॥ २० ॥

सा कैकसी द्वितीया तु दीना वै पतिरंजिनी ॥

दीनायास्तनयो जातः कुबेरो धैर्यसंज्ञितः ॥ २१ ॥

भाषा—दुर्मतीका कैकसी नाम है दूसरी स्त्री विश्रवाकी दीनमति है दीन कहे गरीब मति है यह पतिको सुख देनेवाली है दीनमति जो विश्रवाकी स्त्री है तिसके धीरज नाम पुत्र जन्म्यो सो कुबेर है ॥ २१ ॥

विमानन्तस्य पुष्पाख्यमविकम्पनमेव च ॥

बभूवुर्दुर्मतेः पुत्रास्त्रयश्चान्ये सहस्रशः ॥ २२ ॥

भाषा—अनेक दुःख पडे परंतु अपने धर्मको नहीं छोडा ऐसी निश्चय सो पुण्यका विमान है और दुर्मति जो विश्रवाकी स्त्री तिसके तीन पुत्र भये और तो दुष्टराक्षस अनेक हैं ॥ २२ ॥

मनोतिप्रबलो जज्ञे स रावण इति स्मृतः ॥

परोपतापनं जारचौर्म्यमानरवो समम् ॥ २३ ॥

भाषा—प्रथम तो मन जन्म्या सो बडा बलवान् प्रतापी रावण भया दूसरे जीवोंकूं त्रास देना १ भगवान्की प्रीति छोडके अन्य काजमें प्रीति करना २ ईश्वरके भजनमें भंग करना ३ मानकूं बढाना ४ जीवमें भेद देखना ५ ॥ २३ ॥

पानं वैरमविश्वासं चपलं सम्भ्रमं सदा ॥

एतानि दशमूर्द्धानि मनसो रावणस्य वै ॥ २४ ॥

भाषा—खोटे काजमें सुख देखना सोई मदिरापान ६ सब जीवोंसे वैर करना ७ किसी जीवका विश्वास नहीं रखना ८ सुंदर कार्य देखके भागना ९ सब जीवको अनादर करना १० ये दश मस्तक मनरूपी रावणके हैं ॥ २४ ॥

दुःखत्यागस्सुखस्येच्छा वियोगमातुरं तथा ॥

सदा क्लेशं सदा तुष्टिः प्रमादोऽभयमेव च ॥ २५ ॥

भाषा—दुःखको त्याग १ सुख होनेकी इच्छा २ जीवोंसे वियोग मानना ३ विना विचार काज करना ४ दुःखमें क्लेश, सुखमें भी क्लेश पाना ५ असंतोष ६ प्रमाद ७ ईश्वरसे डरना नहीं ८ ॥ २५ ॥

निंदा पैशून्यमातंडं वितंडं मानमेव च ॥

छानि हानिमहामोहप्रमादं कौतुकं रतिः ॥

उन्नता बाहवश्चैमे विंशाः प्रोक्ता मुनीश्वरैः ॥ २६ ॥

भाषा—निंदा करना ९ चुगली करना १० वेदसे रहित कर्म करना ११ अपनी इच्छासे रहना दूसरेका उपदेश नहीं मानना १२ सदा ग्लानि १३ सदा हानि १४ सदा बुरे काममें प्रीति १५ प्रमत्त रहना १६ तमासामें प्रेम १७ स्त्रियोंसे प्रेम १८ किसीसे नम्र नहीं रहना १९ सब जीवोंमें अपनाकूं बडा मानना २० हे मुनिजी ! यह मनरूपी रावणकी बीस भुजा हैं ॥ २६ ॥

दुः संगस्तु द्वितीयोभूत्स कुंभश्रोत्र उच्यते ॥

त्रासस्तृतीयः संजातः प्रोक्तश्च स विभीषणः ॥ २७ ॥

भाषा—खोटे कर्मकी संगत करना सोई कैकसीका दूसरा पुत्र उसका नाम कुम्भकरण बुरेकर्मको देख बहुत डरगया सो तीसरा पुत्र उसका नाम विभीषण है ॥ २७ ॥

बभूव दुर्मतेः कन्या दुःसंगेच्छातिक्रूरिणी ॥

सा वै शूर्पणखा प्रोक्ता दुष्टकार्याः खरादयः ॥ २८ ॥

भाषा—दुर्मति नाम कैकसी जिसको लडकी भई सो खोटी संगत कर्मोंकी इच्छा उसका नाम शूर्पणखा है तीन लोकमें जितने बुरे काम हैं चोरी, जारी, जुवारी, चुगुली और जहर देना ये सब खरादिक राक्षस हैं ॥ २८ ॥

मनसस्तनयो जातो दुश्चेष्टित इतीरितः ॥

स मेघनादो विख्यातो मेघवद्गर्जते सदा ॥ २९ ॥

भाषा—बुरे काजमें प्रेम करना सोई मनरूपी रावणको पुत्र मेघनाद नाम है जैसे आकाशमें मेघ गर्जते हैं तैसा यह गर्जता है ॥ २९ ॥

दुष्टकर्मरुचिः ख्याता रावणस्य प्रिया शुभा ॥

सैव मंदोदरी चैव चैतादृश्यस्त्वनेकशः ॥

दुष्टकार्ये सदा प्रीत्या संस्थितिवैपणात्कृता ॥ ३० ॥

भाषा—बुरे काममें प्रीति सोई मनरूप रावणकी स्त्री है, उसका नाम मंदोदरी है और जो बुरे काम अनेक प्रकारके उत्तम मध्यम निकृष्ट इन कर्मोंकी अनेक प्रकारकी प्रीति सोई रावणकी मंदोदरीसरीके बहुत स्त्री हैं दुष्ट कार्यमें प्रीति करके हठसे ठहरना ॥ ३० ॥

सा लंका तत्सुखं हेम तद्धर्षो वारिधिस्मृतः ॥

हर्षे तृष्णा च परिखा दुरानन्दो विधिस्मृतः ॥ ३१ ॥

भाषा—सोई लंका पुरी है जिस लंकामें बसकर सुख मानना कि तीन लोकमें कोई ऐसा सुख नहीं सोई सोना है उसी सोनेसे लंका जडी है तिस सोनेके सुखमें हर्ष मानना सोई समुद्र है खोटे काजमें बास करना सो लंकाको सुख सोनेके

हर्षकी तृष्णा करना सोई लंकाकी चारों तरफ खाई है और बुरे काजोंमें आनंद मानना सोई ब्रह्मा है ॥ ३१ ॥

तत्सेवनं तपः प्रोक्तं वरं क्रूरनिषेवनम् ॥

मदमज्ञानरूपं च यत्पीत राक्षसैः सदा ॥ ३२ ॥

भाषा—उसी बुरे कर्मके आनंदको सेवन करना सोई रावणकी तपस्या है, खोटे कर्ममें नित्य प्रेम रखना और कभी हम मरेंगे नहीं ऐसा मानना सोई बरदान रावणने ब्रह्मासे लिया अज्ञान है सोई मदिराका रस है जिसकूं राक्षसलोग सदा पीते हैं ॥ ३२ ॥

विशेषतश्च मनसा प्रपीतं रावणेन च ॥

शरीरं सर्वजीवानामिदं चैव चराचरम् ॥ ३३ ॥

भाषा—विशेष करके उस मदको मनरूप रावण पीता है सब जीवोंका यह शरीर जो है चल देह तथा अचल देह ॥ ३३ ॥

त्रिलोकमिति विख्यातं पीडितं तेन राक्षसाः ॥

अनाचारे रथे स्थित्वा तद्धर्षवाजिसंयुते ॥ ३४ ॥

भाषा—सोई तीन लोक हैं, तिसको मनरूप रावण बहुत पीडा देता भया आचारोंसे हीन कर्म सोई रथ है तिस रथमें बैठके उसी रथकूं देखके बहुत खुशी होना सोई अनेक घोडे हैं ॥ ३४ ॥

दुराशासनदुश्चित्तदुरंजनदुरापनम् ॥

एतैश्चक्रेर्वृतो वीरो गर्दभैश्च कुकर्माभिः ॥ ३५ ॥

भाषा—सब जीवोंको दुष्ट कर्म शिखाना १ रातदिन दुष्ट कर्ममें चित्त लगाये रखना २ कोई कोई बुरे कर्मको देखने वास्ते जानके अंधे होजाते हैं उन जीवोंको दुष्ट काजके सुख सुनायके उसी सुखको अंजन उनकी आंखोंमें लगाना ३ हमेशा बुरे काज प्राप्त होनेका उपाय करना ४ ये चार पहिया हैं इन चारों पहियों करके रथ युक्त है, बुरा कर्म करना सोई खच्चर हैं तिस कर्के युक्त है ॥ ३५ ॥

कुकर्मणीच्छाशक्तिश्च मुखानि दश चेन्द्रियाः ॥

आमिषं दुष्टकार्याढ्यं रक्तं च रागवर्द्धनम् ॥ ३६ ॥

भाषा—अनेक बुरे कर्मकी इच्छा सोई रावणकी सांग है, दश इंद्रिय सोई रावणके दशमुख हैं बुरे कर्मका खजाना भरा है सोई मांस है उस खजानेमें स्नेह बढ़ाना सोई रक्त है ॥ ३६ ॥

मोक्षस्पृहो रावणस्य मनसो मुनिसत्तम ॥

स वै शिव इति ख्यातः सेवनं तद्विचिन्तनम् ॥ ३७ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! मनरूप रावणको मोक्ष होनेकी इच्छा रहती है परंतु उपाय नहीं करता सोई शिव है मोक्षकी चिंता करना कि मोक्ष अच्छी वस्तु है सोई शिवका पूजन है ॥ ३७ ॥

दुर्बुद्धिः सारथिर्ज्ञेयः कुविचारो वितोत्रिकम् ॥

हर्षवृद्धिर्वाजिवेगो मदमग्नं रजस्मृतम् ॥ ३८ ॥

भाषा—रावणकी दुष्टबुद्धि सोई रावणके रथका सारथी है खोटा विचार करना सोई घोड़ोंका हांकनेवाला चाबुक है दुष्टकर्ममें हर्षकी वृद्धि करना सोई घोड़ोंका दौडना है और मद पीके मत्त रहना सोई धूलि है ॥ ३८ ॥

दुराचारमहामोहो रथस्य कूबरं मुने है ॥

तन्मोहप्रीतिजननं रश्मिबद्धं सुदुच्छिदम् ॥

भ्रमणं दुष्टकार्येषु रथस्यागमनं मुने ॥ ३९ ॥

भाषा—बुरे कर्मके आचारमें बड़ा मोह करना सोई रथमें बैठनेकी जगा है, उसी बड़े मोहमें प्रीति उत्पन्न करना, अनेक दुःख परें तो भी उसकूं छोड़ना नहीं सोई रस्सी है तिन रस्सियोंमें रथ बंधा है उस रथकी ग्रंथिको काटना चाहै तो बड़े कष्टसे कटेगा हे मुनिजी ! आठ प्रहर चौसठ घड़ी बुरे कर्ममें फिरना सोई रथकी दौड है ॥ ३९ ॥

मनः प्रमाथी प्रबलो दशाननो विमर्दयामास सुकर्मतत्परम् ॥

चराचरं विश्वमिदं सहोदरैः सुतैः प्रपौत्रैः सह राक्षसैर्युतः ॥ ४० ॥

भाषा—पुत्र पौत्र भाई राक्षसों करके संयुक्त ऐसा जो रावण सो स्नान संध्या देवपूजन कथाश्रवण और इसी प्रकारके अनेक कार्योंमें प्रवीण जीवोंको नाश करता भया ॥ ४० ॥

इति श्रीविदान्तरामायणे बालकांडे पं० शिवसहायविरचिते मनोरावणविभूत्यु
त्कर्षे पंचमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ५ ॥

वरतन्तु उवाच ।

कामः क्रोधश्च लोभश्च मात्सर्यं वंचनौ मुने ॥

तिरस्कारः सतां चैव नैष्ठुर्यं सुखकर्मणि ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतुमुनि फिर बोले हे संवर्त मुनिजी ! काम, क्रोध, लोभ, दूसरेका सुख देखके दुःखी होना कपटसे सज्जन जीवोंका अनादर और सुंदर कार्योंमें विघ्न करना ॥ १ ॥

एतैः पुत्रैर्युतो राजा पीडयामास सन्ततम् ॥

भुवनत्रयसंयुक्तं वेदमार्गं मुहुर्मुहुः ॥ २ ॥

भाषा—ये सब आदि लेके और अनेक प्रकारके दुष्टकर्म सो रावणके पुत्र हैं इन पुत्रों करके युक्त रावण नित्यप्रति तीन लोककूं पीडा देता भया और वेदमार्गको तो विशेष करके पीडा देता भया ॥ २ ॥

कामादीनां सुखप्राप्तिः सा तेषां प्रमदा मुने ॥

पुत्रपौत्राः प्रपौत्राश्च कामादीनान्त्वनेकशः ॥ ३ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! काम आदि कर्मोंके सुखमें प्रीति सोई रावणके पुत्रोंकी स्त्री हैं और काम आदि रावणके पुत्रोंके पुत्र पौत्र प्रपौत्र गिनती करने योग्य नहीं हैं ॥ ३ ॥

तेषां वै वर्णने शक्तिः शेषस्यापि सुदुस्तरा ॥

कथं मया ते वर्ण्यते मनोरावणजाः प्रजाः ॥ ४ ॥

भाषा—मनरूप रावणके पुत्र पौत्र प्रपौत्रोंके पुत्र पुत्रोंकी तथा राक्षसोंकी

गिणती करनेमें शेषजीकी भी सामर्थ्य नहीं है, और मन रावणसे उत्पन्न परिवारोंकी गिनती मैं कैसे वर्णन कर सकूँ ॥ ४ ॥

मोहजां वारुणीर्म्पीत्वा राक्षसाः क्रोधजा गणाः ॥

दुश्चेष्टितास्त्रैर्विमदाश्छिद्युः सद्धर्मजान्सुरान् ॥ ५ ॥

भाषा—क्रोध आदि बड़े बड़े योद्धों करिके उत्पन्न हुये जो राक्षस सो मोहसे उत्पन्न हुई जो दुष्ट चेष्टारूप मदिरा सो पाके मत्त होके बुरे कर्मकी समूह सोई अस्त्र शस्त्र हैं तिस अस्त्र शस्त्र करिके वेदमें लिखा जो धर्म उस धर्म करके उत्पन्न जो यज्ञ दान तप स्नान इन आदि जो गिनतीरहित जो देवता हैं तिनको काटते भये मारते भये ॥ ५ ॥

ज्ञानविज्ञानवैराग्यसंन्यासामोक्षदायिनः ॥

त एव वेदाः कथितास्तेषां वार्ताश्च संहिताः ॥ ६ ॥

भाषा—ज्ञान विज्ञान वैराग्य संन्यास ये चार वेद हैं मोक्षके देनेवाले हैं, इन चारोंकी कथा सोई संहिता है ॥ ६ ॥

विनाशिताश्च ते सर्वे मनोरावणप्रेरितैः ॥

राक्षसैर्निर्दयैः क्रूरैः कामक्रोधादिसंभवैः ॥ ७ ॥

भाषा—इन वेदोंकी संहितोंको राक्षस नाश करते भये, कैसे राक्षस हैं मन रावणकी आज्ञाको पाये हैं. सुकर्मको नाश करनेवास्ते दयासे हीन राक्षस बड़े दुष्ट हैं काम क्रोध आदि लेके जो खोटा कर्म तिस करिके राक्षस जन्मे हैं ॥ ७ ॥

ब्रह्मणः परमेशस्य सच्चिदानन्दरूपिणः ॥

चित्तका भक्षिताः सर्वे सद्धर्मा मोक्षदा नृणाम् ॥ ८ ॥

भाषा—परब्रह्मके ब्रह्मा विष्णु महेशके ईशके जीव देह आत्माके रूपके ऐसे भगवान्‌के चिंता करनेवाले जो सुंदर धर्म जैसे आचार विचार श्रवण कीर्तन विश्वास इनकूँ आदि लेके और वेदमें लिखे हुए धर्म जीवोंकूँ मोक्ष देनेवाले हैं, सो इन धर्मोंको राक्षसोंने खोए ॥ ८ ॥

त एव ब्राह्मणाः सर्वे गावश्च सत्क्रियाः स्मृताः ॥

ताश्चैवं भक्षितास्सर्वा राक्षसैरतिहिंस्रैः ॥

नित्याभ्यासो वेदयज्ञस्तेनार्तिविविनाशितः ॥ ९ ॥

भाषा—ये सब सुंदर धर्म ब्राह्मण हैं इन धर्मोंकी क्रिया सोई गौ है इन ब्राह्मण गौवोंकोभी जीव मारनेमें बड़े चतुर जो राक्षस सो खाय लेते भये भगवान्को ध्यान नित्य करना सोई वेदकी यज्ञ है उस यज्ञकोभी राक्षसोंने नाश किया ॥ ९ ॥

पुराणपुरुषध्यानकीर्तनं श्रवणादयः ॥

स्मरणं स्मारणं चैव वन्दनं प्रीतिरंजनम् ॥ १० ॥

भाषा—भगवान्को ध्यान कीर्तन कथा-श्रवण करना आप स्मरण करना दूसरेकूं स्मरण करना, वंदना करना, भगवान्के पूजनमें प्रीति बढ़ाना ॥ १० ॥

कथनं काथनञ्चैव पूजनं शिरसा नतिः ॥

विनयं स्वामिभावश्च नमस्कारप्रदक्षिणे ॥ ११ ॥

भाषा—ईश्वरका चरित्र आप कहना, दूसरेसे कहाना, पूजन करना शिर-वायके नमस्कार करना विनय करना मैं ईश्वरका दास हूं ईश्वर मेरे स्वामी हैं ऐसा हृदयमें रखना वारंवार नमस्कार और प्रदक्षिणा करना ॥ ११ ॥

साष्टांग गद्गदावाणी रोमहर्षश्च संततम् ॥

पुराणा नाशिताश्चैते ब्रह्मसन्निधिकारकाः ॥ १२ ॥

भाषा—साष्टांग डंडवत करना गद्गदवाणी बोलना. प्रीतिसे रोम खड़े होजाना. ये अठारा पुराण हैं जीवोंको ब्रह्मके सामने ले जानेवाले हैं इनकोभी राक्षसोंने नाश किया ॥ १२ ॥

शरीरचेष्टा सा भूमिर्महती भारपीडिता ॥

करुणा गौः समाख्याता सा भूत्वा शरणा विभोः ॥

जगामैतैर्युता पृथ्वी कम्पिता च मुहुर्मुहुः ॥ १३ ॥

भाषा—सब जीवोंके देहकी प्रकृती सोई भूमि है बहुत बड़ी है सो भूमि राक्षसोंके खोटे काजरूप भार करके दुःखी होगई। सोई भूमि दयारूप जो गौ है तिसका रूप धारण करके इन देवतोंको साथ लेके भगवान्‌के शरणकूं गई ॥ १३ ॥

शरीरशुद्धयः सर्वाः स्नानादिमज्जनादयः ॥

गंगादिनद्यस्ताः प्रोक्तास्ताभिः सार्द्धं च दुःखिता ॥ १४ ॥

भाषा—देहकी जो सब शुद्धता है जैसे स्नान, मज्जन आचारयुक्त कर्म, इन आदि और जो शुद्धता है सोई गंगा आदि नदी हैं तिसको संग लेके ॥ १४ ॥

दुरानन्दो विधिश्चैव कुधर्मः सुरनायकः ॥

तेन सार्द्धं सुरैश्चैव धर्मजैः सह संगता ॥ १५ ॥

भाषा—जैसे ब्रह्मा अपनी लडकीके संग भोग करनेकी इच्छा किया इस आदि जो खोटे कर्ममें आनंद मानना सोई ब्रह्मा है औ जैसा इंद्र अपने सुख होने वास्ते अधर्म नहीं देखता ऐसा अधर्म सो इंद्र है। शास्त्रमें इन्द्रको उत्तम संज्ञा है कर्म उसका खराब है इस वास्ते अधर्मरूप इंद्र और सुंदर धर्मसें जन्म जो देवता प्रथम वर्णन है इन सबकों संग लेके भगवान्‌की शरणकूं पृथ्वी गई ॥ १५ ॥

जगाम प्रार्थितुं विष्णुं पुरुषांशसमुद्भवम् ॥

चेतनं सहसा सुप्तं चेतिन्या निजमायया ॥ १६ ॥

भाषा—भगवान्‌के अणुसे उत्पन्न जो विष्णु तिनकी प्रार्थना करनेवास्ते पृथ्वी गई कैसे भगवान्‌ हैं संसारके चेतन रूप हैं। संसारको चेतन करानेवाली जो आपकी माया तिस करिके सेवित सोते हैं ॥ १६ ॥

धमन्युद्वर्तिनी देहे प्राणिनामास्ति या शुभा ॥

तदास्ये क्षीरसदृशः सिंधुवद्विस्तृतेहृदः ॥ १७ ॥

भाषा—सब जीवोंकी देहमें एक नाडी है। उस नाडीका उद्वर्तिनी नाम है नाडी जीवकी रक्षा करनेवाली है। उस नाडीके मुखमें समुद्र सरीके लंबा चौड़ा एक कुंड है उस कुंडका आकार दूध सरीका है ॥ १७ ॥

शक्त्या विस्तारितास्तस्मिञ्छीलादिसद्गुणास्सदा ॥

हृददीप्त्या विभासन्ते गुणाः क्षीर इव प्रभो ॥

गत्वा तत्र च ते सर्वे स्तुतिञ्चक्रुश्च व्याकुलाः ॥ १८ ॥

भाषा—प्रभुकी शक्ति करके विस्तार भये जो शील आदि लेके सुंदर गुण सो सब गुण उस कुंडके ज्योति करके दूध सरिके शोभा कुंडमें दे रहे हैं उस दूधके समुद्रमें सोये जो भगवान् तिनके पास जायके सब भूमि आदि व्याकुल होरहे और भगवान्की स्तुति करते भये ॥ १८ ॥

ब्रह्मा उवाच ।

तुभ्यं नमो भगवते करुणाकराय सद्धर्मभूमिद्विजधेनुमखाव-
नाय ॥ स्वच्छाय स्वच्छानिलयाय निराश्रयाय भक्ताप्रियाय
भवदुःखविभञ्जनाय ॥ १९ ॥

भाषा—ब्रह्मा स्तुति करते भये हे भगवन् ! ऐश्वर्यरूप आपको मैं नमस्कार करता हूं जीवोंके ऊपर दया करनेवाले आप तिनकूं मैं नमस्कार करता हूं सुंदर धर्म भूमि ब्राह्मण गौ यज्ञ इन सबकी रक्षा करनेवाले तिनकूं मैं नमस्कार करता हूं शुद्धरूप आपको मैं नमस्कार करता हूं शुद्ध है स्थान आपको ऐसे रूपकूं मैं नमस्कार करता हूं आश्रयसे हीन जो आप तिनको मैं नमस्कार करता हूं भक्त आपके प्रिय हैं ऐसे स्वरूपकूं मैं नमस्कार करता हूं संसारके दुःखकूं नाश करनेवाले आपकूं मैं नमस्कार करता हूं ॥ १९ ॥

संसारतापशमनाय मनोहराय योगीन्द्रशेषमुनिमानसहंसकाय ॥

धर्मप्रियाय धरणीव्रतधारणाय देवाधिदेवपतये च नमस्करोमि ॥ २० ॥

भाषा—संसारके तापको नाश करनेवाले, मनको प्रसन्न करनेवाले बड़े योगीजन शेष मुनि इन सबको मन सोई मानस सरोवर है, तिसमें हंसरूप आप वास करते हो और धर्मके प्यारे, क्षमारूप, देवरूप और देवतोंके पतिरूप ऐसे जो आप परमात्मा उनकूं मैं नमस्कार करता हूं ॥ २० ॥

द्दीनप्रियाय शरणागतपालनाय प्रोत्फुल्लपंकजमुखाय निरंजनाय ॥

श्रीमन्महापुरुषतेजसचेष्टिताय मायानुवादरहिताय नमो नमस्ते ॥ २१ ॥

भाषा—दीन आपकूं प्रिय है, शरणागतके पालना करनेवाले कमलके पुष्प सरीखे फुल्लायमान आपका मुख बड़ा शोभित ऐसा जो ब्रह्म तिसके तेज करिके आप प्रकाशित हो, मायाके विवादसे रहित ऐसे जो आप तिनकूं मैं नमस्कार करता हूं ॥ २१ ॥

इति स्तुतो जगन्नाथो देवैर्दुःखविमूर्छितैः ॥

उवाच विहसन्देवो विपादं सान्त्वयन्निव ॥ २२ ॥

भाषा—दुःख करिके मूर्छाको प्राप्त भये जो देवता तिनों करिके स्तुति किये जो जगत्के नाथ सो तिन देवतोंके दुःखको शान्त करने वास्ते हँसके बोलते भये ॥ २२ ॥

ज्ञातं मया सुरगणाः सुनिपीडितं वै सर्वं चराचरमिदं भुवनत्रयम्भो ॥

सम्प्रेरितैश्च मनसा खलु रावणेन तेनापि राक्षसगणैः सततम्मुहुर्वै ॥ २३ ॥

भाषा—चेतन पुरुष बोले हे देवतालोगो ! यह तीन लोक चराचरका मन-रूप रावण तथा रावणकी आज्ञाकूं पाये जो राक्षस ये सब बहुत पीडा करते भये ये सब हमकूं मालूम है ॥ २३ ॥

सर्वामरं त्वया दत्तं नरवानरवर्जितम् ॥

अतोहं नररूपस्तु भविष्यामि न संशयः ॥ २४ ॥

भाषा—हे ब्रह्मा ! तुमने रावणको सबसे अमर किया किन्तु किसीके मारे नहीं मरेगा, परंतु कपि, जो किष्किंधाकांडमें वर्णन होवेंगे और मानुष जो उत्तरकांडमें वर्णन होवेंगे, इन दोनोंसे तेरी मृत्यु होगी, इस वास्ते हम मानुष अवतार धरेंगे इसमें संशय नहीं ॥ २४ ॥

चतुर्भिर्भ्रातृभिः सार्द्धं देव्या सह सुरोत्तमाः ॥

पुत्रो दशरथस्यैव साकेताधिपतेर्ध्रुवम् ॥ २५ ॥

भाषा—हे देवतालोगो ! हम चार भ्राता होकरके शक्तिसहित अयोध्याके राजा दशरथके पुत्र निश्चय करके होवेंगे ॥ २५ ॥

यूयं सर्वे भविष्यध्वं वानराः पृथिवीतले ॥

नाशयिष्याम शीघ्रं वै मनोरावणराक्षसम् ॥ २६ ॥

भाषा—और तुम सब देवता पृथ्वीमें जायके वानररूप होकर जन्मो, तुमकुं संग लेके हम मनरूप रावणको जलदी नाश करेंगे ॥ २६ ॥

इत्युक्तान्तर्दधे विष्णुर्ब्रह्माश्वास्य क्षितिं तथा ॥

देवानाज्ञाप्य प्रययौ स्वालयं कपिजन्मनि ॥ २७ ॥

भाषा—ऐसा कहिके चेतनरूप भगवान् अंतर्धान होगये और ब्रह्मा भूमिसे कहे कि अब डरो मत थोरेही दिनमें रावणका नाश होगा और देवतोंकुं ब्रह्मा बोले कि तुम सब पृथ्वीमें वानररूप धरो ऐसा समझायके ब्रह्मा अपने स्थानको गये ॥ २७ ॥

इति श्रीविदांतरामायणे बालकांडे शिवसहायबुधविरचिते
षष्ठो मोक्षाख्यः सोपाधः ॥ ६ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

अयोध्या सुमतिः प्रोक्ता सरयूः सा सुवासना ॥

निश्चलत्वतटा प्रोक्ता निर्मानजलपूरिता ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोले हे संवर्त मुनि ! सुनो जीवोंकी सुंदर मति जो है सो अयोध्यापुरी है और जीवोंकी सुंदर वासना सो सरयू नदी है सुंदर वासना कभी अपने स्वभावसे चलायमान नहीं होती सोई सरयूके दो तट हैं और सुंदर वासनाके अभिमान नहीं है सोई जल है तिस जल करिके सदा भरी रहती है ॥ १ ॥

शक्तिस्वभावजः पुत्रो वसिष्ठ इति कथ्यते ॥

आत्मप्रकाशः सविता विचाराद्याश्च तत्सुताः ॥ २ ॥

भाषा—मायाको स्वभाव सो वसिष्ठ मुनि हैं आत्माको तेज सो सूर्य है विचार आदि सुंदर स्वभाव सो सूर्यके पुत्र हैं ॥ २ ॥

विचारतनयो ब्रह्मन्नात्मज्ञानं सुनिर्मलम् ॥

स वै दशरथः प्रोक्तस्तस्यच्छाया तु कौशला ॥ ३ ॥

भाषा—विचारको पुत्र आत्माको ज्ञान है कैसा आत्मज्ञान है मलसे रहित है सो दशरथ है तिस आत्मज्ञानकी छाया कौशल्या है ॥ ३ ॥

श्रवणं मननं मौनमभ्यासस्ताद्विचिन्तनम् ॥

चेष्टनं सत्यता नित्यमविचाल्याप्रकंपनौ ॥

एते दशरथाः प्रोक्ता आत्मज्ञानस्य भूपतेः ॥ ४ ॥

भाषा—कथाश्रवण १ कथा सुनके मानना कि जो शास्त्रमें लिखा है सो सत्य है २ खोटे कर्ममें बोलना नहीं ३ भगवान् के रूप जाननेवास्ते नित्य उपाय करना ४ रूपकी चिंतना करना ५ ईश्वरके ध्यानमें आलस्य नहीं करना ६ ईश्वरके रूपको सत्य मानना ७ और सब देहके सुख झूठे मानना ८ किसी दुष्टको संग दैवयोगसे मिल जावे तो ईश्वरके ध्यानको छोड़के दूसरेका ध्यान नहीं करना ९ ईश्वरके भजनमें दुख सुख होवे सो सहि लेना १० आत्मज्ञान जो दशरथ तिसके ये दश रथ हैं ॥ ४ ॥

आत्मानस्वच्छप्रकृतिः सा सुमित्रेति कथ्यते ॥

किंचिच्छक्तौ च या प्रीतिः कैकेयी सा निगद्यते ॥

भूरिशो रुचयस्सत्सु ताश्चान्या नृपवल्लभाः ॥ ५ ॥

भाषा—आत्माकी सुंदरी प्रकृति सोई सुमित्रा है मायामें थोरी प्रीति से कैकेयी है सज्जनोंमें बहुत रुचि सो दशरथकी और स्त्रियों हैं ॥ ५ ॥

आत्मज्ञानं चिरं कालं न लेभे पुत्रजं सुखम् ॥

दुःखमाप तदा वीरे विश्वार्थमिति भार्यया ॥ ६ ॥

भाषा—आत्मज्ञान जो राजा दशरथ सो बहुत दिन बीत गये पुत्रको सुख नहीं भया तो संसारके सुख होनेवास्ते स्त्रीसहित दुःखको प्राप्त भए ॥ ६ ॥

स्वभावगुरुणा पश्चाद्रसिष्टेनैव बोधितः ॥

ऋष्यशृंगं समाहूय चेतनांशं विचिन्तनम् ॥ ७ ॥

भाषा—कुछ दिन पीछे शक्तिके स्वभावरूप जो वशिष्ठ सो दशरथके गुरु हैं सो बोले कि, हे राजा ! शृंगीऋषिको बुलायके यज्ञ करावो तुम्हारे पुत्र होवेंगे ऐसी गुरुकी आज्ञा पायके चेतनको अंश जो विचेतन सो शृंगी ऋषि हैं तिनको बुलायके ॥ ७ ॥

ध्यानयज्ञं चकाराशु तत्तेजो हुतमुद्भुमुने ॥

नृपस्य हृदयं कुंडमर्चिस्तद्रुचिरेव च ॥ ८ ॥

भाषा—जलदी ईश्वरको ध्यानरूप यज्ञ करते भये, हे मुनिजी ! ध्यानको तेज सो अग्नि भया है आत्मज्ञान दशरथका हृदय सो कुंड भया है ध्यानरूप यज्ञमें राजाकी रुचि सो अग्निकी ज्वाला भई है ॥ ८ ॥

प्रेमकाष्ठं त्वरो मंत्रो होमद्रव्यं च निश्चयम् ॥

तेजसा पावकेनापि दत्ता सद्भावना नृपे ॥ ९ ॥

भाषा—आत्मज्ञान राजाको ध्यान यज्ञको प्रेम सो काष्ठ है ध्यानयज्ञ करनेमें जलदी करना सो मंत्र है दशरथको ध्यानयज्ञमें निश्चय सो होमकी सामग्री है ध्यानको तेजरूप अग्नि सो दशरथको साधुओंमें सुंदर भक्तिरूप हविष्य देते भये ॥ ९ ॥

तस्याः संप्राशनञ्चक्रुर्ग्रहणं राजवल्लभाः ॥

तासां बभूव गर्भो वै भावनाप्रीतिकारणम् ॥ १० ॥

भाषा—तिस भक्तिरूप हविष्यको राजाकी तीनों स्त्रियों राजासे ग्रहण करती भई सो हविष्यको खाती भई तिन स्त्रियोंके साधुजनोंकी भक्तिमें प्रेम है सोई गर्भ रहता भया ॥ १० ॥

चैत्रवृषसुखं शुक्लं समुल्लासो निरंतरम् ॥

रतिः प्रीतिर्गुरोः सेवा सन्नतिर्विमतिः क्षमा ॥ ११ ॥

भाषा—रानियोंके गर्भ देखके दशरथको सुख भया सो सुख चैत्रमास है रोज गर्भ देखके राजा खुश भया सो शुक्लपक्ष है धर्ममें राजाकी मति बढ़ गई गुरुदेवकी सेवा बहुत करने लगे सब जीवोंसे राज्यके मद छोड़ दिया सब जीवोंको एक सम जानना क्षमा करना ॥ ११ ॥

शुद्धता स्वच्छता कीर्तिर्नवमीमाः प्रकीर्तिताः ॥

मध्याह्नं समभावं च तस्मिन् जातो रमापतिः ॥ १२ ॥

भाषा—ईश्वरके निष्कपट ईश्वरमें प्रेम ईश्वरके नामकी कीर्ति करना ये सब नवमी तिथि हैं संसारमें किसीकी निंदा स्तुति नहीं करना परंतु बुरे कर्मको छोड़ना सुंदरकर्मको ग्रहण करना ऐसे स्वभावको दुपहर कहते हैं तिस दुपहरमें भगवान् दशरथके गृहमें जन्मते भये ॥ १२ ॥

कौशल्यायां जगत्स्वामी जगदानंददायकः ॥

विवेकश्चेतनांशश्च पापवारिधिकुम्भजः ॥ १३ ॥

भाषा—आत्मज्ञान दशरथकी छाया कौशल्यामें जगत्के स्वामी जगत्के आनंद देनेवाले पापरूप समुद्रको शोषण करनेमें अगस्त्यरूप चेतनको अंश ऐसे विवेकनाम पुत्र होते भये ॥ १३ ॥

अर्थधर्मादिहस्ताद्यैः सत्यादिमुकुटादिभिः ॥

युतं रूपं दर्शयित्वा पश्चाद्बालो बभूव ह ॥

कैकेय्यां च विवेकस्य चार्द्धभागः प्रजग्मिवान् ॥

अर्द्धांशेन च द्वौ जातौ सुमित्रातनयौ मुने ॥ १४ ॥

भाषा—अर्थ धर्म आदि चार भुजा हैं, सत्य आदि धर्ममुकुट है इनसे युक्तरूप माता पिताको दिखायके बालक होते भये. विवेकके अर्द्धांश कैकेयी शक्तिमें थोरी प्रीति है तिसमें जन्मता भया और विवेकके अर्द्धांशको अर्द्धांश करके आत्मज्ञानकी सुन्दर प्रकृति जो सुमित्रा तिसके दो पुत्र भये ॥ १४ ॥

यो रोम्णि रोम्णि रमते रमणेनैव मोक्षदः ॥

स राम इति विख्यातो विवेको मोक्षदायकः ॥ १५ ॥

भाषा—सब जीवोंके रोमरोममें जो रमित है और रोमरोममें रमण करके सब जीवोंको मोक्ष देनेवाला सोई राम है उस रामको विवेक कहतेहैं वो विवेक जीवोंको मोक्ष देनेवाला है ॥ १५ ॥

निर्मोहो भरते जवान्तस्माद्भरतसंज्ञितः ॥

लक्षणे वै स्वरूपस्य येन विज्ञायते मुने ॥ १६ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! और जो जीवोंका पोषण तो करे परंतु किसी जीवमें मोह न करे उसकूं निर्मोह कहते हैं सोई भरत है जिस करके ईश्वरके स्वरूपको लक्षण मालूम पड़े ॥ १६ ॥

स लक्ष्मण इति ख्यातः सन्तोषो मोक्षनायकः ॥

यः शत्रून्सततं हन्ति शत्रुघ्नस्तेन कथ्यते ॥

स्वदेहस्थानिन्द्रियजान्सहनः समतागुणः ॥ १७ ॥

भाषा—लक्ष्मण है सो संतोष है सोई मोक्षका मित्र है इंद्रियों करके देहमें रहनेवाले जो इंद्रियोंके सुखरूप शत्रु उनका जो नाश करे तिसका नाम शत्रुघ्न है न किसीकूं स्नेही जानना न किसीकूं वैरी जानना ऐसा जो सहन स्वभाव तिसकी शत्रुघ्न संज्ञा है ॥ १७ ॥

हृद्युदासीनवृत्तिश्च विवेकक्रीडनम्मुने ॥

स्वरूपस्य सदा चिन्ता सा श्वेतागारसंज्ञिका ॥

तत्प्रीतिरंजनं शुद्धमजिरं कथ्यते मुने ॥ १८ ॥

भाषा—विवेक रामचंद्र अपने हृदयमें नित्य ऐसा मानते हैं कि संसारमें न कोई मित्र है न कोई वैरी है ऐसा स्वभाव सोई रामजीके चारों भाइयोंका खेलना भया है ब्रह्ममें मिलनेकी चिन्ता रामजीको सदा रहती है सोई दशरथकी सफेद महल है ऐसे महलमें प्रीतिसे स्नेह सोई महलकी चौक है ॥ १८ ॥

इन्द्रियाणां सदा त्रासो धूलिराशिर्निगद्यते ॥

निजानंदस्वरूपस्य चिंतकाः पुरवासिनः ॥ १९ ॥

भाषा—इंद्रियोंको नित्य विवेकरूप रामजी त्रास करते हैं सोई बहुतसी धूलि है ऐसे महल चौक धूलमें चारों भाई रामचंद्र उदासीनरूप खेल खेलते हैं भगवान्के सदा आनंदरूपके चिन्ता करनेवाले जो जीव हैं सो अयोध्यावासी प्रजा हैं ॥ १९ ॥

ज्ञानं खड्गं शरा हर्षास्तूणचापौ शमौ स्मृतौ ॥

संस्काराश्चेन्द्रियाणां वै निग्रहा मुनिना कृताः ॥ २० ॥

भाषा—ज्ञान जो है सो रामकी खड्ग है सत्संगी जीवोंको देखके अनेक प्रकारके हर्ष होना सोई रामके अनेक प्रकारके बाण हैं. समदृष्टि संसारकूं देखना सोई तर्कस है रामने इंद्रियोंको जीतना सोई धनुष है रामजीने कभी इंद्रियोंका विश्वास नहीं करते सोई वसिष्ठमुनि रामजीका मुंडन कर्ण छेदन यज्ञोपवीत इन आदि लेके संस्कार करते भये ॥ २० ॥

एवं क्रीडासमुत्साहे वर्द्धिते नृपमंदिरे ॥

चित्तो गाधिसुतो धीरोऽप्याजगाम क्षणादनु ॥ २१ ॥

भाषा—दशरथके महलमें ऐसा आनंद खेल तमाशा चारों भाई बहुत कर रहे हैं उसी समयमें चित्तरूप जो विश्वामित्रमुनि सो आते भये बड़े चतुर हैं एक क्षणमें ॥ २१ ॥

पूजितो नृपवीरेण नोदितो वरयाचने ॥

ययाचे चैव मेधावी तत्सुतौ रामलक्ष्मणौ ॥ २२ ॥

भाषा—राजोंमें वीर दशरथने मुनिजीका पूजन करके कहा कि महाराज ! आपकूं चाहे सो सुझसे मांगो तब चतुर विश्वामित्र मुनि बोले कि हे राजन् ! तुम आपने दो पुत्र रामलक्ष्मणको हमें देवो ॥ २२ ॥

तमपक्वहृदं ज्ञात्वा राजा नेतीत्युदीरितः ॥

बोधितो गुरुणा पश्चाद्दौ राजा सुहर्षितः ॥ २३ ॥

भाषा—दशरथने विचार किया कि चित्तरूप विश्वामित्र इनके हृदयज्ञानसे पकी नहीं है कच्ची है ऐसा विचार करिके कहे कि मैं पुत्रोंको नहीं देऊंगा. परंतु पीछेसे गुरु वसिष्ठ जो शक्तिके स्वभाव हैं सो दशरथको समुझायके सब बात कही तो राजा बड़े हर्षसे रामलक्ष्मणको विश्वामित्रको दिया ॥ २३ ॥

तावादाय गतो धीरः शान्तियज्ञमथाकरोत् ॥

तृष्णागाद्यज्ञनाशाय शीघ्रं सा ताडका मुने ॥ २४ ॥

भाषा—चतुर जो विश्वामित्र उन्होंने रामलक्ष्मणकूं लेके अपने आश्रमपर

जायके मनरूप रावणको शांति होनेवास्ते शांति रूप यज्ञ करते भये सो यज्ञ नाश करनेके वास्ते तृष्णारूप ताड़का आती भई ॥ २४ ॥

हृता सा रामचन्द्रेण पतिता धरणीतले ॥

मोहाहंकाररूपौ द्वौ राक्षसौ मखनाशकौ ॥ २५ ॥

भाषा—तिसको रामजीने मारकर पृथ्वीमें पटक दिया तब मोहरूप सुबाहु अहंकाररूप मारीच ये दोनों आते भये यज्ञ नाश करनेकूं ॥ २५ ॥

मोहः सुबाहुर्निहतो रामेण पतितो भुवि ॥

क्षितो रामेणाभिमानः पतितः सागरान्तिके ॥ २६ ॥

भाषा—मोहरूप सुबाहुको रामजीने मार डाला तब वह भूमिमें पड़गय और अहंकाररूप मारीचको बाणसे उठाकर समुद्रके सामने फेंक दिया ॥ २६ ॥

सुखेन कृतवान्यज्ञं मुनिस्तद्गतमानसः ॥

राक्षसानां विनाशाय सद्विद्यां दत्तवान्मुनिः ॥ २७ ॥

भाषा—विश्वामित्रने रामजीमें चित्त लगायके सुखसे यज्ञ करते भये और राक्षसोंके नाश करनेवास्ते विश्वामित्रने रामजीको सद्विद्या सिखाते भये ॥ २७ ॥

गृहीता रामचन्द्रेण ताः सर्वा रावणार्दने ॥

पञ्चज्ञानेन्द्रियाणां च धर्मोऽसौ गौतमो मुनिः ॥ २८ ॥

भाषा—मनरूप रावणको नाश करनेवास्ते रामजी सर्व विद्या सीखते भये पांच ज्ञानेन्द्रियोंका सुंदरधर्म सो गौतममुनि हैं ॥ २८ ॥

अहल्या तद्रुचिः प्रोक्ता कुधर्मः सुरनायकः ॥

रमिता तेन सा नारी सुखं जारसमुद्रवम् ॥ २९ ॥

भाषा—तिन पाँच ज्ञानेन्द्रियोंके धर्ममें रुचि सोई अहल्या है खोटा धर्मसो इन्द्र है पांच ज्ञानेन्द्रियोंके धर्ममें जो जीवोंकी रुचि और खोटे धर्म छुड़ा दिया जाय सोई जारका सुख है ॥ २९ ॥

तत्कर्मनाशनं विप्र शापो दुर्वासनं क्षितौ ॥

गंभीररजसा पूता स्वकर्मविस्मृतिः शिला ॥ ३० ॥

भाषा—और खोटे कर्ममें अहल्याको सुकर्म मिल गया तथा देहकी चेष्टा-
रूप भूमिपर सज्जनोंने निंदा किया ये दोनों गौतमकी नारी अहल्याको शाप
तथा अनुग्रह है विवेक रामजीको गंभीर स्वभाव सोई रामजीके पगकी धूलि
है. उस धूलि करके अहल्या पवित्र भई और अहल्या अपने कर्मको भूलि
गई सोई शिला है ॥ ३० ॥

शिलायां भिद्यमानायां पुनः प्राप्ता स्वमालयम् ॥

जीवश्च मैथिलो ज्ञेयः सदेहश्च विदेहवान् ॥ ३१ ॥

भाषा—शिला रामजीके पगकी धूलि करके फटगई सो अहल्याकी पांच
ज्ञानेंद्रियोंमें प्रेमरूप अपना घर तिसको गई. जीव जो है सो जनक है. कभी
देहमें स्नेह करता है कभी देहसे स्नेह छोड़ देता है ॥ ३१ ॥

नृपस्य मोहिनी भार्या रूपचिन्ता कदा पुरी ॥

जनकस्यानुजो विप्र सदा दुःखं निगद्यते ॥ ३२ ॥

भाषा—मायाकी दासी जो संसारको मोहती है सो मोहनी रूप जनककी
स्त्री है. जीव कभी कभी भगवान् की चिन्ता करता रहता है सो जनककी नगरी
है, जीव रोज दुःखी रहता है सो दुःख जनकरूप जीवको सुकेतु नाम
छोटा भाई है ॥ ३२ ॥

कन्ये द्वे तस्य संजाते हानिग्लानिश्च सत्तम ॥

जनकस्य सुता जाता रूपप्रीतिः सुशीतला ॥ ३३ ॥

भाषा—सुकेतुके हानिरूप तथा ग्लानि रूप ये दो लडकी भई, भगवान् के
रूपमें प्रीति बड़ी शीतल ऐसी एक कन्या जनकके होती भई ॥ ३३ ॥

द्वितीया जानकी प्रोक्ता रूपभक्तिश्च शाश्वती ॥

स्वयंवरं विचारश्च धनुरिष्टवियोजनम् ॥ ३४ ॥

भाषा—भगवान् के रूपकी नित्य जो भक्ति सो जनककी दूसरी कन्या हुई,
उसका नाम जानकी हुआ जीव कभी कभी थोड़ाविचार करता है सोई स्वयंवर
है, जीवका इष्टदेव भगवान् तिससे जीवको वियोग हुआ सोई स्वयं-
वरमें धनुष है ॥ ३४ ॥

त्रोटनं ज्ञापनं किंचिद्रूपस्य जनकेन वै ॥

सत्वरं रामचन्द्रेण धनुषस्रोटनं कृतम् ॥ ३५ ॥

भाषा—जीवरूप जनक थोड़ा थोड़ा भगवान्‌के रूपको जानता है, सोई धनुषका तोड़ना है सो शीघ्रही रामजी धनुषकूं तोड़ते भये ॥ ३५ ॥

तद्रूपस्मरणं शीघ्रं भार्गवोऽप्याजगाम ह ॥

स्वस्थानसंस्थितिज्ञानं धनुषो रोपणं कृतम् ॥ ३६ ॥

भाषा—जीवको तथा भगवान्‌का वियोगरूप धनुष टूट गया तब जीव भगवान्‌के रूपका स्मरण करता भया सोई परशुराम मुनि आते भये भगवान्‌के प्रेमरूप वैकुण्ठ तिसमें टिकनेवाले जीवको ज्ञान भया सोई परशुरामके धनुषको रामने चढ़ाये तब परशुराम रामको दण्डवत् करिके चले गये ॥ ३६ ॥

सत्कर्माद्यभिसंयुक्तः सेनाश्वरथहस्तिभिः ॥

सुखासनश्च तैः सार्द्धमाजगाम नृपोत्तमः ॥ ३७ ॥

भाषा—और ज्ञान ध्यान जप तप आदि लेके सुंदर कर्म सोई रामके घोड़ा, फौज, गज, पालकी है, इन्होंको संग लेके आत्मज्ञान राजा दशरथ जनकपुरको बरात लेके आते भये ॥ ३७ ॥

वर्द्धितः सत्समाजश्च विवाहे सततं मुने ॥

जानक्या रघुवीरस्य चान्येषां भ्रातृणां तदा ॥ ३८ ॥

भाषा—सत्संगीजन इकट्ठे होके ईश्वरको भजन करने वास्ते एक सभा बनाये हैं, ये बड़ी जो सभा है सोई सत्संगी लोगोंकी सभा राम जानकी तथा और तीनों भाइयोंका विवाह भया है ॥ ३८ ॥

विदेहेन तदा दत्तं कन्योद्वाहे नृपाय वै ॥

रूपस्मरणविज्ञानमचलं वित्तसंचयम् ॥ ३९ ॥

भाषा—जीवरूप जनक ईश्वरका स्मरणरूप ज्ञान दशरथको बताते भये, सोई लड़कियोंके विवाहमें दायज अचल धन, खजाना भया है ॥ ३९ ॥

विस्मृतं पुनराप्तं च तत्प्रयाणं नृपस्य च ॥
 पूर्वोक्ता पुत्रपत्नीश्च पुत्रान्वितं च भूरिशः ॥
 पुरोक्तै मुनिभिः सार्द्धमाजगाम नृपोत्तमः ॥ ४० ॥

भाषा—आत्मज्ञानरूप दशरथको भगवान्‌को स्मरणरूप ज्ञान किंचित् भूल गया, सो फिर प्राप्त भया, सोई दशरथको फिर अयोध्या चलनेकी तैयारी भई, पहिले कहे हुए जो पुत्र, पुत्रोंकी स्त्री तथा जनकको दिया जो भगवान्‌को स्मरणरूप धन बहुत तथा पहिले वर्णन भये जो मुनि इन सबको संग लेके चलते भये ॥ ४० ॥

समादायागतो राजा स्वपुरीं सुमतिं ततः ॥
 पुनरीदृक्समाजश्च भविष्यति कदाप्यहो ॥
 इत्युत्कंठाविदेहस्य बभूव मानसे सदा ॥ ४१ ॥

भाषा—पहिले श्लोकमें वर्णन भये जो प्राणी तिन सबको संग लेके सुमति नाम अयोध्याको प्राप्त भये, बड़ी भाग्य है कि कभी फिर ऐसी सभा साधु-वोंकी होवैगी ऐसा विचार करके जनक हर्षमें आनंद माने सोई जानकी आदि कन्याके विदामें जनककी विह्वलता भई ॥ ४१ ॥

यथा पुरेदं परिपीडितं जगन्मनोदशास्येन निरंतरम्मुने ॥
 विवर्द्धिते दाशरथे तथा सुखं किञ्चित्समावाप नृपात्मजोऽपि सः ॥ ४२ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! मनरूप रावण पहिले जैसा यह संसारको पीडा करता रहा सोई रामजीकी थोड़ी वृद्धि भई रहते संसारको थोड़े सुखकी वृद्धि होती भई, संसारको किंचित् सुखी देखके रामजीभी थोड़े सुखकूं प्राप्त भये, रामजीने विचार किया कि थोड़ा सुख भया तो अब कुछ दिनमें सब दुःख नाश होवेगा ॥ ४२ ॥

इति श्रीशिवसहायबुधविरचिते वेदांतरामायणे बालकांडे संवर्तवरतन्तुसंवादे
 रामावतारकथने सप्तमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ७ ॥

समाप्तश्चायं बालकाण्डः ।

अथ अयोध्याकाण्डम् ।

वरतन्तुरुवाच ।

इन्द्रियार्थान्समालोक्य विपरीतान्नृपोत्तमः ॥

तच्छिक्षार्थं नृपो राममभिषेक्तुं समारभेत् ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतुमुनि बोले हे सम्बत मुनि ! सुनो आत्मज्ञानरूप दशरथ राजा इन्द्रियोंके अर्थको बहुत भट्ट देखके तिन इन्द्रियोंको सिखाने वास्ते रामजीको राज्य देनेको प्रारंभ करते भये ॥ १ ॥

भ्रातृत्रयाणां भगिनी दुर्बुद्धिर्मथरा च सा ॥

शिक्षयामास कैकेयीं किञ्चिच्छक्तिप्रियान्तदा ॥ २ ॥

भाषा—काम, क्रोध, लोभ इन तीनों भाइयोंकी बहिन जो दुर्बुद्धि सोई मंथरानाम कैकेयीकी दासी है, सो मंथरा थोरी जो शक्तिकी प्रीतिरूप कैकेयी तेसकुं सिखाती भई ॥ २ ॥

कलंकं तु तया प्राप्तं सज्जनैर्दूरत्याजनम् ॥

रामस्य वनवासञ्च भरतस्याभिषेचनम् ॥ ३ ॥

भाषा—सज्जन लोगोंने दुर्बुद्धिरूप मंथराको त्यागते भये, सो त्यागरूप कलंक मंथराको प्राप्त भया, रामजीकुं वन जाने वास्ते और भरतकुं राज्य देने वास्ते ॥ ३ ॥

याचयामास कैकेयी पूर्वदत्तवरा हि सा ॥

नृपेण द्वौ वरौ दत्तौ भार्यायाः प्रीतिचेतसा ॥

वश्यमेकं द्वितीयन्तु त्वया नित्यम्प्रबद्धितः ॥ ४ ॥

भाषा—दशरथने कैकेयीकुं पहिले दो वरदान दिये थे, प्रसन्न होकर एक वर तो तुम्हारी वश्य हम रहेंगे दूसरा वर तुम करिके हम बंधे रहेंगे ॥ ४ ॥

तस्मिन्व्यस्तौ तया काले याचितो सत्यभावतः ॥ ५ ॥

भाषा—यह दो वरोंको कैकेयीने दशरथके पास थाती रखदिया था सत्य स्वभाव सोई थाती है ॥ ५ ॥

दुःस्वभावः शरीरस्य तदारण्यं निगद्यते ॥

परतापादयो वृक्षा भूरितृष्णादयो लताः ॥ ६ ॥

भाषा—देहको खोटा स्वभाव सोई वन है, दूसरे जीवको दुःख आदि अनेक कष्ट देना ये सब वनके वृक्ष हैं, बहुत तृष्णा करना सोई वेलि है ॥ ६ ॥

उत्पातकारकाः सर्वे वनजास्तच्चराः स्मृताः ॥

दुःस्वभाववनस्येह विस्तारो यदि वर्ण्यते ॥ ७ ॥

भाषा—उत्पात करनेवाले काम, सोई सब वनके भील भये हैं देहको खोटे स्वभावरूप वन तिसका विस्तार जो वर्णन करो ॥ ७ ॥

तदायम्बहुभूमा च ग्रन्थो भवति सज्जनाः ॥

ईदृशं काननं दत्तं रामाय नृपभार्यया ॥ ८ ॥

भाषा—तब हे सज्जन मनुष्यो ! ग्रंथ बहुत बड़ा हो जावेगा इसवास्ते वनको विस्तार मैंने नहीं वर्णन किया, दशरथकी प्यारी स्त्री कैकेयी ऐसा वन रामजीकूं देती भई ॥ ८ ॥

आज्ञा नृपतिना दत्ता स्वच्छवृत्तिः सुकोशला ॥

विलापो नृपतेः प्रोक्तो दुःस्वभाववने चलम् ॥ ९ ॥

भाषा—बड़ी चतुर निर्मलवृत्ति दशरथकी सोई राजाने रामजीको वन जानेकी आज्ञा देता भया, वन जानेमें रामजीको चित्त चलायमान नहीं भया, सोई दशरथ आदि सबको विलाप है ॥ ९ ॥

गमनं रामचन्द्रस्य वर्षाणां च चतुर्दश ॥

पंचकर्मेन्द्रिया वर्षास्तदर्थः पंच लोलुपाः ॥ १० ॥

भाषा—पांच कर्मेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रियोंके अर्थ बड़े काम क्रोध आदि उत्पन्न करनेवाले ॥ १० ॥

बालादीनि च चत्वारि शरीरस्य वयांसि च ॥

एते दिग्बेदवर्षाश्च विपरीतेन्द्रियार्थता ॥ ११ ॥

भाषा—और जीवोंकी देहकी अवस्था बाल आदि चार अवस्था जैसे बाल पौगंड युवा वृद्ध ४ ये सब खोटी इन्द्रियोंके अर्थ लेके चौदह १४ वर्ष वनमें रहनेवास्ते हैं ॥ ११ ॥

सा राज्यवृत्तिर्भरते दत्तवानृपसत्तमः ॥

पितुर्वाक्यं रथं प्रोक्तं स्वच्छवृत्तिभवा गुणाः ॥ १२ ॥

भाषा—और खोटे इन्द्रियोंके अर्थको सिखानेवास्ते दशरथने भरतकूं राजकी वृत्ति देते भये, और दशरथकी वाक्य रामजीकूं बन जाने वास्ते, सो वाक्य रामका रथ है, रामजीकी सुंदरमति तिसके गुण जैसे लोभ, मोह, स्नेह, वैर ये रामजीके नहीं हैं ॥ १२ ॥

हयाश्च तत्सुखा द्रव्या रथस्य तत्स्थितो रवः ॥

सुमन्तो निश्चलत्वं च नृपस्य मुनिसत्तम ॥ १३ ॥

भाषा—सोई रामजीके रथके घोडे हैं उन घोडोंमें सुख मानना सोई रथकी सब सामग्री है, पिताके वचनरूप रथमें बैठना सोई रथको दौडना है, हे मुनिजी ! आत्मज्ञान राजाको धर्म सो कभी चित्त चलायमान नहीं होता, सोई सुमंत नाम राजाको मंत्री है ॥ १३ ॥

विवेकतनयस्यैव वियोगो रुदनम्मुने ॥

तमसाऽचंचला वृत्ती रामस्य मुनिसत्तम ॥ १४ ॥

भाषा—ऐसी रथमें बैठके रामजी वनकूं चले तो दशरथके विवेकसरीखे पुत्रको वियोग बहुत दिनसे भया सोई राजा आदि रानियोंको तथा पुरवासियोंका रोना भया है, हे मुनि ! पिताके वचनसे रामजीकी अचलवृत्ति सोई तमसा नदी है ॥ १४ ॥

वासञ्चकार भगवान्तत्तीरे ग्लानिवर्जितः ॥

ह्यसंचारणं धीरः कारयामास सारथिः ॥

पितुराज्ञाविचलनं ह्यानामशनं स्मृतम् ॥ १५ ॥

भाषा—विवेकी रामजीके कभी ग्लानि नहीं होती सोई तमसाके तीर रामजीका वास है, धर्ममें बड़े चतुर रामजी सोई सुमंतने घोड़ोंको फेरते भये, तथा पिताकी आज्ञाको रामजीने मान लिया सोई घोड़ोंको चारा खिलाते भये ॥ १५ ॥

पित्रोर्विनिन्दनं त्यागं पूर्वोक्ताः पुरवासिनः ॥

चैतन्यस्य सदा चिन्ता कृता रामेण मानसे ॥ १६ ॥

भाषा—तथा रामजीने कभी पिताकी निंदा नहीं किया, सोभी घोड़ोंका चारा है विवेक रामजी चैतन्यरूप भगवान्की चिन्ता आपके हृदयमें रोज करते हैं ॥ १६ ॥

सा निद्रा तमसातीरे वाक्यं रामस्य निश्चयम् ॥

पितुर्मोहो वने हर्षो रामस्य वर्तते द्वयम् ॥ १७ ॥

भाषा—सोई तमसाके तीरपर रामजीको निद्रा आती भई निश्चय करिके वन जाना ऐसा रामजीको विचार सोई रामजी सुमंतसे कहे कि, रथको फिरा-यके ले चलो पुरवासी हमारे संग चलेंगे सो अच्छा नहीं है रामजीको वन जानेमें बड़ा हर्ष है तथा पिताका मोह है ॥ १७ ॥

एतद्रथस्य भ्रमणं निश्चिता कानने स्थितिः ॥

राक्षसानां विनाशाय भूभारहरणाय च ॥ १८ ॥

भाषा—ये दोनों रथको भ्रमण करना है रामजीकी वनमें निश्चय स्थिति करना भूमिको भार नाश करना तथा राक्षसोंको नाश करना ॥ १८ ॥

एतत्पुनस्तद्रमनं तुष्टभावो रघूत्तमे ॥

निवर्तनं प्रजानां वै कषाय इव कालनम् ॥ १९ ॥

भाषा—ये दोनों प्रसन्न होके तमसाके तीरसे रामजीको फिर वनमें गमन भया जैसा काढ़ा उकलता है तैसे पुरवासी प्रजाओंका पीछा आना भया ॥ १९ ॥

पुरवासिनाम्बिलापश्च पुनः प्रोक्तं मुनीश्वर ॥

रामश्च स्वस्वभावेन गुहेनाशु सुतोषितः ॥ २० ॥

भाषा—सोई प्रजाको फिर विलाप भया है हे सुनिजी ! रामजीका स्वभाव सोई गुहनाम भील है सो भील रामजीको प्रसन्न करता भया ॥ २० ॥

स्वभावाचलनं विप्र शृंगवेरपुरः स्मृतः ॥

औदासीन्यं च रामस्य शिशिपातरुसत्तमः ॥ २१ ॥

भाषा—रामजी अपने स्वभावसे कभी चलायमान नहीं होते सोई शृंगवेर पुर है, रामजीके न कोई मित्र है न कोई वैरी है सोई शिशिपा वृक्ष है तिसके नीचे राम लक्ष्मण जानकी सहित बसते भये ॥ २१ ॥

रूपध्यानं कृतन्तेन रामेण तरुसन्निधौ ॥

तदासनम्महबाहो प्रेमोत्कंठाः कुशाः स्मृताः ॥ २२ ॥

भाषा—रामजी ईश्वरके रूपको ध्यान करते भये सोई आसन गुह बनाता भया रामजी ध्यान करके प्रेमसे गद्गद होगये सोई कुश हैं तिन कुशोंका आसन बनाया ॥ २२ ॥

कुकर्मणो निवृत्तिश्च सा गुहस्यैव भावना ॥

तैः कुशै रामचंद्रस्य गुहेन कृतमासनम् ॥ २३ ॥

भाषा—रामजी खोटे कर्मसे चित्तको खेंचे रहते हैं सोई गुहेन रामजीकी भक्ति की तिन कुशों करके गुह रामजीका आसन बनाता भया ॥ २३ ॥

तस्मिन् शिष्ये स्वपत्न्या च रामो निद्रां चकार वै ॥

सत्सभा विरहाक्रान्ता बुद्धिर्निद्रा स्मृता मुने ॥ २४ ॥

भाषा—तिस आसनपर जानकी सहित रामजी सोते भये हे सुनिजी ! रामजीको साधुओंकी सभाका वियोग होजाता है उस वियोग करके रामजीकी बुद्धि दुःखी होजाती है सोई निद्रा करते भये ॥ २४ ॥

असद्वार्तादयो धर्मा ये चैवं मायया कृताः ॥

ते विभूषणवस्त्राद्यास्त्यक्ता द्वाभ्यां गुहान्तिके ॥ २५ ॥

भाषा—माया करके रचे जो खोटे खोटे धर्म सोई संसारके गहने तथा वस्त्र हैं तिन सबको राम लक्ष्मण गुह भित्रके सामने त्यागते भये ॥ २५ ॥

गुहलक्ष्मणयोः सुप्ते सपत्नीके रघूत्तमे ॥

बभूवतुः सत्कथनं सद्भिचिन्तनमेव च ॥ २६ ॥

भाषा—रामजीको तथा जानकीको सोये जानके गुहका लक्ष्मणका संवाद भया दोनों सुंदर धर्म तथा ईश्वरकी चिंता करते भये सोई संवाद है ॥ २६ ॥

संवादजागरौ प्रोक्तौ तौ तयोर्जाह्नवीतटे ॥

शरीरशुद्धिर्योगेन पूर्वोक्ता जाह्नवी स्मृता ॥ २७ ॥

भाषा—पहिले वर्णन भई जो गंगाजी तिसके तीर गुहका तथा लक्ष्मणका संवाद तथा जागते भये सुंदर धर्मका कथन सो संवाद भया है। ईश्वरकी चिंता करना सो जागना भया ॥ २७ ॥

शुद्धमाचरणन्तोयम्बाह्याभ्यंतरयोः शुचिः ॥

तदौ द्वौ मुनिभिः प्रोक्तौ तरंगिण्योऽनुशासिकाः ॥ २८ ॥

भाषा—शुद्ध कर्मका करना सोई गंगाका जल है और देहके बाहर जल-मृत्तिकासे शौच करना, हृदयमें ज्ञानसे शौच करना ये दोनों कर्म गंगाके दो तीर हैं, गुरुकी दीक्षा लेना सोई गंगाकी लहरें हैं ॥ २८ ॥

स्वभावाचरणं वंशं तत्प्रीत्या यष्टिसंज्ञया ॥

योगाचरणया नावा तारणं शुद्धसंस्थितिः ॥ २९ ॥

भाषा—जीवोंके स्वभावका आचरण सोई बांस है उसी स्वभावस्वरूप बांसमें प्रीति करना सोई बांसकी लाठी है। योगका करना सो नांव है शुद्ध कर्ममें टिकना सो गंगाका उतरना है इस प्रकार संयोगसे गुह राम-लक्ष्मण जानकीको गंगाके पार ले गया ॥ २९ ॥

कृतं गुहेन सहसा प्रयागं हृदयस्थलम् ॥

सज्जनैर्भाषणं स्नानं तस्य प्रीतिः सरस्वती ॥ ३० ॥

भाषा—गुहने पार उतारे रामजीका हृदय सो प्रयाग है सज्जन मनुष्योंसे
भाषण करना सो स्नान है इसी सज्जनोंके भाषणमें प्रीति सो सरस्वती है ॥ ३० ॥

तत्संगतौ च यत्प्रेम तद्रुचिर्यमुना स्मृता ॥

वटः स्वधर्मो विप्रेन्द्र सत्कर्माचरणो मुनिः ॥ ३१ ॥

भाषा—सज्जन जीवोंके मिलापमें प्रेम और उसी प्रेममें रुचि सो यमुना है
जीवोंका अपना अपना धर्म सो अक्षय वट है सुंदर कर्म करना सो भरद्वाज मुनि
है तिनके आश्रमपर रामजी जाते भये ॥ ३१ ॥

पूजितो येन रामो वै जानकीलक्ष्मणान्वितः ॥

सुखमाप महाराजो रामो राजीवलोचनः ॥ ३२ ॥

भाषा—सो भरद्वाज मुनि राम लक्ष्मण जानकीको पूजन करते भये भरद्वाज
मुनिके आश्रमपर एक रात्रि रामजी रहे तहाँ बहुत सुख पाते भये ॥ ३२ ॥

उवाच रामो मुनिना सुपूजितो विदेहपुत्र्या च सहानुजो विभुः ॥

प्रातः समुत्थाय प्रियासहोदरैः स्नानं त्रिवेण्यां विधिवच्चकार वै ३३

भाषा—मुनि करके पूजित ऐसे रामचंद्र जानकी लक्ष्मण भरद्वाज मुनिके
आश्रमपर रात्रि बसके प्रातःकाल उठके पहिले वर्णन हुई जो त्रिवेणी तिसमें
विधिपूर्वक शुद्ध आचरण है रामजीका सोई विधि है, और पहिले वर्णन भया जो
जल तिसमें डरसे हीन कर्म रूप स्नान राम लक्ष्मण जानकी करते भये ॥ ३३ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे अयोध्याकांडे पं०शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसं-
वादे रामचंद्रभारद्वाजाश्रमानिवासे प्रथमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ १ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

आत्मज्ञानस्य स्वपितुः रामेण चिन्तनम्मुने ॥

स वाल्मीकिर्मुनिः प्रोक्तः शत्रुजेता जयो गिरिः ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोले रामजीने अपने पिता जो आत्मज्ञान तिसका
चिंतन करते भये सो वाल्मीक मुनि हैं तिनके आश्रमपर रामजी जाते भये ।
रामजीका पराक्रम कामादि शत्रुओंको जीतनेमें बड़ा बलवान् है, सो चित्रकूट
पर्वत है, वाल्मीककी आज्ञा पायके तिस चित्रकूटपर रामजी बसते भये ॥ १ ॥

रामस्य सततं प्रीतिर्या रूपे सा पयस्विनी ॥

सभयादिगुणास्तत्र मुनयो वनवासिनः ॥ २ ॥

भाषा—भगवान्‌के रूपकी प्रीति रामजीके हृदयमें नित्य बनी रहती है, सोई मंदाकिनी नदी है, अधर्मके भय आदि गुण रामजीमें हैं सो इस वनके मुनि हैं, अधर्मसे डरे सोई महात्मा है ॥ २ ॥

इंद्रियाणाम्प्रचंडानामविश्वासादयो गुणाः ॥

तैरग्रण्यचरैर्नित्यं सेवितो जानकीपतिः ॥ ३ ॥

भाषा—बड़ी जबर्दस्त जो इन्द्रिय हैं तिनका विश्वास रामजी कभी नहीं करते ऐसा गुण सोई वनके रहनेवाले मनुष्य हैं, सो मनुष्य रामजीकी सेवा करते भये ॥ ३ ॥

गिरैर्वै जयरूपस्य चित्रकूटस्य नित्यशः ॥

अचलत्वं च तत्प्रेम कुटीरो रामसंकृतौ ॥ ४ ॥

भाषा—पहिले वर्णन भया जो रामजीका काम आदि जयरूप चित्रकूट सो अचल है तथा उस अचलमें प्रेम ये दोनों राम लक्ष्मणकी पर्णकुटी हैं ॥ ४ ॥

तद्गिरौ निश्चला प्रीतिर्वसती राघवस्य वै ॥

प्रपंचरहितं सौख्यं प्राप्तं रामेण तत्र च ॥ ५ ॥

भाषा—ऐसे चित्रकूटमें रामचंद्रकी प्रीति निश्चल है सोई चित्रकूटपर रामचंद्रका वास है, रामजी संसारके प्रपंचसे रहित हैं सोई चित्रकूटका सुख है ॥ ५ ॥

अयोध्या सुमतेर्भूरिर्निश्चलेनैव संकृता ॥

तत्सुमन्तागमः प्रोक्तः पुना रामांतिकान्मुने ॥ ६ ॥

भाषा—जिसको चित्त कभी धर्मसे चलायमान नहीं होता सो सुमंतरूप सारथिने सुमतिरूप अयोध्याका प्रेम निश्चल होके किया सोई रामजीके पाससे सुमंतका फिर अयोध्यामें आना भया है ॥ ६ ॥

सत्समाजे विनष्टोऽभूदात्मज्ञानं निरंतरम् ॥

तदेव मरणम्प्रोक्तमयोध्याधिपतेस्तदा ॥ ७ ॥

भाषा—सत्पुरुषोंकी समाजमें रोज आत्मज्ञान नष्ट होगया सोई दशरथका मरण है ॥ ७ ॥

कृतं कोलाहलं सर्वैः सज्जनैः सत्सभातले ॥

पूर्वोक्तनृपभार्याभिर्युगपत्तद्विलापनम् ॥ ८ ॥

भाषा—सत्पुरुषोंकी सभामें आत्मज्ञानको नष्ट देखके उसी सभामें बैठके सज्जनोंने बहुत उच्चस्वरसे रुदन किया सोई पेस्तर वर्णन भई सो राजाकी स्त्री है, सो सब इकट्ठी होयके विलाप करती भई ॥ ८ ॥

निर्दयत्वं सदा शक्तेः तत्केकयपुरं स्मृतम् ॥

धर्माचरणदूतास्ते वसिष्ठेनैव प्रेरिताः ॥

गतास्ते तत्पुरं प्रोचुः क्रूरं केकयभूपतिम् ॥ ९ ॥

भाषा—शक्ति निर्दय है जीवको फँसानेमें मोह नहीं करती कि यह गरीब दुःख पावेगा, ऐसा शक्तिका स्वभाव है सोई कश्मीर नगर है वसिष्ठजीने अपने धर्मके आचारमें बड़े पुष्ट सो सब दूत हैं तिन दूतोंको कश्मीरको भेजते भये, दूत जायके कश्मीरको केकयीका क्रूरस्वभाव सोई कश्मीरका राजा है तिससे बोलते भये ॥ ९ ॥

नृपस्य मरणं शीघ्रं गृहीत्वा तत्सुतौ तदा ॥

कुमत्या प्रापितौ तत्र पूर्वोक्तौ नृपनंदनौ ॥ १० ॥

भाषा—जलदी आत्मज्ञान दशरथको मरण कहिके कुमति करके कश्मीरको लेगये जो राजाके दो पुत्र भरत शत्रुघ्न तिन दोनोंको संग लेके ॥ १० ॥

आयाता सुमतिन्दूता भरतानादरम्प्रजाः ॥

भगवच्चितकाः सर्वे प्रजाश्च पुरवासिनः ॥ ११ ॥

भाषा—दूत सुमतिरूप अयोध्याकूं आये, तब भगवान्‌के भजन करनेवाले रूप जो सब पुरवासी हैं सो भरतके अनादरको ॥ ११ ॥

चक्रुश्चानादरन्तस्य हास्यरूपनिरन्तरम् ॥

आश्वसितौ वसिष्ठेन क्षमामार्गेण रोदनम् ॥ १२ ॥

भाषा—करते भये, क्या अनादर किये रोज भरतकूं देखके हँसना सोई अनादर है और वसिष्ठजीने क्षमारूप आश्वासन किया सोई भरत शत्रुघ्नका रोना है ॥ १२ ॥

चक्रतुः शपथं वीरौ कौशल्यां भरतोऽर्ज्वम् ॥

चकार मातुः स्वस्यैव भर्त्सनं धैर्यनाशनम् ॥ १३ ॥

भाषा—भरतका कोमलस्वभाव सोई दोनों भाई सौगंद करते भये रामजीका वियोग तथा दशरथका मरण सुनिके भरत शत्रुघ्नका धीरज नष्ट होगया सोई केकईको भरत ताड़ना करते भये ॥ १३ ॥

दाहादीनि समस्तानि कर्माणि मुनिसत्तमः ॥

कारयामास भूपस्य शुद्धाचाराणि तेन वै ॥ १४ ॥

भाषा—सब जीवोंका शुद्ध आचार सोई दशरथकी दाहक्रियादि कर्म वसिष्ठने भरतसे करवाये ॥ १४ ॥

पूर्वाक्तसेना जननी बांधवैः पुरवासिभिः ॥

गुरुणा विप्रवर्गैश्च संयुतो गमनञ्च सः ॥ १५ ॥

भाषा—पहिले वर्णन भई जो फौज तथा माता भाई पुरवासी गुरु ब्राह्मण इन सबों करके संयुक्त होकर भरतने रामजीके पास जानेकी तैयारी की ॥ १५ ॥

परमानंदरूपं हि गुहेन भापणं कृतम् ॥

रामधैर्यस्वरूपं च तत्प्रतीति निवासनम् ॥ १६ ॥

भाषा—भरत परमरूप आनंदमें लीन भये सोई गुहका तथा भरतका संभाषण भया रामजीका धीरज स्वभाव सोई गुहका निश्चय है श्रीरामको मिलने वास्ते भरत जातेहैं सोई भरतका गंगा तटपर टिकना भया ॥ १६ ॥

सैन्यविश्वासनं चक्रे रामध्यानेन संयुतः ॥

भरतस्वस्वभावेन ससैन्यमातृबांधवैः ॥ १७ ॥

भाषा—भरत शत्रुघ्न रामजीका ध्यान करते भये सोई फौजको विश्वास-
देना है तथा भरत अपने स्वभावमें दृढ़ है सोई सेना भाई गुरु माता सहित ॥ १७ ॥

गंगापारं सुखेनातो गुहप्रेरितनौकया ॥

प्रयागस्थो मुनिश्चक्रे सत्कार्यं भरतस्य च ॥ १८ ॥

भाषा—गुहसे चलाई नाव करके गंगाके पार गये प्रयागजीमें टिके जो
मुनि भरद्वाज पहिले वर्णन हुये सो भरतका सत्कार करते भये ॥ १८ ॥

यमादिभिर्योगपथैः सन्तुष्टो नृपनन्दनः ॥

बभूवाव्यक्तकथनं श्रोतॄणां वाचिनां तथा ॥ १९ ॥

भाषा—किस चीजसे सत्कार किया खोटा वचन नहीं बोलना इंद्रियोंको
जीतना इन आदि अनेक प्रकारके सुंदर कर्मों करके सत्कार किये तब भरत
संतुष्ट होके चित्रकूटको गये तब चित्रकूटपर सुननेवाले जीवोंके तथा कहने-
वाले जीवोंके बीचमें ईश्वरका धर्म वर्णन भया ॥ १९ ॥

चतुर्णाञ्चैव भ्रातॄणामन्येषां च परस्परम् ॥

समागमस्स विख्यातः परमात्मप्रकाशकः ॥ २० ॥

भाषा—तथा चारों भाई रामजीके और अनेक जीवोंके आपसमें परमात्माके
रूपका प्रकाश मालूम पडा सोई सबका चित्रकूटपर आना भया ॥ २० ॥

पादुके रामचन्द्रेण सत्यबुद्धिः सहिष्णुता ॥

स्वानुजाय स्वयन्दत्ते प्रीत्या गृह्यागमत्पुरीम् ॥ २१ ॥

भाषा—सत्य राखना हृदयमें तथा कोई अपनेको दुःख देवै सो उसको दुःख
देनेका विचारना नहीं ये दो पादुका हैं सो दोनों पादुका रामजी प्रसन्न होके
भरतको देते भये भरत दोनों पादुका अपने स्वभाव रूप शिरपर धरि के
अयोध्यापुरीमें आते भये ॥ २१ ॥

भरतो भ्रातृसहितः सेनामातृमुनीश्वरैः ॥

वासं चक्रे पुरी बाह्ये पंचक्रोशमिते शुभे ॥ २२ ॥

भाषा—भाई सेना माता मुनिश्वर सहित आयकै आप भरत अकेले पुरीके बाहर पांच कोसपर टिकते भये ॥ २२ ॥

कदापि सुमतिः कुर्यात्कुमतेः संगमद्भुतम् ॥

अतो तदूरतः स्थित्वा पंचदुष्टेन्द्रियोज्झिते ॥ २३ ॥

भाषा—भरत विचारते भये कि दैवयोगसे सुमति जो है सो कुमतिकी संगत कर लेवै तो बड़ा अश्चर्य हो जावे इसवास्ते पांच दुष्ट इंद्रियों करके त्यागा गया जो सुंदर कर्म उसी पांचकोशमें वास करते भये ॥ २३ ॥

सत्कर्माचरणे वीरो नन्दिग्रामे सुशोभने ॥

तत्प्रीतिरूपिणीम्बद्धा जटां राम इव स्वयम् ॥ २४ ॥

भाषा—सुंदर कर्मका आचरण करना सोई नंदिग्राम है तिसमें टिकते भये नंदिग्रामकी प्रीतिरूप जटा रामसरीखे भरतभी शिरमें बांधिके ॥ २४ ॥

द्रयोः पादुकयोश्चक्रे रंजनं प्रीतिसेवनम् ॥

शमादीनाम्प्रजानां वै विपरीतोद्भवोद्भवैः ॥

भरतो रक्षणं चक्रे दुःखितानां मुहुर्मुहुः ॥ २५ ॥

भाषा—पेस्तर वर्णन भये जो दोनों पादुका तिनको स्नेहरूप प्रीति सोई सेवन करते भये शम दम यज्ञ आदि और जो सुकर्म सोई सब प्रजा भये तिन सबकी रक्षा करते भये भरत खोटी इंद्रियोंका जो खोटा अर्थ तिन करिके वारंवार दुःखी जो प्रजा तिनकी रक्षा करते भये ॥ २५ ॥

इति श्रिवेदान्तरामायणे पं० शिवसहायबुधविरचिते नंदिग्रामे भरतनिवासे
द्वितीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ २ ॥

इत्ययोध्याकांडं समाप्तम् ।

अथारण्यकांडः ।



वरतन्तुरुवाच ।

कुज्ञानसमुदायाश्च ते मृगाः काननौकसः ॥
सलक्ष्मणेन रामेण हता निपतिता क्षितौ ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि बोले खोटा खोटा ज्ञान जैसे परस्त्रीको भोगना परधन हरना चोरी करना इन आदि बहुत ज्ञान सो सब वनके मृग भये तिन मृगोंको राम लक्ष्मण मारते भये वे मृग भूमिपर पडगये ॥ १ ॥

ज्ञानहर्षशरैस्तीक्ष्णैर्जघानारण्यसंश्रितान् ॥
राक्षसानपि पूर्वोक्तान्मनोरावणप्रेरितान् ॥ २ ॥

भाषा—तथा मन रावण करके आज्ञा पायके वनमें फिरते हैं जो राक्षस तिनको भी रामजी ज्ञानमें हर्ष मानना सोई बाण है तिन बाणों करके मारते भये ॥ २ ॥

रूपभक्त्याश्च जानक्या पादौ तच्छ्रुतिकीर्तने ॥
आलस्यो निजतुंडेन निजघान सुरेशजः ॥ ३ ॥

भाषा—विवेकका चरित्र सुनना तथा कीर्तन करना ये दोनों भगवान् के रूपकी भक्ति जो जानकी तिसके दो पग हैं तिस पगको आलसरूप जो काग सो जानकी विवेकके चरित्रको सुनती तथा कीर्तन करती भई इन दोनोंको नहीं करने देना सोई तुंड है तिस तुंड करके जानकीके पगमें धाव करता भया ॥ ३ ॥

अप्रीतिकृतहर्षेण जानक्याश्चरणांबुजे ॥
पातयामास तस्याक्षि शरेणैकेन राघवः ॥ ४ ॥

भाषा—आलसरूप काग जानकीको नित्य मना करता भया कि तू परमेश्वरकी प्रीति छोड दे. जानकीने दुष्टका वाक्य नहीं माना इसवास्ते उस आलसरूप कागकी प्रीति जानकीमें नहीं है ऐसी अप्रीतिमें जो कागको हर्ष सोई तुंडकी

धार है उसी धार करके जानकीके चरणमें मारता भया तब रामजी एक बाण करके जयंतकी एक आंख काटिके भूमिपर गिराय देते भये ॥ ४ ॥

उपदेशशरणैकं क्रोधाकुलितलोचनः ॥

आलस्यो व्याकुलो भूत्वा क्ररवाक्यादिसंगतौ ॥ ५ ॥

भाषा—किस बाणसे रामजीने आंख काटे उपदेशरूप बाणकरके क्रोध करके रामजीका नेत्र लाल होगया तब आलस्यरूप काग खोटा वचन बोलना ऐसा अनेक प्रकारका बुरा काम तिसकी सभामें ॥ ५ ॥

गतवान्प्राणरक्षार्थं न केनापि सुरक्षितः ॥

पश्चाच्छरणमायातो रामस्य चरणाब्जयोः ॥ ६ ॥

भाषा—अपने प्राणकी रक्षा करने वास्ते जाता भया परंतु किन्हीं दुष्टोंकी सामर्थ्य नहीं भई कि रक्षा कर सके तब रामजीके चरणको शरण आया ॥ ६ ॥

शौर्यार्जयोश्च तन्दृष्ट्वा रक्षित्वा राघवोऽत्यजत् ॥

तदा गतः समाजग्मुर्दुष्टकर्मादिराक्षसाः ॥

चित्रकूटस्थितं ज्ञात्वा रामं सत्यपराक्रमम् ॥ ७ ॥

भाषा—कैसे रामके चरण हैं एक तो शररूप है, दूसरा कोमलतारूप है, रामजी शरण जानके कागके प्राणकी रक्षा करते भये. तब काग चला गया तब दुष्टकर्म पेस्तर वर्णन हुए जो राक्षस सो चित्रकूटपर रामजीकूं टिके जानकर रामजीके सामने आते भये ॥ ७ ॥

अर्दितुं सहसोद्योगं चक्रुर्मरणकाक्षिणः ॥

सद्धर्मा मुनयश्चैव चित्रकूटवनाश्रिताः ॥ ८ ॥

भाषा—राक्षस जलदी मरणकी इच्छा करके रामजीको दुःख देनेवास्ते उपाय करते भये तथा चित्रकूटके वनमें रहनेवाले सुंदरधर्मरूप जो मुनि हैं वो भी ॥ ८ ॥

तेऽपि प्रापुर्महादुःखं पीडिता राक्षसैस्तथा ॥

तान्पीडितान्विलोक्याशु रामस्तत्याज तं गिरिम् ॥ ९ ॥

भाषा—राक्षसोंसे पीड़ा पायके दुःखी होते भये रामजीने विचार किया कि हमारे वास्ते राक्षस आते हैं सो मुनिलोग भी दुःख पाते हैं हम चित्रकूटपर नहीं होते तो राक्षस रोज यहां नहीं आते ऐसा विचारके और मुनियोंको दुःखी देखके चित्रकूट त्यागिके दूसरे वनकूं चले ॥ ९ ॥

शत्रुत्रयाणां विजयं चित्रकूटं रघूत्तमः ॥

तत्याज स्ववशं ज्ञात्वा नैते मां जयितुं क्षमाः ॥ १० ॥

भाषा—काम क्रोध लोभ इन तीनों वैरियोंको जीतनारूप जो चित्रकूट तिसकूं अपनी वश जानके रामजी ये वैरी हमें नहीं जीत सकेंगे ऐसा जानिके चित्रकूटको त्यागते भये ॥ १० ॥

कामादिसारं संगृह्य भूभारहरणाय च ॥

रक्षोविनाशनं चैव तैर्विना न भविष्यति ॥ ११ ॥

भाषा—रामजीने विचारा कि कामका सार सुख, लोभका सार संसारमें अपनी स्तुति होना, क्रोधका सार वैरीको मारनेमें दया नहीं करना इन तीनोंका थोरा थोरा सार भूमिके भार नाश करने वास्ते लेते भये इन तीनों सारोंके विना राक्षसोंका नाश नहीं होगा ऐसा विचार करके ॥ ११ ॥

एवं विचार्य सहसा जगामात्रेथाश्रमम् ॥

मार्गं रुद्धा विराधस्तु ततस्तस्य पुरः स्थितः ॥ १२ ॥

भाषा—रामजीने ऐसा विचार किया कि अब मुनियोंके पास चलना, तो प्रथम अत्रिमुनिके आश्रमकूं चलते भये, तब रामजीका रस्ता घेरके रामजीके सामने विराधनाम राक्षस खड़ा होगया ॥ १२ ॥

राधः सदुपदेशश्च तेन यो विगतो भुवि ॥

सविराध इति ख्यातो भ्रमो भयविवर्द्धनः ॥ १३ ॥

भाषा—सुंदर काजके उपदेशकूं राध कहते हैं, शास्त्रमें उसी राधसे दूर होजावे तिसका नाम विराध है, भयको बढ़ानेवाला जो भ्रम है उसका नाम विराध है ॥ १३ ॥

जानकी तेन सन्नीता ब्रह्मभक्तिश्च शाश्वती ॥

अतो रामेण तरसा हतः प्राप्ता च जानकी ॥ १४ ॥

भाषा—सो विराध जानकीको हरि लेगया, इसवास्ते जलदी विराधको मारके रामजी जानकीको ले आये ॥ १४ ॥

तं हत्वा रामचन्द्रश्च जगामात्रेः शुभाश्रमम् ॥

न सन्ति शत्रवो यस्य जन्मतस्त्रय एव ते ॥ १५ ॥

भाषा—रामजीने तिस विराधको मारके सुंदर जो अत्रिमुनिका आश्रम तिसपर जाते भये, जन्मसे काम क्रोध लोभ ये तीन शत्रु जिसके नहीं है ॥ १५ ॥

सोऽत्रिमुनिः समाख्यातः शीलो ब्रह्मसखा महान् ॥

निंदा न जन्मतो यस्याः सानसूयेति कथ्यते ॥ १६ ॥

भाषा—तिनको अत्रिमुनि शास्त्रमें कहते हैं, सो अत्रिमुनि शीलका नाम है, शील ब्रह्मका बड़ा मित्र है जन्मसे जिसकी हृदयमें जीवमात्रकी निंदा नहीं है उसको शास्त्रमें अनसूया कहते हैं ॥ १६ ॥

शीलवृत्तिर्वरा श्रेष्ठा मुनिपत्नी पतिव्रता ॥

सोऽत्रिः संपूजयामास स्वस्वभावोद्भवैर्गुणैः ॥ १७ ॥

भाषा—शीलकी वृत्तिका अनसूया नाम है, बड़ी श्रेष्ठ है, शीलरूप अत्रिमुनि जिनकी स्त्री है, शीलको छोड़के दूसरी जगह अनेक दुःख पावे तो भी नहीं जाती, शीलरूप अत्रिमुनि अपने स्वभावसे उत्पन्न गुण करके रामजीको पूजन करते भये ॥ १७ ॥

जानकीं शिक्षयामास स्ववृत्तिं मुनिवल्लभा ॥

सत्सभान्वेषणं प्रेम दुःस्वभाववनेऽभवत् ॥ १८ ॥

भाषा—अत्रिमुनिकी प्यारी जो शीलकी वृत्ति अनसूया सो अपनी बड़ी उत्तमवृत्ति जानकीको सिखाती भई खोटा स्वभावरूप वनमें जीवको मोक्ष करनेवाली सभाको प्रेम करके सोध लगाना ॥ १८ ॥

रामचन्द्रस्य भ्रमणं पितृवर्षप्रमाणतः ॥

पत्नीभ्रातृसमायुक्तो जन्माग्निवारिदः प्रभुः ॥

शरभंगं मुनिन्द्रष्टुं जगाम रघुनन्दनः ॥ १९ ॥

भाषा—सोई रामजीको वर्ष १४ वनमें भ्रमण करना भया है, कैसे रामजी हैं जानकी लक्ष्मणसंयुक्त हैं, तथा जन्मवाधारूप जो अग्नि तिसको बुझानेवास्ते मेघरूप है, सो रामजी शरभंगमुनिका दर्शन करने वास्ते शरभंग मुनिके आश्रम-पर गये ॥ १९ ॥

तेजसा शरभंगेन पूजितो जानकीपतिः ॥

शौचाद्याचारसाहित्यैस्सेपां प्रीतिः स्तुतिः कृता ॥ २० ॥

भाषा—तपका तेज सोई शरभंग मुनि है सो मुनिने शौच आचार आदि और उत्तम उत्तम कर्म हैं तिन्हों करके रामजीका पूजन किया, तथा राम लक्ष्मण जानकी उनके चरणमें बड़ी प्रीति की, सोई शरभंगमुनि रामजीकी स्तुति करते भये ॥ २० ॥

कौशलप्रीतिरचिता चिताग्नी रामसंगतिः ॥

दग्ध्वा देहं मुनिः शीघ्रं विवेके राघवेऽविशत् ॥ २१ ॥

भाषा—रामजीमें बड़ी चतुर प्रीति उस प्रीतिकी चिता बनाय तथा राम-जीकी संगति सो अग्नि भई है ऐसी सुंदर उत्तम चिता अग्निसे भावरूप देहका भस्म करके विवेकरूप रामजीमें शरभंग मुनि मिल गये ॥ २१ ॥

अविचारसुतीक्ष्णेन कृत्वा संभाषणम्प्रभुः ॥

सन्मार्गमुपदिश्याशु सुतीक्ष्णे मुनिसत्तमे ॥ २२ ॥

भाषा—रामजीके विचारसे रहित कर्म सोई सुतीक्ष्ण मुनि है तिससे संभा-षण करके सुंदर धर्मका रस्ता सुतीक्ष्णको बतायके ॥ २२ ॥

रामो जगाम वेगेन कुंभजस्यानुजाश्रमम् ॥

मानवृद्धेश्च जीवस्य कदापि रघुनन्दनः ॥ २३ ॥

भाषा—जलदी रामजी अगस्त्य मुनिके छोटे भाईके आश्रमपर जाते भये कभी जीवके अभिमानकी वृद्धि होती है सोई अगस्त्यका भाई है ॥ २३ ॥

दीनस्वभावो जीवानां सोऽगस्त्यो मुनिसत्तमः ॥

मानवृद्धिः कदा तस्य सोऽगस्त्यस्यानुजः स्मृतः ॥ २४ ॥

भाषा—जीवोंका स्वभाव बड़ा गरीब है सोई अगस्त्य मुनि है जावाके कभी मानकी वृद्धि होती है सो अगस्त्यका छोटा भाई है ॥ २४ ॥

तस्मै सन्मार्गमुद्दिश्य कुंभजाश्रममागतः ॥

पूजितः कुंभजेनैव रामो दीनदयागुणैः ॥ २५ ॥

भाषा—तिस अगस्त्यके भाईकुं ईश्वरका भजनरूप रस्ता बतायके रामजी अगस्त्य मुनिके आश्रम पर आये, जीवोंका दीन स्वभाव जो अगस्त्य है सो दीनके गुण दया आदि बड़े उत्तम धर्म तिस करके रामजीका पूजन करते भये ॥ २५ ॥

अगस्त्य वचनाद्रामो जग्राहैन्द्रं महद्भनुः ॥

राक्षसानां विनाशाय समतालक्षणं विभुः ॥ २६ ॥

भाषा—रामजीने अगस्त्यका वचन मानकर राक्षसोंका नाश करनेवास्ते सम-रूप इन्द्रका धनुष ग्रहण करते भये ॥ २६ ॥

अगस्त्याज्ञा च संगृह्य रामो गोदावरीं ययौ ॥

या ददाति स्वयं गां वै निर्मलां सततं स्थिताम् ॥

दृष्टिम्ब्रह्मस्वरूपे च सा वै गोदावरी स्मृता ॥ २७ ॥

भाषा—जो कोई वस्तु आपहीसे ब्रह्मके स्वरूपमें नित्य वास करनेवाली और निर्मल दृष्टि देवे उसकुं गोदावरी नदी शास्त्रमें कहते हैं सो रामजी अगस्त्यमुनिकी आज्ञा पाएके ऐसी गोदावरी नदीकुं जाते भये ॥ २७ ॥

उदासीनमतिर्ब्रह्मन् सा वै गोदावरी नदी ॥

विहर्षो मन्दभावश्च गोदावर्यास्तदौ स्मृतौ ॥ २८ ॥

भाषा—हे भगवन् ! संसारमें उदासीनमति राखना कि संसाररूप बंदीघरसे मुझे कब छुड़ावोगे ऐसी मति जो है सोई गोदावरी नदी है संसारके सुखरूप चरित्रको देखके हर्ष नहीं मानना तथा पशु सरीखे अपने देहमें मंदता हानि मानना ये दोनों गोदारीके तट हैं ॥ २८ ॥

अनुद्वेगजलेनैव पूर्यमाणा दिवानिशम् ॥

क्षमालंबं च रामस्य लक्ष्मणस्य सुकोमलम् ॥ २९ ॥

भाषा—दुःखको पायके जीव उद्वेगको न प्राप्त होवे सो गोदावरीका जल है तिस जल करके रातदिन पूर्ण रहती है. क्षमाका आलंब तो रामजीका और कोमलस्वभाव लक्ष्मणका ॥ २९ ॥

सत्संगस्मारिणी बुद्धिः सा बभूव द्रयोस्तदा ॥

तत्रानंदयुते वासे संस्थिते रघुनन्दने ॥ ३० ॥

भाषा—इन दोनों लक्षणों करके दोनों भाइयोंकी रातदिन सत्संगके स्मरणमें बुद्धि होती भई, तिस गोदावरीके तटपर आनंदसे रामजीको स्थित भये संते ॥ ३० ॥

किंचित्कालं व्यतीतं च सुखमानंदचिन्तनम् ॥

दुर्मतेस्तनया ऋरा दुःसंगेच्छातिरूरिणी ॥ ३१ ॥

भाषा—आनंदरूप भगवान्‌को चिंतना करते सन्ते दुर्मति जो, कैकसी तिसकी लडकी खोटे कर्मकी संगति करनेकी इच्छा बड़ी क्रूर ॥ ३१ ॥

आजगामातिवेगेन रावणस्य सहोदरी ॥

रामस्य सन्निधिं दुष्टा दुष्टकामेन तापिता ॥ ३२ ॥

भाषा—ऐसी रावणकी बहिन शूर्पणखा बड़े वेगसे रामजीके सामने आती भई रामजीका सुंदर कर्म देखके उसको दुष्ट कर्म मालूम पडा सो दुष्टकर्म कामदेव करके जलि रही है ॥ ३२ ॥

उवाच वचनं स्निग्धं पतिर्मे भव राघव ॥

सुखं भोक्ष्यसि चात्यन्तं मया नीतं निरंतरम् ॥ ३३ ॥

भाषा—हँसके रामजीसे बोली हे रामजी ! तुम मेरे पति होवो मैं संसारमें ऐसा सुंदर सुंदर बुरे कर्मका सुख ले आऊंगी उस सुखकूं आप बहुत करके भोगेंगे ॥ ३३ ॥

इत्येवमुक्तस्तु तया रघूत्तमः प्रोवाच तामस्मि सपत्निक्रे ह्यहम् ॥

सहोदरोऽयं मम ते पुरः स्थितः करिष्यते ते सकलं विचिंतितम् ॥ ३४ ॥

भाषा—शूर्पणखा करके ऐसे कहे जो रामजी हैं सो बोलते भये, कि हे दुःसंगकी इच्छा मेरे तो स्त्री है, तेरे सामने ये हमारा भाई खड़ा है सो तेरा सम्पूर्ण विचार सिद्ध करेगा रामजीने विचार किया कि यह दुःसंगसे छूट जावे तो अच्छा होवे इस वास्ते संतोषरूप लक्ष्मणके पास भोज देते भये कि संतोषकी संगति पायके इसकी बुद्धि निर्मल हो जावेगी ॥ ३४ ॥

रामेण प्रेरिता बाला सा ययौ लक्ष्मणान्तिकम् ॥

तिरस्कृता लक्ष्मणेन पुनरायात्तदन्तिकम् ॥ ३५ ॥

भाषा—रामजीकी आज्ञा पायके लक्ष्मणके पास गई, लक्ष्मणने विचार किया कि यह जन्मजन्मांतरकी बिगडी है इसकूं मैं कुछ शिक्षा भी करूंगा तो मेरी शिक्षा मानेगी नहीं इसवास्ते पास नहीं आने दी तो फिर रामजीके सामने गई ॥ ३५ ॥

भ्रम्या विभ्रामिता तत्र श्रुतवत्या पुनः पुनः ॥

प्रदुद्रावातिवेगेन भक्षितुं जनकात्मजाम् ॥ ३६ ॥

भाषा—राम लक्ष्मणने उसके कर्म सुनियोंसे पहिले सुन रखे थे सोई श्रवणरूप जो भ्रमी नाम हिंडोला है तिस हिंडोलना करके बारंवार रामजीके पाससे लक्ष्मणके पास लक्ष्मणके पाससे रामजीके पास फिरती भई, तब परमेश्वरकी भक्तिरूप जो जानकी तिसकूं खानेवास्ते दौडती भई खाना क्या है जानकीका ईश्वरमें प्रेम है उसको बिगाड देना ॥ ३६ ॥

दुरालापदुराचारौ तच्छ्रोत्रौ लक्ष्मणस्तथा ॥

चकर्त तत्क्षणे शीघ्रं नासिकां चापि दुर्गमाम् ॥ ३७ ॥

भाषा—तब लक्ष्मण क्रोध करिके जलदी शूर्पणखाके दो कान शुभ कर्ममें जो प्रीति है सोई तरवार है तिस तरवारसे काट लेते भये, कैसे कान हैं दुष्ट-वचन साधुओंको शूर्पणखा बोलती है, एक कान तो खोटा बोल है, दूसरा कान सज्जनोंको अनेक उपाय करिके खोटा आचार सिखानेका विचार करती है॥ ३७॥

दुराश्रवणप्रेमाढ्यां शुभप्रीत्यासिना सुधीः ॥

श्रोत्रादिवासनायुक्तै रक्तैश्चैव कुकर्मभिः ॥ ३८ ॥

भाषा—तथा बड़े दुःखसे भगवान् की चढी वस्तुकी सुगंधि लेना ऐसी नाक-जी काट लेते भये । रातदिन शूर्पणखा खोटे कर्मकी कथा सुनती है सोई कान हे दुष्ट संगतसे कान आदि इंद्रिय भ्रष्ट हो गईं उनकी वासनाका अर्थ तथा खोटी इन्द्रियसे खोटा कर्म करना ये दोनों रक्त हैं उसी रक्त करके शूर्पणखा लाल होगई है । इन दो श्लोकोंका अर्थ मिला है इसकूं व्याकरणमें युग्म कहते हैं॥ ३८

रक्तांगी सा प्रदुद्राव प्राप्ता खरसभास्थलम् ॥

खरस्याग्रे निपतिता रुरोद बहु सुस्वरम् ॥ ३९ ॥

भाषा—शूर्पणखा उस रक्तसे लाल होके पेस्तर वर्णन भये जो खर आदि राक्षस तिन्होंकी कुमतिरूप सभा है तिस सभामें शूर्पणखा गई खरके आगे पडके बड़े उच्चस्वरसे रोने लगी ॥ ३९ ॥

खरादिभिश्च संपृष्टा वर्णयामास सर्वशः ॥

रामलक्ष्मणयोः कृत्यं नासिकाकर्णकृन्तनम् ॥ ४० ॥

भाषा—खर आदि राक्षस शूर्पणखासे पूछते भये तब राम लक्ष्मणका कर्म तथा अपनी नाक कानके काटनेका हाल कहती भई ॥ ४० ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे पं० शिवसहायबुधविरचिते आरण्यकाण्डे संवर्त-
वरतन्तुसंवादे प्रथमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ १ ॥

संवर्त उवाच ।

जारद्यूतमदापाना आययुः खररूपिणः ॥

चतुर्दशमहासैन्यैरेषां प्रीतिसमुद्भवैः ॥ १ ॥

भाषा—वस्तन्तु मुनि फिर बोलते भये जार, द्यूत, मदका पान आदि लेके पहिले वर्णन भये इन सब बुरे कर्मोंका रूप जो खर आदि राक्षस सोई जार द्यूतादि कर्मोंकी अनेक प्रकारकी प्रीतिसे उत्पन्न हुए जो बुरे कर्म बहुत तिनमेंसे १४००० हजार सेना लेके रामजीसे युद्ध करनेको आते भये ॥ १ ॥

जानकी भयसंयुक्ता छायामभ्यासनिर्मिताम् ॥

जगाम लक्ष्मणेनैव सार्द्धं सा तरसा गुहाम् ॥ २ ॥

भाषा—इन दुष्टोंको देखके जानकी डरके नित्य भगवान्‌में मिलनेके वास्ते अभ्यास करती हुई उस अभ्यास करके बनाई जो भगवान्‌की बहुतही थोड़ी छायारूप रूपा सोई गुहा है तिस गुहामें लक्ष्मणको संग लेके गई ॥ २ ॥

गुहागतां निरीक्ष्यैव रामो जनकनन्दिनीम् ॥

जघान खरसैन्यन्तं क्षणैकेन रघूत्तमः ॥ ३ ॥

भाषा—गुहामें प्राप्त हुई जानकीको रामजी देखके एक क्षणमें खरकी सेनाको मारते भये ॥ ३ ॥

हतसैन्यास्तु ते दैत्या रामं हन्तुं समुद्यताः ॥

तेऽपि रामेण निहताः पतिताः पृथिवीतले ॥ ४ ॥

भाषा—अपनी सेनाको मरी देखके राक्षस सब रामजीके मारनेके वास्ते दौडते भये तिन राक्षसोंको रामजीने मार डाला कोई राक्षस भूमिपर मूर्च्छित हो पड गये ॥ ४ ॥

हतेषु तेषु सर्वेषु राक्षसेषु खरादिषु ॥

तत्सैन्यमपि दृष्ट्वा सा निहतं पतितं भुवि ॥ ५ ॥

भाषा—शूर्पणखाने सेना सहित खर आदि सब राक्षसोंको मरा जानके तथा मूर्च्छित पृथ्वीमें पडा देखके ॥ ५ ॥

दुःखिताश्रु विमुञ्चन्ती पतिता स्वलिता पथि ॥

रुदती लक्ष्मणेनैव छिन्नकर्णान्तनासिका ॥ ६ ॥

भाषा—तब शूर्पणखा लक्ष्मण करिके नाक कान कटी हुई दुःखित रोती गिरती पड़ती हुई ॥ ६ ॥

जगाम वेगेन सहोदरीदरीदुःकर्मप्रीतिस्थितिमुत्तमाम्पुरीम् ॥

लंकाम्मनोरावणपाणिपालितां सभास्थितं वाक्यमुवाच भ्रातरम् ॥७॥

भाषा—दुष्ट कर्ममें हठपूर्वक ठहरनेवाली शूर्पणखा रावण करके पालित ऐसी लंकापुरीमें शीघ्र गई, हठसे दुष्ट कर्ममें चेष्टारूप जो मनरावण आदि राक्षसों करिके शोभित रावणकी सभा तिस सभामें बैठा जो रावण तिससे शूर्पणखा बोली ॥ ७ ॥

त्वं क्रूरबुद्धे मदपानमादितो न बुध्यसे शत्रुगणं समागतम् ॥

विकर्त्तयित्वा मम कर्णनासिकां सहानुजेनैव सपत्निकः सुखी ॥ ८ ॥

भाषा—हे दुष्ट ! मदिरा पीके तू मत्त होगया है, तेरा नाश करनेवाला वैरिगण आय गया, परंतु तुझे मालूम नहीं है, तेरा वैरी अपने भाईसे मेरी नाक कान कटायके सुखसे भ्राता स्त्रीसहित गोदावरीपर बसता है ॥ ८ ॥

पुत्रौ दशरथस्यैव अयोध्याधिपतेः शुभौ ॥

रामलक्ष्मणनामानौ राक्षसान्हंतुमागतौ ॥ ९ ॥

भाषा—अयोध्याके राजा दशरथ तिसके पुत्र दो हैं राम १ लक्ष्मण २ यह नाम है, राक्षसोंका नाश करनेके वास्ते आये हैं ॥ ९ ॥

ताभ्यां किमर्थं ते नासा कर्णौ चैव विकर्त्तितौ ॥

वर्णयामास सर्वं सा चरितं तस्य चात्मनः ॥ १० ॥

भाषा—मन रावण पूछता है तेरा कान नाक उन दोनोंने किस वास्ते काटे, तब शूर्पणखा अपना चरित्र तथा रामजीका चरित्र वर्णन करती है ॥ १० ॥

विचार्य हृदये स्वीये रावणः क्रूरशासनः ॥

किंचित्संस्मृत्य चात्मानं ज्ञानदृष्ट्या सुरोत्तमः ॥ ११ ॥

भाषा—शूर्पणखाका वचन सुनके बड़े कठिनसे सिखाने योग्य जो रावण असुरोंमें उत्तम सो ज्ञानदृष्टि करके अपने आत्माको विचारके कि मैं ऐसे सर्वेश्वरका पार्श्ववती हूं ॥ ११ ॥

रूपभक्तेश्च जानक्या सौंदर्यं ब्रह्मभावनम् ॥

तेन कामेन संतप्तो ममाप्येवं भवेत्कदा ॥ १२ ॥

भाषा—कैसा रावण है ब्रह्मकी भक्तिरूप जानकी तिसकी सुंदरता जो है सोई ब्रह्ममें भाव है, उस ब्रह्मके भावरूप कामदेव करके बहुत तप्त होरहा है यह विचारता है कि ऐसा ब्रह्मका भाव मेरेभी कभी हो जावे ॥ १२ ॥

तदाहं भवसंसारान्मुक्तो यास्यामि स्वां गतिम् ॥

एवं निश्चित्य मनसा हर्तुकामश्च जानकीम् ॥ १३ ॥

भाषा—तब मैंभी संसारसे छूटके अपनी गतिमें चला जाऊं ऐसा अपने मनमें निश्चय करके जानकीको हरण करनेवास्ते गया ॥ १३ ॥

रथारूढो जगामैको रात्रौ कामविमोहितः ॥

मदान्धतायां प्रययौ मारीचस्यान्तिकं द्रुतम् ॥ १४ ॥

भाषा—रात्रिको ब्रह्ममें भावरूप कामसे मोहित मनरूप रावण अभिमान करके अंधकाररूपी रात्रिमें रथमें बैठके अकेला जलदी अहंकाररूप जो मारीच तिसके सामने गया ॥ १४ ॥

मारीचस्तं ददर्शाथ दुराचाररथे स्थितम् ॥

तद्धर्षवाजिभिर्युक्ते गर्द्धभैश्च कुकर्मभिः ॥ १५ ॥

भाषा—कुकर्मरूप खचर करिके तथा रथके हर्षके बढानेवाले जो घोडे तिन करिके संयुक्त जो रावण भ्रष्टरूपी आचार रथमें बैठके रावण मारीचके पास गया, तिसकूं मारीच देखता भया ॥ १५ ॥

समुत्थायादरं चक्रे पृष्ठोवाच दशाननः ॥

भगिनीदुर्दशां चैव खरादीनां वधं तथा ॥ १६ ॥

भाषा—रावणको देखके मारीचने उठके आदर किया, और आनेका कारण रावणसे पूछा, तब रावण शूर्पणखाकी दुर्गति तथा खर आदि राक्षसोंका मरण सब कहने लगा ॥ १६ ॥

जानकीहरणार्थाय समायातस्तवांतिकम् ॥

विचित्रमृगरूपस्त्वं भव तात मयेरितः ॥ १७ ॥

भाषा—कि जानकीको मैं हरण करूंगा, इस वास्ते तुमारे पास मैं आयाहूँ, हे भाई ! हमारी आज्ञा तुम मानिके चित्रविचित्र मृग बनो ॥ १७ ॥

श्रुत्वा दशाननोक्तिं च मारीचो मानगर्वितः ॥

स्वनाशभयभीतेन कर्मणा तं व्यबोधयत् ॥ १८ ॥

भाषा—बड़ा अभिमानी जो मारीच उसने रावणका वचन सुनके कहा कि हे रावण ! जो खोटेकर्म तुमने विचारे हैं तिस करके मेरा मरण होगा, और तुम दुःख पावोगे ॥ १८ ॥

बोधितोऽपि दशग्रीवो न बुबोध महाबली ॥

भयाद्बभूव मारीचः कुविचारो मृगोऽद्भुतः ॥ १९ ॥

भाषा—बड़ा बलवान् जो रावण है सो मारीचके वाक्यको सुनके नहीं माना तब मारीचने जाना कि जो मैं फिर कुछ ज्ञान देऊंगा तो मुझे मार डालेगा, ऐसे भयसे खोटा विचाररूप मृग होगया ॥ १९ ॥

कुमार्गतनयैर्युक्तः परपीडादिरोमभिः ॥

भूरिभिर्दुःखदैः पादैः कुवाक्याच्छलवंचनैः ॥ २० ॥

भाषा—खोटा मार्ग जो है सोई दुष्ट पुरुष है तिसके दूसरे जीवोंको दुःख देनेवाले आदि पुत्र जैसा ईर्षण मत्सरता चुगली इन आदि और जो दुष्ट हैं सोई रोम भये हैं तिन रोमों करके युक्त है, और खोटा वचन बोलना, छल करना, कपट करना, ठगई करना ये चार पग हैं इन्हों करके युक्त मारीच है ॥ २० ॥

कुरावकुशला शोभा कुतृष्णाबिन्दुरंकितः ॥

सत्तिरस्कारपुच्छेन संयुतोऽधर्मचंचलः ॥ २१ ॥

भाषा—खोटा वाक्य बोलनेमें चतुराई सोई मारीचके देहकी शोभा है, बुरे कामोंकी बहुत तृष्णा सोई बिंदु है तिसका काला पीला सफेद आदि अनेक प्रकार करके चित्र विचित्र होरहा है, सत्पुरुषोंका तिरस्कार सोई पूंछ है

तिस पूंछ करके युक्त है अधर्म सोई चंचलस्वभाव है तिस करके बहुत चंचलायमान है ॥ २१ ॥

सदानादरहास्याभ्यां शृंगाभ्यां शोभितः खलः ॥

जगाम रामवसतिं तन्दृष्ट्वा जनकात्मजा ॥ २२ ॥

भाषा—सुंदर कर्मको जैसा विद्यादान तलाव कूवा धर्मक्षेत्र आदि और कर्म तिनका अनादर तथा हँसी करना ये दो सींग हैं, ऐसी सींग करके खल मारीच शोभित होरहा है, ऐसा रूप बनायके रामजीकी पर्णकुटीके सामने गया, तब तिस मारीचको देखके जानकी ॥ २२ ॥

लुलोभ सहसा देवी स्वकार्यात्किंचिदातुरा ॥

बभूव प्रेरयामास रामं तद्ग्रहणे सती ॥ २३ ॥

भाषा—अपने काजसे थोरी आतुर होके लोभकू प्राप्त हुई जो जानकी उसने विचार किया कि मन रावणका भेजा आया है अब रामजी रावणको मारेंगे तो घर २ प्राणी २ प्रति हमारी वृद्धि होवैगी सबमें हम बसेंगे, रामजीसे जानकी बोली कि इस मृगको पकडके ले आवो ॥ २३ ॥

करुणापृथिवीदुःखसंहारं रघुनन्दनः ॥

प्राप मोहं विचलितस्तद्वधे ग्रहणाय वा ॥ २४ ॥

भाषा—दयारूप जो पृथिवी तिसका दुःख संहार रूप मोहकू रामजी प्राप्त होके मृगको पकडना अथवा मारना इस वास्ते चलते भये ॥ २४ ॥

सन्तोषलक्ष्मणेनैव स्वस्थत्वेन निवारितः ॥

स्वीकृतत्रैव रामेण गत्वा संघातितो मृगः ॥ २५ ॥

भाषा—संतोषरूप लक्ष्मणका संसारमें समस्वभाव है उसी स्वभाव करके रामजीको मना किया, कि आप इस मृगकू मारनेवास्ते मति जावो, लक्ष्मणके विनयको रामजी नहीं मानते हुए और जायके मृगको मारते भये ॥ २५ ॥

आविर्भावं कदा कुर्वन्कदान्तर्ध्यानमेव च ॥

मानप्रीत्या विप्रीत्या च धावन्वेगतं हतः ॥ २६ ॥

भाषा—मृग अभिमानकी प्रीति कभी थोड़ी कभी ज्यादा करके भागता भया सोई मृगका दौडना है तथा गुप्त होना है ॥ २६ ॥

हतो हा लक्ष्मणेतीव प्रोवाच मृगसत्तमः ॥

विवेकं चैव संस्मृत्य तत्तनौ प्रविवेश ह ॥ २७ ॥

भाषा—मृगने मरते समय हा संतोषरूप लक्ष्मण ! मैंने बहुत पाप किया सो आप क्षमा करो ऐसा शब्द बोलता भया सोई लक्ष्मणका पुकारना है, तथा विवेकका स्मरण करके अभिमानरूप मारीच शरीरको त्यागिके रामजीके शरीरमें मिल गया ॥ २७ ॥

अहंकारसुताः सर्वे न मया वर्णितुं क्षमाः ॥

ते पितुर्मरणं दृष्ट्वा रावणं चैव संश्रिताः ॥

चक्रुर्विनाशनं सर्वं सज्जनानां महोद्यमाः ॥ २८ ॥

भाषा—अभिमानरूप जो मारीच है तिसके पुत्रोंको वर्णन करनेमें मेरा सामर्थ्य नहीं है । मारीचका मरण देखके मारीचके पुत्र जो बुरे काज हैं सब इकठ्ठे होके रावणके पास जायके साधुओंका नाश करने लगे ॥ २८ ॥

निहत्य रामो मृगरूपधारिणं त्वचं न लेभे मृगदेहसंश्रिताम् ॥

देहं त्यजन्हा खलु लक्ष्मणेति श्रुत्वा वचस्तस्य विसिस्मिये हृदि २९ ॥

भाषा—रामजी अभिमानरूप मारीचको मारके मृगके देहकी खाल नहीं पाये तथा मृग देह त्यागते समय लक्ष्मणको पुकारता भया, उस शब्दकूं सुनिके रामजीके मनमें बड़ा विस्मय होगया ॥ २९ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे पं०शिवसहायबुधविरचिते आरण्यकांडे मारीचवधे
द्वितीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ २ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

हा लक्ष्मणेति संश्रुत्य जानकी व्यग्रमानसा ॥

दीपार्चिः पवनेनैव बभूव व्यथिता सती ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोले हे संवर्त ! सुनो हा लक्ष्मण ऐसा शब्द सुनके जानकीने विचारि किया कि अभिमान बड़ा बलवान् है, बड़े बड़े योद्धाओंकूं जीत लिया सो मेरे प्राणनाथ जो विवेकरूप रामजी तिनकोभी जीत लिया सो दुःखी होके संतोषरूप लक्ष्मणको अपनी रक्षा करनेवास्ते बुलाते हैं ऐसा विचारसे दुःखी होगई जानकी जैसे हवा करके दीपककी ज्योति कांपती है तैसेही जानकी दुःखी होकर कांपने लगी ॥ १ ॥

उवाच वचनं स्निग्धं किञ्चिच्चलितपौरुषम् ॥

गच्छ लक्ष्मण ते भ्राता राक्षसेनैव पीडितः ॥ २ ॥

भाषा—थोरा लक्ष्मणकाभी पुरुषार्थ चलायमान हो रहा है मारीचका वचन सुनिके ऐसे जो लक्ष्मण तिनसे जानकी बोलीं हे लक्ष्मण ! जलदी जाओ तुम्हारे भाईको राक्षस दुःख देता है ॥ २ ॥

त्वां समाह्वयते शीघ्रं प्राणं त्यक्षामि तं विना ॥

उवाच लक्ष्मणो देवी नैवं भवति कर्हिचित् ॥ ३ ॥

भाषा—दुःखी होके वे तुमकूं पुकारते हैं रामजी विना मैं मरजाऊंगी लक्ष्मण बोले हे देवि ! रामजी कभी दुःखी नहीं होवेंगे ॥ ३ ॥

न हंतारं प्रपश्यामि रामस्य भुवनत्रये ॥

तयोक्तो लक्ष्मणस्तूर्ण मां गृहीतुं समागतः ॥ ४ ॥

भाषा—हे देवि ! तीन लोकमें रामजीकूं मारनेवाला कोई मैं नहीं देखता हूं ऐसा लक्ष्मणका वचन सुनिके जानकीकी बुद्धि मलीन होगई सोई मलीनरूप ग्रहण करनेको जानकीने कहा कि हे लक्ष्मण ! तुम विचारते हो कि विवेकरूप रामजीका अंतकाल होजावे तो हम जानकीको लेलेवें सो ऐसा नहीं होगा ॥४ ॥

एवमुक्ते तु जानक्या गते दूरे च लक्ष्मणे ॥

तिरस्कारकृते दूरे ह्याजगाम दशाननः ॥ ५ ॥

भाषा—ऐसा भेद रूप वचन जानकीके कहनेहीसे लक्ष्मण रामजीके पासकूं चले तब जानकीने लक्ष्मणका तिरस्कार किया सोई दूर है तिसी समय लक्ष्मणको दूर गये तब रावण जानकीके पास आता भया ॥ ५ ॥

महार्जवं च संन्यासं तद्धृत्वागादशाननः ॥

तत्प्रेमभस्मनाच्छन्नं तद्गर्दनकमंडलुम् ॥ ६ ॥

भाषा—बड़ा कोमल स्वभाव सोई संन्यास है तिस संन्यासका रूप धरके जानकीके पास मनरूप रावण आया उस कोमल स्वभावमें प्रेम सोई विभूति है तिस विभूतिको देहमें लगाये है तथा उसी विभूतिमें स्नेह बढ़ाना सोई रावणका कमंडलु है ॥ ६ ॥

शौचं वस्त्रं च संधृत्य शुद्धगैरेयरंजितम् ॥

भिक्षां कपटप्रीतिं च ययाचे जानकीन्तदा ॥ ७ ॥

भाषा—देहमें पवित्रता राखना सोई वस्त्र है शुद्धस्वभाव सो गेरू है उसी गेरूसे शौचरूप कपड़ा रंगे हैं ऐसा रूप धरके कपटप्रीतिरूप भिक्षा जानकीसे मांगता भया ॥ ७ ॥

दयावर्द्धनं निर्दयायाश्च त्यागं ददौ जानकी साधवे कन्दमूलम् ॥

न जग्राह कामातुरो हर्तुकामस्तदा जानकी क्रूरवाक्यं समूचे ॥ ८ ॥

भाषा—तब जानकी दयाको बढ़ानारूप कंद निर्दयको छेड़नारूप मूल साधु जानके रावणकूं देने लगी तब पहिले वर्णन हुआ जो काम तिस काम करके आतुर होरहा है रावण सो जानकीको हरण करनेकी इच्छा करके जानकीकूं चिढ़ानेवास्ते खोटी खोटी बातें बोलता भया ॥ ८ ॥

किं करिष्यसि रामेण वनस्थेन सुदुःखिना ॥

मां भजस्व वरारोहे राक्षसानामर्धाश्वरम् ॥ ९ ॥

भाषा—हे जानकी ! वनमें रहनेवाले रामके संग तुझे कुछ सुख नहीं है राक्षसोंका मालिक जो मैं हूं सो मेरी स्त्री त होजा ॥ ९ ॥

इत्युक्त्वा दर्शयामास स्वरूपं राक्षसाधिपः ॥

पूर्वाक्तं बालकांडे च दशस्यं विंशहस्तकम् ॥ १० ॥

भाषा—ऐसा कहके जानकीकूं रावणने अपना स्वरूप दिखाया कैसा स्वरूप है बालकांडमें पहिले दशमुख बीस भुजाका वर्णन भया है सो स्वरूप ॥ १० ॥

तन्द्वा जानकी भीता श्रुतपूर्वं खलं सती ॥

उवाच धैर्यमालम्ब्य यदि त्वं रावणः खलः ॥ ११ ॥

भाषा—पहिले सुनियोंसे जानकीने रावणका रूप सुनाथा उसी रावणकूँ देखके बहुत डर गई जानकी धीरज धरके बोलीं हे दुष्ट ! जो तू रावण है ॥ ११ ॥

क्षणं तिष्ठात्र मे भर्ता सत्वरश्चागमिष्यति ॥

नाशयिष्यति ते गर्वमित्युक्तश्च तया तदा ॥ १२ ॥

भाषा—तो एकक्षण हमारे सामने तू यदि खड़ा रह तो हमारा पति जलदी आय तेरे अभिमानका नाश करेगा ऐसा वचन जानकी रावणको कहती भई ॥ १२ ॥

गृहीत्वा मूर्द्धजां तस्यां रामपादाब्जसन्नतिम् ॥

करेणैकेन चोरुं च रामरूपनिरीक्षणम् ॥ १३ ॥

भाषा—तब रामजीके. चरणकमलको वारंवार नमस्कारकी प्रीति सोई ईश्वरकी भक्ति जानकीकी चोटी है, तिस चोटीकूँ एक हाथसे पकड़के तथा रामजीके रूपको वारंवार देखना, सोई जानकीकी जंघा है तिस जंघाको ॥ १३ ॥

द्वितीयेनाशु संगृह्य रथमारोप्य कामतः ॥

ययावाकाशमार्गेण ज्ञानशून्यहृदा च सः ॥ १४ ॥

भाषा—तिस जंघाको दूसरे हाथसे पकड़के अपने रथमें बैठायेके ज्ञानसे हीन जो हृदय सोई आकाश है तिस आकाशमार्ग करके जानकीको ले चला ॥ १४ ॥

हा राम राजीवदलायताक्ष त्वया विहीना विधिना कृता ह्यहम् ॥

वियोगचिंता तव पादपद्मयोश्चिरं सदा तिष्ठति मानसे मम ॥ १५ ॥

भाषा—जानकी विलाप करती है हे रामजी ! ब्रह्मदेवने आप करके हमकूँ हीन कर दिया. आपके चरणकमलका वियोग मेरे चित्तमें टिका रहेगा ॥ १५ ॥

एवमादीनि बहुधा विलापानि च जानकी ॥

कुर्वती रथमध्यस्था रक्षोपतिविमर्दनम् ॥ १६ ॥

भाषा—इस प्रकारका बहुत विलाप रावणके रथमें बैठी हुई जानकी करती भई. रावणका तथा दुष्टराक्षसोंका नाश रूप विलाप जानकी करती है ॥ १६ ॥

दुष्टकर्मोद्भवाम्प्रीतिं हठजां स्वपुरीं खलः ॥

सत्त्वरो गन्तुकामश्च लंकां राक्षससत्तमः ॥ १७ ॥

भाषा—दुष्ट कर्मसे उत्पन्न जो प्रीतिरूप हठ तिस करके ठहरना ऐसी जो लंकापुरी तिसको जानकीको ले जानेकी इच्छा की ॥ १७ ॥

दुर्लक्षणो जटायुश्च दुर्ज्ञानोद्भवमामिषम् ॥

दुर्वाक्यतुंडेन सदा यो भुनक्ति निरंतरम् ॥ १८ ॥

भाषा—तब दुष्ट जीवोंका लक्षण जो है सोई जटायुनाम गीध है तथा दुष्ट ज्ञान जैसे विचारना कि चोरीमें धन कमाना, परस्त्री भोगना इन आदि और अनेक बुरे कर्म हैं तिन्हों करके उत्पन्न जो कर्म सोई मांस है खोटा वचन बोलना सोई चोंच है, ऐसे चोंच करके उस मांसको रोज जटायु गीध खाता है ॥ १८ ॥

दुश्चेष्टेहाकृतौ पक्षौ तत्सुतौ चरणौ स्मृतौ ॥

एतादृशो जटायुश्च कृत्वा तेन सुभाषितम् ॥ १९ ॥

भाषा—दुष्ट कर्ममें चेष्टा तथा दुष्ट कर्म करनेकी इच्छा ये दोनों जटायुके पक्ष हैं इन दोनों चेष्टा तथा इच्छाके जो पुत्र नरकमें पडना तथा कुयोनिमें जन्म लेना ये दोनों जटायुके दो पग हैं ऐसा जटायु रावणसे संभाषण करके ॥ १९ ॥

पातितो रावणस्तेन सुवाक्यसंगरे रथात् ॥

पुनश्चोत्थाय वेगेन गृहीत्वा जनकात्मजाम् ॥ २० ॥

भाषा—सुंदर वचन रूप युद्ध करिके रावणको रथसे जमीनमें जटायुने गिरा दिया तब रावण जलदी उठके जानकीको पकडके रथमें बैठायली क्यों-कि जब रावणको जटायुने गिराया दिया तब जानकीभी रथसे पडगयी थी भागने-वास्ते सो फिर पकडलिया ॥ २० ॥

पक्षौ द्वौ तस्य खड्गेन छित्त्वागात्त्वरितः पुराम् ॥

स्वैश्वर्ये निश्चला बुद्धिर्मेने मे कर्हिचित्कदा ॥ २१ ॥

भाषा—रावण तरवारसे जटायुके दोनों पंख काटके लंकाको जाता भया मनरूप रावण ऐसा विचारता है कि यह मेरा ऐश्वर्य कभी नाशको नहीं प्राप्त होवेगा ॥ २१ ॥

नाशमेष्यति साशोकवाटिका रावणप्रिया ॥

तदुद्भवाः सुखा वृक्षास्तस्यां जनकनंदिनीम् ॥ २२ ॥

भाषा—नाशको नहीं प्राप्त होवेगी ऐसी जो रावणकी बुद्धि सो अशोकबाग है, रावणकी बड़ी प्यारी है उस बगीचामें उत्पन्न भये जो सुख सो वृक्ष हैं तिस बगीचामें जानकीकुं ॥ २२ ॥

स्थापयामास दासीभिर्निन्देर्ष्यासहनादिभिः ॥

कारयित्वाऽवनं तस्याश्चतुर्दिक्षु निशाचरः ॥ २३ ॥

भाषा—जानकीको अशोकबगीचामें टिकाता भया क्या करके ऐसी राक्षसियोंसे जानकीकी रक्षा करायके कैसी राक्षसी हैं परजीवकी निंदा जीवको सुखी देखके अपने हृदयमें दुःखी होना जीवमात्रसे प्रीति नहीं राखना इन आदि और जो बहुत ऐसी मति सो राक्षसी हैं ॥ २३ ॥

निन्देर्ष्यासहनासूयादुर्वाद्याश्च कोटयः ॥

दास्यस्तस्य समाख्याता वर्णितुं नैव ताः क्षमाः ॥ २४ ॥

भाषा—दूसरे जीवकी निंदा ईर्ष्या असहना अक्षमा जीव उपकार करे तो भी निंदा करना जीवोंको दुःख देनेकी इच्छा रूप इन्हीं आदि गिनती रहित इतनी रावणकी दासी हैं ॥ २४ ॥

मृगं हत्वा रघुश्रेष्ठो निवृत्तः स्वाश्रमं प्रति ॥

मार्गे दृष्ट्वा तदायान्तं लक्ष्मणं विह्वलोऽभवत् ॥ २५ ॥

भाषा—अभिमानरूप मृगको मारिके रामजी अपने आश्रमको चले तौ रस्तामें लक्ष्मणको आते देखके रामजी विह्वल होगये ॥ २५ ॥

उवाचाधैर्यसंयुक्तं वचनं रघुनन्दनः ॥

कस्मात्तात त्वया त्यक्ता जानकी मम वल्लभा ॥ २६ ॥

भाषा—अधैर्ययुक्त वचन रामजी लक्ष्मणसे बोले हे भाई ! हमारी प्राणसे प्यारी जानकीको त्यागिके क्यों आये ॥ २६ ॥

उवाच लक्ष्मणः सर्वं कारणं तत्सविस्तरम् ॥

सहते नैव संयातो रामः स्वाश्रममण्डलम् ॥ २७ ॥

भाषा—लक्ष्मण सब प्रकार कारण विस्तारपूर्वक कहते भये तब रामजी लक्ष्मणसहित अपने आश्रमपर आते भये ॥ २७ ॥

विलोक्य जानकीहीनं विललापाकुलेंद्रियः ॥

गंभीर्यस्थैर्यस्वास्तिक्ये चलत्वं किञ्चिदात्मनः ॥ २८ ॥

भाषा—रामजी अपने आश्रमपर आये सो जानकी करके हीन देखते भये तब अपनी शरीरकी स्थिरतासे तथा गंभीर स्वभावसे तथा अपने धर्मसे किञ्चिन्मात्र चलायमान होगये सोई विलाप है ॥ २८ ॥

एवं महाविलापश्च रामलक्ष्मणसंकृतः ॥

गृद्धन्निपतितन्दृष्ट्वा चक्रे प्रश्नोत्तरं हरिः ॥ २९ ॥

भाषा—ऐसा विलाप राम लक्ष्मण करते भये गीधको भूमिमें पड़ा देखके उससे प्रश्न तथा उत्तर करते भये ॥ २९ ॥

अहं दुर्लक्ष्णो गृद्धः पातितो रावणेन वै ॥

जानकीरक्षणे शक्तस्त्वदर्शनजिजीविषुः ॥ ३० ॥

भाषा—जटायु बोले हे रामजी ! दुष्टोंका लक्षणरूप मैं गीध हूं जटायु मेरा नाम है, जानकीकी रक्षा करनेमें मैंने कुछ पराक्रम किया तब मेरेको रावणने पृथ्वीपर गिरादिया, आपके दर्शनकी इच्छा करके अबतक मैं जीता रहा हूं ॥ ३० ॥

इत्युक्त्वा तत्त्यजे प्राणान् गृद्धो रामसमीपतः ॥

रचित्वा प्रेमकाष्ठेन चितामास्थाप्य तं प्रभुः ॥ ३१ ॥

भाषा—गीधने ऐसे वचन रामजीसे कहे पीछे प्राण त्यागता भया, तब राम-

जीका प्रेम जटायुपर बहुत था तथा उसी प्रेमरूप काष्ठ करके चिता बनायके उसी चितामें जटायुको बैठायके ॥ ३१ ॥

ज्ञानाग्निना च तं दग्ध्वा भोजयामास पक्षिणः ॥

तज्जातिजान्महाक्रूरान्दुर्मर्षादीन्सहस्रशः ॥ ३२ ॥

भाषा—ज्ञानरूप अग्निसे जटायुको जलायके उसकी जाति जो दुष्ट कर्मकी भावना, तिसमें उत्पन्न भये जो बड़े क्रूर २ दुःख देनेवाले अमर्ष कहे दूसरेके सुखको देखके जलना इन आदि लेके इनमें जो सुंदर पक्षी बड़े दुष्टोंमें दुष्ट तिन बहुत हजार पक्षियोंको रामजी भोजन करवाते भये ॥ ३२ ॥

सदौपदेशिकैर्धम्मैर्भक्ष्यभोज्यैश्च भूरिशः ॥

भ्रेमतुः कानने वीरौ सतिान्वेषणतत्परौ ॥ ३३ ॥

भाषा—रामजी दुष्ट कर्मोंको ईश्वरके भजनरूप उपदेश देते भये, सोई उपदेश अनेक प्रकारके पकवान हैं तिन करके पक्षियोंको भोजन करायके जानकीके शोधनेके वास्ते दोनों भाई वनमें भ्रमण करते भये ॥ ३३ ॥

सन्निन्दनकबंधेन वेष्टितौ रामलक्ष्मणौ ॥

असत्प्रशंसनारागभुजाभ्यां दैवयोगतः ॥ ३४ ॥

भाषा—सुंदर धर्मकी निंदा करना, ऐसा दुष्ट कर्म सोई कबंध है तथा दुष्ट कर्मकी तारीफ करना और उसी तारीफमें स्नेह करना ये दो कबंधकी भुजा हैं सो दैवयोगसे रामलक्ष्मणको कबंधने अपनी दोनों भुजाके बीच बांध लिया ॥ ३४ ॥

एकं चिच्छेद रामस्तु शिक्षाखड्गेन तद्भुजाम् ॥

सूक्तासिना द्वितीयं च चिच्छेद लक्ष्मणो भुजाम् ॥ ३५ ॥

भाषा—कबंधको रामजी सुंदर धर्म सिखाते भये सोई खड्ग है तिस खड्ग करके रामजी एक भुजा काटते भये और सुंदर वचनरूप तरवारसे दूसरी भुजा लक्ष्मण काटते भये ॥ ३५ ॥

छिन्नौ भुजौ यदा तस्य तदा प्राणं ससर्ज ह ॥

हिंसाविरहितैः काष्ठैर्दयारूपा चिता कृता ॥ ३६ ॥

भाषा—जब कबंधकी दोनों भुजा कटगई तब पहिले कथित जो कबंध है सो प्राण छोडता भया तब रामजीने कबंधको जलाने वास्ते जीवहिंसासे हीन जो कर्म जैसे कथाश्रवण मौन रहना दुष्टका संग त्यागना इत्यादि सब काष्ठ हैं तिस काष्ठसे चिता बनायके कैसी चिता है दयारूप ॥ ३६ ॥

रामेण सह भ्रात्रैव कृपाग्निदाहितोऽसुरः ॥

सद्रूपधारी विमलो ज्ञानानंदो बभूव ह ॥ ३७ ॥

भाषा—लक्ष्मणसहित रामजी कबंधके ऊपर कृपा करते भये उसी कृपारूप अग्निसे कबंधको जलाते भये तब कबंध सुंदर रूप धारण करके ज्ञानमें आनंद भया ॥ ३७ ॥

उवाच वचनं स्निग्धं जानकीप्राप्तिकारणे ॥

अग्रे तिष्ठति राजेन्द्र शबरी भिल्लनंदिनी ॥ ३८ ॥

भाषा—जानकीके प्राप्त होनेका उपायरूप वचन बडा कोमल कबंध रामजीसे बोला कि हे राजेके इंद्ररूप रामचंद्र ! यहांसे अगाडी थोडी दूरपर भीलकी कन्या शबरी रहती है ॥ ३८ ॥

तस्याश्रमं समागच्छ सा ते सर्वं वदिष्यति ॥

इत्युक्त्वा स गतः स्वर्गं सुरेन्द्रभुजपालितम् ॥ ३९ ॥

भाषा—तिस शबरीके आश्रमपर आप जावो तब जानकीके मिलनेकी संपूर्ण वार्ता शबरी आपसे कहेगी ऐसा रामजीसे कहके ईश्वरके शरीरमें जो स्वर्गलोक है इंद्र करके रक्षा हो रही है ऐसे स्वर्गको कबंध गया ॥ ३९ ॥

निश्चय रामोऽपि कबंधभाषितं सलक्ष्मणो लक्ष्मणसेवितांग्रिः ॥

जगाम शीघ्रं शबरीशुभालयं श्रीजानकी जीवनवल्लभो हरिः ॥ ४० ॥

भाषा—रामजी कबंधका वचन सुनके शीघ्रही शबरीके आश्रमको जाते भये ॥ ४० ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे आरण्यकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवर्तंतुसंवादे

तृतीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ३ ॥

इत्यारण्यकांडं समाप्तम् ।

अथ किष्किधाकांडप्रारम्भः ।

वरतन्तुरुवाच ।

कबंधवचनं श्रुत्वा रामो लक्ष्मणसंयुतः ॥

पुनरन्वेषमाणश्च जानकीं विरहातुरः ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि बोले लक्ष्मणसहित रामजी कबंधका वचन सुनके दुःखी होयके फिर खोटे स्वभावरूप वनमें भ्रमण करते भये ॥ १ ॥

महामोहो वनचरः सद्धर्मपशुर्हिसकः ॥

दुहिता तस्य विप्रेन्द्र चंचला मतिरुत्तमा ॥

शबरी सा समाख्याता सज्जनानाञ्च संगतः ॥ २ ॥

भाषा—हे विप्रेन्द्र ! स्नान ध्यान दान जप पूजा विनय नमस्कार इन आदि और जो अनेक प्रकारके सुंदर धर्म तो सब पशु भये हैं तिनको मारनेवाला जो बड़ा मोह सोई भील है जीवोंकी चंचलमति उसकी कन्या है शबरी उसका नाम है सुंदर २ धर्म सो ब्राह्मण है तिन ब्राह्मणोंकी संगतको शबरी करती भई ॥ २ ॥

चकार रामचंद्रस्य भक्तिं सा शबरात्मजा ॥

तदाश्रमं जगामाशु रामो लक्ष्मणसंयुतः ॥ ४ ॥

भाषा—उस संगतिके प्रभावसे रामजीकी भक्ति शबरी करती भई तिसके आश्रमपर लक्ष्मणसहित रामजी जाते भये ॥ ३ ॥

शबरी पूजयामास रामं सभ्रातृकं तदा ॥

स्थैर्यस्वभावसाहित्यैः प्रार्थनेन विशेषतः ॥ ४ ॥

भाषा—शबरीका स्वभाव धर्ममें बहुत स्थिर है अनेक दुःख परे तौभी भगवा-
नका भजनरूप धर्म छोडती नहीं उस धर्मरूप पूजनकी सामग्री करके तथा बहुत प्रार्थना करके लक्ष्मणसहित रामजीका पूजन करती भई ॥ ४ ॥

शरीरं रामप्रेमाग्नौ दहन्वाक्यमुवाच सा ॥

रामाग्रे नलिनीं पश्य सरश्चैव तदुद्भवम् ॥ ५ ॥

भाषा—रामजीका प्रेम शबरीके हृदयमें बहुत है, उसी प्रेमरूप आग्नि करके देह जलायके बोलती भई, हे रामजी ! आपके रस्तेमें एक तलाई है, उसका पंपा नाम है, तथा उसी तलाईसे उत्पन्न भया एक तलाव है, उसका पंपासर नाम है इन दोनोंको आप देखोगे ॥ ५ ॥

किष्किंधां च पुरीं रम्यां प्रवर्षणगिरिन्तथा ॥

आस्ते तस्य गिरेर्मूर्ध्नि सुग्रीवः कपिसत्तमः ॥ ६ ॥

भाषा—तथा बड़ी सुंदर किष्किंधा पुरी तथा प्रवर्षण पर्वत इनकूं आप देखोगे, प्रवर्षण पर्वतके शिखरपर सुग्रीव नाम कपि रहता है ॥ ६ ॥

तं गच्छ जानकीनाथ स ते कार्य्यं करिष्यति ॥

इत्युक्त्वा स्वतनुं दग्ध्वा गता स्वर्गं हृदालये ॥ ७ ॥

भाषा—हे जानकीनाथ ! तिस सुग्रीवको दर्शन देनेके वास्ते आप जावोगे तब सुग्रीव आपका सब काम करेगा, ऐसा रामजीसे कहके शबरी शरीरको भस्म करके अपने हृदयमें जो स्वर्गपुरी है, उस स्वर्गपुरीको गई ॥ ७ ॥

रामोऽपि त्वरितं प्राप नलिनीम्फुल्लपंकजाम् ॥

शांतिरूपां धैर्यजलां निर्मलज्ञानसन्तटाम् ॥ ८ ॥

भाषा—तथा रामजीभी जीवोंकी शांतिरूप पंपानाम तलाईको जाते भये, कसी तलाई है, धीरजरूप जल करके भरी है, तथा मलरहित जो ज्ञान सोई तिस तलाईके तट हैं ॥ ८ ॥

निःशंकपंकजां स्वच्छां सरश्चैव महासुखम् ॥

न पुनर्जन्मतोयेन संयुतं तच्च राघवः ॥ ९ ॥

भाषा—काम आदि राक्षसोंके भयसे हीन जो स्वभाव पंपाको सोई कमल है, बहुत निर्मल तलाई है, ऐसी जो शांतिरूप तलाईको सुख जो है सोई पंपासर नाम तलाव है, शांतिको सेवन कियेसे वारंवार जन्म नहीं होता, सोई जल है, तिस जलसे तलाव भरा है ॥ ९ ॥

स्नानं चकार ततोये लोकविस्तारणं प्रभुः ॥

प्रवर्षणं गुरुध्यानं शिखरं तद्विचिंतनम् ॥ १० ॥

भाषा—तलावके सुयशको लोक २ में विस्तार रामजी करेंगे, सोई यश विस्ताररूप स्नान उस तलावमें रामजी करते भये, गुरुका रातदिन ध्यान करना सोई प्रवर्षण नाम पर्वत है, रातदिन गुरुदेवका वचन चिंतन करना सोई प्रवर्षण पर्वतका शिखर है ॥ १० ॥

गुरुपदेशस्सुग्रीवस्तद्वियोगेन वालिना ॥

त्रासितो दुःखितोऽत्यन्तं सुचिरं तापतापितः ॥ ११ ॥

भाषा—गुरुदेवका उपदेश सोई सुग्रीव है, गुरुका वियोग सोई वाली है, तिस वाली करके सुग्रीव बहुत दुःख तथा त्रासको प्राप्त भयाहै, तथा बहुत दिन-तक वाली सुग्रीवको अपनी तेजरूप अग्निसे जलाता भया, क्योंकि सब दुःख साधुलोग सह लेते हैं, परंतु गुरुका वियोग क्षणमात्रभी नहीं सहसक्ते ॥ ११ ॥

निरीक्ष्य वीरावायान्तौ प्रेषयामास सत्वरम् ॥

बलवन्तं महावीरं हनुमंतं तदन्तिके ॥ १२ ॥

भाषा—तब प्रवर्षणके शिखरपर बैठा जो सुग्रीव सो राम लक्ष्मणको आते देखके शीघ्रही वीरोंमें बड़ा वीर ऐसा जो हनुमान् तिसको रामजीके सामने भेजते भये ॥ १२ ॥

तृष्णाजनेयं सहसा मोहं श्वाससमुद्भवम् ॥

सुखेच्छा हर्षलांगूलं तन्मग्न्यादिलसत्तनुम् ॥ १३ ॥

भाषा—कैसे हनुमान् हैं तृष्णा तो अंजनी है तथा जीवकी शरीरकी श्वास सो वायु है इन दोनोंके संयोगसे उत्पन्न भये जो हनुमान् इनको मोह नाम है और मोहरूप भी है रामजीके प्रेमका सुख प्राप्त होनेकी इच्छामें हनुमान्को हर्ष बहुत होता है सोई हर्ष हनुमान्की पुच्छ आदि सब अंग है तिसके हर्षमें रात-दिन उन्मत्त रहना आदि जो कर्म है जैसा रामजीकी सेवा इसी प्रकारके कर्ममें मत्त रहना सोई हनुमान्के शरीरकी शोभा है ॥ १३ ॥

किंचित्कुशलविप्रस्य धृत्वा रूपमगात्कपिः ॥

रामान्तिकं प्रगच्छन्तं प्रोवाच कपिसत्तमः ॥ १४ ॥

भाषा—थोड़ा सुख सोई ब्राह्मणका रूप धरके रामजीके पास हनुमान् जाते भये रामजीके दर्शनका प्रेम सोई हनुमान्का रामजीके पास जाना है रामजीके पास जाते जो हनुमान् तिससे सुग्रीव बोले ॥ १४ ॥

यदीमौ वालिना प्रेष्यौ दुष्टौ सम्भ्रमविभ्रमौ ॥

तदा ते चेतनं प्राप्य त्यक्ष्यामीदमहं गिरिम् ॥ १५ ॥

भाषा—जो ये दोनों भ्रम तथा विभ्रम होवें और वालीके भेजे आते होवें तब तुम्हारी चेतनरूप जो अनुशासन तिसकूं पायके मैं इस पर्वतकूं छोड़के भाग जाऊं ॥ १५ ॥

इत्युक्तः कपिराजेन सत्वरं हनुमान्कपिः ॥

आजगामातिहर्षेण रामपादाब्जषट्पदः ॥ १६ ॥

भाषा—ऐसा सुग्रीवने हनुमान्से कहा हनुमान् मुनिके रामजीके पद कमल हैं तिसके रस लेनेमें भ्रमररूप हनुमान् सो बड़े हर्षसे रामजीके पास आते भये ॥ १६ ॥

नमस्कृत्य च द्वौ वीरौ कौ युवां जगतीपती ॥

मुनिवेषेण पृथिवीं चरन्तौ स्वेच्छया बली ॥ १७ ॥

भाषा—राम लक्ष्मणको नमस्कार करके हनुमान् पूछते भये आप दो जने कौन हो ईश्वरकी प्रीतिके पति हो मुनिको रूप धरिके अपनी इच्छासे पृथ्वीमें भ्रमण कर रहे हो ॥ १७ ॥

हनुमद्रचनं श्रुत्वा वर्णयामास लक्ष्मणः ॥

श्रुत्वा तद्वाक्यमतुलं शमरूपं कपीश्वरः ॥ १८ ॥

भाषा—हनुमान्के वचन सुनके सब चरित्र लक्ष्मण कहते भये शम दम यम नियम आचार आदि कर्म लक्ष्मण कहता भया तिस शमरूप लक्ष्मणके वचनको हनुमान् सुनिके ॥ १८ ॥

कथयामास सर्वं हि सुग्रीवापत्तिकारणम् ॥

युवयोर्भविता मैत्री निःशंका यदि राघव ॥ १९ ॥

भाषा—गुरु उपदेशरूप सुग्रीवकी संपूर्ण विपत्ति हनुमान् रामजीसे कहते भये । हनुमान् बोले कि हे रामजी ! आप तो विवेक हो और सुग्रीव गुरुका उपदेश है दोनों जनेकी मिताई जब होवै ॥ १९ ॥

तव तस्य च सर्वं हि कार्यं भवति शोभनम् ॥

इत्युक्त्वा तौ समारोप्य स्वपृष्ठे रघुनन्दनौ ॥ २० ॥

भाषा—तब सब तुम्हारा तथा सुग्रीवका काज होवे । गुरुके वियोगरूप वालीको तो आप मारो और मन रावणके मारनेमें सहाय सुग्रीव करेगा ऐसा हनुमान् कहके रामजीके प्रेमका सुख तिसके हर्षरूप हनुमान्के शरीरकी शोभारूप पीठपर राम लक्ष्मणको बैठायेके सुग्रीवके पास चलते भये ॥ २० ॥

जगाम चंचलमतिर्मग्नपृष्ठे कपीश्वरः ॥

नयित्वा यत्र सुग्रीवस्तत्र वीराववेशयत् ॥ २१ ॥

भाषा—जिस शिखरपर सुग्रीव विराजे थे उसी स्थानपर राम लक्ष्मणको हनुमान् प्राप्त करते भये । इन दो श्लोकोंका एकान्वय है ॥ २१ ॥

चकार मैत्रीन्दुर्भैद्यान्दुर्जनैरिन्द्रियोद्भवैः ॥

मध्ये कृत्वा गुरोर्भक्तिमग्निन्द्रौ गुरुभावनाम् ॥ २२ ॥

भाषा—रामजी तथा सुग्रीव अपनी अपनी गुरुदेवकी भावनारूप मित्रता करते भये, दुष्ट इन्द्रियों करिके उत्पन्न जो बुरे कर्म सो सब दुर्जन हैं तिन्हों करिके दुःखसे काटने योग्य हैं, सहजमें नहीं कट सकेगा गुरुदेवकी भक्तिरूप अग्निको रामजी अपने तथा सुग्रीवके बीचमें रखके मित्रता करते भये, राम सुग्रीवका निश्चय सोई बीच है ॥ २२ ॥

जांबवान् जहृषे तत्र मायाचेष्टोऽतिदुःसहः ॥

तस्य च्छायास्वभावेन नलनीलौ महाबलौ ॥

लघुदीर्घौ तदाकारौ चक्रतुर्हर्षमुत्तमम् ॥ २३ ॥

भाषा—मायाका विचार सोई जांबवान् हे, बडा कठिन है सो राम सुग्रीवकी मित्रता देखके खुशी भया, तथा जांबवान्की छायाका स्वभाव दो प्रकारका है एक बडा दूसरा छोटा सो नल नील हैं, सोभी बडे हर्षको प्राप्त भये ॥ २३ ॥

हिंसापराधं वसनद्विजभावं च रावणे ॥

भूषणं जानकीत्यक्तन्दर्शयामास वानरः ॥ २४ ॥

भाषा—रावण ब्राह्मण है तिसमें ब्राह्मणका भाव तथा ब्राह्मण मारनेसे ब्रह्म-हत्या होती है येही दोनों गहना तथा वस्त्र जानकीके भये हैं इन दोनोंको पेस्तर रावणके रथमें बैठी जो जानकी त्यागि गयीथी, कारण रावणको ब्राह्मण नहीं मानना, ये तो चांडाल है, तथा रावणके मारेकी हत्याकोभी नहीं डरना ऐसा वस्त्र भूषण सुग्रीव रामजीको दिखाते भये ॥ २४ ॥

दृष्ट्वा तज्जानकीवस्त्रं भूषणं रघुनन्दनः ॥

तच्चिंतनविलापं च तत्क्षणे कृतवान्प्रभुः ॥ २५ ॥

भाषा—पहिले श्लोकमें वर्णन भया जो गहना वस्त्र जानकीका तिसको रामजीने अपने नेत्रोंसे देखिकै जानकीकी चिंता रामजी रात दिन करते भये सोई रामजीका विलाप है ॥ २५ ॥

पश्चात्पप्रच्छ सुग्रीवं कस्माद्वसति कानने ॥

इति पृष्टः समारेभे स्वकार्यकथनं कपिः ॥ २६ ॥

भाषा—ऐसा विलाप करके पीछे सुग्रीवसे रामजी पूछते भये कि दुःस्वभाव-रूप वनमें तुम क्यों बसते हो, रामजी ऐसा पूछते हुए तब सुग्रीव अपना हाल कहने लगा ॥ २६ ॥

उवाच सर्वं कपिसत्तमस्तदा स्वकर्मदुःखं बहुतापवर्द्धनम् ॥

चित्तं समाधाय रघूत्तमस्तदा शुश्राव सर्वं कपिवर्यवर्णितम् ॥ २७ ॥

भाषा—बहुत संतापकी वृद्धि करनेवाला जो अपना कर्म है तिस कर्मको

गुरुका उपदेशरूप जो सुग्रीव है सो सब चरित्र रामजीसे कहता भया, और विवेकरूप रामजी भी, चित्तको स्थिर करिके सुग्रीवका हाल सुनते भये ॥२७॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे किष्किंकाण्डे पं० शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरत-
न्तुसंवादे सुग्रीवरामचंद्राविलासे प्रथमो मोक्षारूढः सोपानः ॥ १ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

विवेकरामचन्द्रेण पृष्टः प्रोवाच राघवम् ॥

सुग्रीवो दुःखितोऽत्यन्तं रामं सत्यपराक्रमम् ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि फिर बोले, रामजीसे पूछा जो सुग्रीव सो बहुत दुःखा होके रामजीसे बोलता भया ॥ १ ॥

वालिन्श्च ममोत्पत्तिं कपीनां चैव विस्तृतम् ॥

अयोध्याप्राप्तराज्याय मुनिस्ते कथयिष्यति ॥ २ ॥

भाषा—हे रामजी ! जब सुमतिरूप अयोध्यामें आप राजगादी पर बैठोगे तब कोई मुनि वालीकी तथा मेरी तथा सब वानरोंके जन्मकी कथा कहेंगे ॥२॥

मम भ्राता रघुश्चेष्ट वालिर्ज्यैष्ठोऽतिबुद्धिमान् ॥

ब्रह्मणा स्थापितो राज्ये कपीनां रघुनन्दन ॥ ३ ॥

भाषा—हे रामजी ! गुरुका उपदेश रूप तो मैं हूं सुग्रीव मेरा नाम है और मेरा बड़ा भाई गुरुसे वियोग होता है सो वह वालिनाम है, वालिका कर्म तो मेरे जन्म पछि होता है परंतु वालि तो मेरे पेंस्तर जन्मा है, क्योंकि संयोगसे पहिलेही वियोग जन्मता है सो ऐसे वालीको ब्रह्माने वानरोंका राजा किया ॥ ३ ॥

मनुष्यभावा ये सर्वे गुरौ ते कपयः स्मृताः ॥

मनुष्यभावकर्माणि चासंख्यानि च चंचलाः ॥ ४ ॥

भाषा—जो मनुष्यका कर्म अनेक प्रकारका है, जन्म, मरण, हानि, लाभ, दुःख, सुख आदि और जो बहुत कर्म हैं सो सब गुरुमें देखना, ऐसे अनेक प्रकारके स्वभाव सोई गिनतीसे हीन वानर हैं ॥ ४ ॥

गुरौ कुभावनालोकास्ते ऋक्षा हृदिजा मुने ॥

गुरौ दुर्बुद्धिरत्यन्तं सा किष्किंधापुरी प्रभो ॥ ५ ॥

भाषा—और जुवारी, चोर, व्यभिचारी, नसेबाज, परनिंदक, कृपण इन आदि और जो अनेक बुरे कर्म हैं सो सब ये लक्षण गुरुमें देखना, सोई ऋक्ष हैं तथा गुरुमें बहुत खोटी बुद्धि करना सोई बुद्धि किष्किंधा पुरी है ॥ ५ ॥

तस्यां स्थितो महाबुद्धिर्वाली विगतकल्मषः ॥

यावत्स्वबलसामर्थ्यं तावद्दुर्मतितां गुरौ ॥

जीवानां कारयामास तच्चर्क्षकापिशासनम् ॥ ६ ॥

भाषा—तिस किष्किंधापुरीमें टिकके, बड़ा बुद्धिमान् पापसे रहित ऐसा जो वाली सो वानरोंका राजा होता भया, जहांतक गुरुके वियोगरूप वालीको जोर चला तहांतक जीवोंको गुरुमें खोटी मति कराव दिया, ऐसा वानरोंका तथा ऋक्षोंका राज्य करता भया ॥ ६ ॥

तस्य भार्या रघुश्रेष्ठ तारानाम्नी शुभावलिः ॥

चिंता गुरुवियोगस्य तस्यां जातोंऽगदः सुतः ॥ ७ ॥

भाषा—हे रामजी ! गुरुके वियोगकी चिंता सोई वालीकी स्त्री है तारा उसका नाम है, तिस तारामें वालीके अंगदनाम पुत्र भया ॥ ७ ॥

उपायो गुरुदेवस्य वियोगशमनस्य च ॥

मम भार्या महाराज रुमा नाम्नेति विश्रुता ॥

गुरौ राज्ञा सदा ग्राह्या सा मम प्राणवल्लभा ॥ ८ ॥

भाषा—गुरुके वियोगकी शांति करनेका उपाय जो है सोई अंगद है, हे महाराज ! नित्य गुरुकी आज्ञा विना विचारे ग्रहण करना ये नहीं विचारना कि ये आज्ञा गुरु खोटी देते हैं या भली देते हैं ऐसी मति सो मेरी स्त्री रुमा उसका नाम है ॥ ८ ॥

एवं वालिर्महावीरश्चकार राज्यमुत्तमम् ॥

कपीनां चिरकालं च ममापि प्रीतिवर्द्धनः ॥ ९ ॥

भाषा—इस प्रकारसे वालीने बहुत दिनतक कपियोंका राजा होकर राज्य किया तथा मेरीभी प्रीति बढ़ाई ॥ ९ ॥

एकदा दुंदुभिर्नाम राक्षसो रघुनन्दन ॥

आजगाम निशामध्ये वालिं जेतुन्निशाचरः ॥ १० ॥

भाषा—हे रघुनन्दन ! एकदिन रात्रिमें वालीको जीतने वास्ते दुंदुभी नाम राक्षस आता भया ॥ १० ॥

अभिमानो गुरौ राम दुंदुभिर्वलवत्तरः ॥

गुरौ मानस्य वा प्रीतिः सा निशा रघुनन्दन ॥ ११ ॥

भाषा—जीवोंको गुरुमें अभिमान कि सब संसार छोटा है और हमारे गुरु बड़े हैं ऐसा मान सोई दुंदुभी है, बड़ा बली है, और उसी गुरुके अभिमानकी प्रीति सोई रात्रि है ॥ ११ ॥

तत्सौख्यांधयुता मध्यं सौख्याद्यं हर्षकारणम् ॥

दुंदुभिः क्रोधसंयुक्तोऽथाजुहाव कपीश्वरम् ॥ १२ ॥

भाषा—उसी गुरुदेवके अभिमानकी प्रीतिमें सुख मानना सोई अंधकार है, तिस करके रात्रियुक्त है, उसी प्रीतिके सुखमें बड़ा हर्ष मानना सोई अर्धरात्रि है, ऐसा जो दुंदुभी राक्षस सो क्रोध करके वालीकूं पुकारने लगा अरे दुष्ट ! गुरुके वियोगरूप वाली तूने बहुतसे जीवोंको गुरुसेवासे दूर करके बैठा है सो तुझको मारके सब जीवोंकी गुरुदेवसे मुलाकात कराऊंगा ॥ १२ ॥

युद्धार्थं स्वस्वकार्यार्थं तच्छ्रुत्वा कपिसत्तमः ॥

आगत्य त्वरितं वीरो जघानैकेन मुष्टिना ॥ १३ ॥

भाषा—ऐसे शब्दको सुनिके वाली तो जीवोंको गुरुसे वियोग करने वास्ते और दुंदुभी जीवोंको गुरुसे मिलाप कराने वास्ते युद्ध करते भये, वाली एक हाथकी मुठी करके दुंदुभीको मारने लगा ॥ १३ ॥

ताडितो मूर्खतामुष्ट्या दुद्रवाहृद्वेगतः ॥

स्वगुहां गर्ववृद्धिं वै आविवेश त्वरान्वितः ॥ १४ ॥

भाषा—जीवोंकी मूर्खबुद्धि सोई वालीके हाथकी मुष्टि है तिस करके मारा गया जो दुंदुभी है सो बड़े वेगसे भागके गुरुके अभिमानरूप दुंदुभीकी बुद्धि जो है सोई दुंदुभीकी गुहा है, तिस गुहामें घुस गया ॥ १४ ॥

वालिर्विवेश क्रोधेन तं हन्तुं तां गुहां सुधीः ॥

भ्रातृस्नेहपरितेन मयापि गमनं कृतम् ॥

मां स्थाप्य सा गुहाद्वारे सत्संगतिविवर्जिते ॥ १५ ॥

भाषा—दुंदुभीको मारने वास्ते वाली भी उस गुहामें प्रवेश करता भया, भाईका स्नेह जो है सोई मेरा गमन है इस प्रकारसे मैं भी वालीके पीछे २ जाता भया, सत्संगतिसे वर्जित जो कर्म सोई गुहाका दरवाजा है तिस दरवाजेपर वालीने मुझको टिकायके ॥ १५ ॥

तत्र युद्धं कृतं तेन वालिना च परस्परम् ॥

स्थित्वाहं मासमेकञ्च भ्रातृस्नेहस्वरूपिणम् ॥ १६ ॥

भाषा—गुहाके भीतर गया तब वालीसे तथा दुंदुभीसे युद्ध होता हुआ मेरे ऊपर वालीका स्नेह बहुत रहा सोई एक मास गुहाके दरवाजेपर खड़ा रहा ॥ १६ ॥

वालिना निहतो रक्षस्तदा द्वारे ववाह च ॥

बहुरक्तं मया ज्ञातं स्वभावचलनं सखे ॥ १७ ॥

भाषा—वालीने दुंदुभीको मारा तब गुहाके दरवाजेपर मेरे स्वभावका चला-यमान होना सोई रक्त है सो बहुत बहता भया ॥ १७ ॥

हत्वा वालिं समायाति मां हन्तुं दुंदुभिः शठः ॥

एवं ज्ञात्वा शिलामेकां स्वबुद्धिजडतां नृप ॥ १८ ॥

भाषा—हे मित्र ! मैंने विचार किया कि गुरुदेवमें अभिमानरूप दुंदुभी बड़ा जबर्दस्त है क्योंकि दुंदुभीके ऊपर गुरुकी कृपा है सो वालीकूं मारके मुझको मारेगा ऐसा जानके हे राजन् रामचंद्रजी ! मेरी बुद्धिकी जड़ प्रकृति सोई शिला है ॥ १८ ॥

गुहाद्वारि समाधाय किष्किंधामहमागतः ॥

प्रसह्यकारात्कपयः पूर्वोक्ता रघुनन्दन ॥ १९ ॥

भाषा—मैंने अपनी जड़प्रकृतिरूप शिलासे सत्संगति वर्जित गुहाके दरवाजेको ढापिके किष्किंधापुरीको मैं चला आया तब हे रघुनन्दन ! पेस्तर वर्णन भये जो कपि हैं सो मुझको जबर्दस्तीसे ॥ १९ ॥

सखे मामप्यमिच्छन्तमभिपेक्षुर्मदाकुलाः ॥

गुरुदुर्बुद्धिकिष्किंधापुरीराज्ये स्थितो ह्यहम् ॥ २० ॥

भाषा—हे मित्र ! मेरे गुरुदेवमें दुर्बुद्धि रूप जो किष्किंधापुरी तिसका राज्य करनेकी मेरी इच्छा नहीं थी तौ भी मुझको अभिमानसे उन्मत्त ऐसे जो कपि हैं सो मेरेको किष्किंधापुरीका राज्य देते भये ॥ २० ॥

गुरुक्तिनिश्चयस्यैव भंगं प्राप्तं सुखं मया ॥

तन्निहत्य समायातो वालिः स्वासनसंस्थितम् ॥ २१ ॥

भाषा—गुरुके वचनका विश्वास मेरा नष्ट होगया यह सुख किष्किंधाके राज्यमें मैं पाया हे रामजी ! दुंदुभकिं मारके गुरुके वियोगरूप वाली आयके आसन पर बैठा ॥ २१ ॥

दृष्ट्वा मां हन्तुकामश्च दुद्राव त्वरितो यदा ॥

तदाहं त्रसितो राम सर्वं सन्त्यज्य विद्रुतः ॥ २२ ॥

भाषा—मुझको देखके गुरुके वियोगरूप वालि मुझको मारने दाडता भया तब मैंने आपके गुरुदेवमें प्रेमभक्ति अनुरागसे वन आदि सब सुंदर कर्म तथा गुरुदेवकी आज्ञारूप मेरी रुमानाम स्त्री इन सबकुं छोडकै व्याकुल होयके भाग गया ॥ २२ ॥

करुणां पृथिवीं सर्वां बभ्रामाहं सुदुःखितः ॥

भ्रमणं दुर्बलत्वं मे स्वात्मनो रक्षणाय वै ॥ २३ ॥

भाषा—करुणारूप संपूर्ण पृथ्वीपै मैंने भ्रमण किया परंतु वालीका द्रोही जानके मुझको किसीने शरण नहीं दिया क्यों कि गुरुका उपदेशरूप जो मैं हूँ

सो गरीब और गुरुका वियोगरूप वाली बडा जबरदस्त है इसवास्ते मेरी दुर्बलता सोई पृथ्वीमें मैंने भ्रमण किया है ॥ २३ ॥

वियोगवालिनस्त्रासो वर्तते वसुधातले ॥

अविश्वासेन त्रासेन न लब्धं शरणं मया ॥ २४ ॥

भाषा—गुरुमें वालीका विश्वास नहीं है वालीका त्रास सोई है तिस त्रास करके दयारूप पृथ्वीमें मैंने भ्रमण किया परंतु मुझे कहीं शरण नहीं प्राप्त भई ॥ २४ ॥

स्वस्वभावगुरोश्चाहं शरणं गतवानहम् ॥

तेनोपदिष्टः प्राप्तोऽहं गिरिमेनं समाश्रितः ॥ २५ ॥

भाषा—पीछेसे मेरा स्वभाव जो है सोई मेरा गुरु है तिसकी शरणकूं मैं गया तब मेरा स्वभावरूप गुरुदेवकी आज्ञा पायके इस पर्वतपर मैं टिका हूं ॥ २५ ॥

राम नात्र समायाति वालिर्मे मूलकृन्तनः ॥

मतंगशापाद्राजेन्द्र तस्मादत्र स्थितो ह्यहम् ॥ २६ ॥

भाषा—हे रामजी ! मतंग ऋषिके शापसे इस पर्वतपर मेरे मूलको काटने-वाला वाली नहीं आता इस वास्ते मैं इस पर्वतपर टिका हूं ॥ २६ ॥

सुखेन मंत्रिभिः सार्द्धं चतुर्भी रघुनंदन ॥

सखे ते संगतिं प्राप्य मग्नोऽहं सुखवारिधौ ॥ २७ ॥

भाषा—हे रघुनंदन ! सुख करके चार मंत्री सहित यहां टिकाहूं, परंतु हे मित्र ! अब आपकी संगति पायके सुखके समुद्रमें मग्न भया हूं ॥ २७ ॥

गुरुपदेशेन सुकंठनाम्ना विज्ञापितोऽभूदिति रामचन्द्रः ॥

पप्रच्छ सर्वं मुनिवर्यकृत्यं रघूत्तमो वालिविनाशभीतिम् ॥ २८ ॥

भाषा—सुग्रीवनाम जो गुरुपदेश तिस करके कहे हुए जो रामजी हैं सो मतंगके शापका हाल सुन जिससे वाली त्रास पाता है सो पूछते भये ॥ २८ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे किष्किंधाकांडे शिवसहायबुधविरचिते सुग्रीव-
रामसंवादे रामप्रश्ने द्वितीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ २ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

सुग्रीववाक्यावसरे रामः प्रोवाच सादरम् ॥

को मतंगो मुनिः शापं यो ददौ कपिसत्तमे ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतु मुनि बोले सुग्रीव वचन कहचुके तब रामजी सुग्रीवसे पूछते भये, वालीको शाप देनेवाले मतंगकृषि कौन है ॥ १ ॥

रामस्य वचनं श्रुत्वा हरिः प्रोवाच राघवम् ॥

सखे शृणु कथामेतामेकदा महिषासुरः ॥ २ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजीका वचन सुनके गुरुदेवका उपदेशरूप सुग्रीव बोलते भये, हे मित्र ! यह कथा सुनने लायक है सो आप सुनो एक दिन महिषासुर राक्षस ॥ २ ॥

वालिनं त्वसदाचारः स्ववशे करणाय च ॥

किष्किंधामाजगामाशु भयवेगकलीर्षणैः ॥ ३ ॥

भाषा—हठ करके झूठ कर्मका आचरण करना सोई महिषासुर है, सो महिषासुर वालीको जीतने वास्ते किष्किंधा पुरीको आता भया, जीवोंको भय देना, काम करनेमें जलदी रखना, सब जीवोंसे लड़ाई करना सब जीवोंसे ईर्षा करना इन करके ॥ ३ ॥

पादैरेतैश्च संयुक्तो दुराचर्यादिसम्भवैः ॥

रोमभिर्भूरिभिर्व्याप्तन्देहं बिभ्रन्मदाकुलः ॥ ४ ॥

भाषा—ये चार महिषासुरके पग हैं, इन चार पगों करके युक्त है, खोटे कर्मसे उत्पन्न जो कर्म सो रोम है, तिस बहुत रोमको धारण करके उन्मत्त होरहा है ॥ ४ ॥

दुरुक्तिनिरयाभ्यां वै नेत्राभ्यां रागरंजितः ॥

पैशुन्यपरघाताभ्यां शृंगाभ्यां तीक्ष्णनिर्मितः ॥ ५ ॥

भाषा—खोटा वाक्य बोलना तथा नरकमें पडने माफिक कर्म करना ये दोनों कर्म दो नेत्र हैं इन दोनों कर्ममें स्नेह सोई लाल रंग है तिस करके दोनों

आंख लाल होरही हैं, चुगली करना तथा दूसरेकूं मारना ये दोनों शींग हैं इन कर्मेमें प्रेम सो शींगकी धार है ऐसे शींग करके युक्त है ॥ ५ ॥

पैशुन्यसुखपुच्छेन लंबमानेन शोभितः ॥

एतादृशो हतो राम वालिना महिषासुरः ॥ ६ ॥

भाषा—चुगलीमें सुख मानना सोई पूंछ है तिस पुच्छ करके शोभित है ऐसे महिषासुरकूं वालीने मारडाला ॥ ६ ॥

हतमुत्थाय तं वीरश्चिक्षेप क्रोधसंकुलः ॥

पपात पर्वतस्यास्य समीपे रघुनन्दन ॥ ७ ॥

भाषा—हे रघुनंदन ! महिषासुरको मारके वाली उसकी देहको उठायके फेंकता भया, तब वह देह इस पर्वतके सामने आय पड़ी ॥ ७ ॥

स्वेच्छाचारमतंगस्य चाश्रमे पतितोऽसुरः ॥

दुष्टाचरणरक्तैश्च रंजितोऽभूत्तदाश्रमः ॥ ८ ॥

भाषा—वेद शास्त्र लोकको संमत नहीं मानना अपनी इच्छामें आवे सोई करना ऐसे स्वभावको शास्त्रमें मतंग ऋषि कहते हैं ऐसे मतंग मुनिके आश्रमपर मरा हुआ आय पडा, तथा खोटे कर्मका आचरणरूप करके जो रक्त उससे मुनिका आश्रम लाल होगया ॥ ८ ॥

गुरुध्यानगिरेरस्य समीपे वानरोत्तम ॥

यद्यागन्तासि वै मृत्युस्तत्क्षणे ते भविष्यति ॥ ९ ॥

भाषा—तब स्वेच्छाचाररूप मतंगमुनि बोले कि हे कपियोंमें उत्तम वालि ! यह जो गुरुदेवको ध्यानरूप प्रवर्षण पर्वत है इसके समीप जो तू आवेगा तो उसी समय मरजावेगा ॥ ९ ॥

एवं ज्ञात्वा रघुश्रेष्ठ नायात्यत्र कदापि च ॥

एवं ज्ञात्वा च मे वासः कृतोऽत्र रघुनन्दन ॥ १० ॥

भाषा—हे रघुनंदन ! मैंने ऐसा जाना कि वाली यहां नहीं आसक्का इस वास्ते इस पर्वतपर मैंने वास किया है ॥ १० ॥

श्रुत्वा च सुग्रीवसमीरितं वचः प्रोवाच रामः करुणाश्रुपूरितः ॥

अहं हनिष्यामि तवाशु द्रोहिणं सखेऽभिषेच्यामि च त्वान्नृपासने ११ ॥

भाषा—ऐसा सुग्रीवका वाक्य सुनके रामजी बोले कि हे मित्र ! तुम्हारे श्रोह करनेवाले वालीकूं हम मारेंगे और तुमकूं किष्किंधापुरीका राजा करेंगे ॥ ११ ॥

रामोक्तिं कपिवीरस्तु निशम्योवाच राघवम् ॥

किष्किंधाधिपतिं मान्त्वं वानराणामधीश्वरम् ॥ १२ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजीका वचन सुनके गुरुका उपदेशरूप सुग्रीव बोले कि हे रामजी ! जो आप मेरे गुरुदेवमें खोदी बुद्धि करना ऐसी किष्किंधा पुरीका राजा ॥ १२ ॥

करिष्यसि यदा वीर तदा ते जानकीमहम् ॥

पुरीमपि शुभां कुर्यां सुबुद्धिं गुरुसत्तमे ॥

सप्तपातालविवरात्सप्तोर्ध्वाद्रघुनन्दन ॥ १३ ॥

भाषा—करोगे तब मैं पुरीकोभी सुंदरबुद्धि गुरुमें कर देऊंगा, तथा जानकीकोभी सात पाताल नीचे सात ऊपर ॥ १३ ॥

विनाश्य जानकीदुःखदातारं सकुलम्प्रभो ॥

सगुरुं सपुरं दुष्टं समित्रं सहचारिणम् ॥ १४ ॥

भाषा—मैंभी जो जानकीको दुःख देनेवाले दुष्टको परिवार गुरु पुर मित्र संग रहनेवाले इन सबको नाश करके ॥ १४ ॥

दास्यामि तुभ्यं जनकात्मजामहं सखे ध्रुवं प्राप्य कपीश्वरेश-
ताम् ॥ हनिष्यसे त्वं कथमद्य वालिनं वीरं सुवीरार्चितपाद-
पल्लवम् ॥ १५ ॥

भाषा—जानकीको आपकूं देऊंगा, परंतु हे मित्र ! जो मुझे किष्किंधाका राज्य मिलेगा तो हे रामजी ! बड़े बड़े वीर जैसे ध्यान ज्ञान उपदेश इन आदि और अनेक सुंदर कर्म वालीके पगका पूजन करतेहैं कि हे गुरुके वियोग दुष्ट वाली ! तू जीवोंको गुरुदेवसे वियोग मत कर ऐसे वीर वालीको आप अभी कैसे मारोगे ॥ १५ ॥

इत्युक्त्वा दर्शयामास सप्ततालान्कपीश्वरः ॥

रामचंद्राय त्वरितं शुष्कं च दुंदुभेदशिरः ॥ १६ ॥

भाषा—रामजीसे सुग्रीव ऐसा कहके रामजीको सात तालके वृक्ष तथा दुंदुभीका सूखा शिर देखाते भये ॥ १६ ॥

कुतृष्णायास्सुतान्सप्त लंबमाननभश्चरान् ॥

परसौख्यविनाशं च परवित्तकलत्रयोः ॥ १७ ॥

भाषा—खोटे कर्ममें तृष्णा करना तिस तृष्णाके सात पुत्र जमीनसे आकाशतक ऊंचे दूसरे जीवके सुखका नाश करना और दूसरे जीवके धन तथा स्त्रीको ॥ १७ ॥

हरणं सुज्ञविद्वेषमन्याये वर्तनं सदा ॥

स्वस्त्रीनिरादरं नित्यं मरणाचिंतनं तथा ॥ १८ ॥

भाषा—हरण करना तथा ईश्वरके गुणको जाननेवाले जीवोंसे वैर रखना रातिदिन अन्याय कर्ममें रहना अपनी स्त्रीका रोज अनादर करना मरनेकी चिन्ता नहीं करना ॥ १८ ॥

एतान्तालान् स्वस्वसुखैः पत्रैश्च वर्द्धितान्कपिः ॥

प्रोवाच दर्शयित्वैतां धृत्वा कंपयतेऽसकृत् ॥ १९ ॥

भाषा—ये सात कर्मरूप सात तालके वृक्ष हैं ये सात तालके वृक्ष अपने अपने कर्ममें सुख मानना उसी सुखरूप पत्र करके वर्द्धित हो रहे हैं, सुग्रीवने ऐसे सात तालके वृक्ष रामजीको दिखायके रामजीसे बोले कि इन सातों वृक्षोंको एकही बार वाली पकड़के हिलाता है ॥ १९ ॥

तालान्सप्तैकबाणेन यदि च्छेतुं क्षमः प्रभो ॥

तदा वालिवधे राम विश्वासो मे प्रजायते ॥ २० ॥

भाषा—हे रामजी ! जो एक बाण करके आप सात वृक्षोंको काटनेमें समर्थ हो तब वालीके मारनेमें विश्वास मुझको होवे ॥ २० ॥

सर्वप्राणोत्तमं ज्ञानं गुरौ यद्रघुनन्दन ॥

तदुंदुभिश्चक्षिदमाद्रि क्षिप्तञ्च वालिना ॥ २१ ॥

भाषा—हे रघुनन्दन ! सब जीवोंसे अपने गुरुको उत्तम मानना सोई दुंदुभिका शिर है सोई शिर यह आपके सामने पड़ा है यह गीला रहा था तब वालीने उठायके यहांपर फेंक दिया ॥ २१ ॥

तवास्योत्क्षेपणे राम चेत्पश्यामि पराक्रमम् ॥

तदा त्वया हतं मन्ये वालिनं वीरसंमतम् ॥ २२ ॥

भाषा—और अब यह शिर सूखा है तो भी आप इसके उठानेकोभी जो समर्थ हों तो मैं जानूँ कि आपके मारे वाली मरेगा ॥ २२ ॥

इत्युक्त्वा कपिना रामो विवेको ज्ञानवारिधिः ॥

सत्संगार्बुदछायायाः छायाछायावर्बुदेन वै ॥ २३ ॥

भाषा—ऐसा सुग्रीवका वचन सुनके ज्ञानके समुद्र रामजी विवेकरूप सो सत्संगकी अर्बुदभाग जो छाया तिस छायाकी छायाके अर्बुद भागका एक भाग सोई बाण है तिस एक बाण करके एकही दफेमें सातों वृक्षोंको काट डारे यह युग्म है ॥ २३ ॥

भागेनैकेषुणा रामश्चिच्छेद युगपत्तरून् ॥

कदापि रामचंद्रस्य स्वभावोऽभ्यासतश्चलेत् ॥ २४ ॥

भाषा—विवेक रूप रामजीका स्वभाव कभी ईश्वरके ध्यान करनेसे चलायमान होता है और कभी चलायमान नहीं होता ऐसा स्वभाव रामजीके दोनों पग हैं यह युग्म है ॥ २४ ॥

कदापि न चलेत्तस्मादिमौ पादौ प्रकीर्तितौ ॥

अचलो दक्षिणो ज्ञेयश्चलो वाम इतीर्यते ॥ २५ ॥

भाषा—रामजीका अभ्यासमें अचल स्वभाव सोई रामजीका दक्षिण पग है और चलस्वभाव वाम पग है ॥ २५ ॥

याश्चलाश्चलयोः प्रीत्यस्ताश्चांगुल्यः प्रकीर्तिताः ॥

द्वयोरचलवृत्तं यत्तदंगुष्ठं निगद्यते ॥ २६ ॥

भाषा—चल पगमें तथा अचल पगमें जो बहुत प्रीति सो दोनों पगोंकी अंगुली हैं रामजीके दोनों पगोंका अचल स्वभाव सो दोनों पगोंका अंगूठा है ॥ २६ ॥

तच्छिरश्चाशु चिक्षेप वामांगुष्ठेन राघवः ॥

एतत्पराक्रमं दृष्ट्वा रामस्य कपिसत्तमः ॥ २७ ॥

भाषा—रामजीने वामपगके अंगूठेसे उठायके जल्दी दुंदुभीका शिर बहुत दूर फेंकदिया ऐसा रामजीका पराक्रम सुग्रीव देखके ॥ २७ ॥

राज्यस्पृहां परित्यज्य ज्ञानयुक्तो बभूव ह ॥

बद्धा करांजलिं रामम्प्रोवाच विनयान्वितः ॥ २८ ॥

भाषा—राज्यकी इच्छा छोडके ज्ञानको प्राप्त भया जो सुग्रीव है सो हाथ जोडके रामजीसे बोला ॥ २८ ॥

राज्यं न कांक्षे रघुवीर दुःखदं त्वत्पादसँल्लग्नरजोऽभिवाँछकः ॥

भवामि नित्यन्तव दासकिंकरः प्रदेहि राज्यं तव सेवनावधिम् ॥ २९ ॥

भाषा—हे रामजी! जिस किष्किंधापुरीका राज्य पायके गुरुदेवमें दुष्टबुद्धि होवै ऐसा दुःख देनेवाले राज्यको मैं नहीं चाहताहूं आपके चरणकी धूलि चाहताहूं आप आपके चरणोंकी सेवनरूप राज्य मेरेको देवो ॥ २९ ॥

इति श्रीवेदांतरामायणे किष्किंधाकांडे शिवसहायबुधविरचिते
सुग्रीवनिश्चये तृतीयो मोक्षारख्यः सोपानः ॥ ३ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

सुग्रीववचनं श्रुत्वा संशिक्ष्य कपिसत्तमम् ॥

प्रेरयामास युद्धाय वालिना रघुनन्दनः ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतु मुनि बोले सुग्रीवका वचन सुनके रामजीने सुग्रीवको सिखाके वालिके संग युद्ध करनेको भेजा ॥ १ ॥

चतुर्भिर्मन्त्रिभिस्सार्द्धं राघवाभ्यां च संयुतः ॥

क्रोशैके गुरुदुर्बुद्धिकिष्किंधायाश्च निश्चये ॥ २ ॥

भाषा—चार मंत्री सहित तथा रामलक्ष्मण सहित गुरुसे दुष्टबुद्धिरूप जो किष्किंधा तिसके एक कोशपर ॥ २ ॥

तदूरे लक्ष्मणौ स्थित्वा चत्वारश्चैव मंत्रिणः ॥

सुग्रीवेण तदाहूतो वालिवीरशिरोमणिः ॥ ३ ॥

भाषा—सुग्रीव खड़ा होके गुरुके वियोगरूप वालिको पुकारता भया और सुग्रीवसे कुछ दूरपर राम लक्ष्मण और सुग्रीवके चार मंत्री ये सब खड़े रहे ॥ ३ ॥

तूर्णमागत्य युयुधे स्वानुजेन कपीश्वरः ॥

गुरुवाक्येषु विश्वासस्सुग्रीवपुच्छवर्णनम् ॥ ४ ॥

भाषा—गुरुकी वाक्यमें विश्वास मानना सोई सुग्रीवकी पुच्छ है कपीश्वर जो गालि है सो जलदी आयकर अपने भाई सुग्रीवसे युद्ध करता भया ॥ ४ ॥

तदविश्वासज्ञानं च वालिपुच्छन्निगद्यते ॥

ताभ्यां युद्धं च द्वौ चक्रे पुनर्मुष्ट्या प्रजघ्नतुः ॥ ५ ॥

भाषा—उसी गुरुकी वाक्यसे विश्वास नहीं मानना सोई वालिकी पुच्छ है जो पहिले तो दोनों वीर पृच्छसे युद्ध करते भये पछि मुष्टिसे युद्ध करते भये ॥ ५ ॥

ब्रह्मसृष्टौ च यद्वस्तु तन्मे सर्वं गुरुर्हरिः ॥

इति बुद्धिः समाख्याता सुग्रीवमुष्टिबंधनम् ॥ ६ ॥

भाषा—ब्रह्माके बनाये जो तीन लोक चौदह भुवनमें जो चीज है सो सब चीजरूप मेरा गुरु है ऐसे गुरुको ब्रह्मरूप माननेवाली बुद्धि सो सुग्रीवकी मुष्टिका बांधना है ॥ ६ ॥

बुद्धिस्तदन्या या तस्मिन्सा वाल्यंगुलिबंधना ॥

मुष्ट्या युयुधतुर्वीरौ सुग्रीवो वालिताडितः ॥ ७ ॥

भाषा—और गुरुमें ऐसी बुद्धिसे हीन जो दूसरी बुद्धि है कि जैसी जुदी जुदी सब वस्तु है तैसेई गुरुभी है ऐसी बुद्धि वालिका मुष्टिबंधन है ऐसी मुष्टिसे वालिको सुग्रीवने मारा सुग्रीवको वालीने मारा । सुग्रीव तो चाहता है कि गुरुके वियोगरूप वालीको मार डालूं तो जीवोंसे गुरुवियोग नहीं होवे और वाली चाहता है कि गुरुके उपदेशरूप सुग्रीवको मार डालूं तो गुरुको उपदेश संसारमें नष्ट होजावे और मेरा राज्य रहे सो वालीने सुग्रीवको मारा तब सुग्रीव दुःखी होगया ॥ ७ ॥

षाव्यायाहुःखितो भूत्वा गिरिमूर्ध्नि स्वमाश्रमम् ॥

स्पृष्टो विवेकरामेण करेण कपिसत्तमः ॥ ८ ॥

भाषा—तब सुग्रीव दुःखी होके भागके पर्वतपर अपने आश्रमपर आया तब विवेकरूप रामजी अयना हाथ सुग्रीवके ऊपर फेरते भये रुपा करके देखना सोई हाथ फेरना है ॥ ८ ॥

गतश्रमः सुखं पेदे शौर्येण मंत्रिभिः सह ॥

उवाच रामं सुग्रीवः कथं घातयसेऽरिणा ॥ ९ ॥

भाषा—तब सुग्रीवके देहकी पीडा नष्ट होगई और सुग्रीव सुखको प्राप्त भये मंत्रियों सहित बड़े मानसे जैसा पुत्र पितासे मान करके बात करे कि मैं तो आपका बालक हूं यह काम आपकूं करना पड़ेगा तैसेई सुग्रीव रामजीसे बोले कि हे रामजी ! वैरीसे मेरेकूं आप क्यों मरते हो मारना होवे तो आपही मेरेको मार डालो ॥ ९ ॥

इत्युक्तो राघवः प्राह न ज्ञातस्त्वं मया सखे ॥

एकरूपौ युवां वीक्ष्य न त्यक्तः सायको मया ॥ १० ॥

भाषा—ऐसे सुग्रीवके वाक्य सुनके रामजी बोले कि हे भाई ! तुम दोनों एकरूप रहे थे इसवास्ते मैं नहीं जाना कि कौन वाली है कौन सुग्रीव है इस वास्ते मैंने बाण नहीं छोड़ा ॥ १० ॥

वालिनं पुनराहाय हतं पश्यसि भूतले ॥

इत्युक्त्वा लक्ष्मणं प्राह रामः सत्यपराक्रमः ॥ ११ ॥

भाषा—सो फिर वालीको तुम पुकारो अब कि वालिको मरा देख लेना सुग्रीवसे ऐसा कहके सत्य है पराक्रम जिसका ऐसे रामजी लक्ष्मणसे बोलते भये ॥ ११ ॥

मत्प्रीतिरूपां बध्नीहि मालां कंठेऽस्य धीमतः ॥

ययेमं चिह्नितं ज्ञात्वा वालिप्राणं हराम्यहम् ॥ १२ ॥

भाषा—हे लक्ष्मण ! मेरी प्रीति सुग्रीवपर बहुत है उसी प्रीतिरूप मालाको

सुग्रीवके गलेमें बांध देओ उस माला करके मैं जानूंगा कि यह सुग्रीव है ऐसा जानके वालीके प्राणको मैं हलूंगा ॥ १२ ॥

इत्युक्तो लक्ष्मणस्तूर्णं बद्धा मालां दृढां शुभाम् ॥

रामप्रीतिस्वरूपां च तद्धर्षपुष्पपुष्पिताम् ॥ १३ ॥

भाषा—रामजीके ऐसे वाक्य लक्ष्मण सुनके शीघ्रही सुंदर माला सुग्रीवके गलेमें बांधते भये रामजीकी प्रीतिरूप माला है सुग्रीवका हर्ष सो पुष्प भया है तिस पुष्पों करके माला फुल्लायमान हो रही है ॥ १३ ॥

बद्धमालस्तु सुग्रीवः पुनर्गत्वातिशीघ्रतः ॥

आह्वयामास प्रोच्चैस्तं वालिनं निर्भयो युधे ॥ १४ ॥

भाषा—मालाकूं गलेमें बाँधके सुग्रीव जलदी बड़े जोरसे वालिको युद्ध करने चास्ते निर्भय होके पुकारता भया ॥ १४ ॥

वाली च पुनराहूतः सुग्रीवेणातिक्रोधितः ॥

तारया वारितोऽपीत्थं रामचंद्रगुणम्प्रति ॥ १५ ॥

भाषा—सुग्रीव करके पुकारा जो वाली है उसने बड़ा क्रोध करके चलनेका विचार किया तौ ताराने रामजीके सब गुण वालीको सुनायके बोली आप मति जावो, बड़े जबरदस्तसे सुग्रीवकी मिताई भई है ॥ १५ ॥

तां तिरस्कृत्य समगात्सुग्रीवं युद्धलालसम् ॥

युद्धं प्रचक्रतुर्वीरौ वालिना विह्वलीकृतम् ॥ १६ ॥

भाषा—वालीने ताराका अनादर करके युद्धकी इच्छा किये जो सुग्रीव है तिसके पास आयके फिर दोनोंसे युद्ध होता भया, तब वालीने सुग्रीवको विह्वल करदिया ॥ १६ ॥

सुग्रीवं राघवो वीक्ष्य पूर्वोक्ते धनुषि प्रभुः ॥

पुनर्दिशक्षोद्धवं ज्ञानं बाणं संयोज्य शीघ्रतः ॥ १७ ॥

भाषा—सुग्रीवको व्याकुल देखके रामजी पहिले वर्णन भया जो धनुष तिसपर फिर सुंदर कर्मको सिखानारूप बाण जलदी चढायके ॥ १७ ॥

वियोगकृतमज्ञानं वृक्षं कृत्वा पुरस्सरम् ॥

आलक्ष्य हृदयं तस्य ससर्ज शरमुग्रिणम् ॥ १८ ॥

भाषा—गुरुके वियोग करके किया जो अज्ञान सोई वृक्ष है, तिस वृक्षको अपने सामने करके आप वृक्षकी आड़में होयके वालीके हृदयको देखके शिक्षा-रूप बाण बड़ा कठिन तिसकूं छोडते भये ॥ १८ ॥

तेनाहतः पपाताशु दृष्ट्वा रामं पुरःस्थितम् ॥

स्तुत्वा क्षमाप्य स्वाघ च प्राणं तत्याज वानरः ॥ १९ ॥

भाषा—तिस बाण करके मृत्युको प्राप्त भया जो वाली सो शीघ्रही पृथ्वीमें पडगया, तब रामजीको सामने देखके अपना अपराध रामजीसे क्षमा करायके प्राणोंको छोड देताभया, गुरुदेववियोगका मरण भया सो सब जीव आनन्द-युक्त भये ॥ १९ ॥

चक्रुर्विलापन्ते सर्वे सुग्रीवाद्याः कपीश्वराः ॥

जनिष्यति पुनस्सोऽयमिति शोकम्प्रचक्रिरे ॥ २० ॥

भाषा—गुरुके वियोगरूप वालीके मरणकूं देखके गुरुके उपदेशरूप सुग्रीव तथा सुग्रीव आदि और जो वानर हैं सो विलाप करते भये, कि यह गुरुका वियोगरूप फिर कभी जन्मेगा ऐसा चिंतनरूप विलाप करते भये ॥ २० ॥

वालिनं निहतं श्रुत्वा ताराद्या वालिवल्लभाः ॥

अंगदादिसुताः सर्वे विलापं चक्रिरे तदा ॥ २१ ॥

भाषा—वालीके मरणको देखके गुरुके वियोगकी चिंतारूप तारा तिसको आदि लेके और जो वालीकी स्त्री हैं सो सब तथा गुरुके वियोगको शांत करनेका उपायरूप जो अंगद है तिसको आदि लेके सब वालिके पुत्र विलाप करते भये ॥ २१ ॥

शरणं कस्य यास्यामः कोऽस्मान्संगृह्य पालयेत् ॥

एतादृशं विलापं च चक्रुस्सर्वे विमोहिताः ॥ २२ ॥

भाषा—अंगदने विचार किया कि जो गुरुका वियोगरूप वाली जीतारहा

तब तो उस वालीकी शांति करनेका उपाय जो मैं हूं सो मेरेको सब जीव आदर देते थे, कि इसको आदर करेंगे तो यह गुरुके वियोगरूप वालीको शांति करनेका उपाय है, और अब वाली मरगया, हम किसकी शरणकूं जावें कौन हमारा पालन करेगा, ऐसा विलाप करते भये ॥ २२ ॥

निनिंद राघवं तारा पतिप्रेमपरायणा ॥

वियोगादर्शनं जातं तदेव निन्दनं मुने ॥ २३ ॥

भाषा—पतिके प्रेममें कुशल जो तारा है सो गुरुके वियोगकूं नहीं देखती भई सोई रामजीकी निंदा करती भई ॥ २३ ॥

बोधिता रामचंद्रेण ज्ञानं प्राप्य तदा सती ॥

गुरुपदेशस्य पतेस्सुखहर्षं जहर्ष सा ॥ २४ ॥

भाषा—तब रामजीने ताराकूं ज्ञान दिया, तारा ज्ञानकूं पायके गुरुके उपदेशरूप जो सुग्रीव है तिसके सुखके हर्षकूं पायके बहुत खुशी भई, क्योंकि गुरुके वियोगकी चिंता तो तारा खुद है नित्य विचारती थी कि यह गुरुका वियोग शांत होवे तब जीवोंको सुख होवे, परंतु अज्ञानसे उसी वियोगकी स्त्री भई रही, ज्ञान पायके जान लिया कि मेरा पति गुरुका उपदेशरूप सुग्रीव है ॥ २४ ॥

परस्परं कृता वार्ता वालिनस्तस्य तैस्तदा ॥

पराक्रमस्य नित्यस्य सह रामकपीश्वरैः ॥ २५ ॥

भाषा—तब रामजी सहित सब कपि आपसमें वालीके पराक्रमकी वार्ता करते भये, कि देखो भाई वाली कैसा बली था, कि गुरुकी महिमाका वेदशास्त्र पुराण लोक ये सब तारीफ करते हैं तिस गुरुका वियोग जीवोंसे कर देना यह बड़ा वालिका कर्म है ॥ २५ ॥

सा वालिनो दाहक्रिया कृता तेनांगदेन वै ॥

राज्यं ददौ ततस्तूर्णं सुग्रीवाय रघूत्तमः ॥ २६ ॥

भाषा—ऐसी वार्ता सब करते भये सोई वालीकी दाह आदि क्रिया अंगद करता भया, तब रामजी जलदी किष्किंधापुरीका राज्य सुग्रीवको देते भये ॥ २६ ॥

राज्यासनस्थे सुग्रीवे कपीनां राघवप्रिये ॥

पुर्याः पूर्वस्वभावश्च नष्टोऽभून्नैव दृश्यते ॥ २७ ॥

भाषा—रामजीका प्यारा सुग्रीव जब वानरोंका राजा भया तब किष्किंधापुरीका स्वभाव जो प्रथम था कि गुरुमें खोदी बुद्धि देखना सो स्वभाव नष्ट होगया, कहीं देखनेमें नहीं आता, किसी स्थानपर गुरुमें किष्किंधापुरीकी सुंदर बुद्धि हो गई ॥ २७ ॥

सा राज्यप्राप्तिस्सुग्रीवे तत्सुखं मदवर्द्धनम् ॥

गुरोर्वियोगमरणं दृष्ट्वा रामोऽतिहर्षितः ॥ २८ ॥

भाषा—सोई सुग्रीवको राज्य प्राप्त भया है तिस राज्यप्राप्तिमें सुख सोई अभिमानकी वृद्धि है, तथा गुरुके वियोगरूप वालीके मरणकूं देखिके रामजी भी खुशी होते भये ॥ २८ ॥

विज्ञापनं च गुरवे चोपदेशाय वालिजम् ॥

दातुं जीवान् यौवराज्यं चक्रे रामोऽत्यनुग्रहः ॥ २९ ॥

भाषा—बड़े दयालु रामजी अंगदको युवराज करते भये, कि जब कोई जीव गुरुसे उपदेश लेनेको जावे तब अंगद गुरुदेवसे अर्ज करे, कि महाराज ! आपसे उपदेश लेनेकूं जीव आया, ऐसा कर्म सोई युवराज है सो युवराज-पदवी अंगदको रामजी देते भये ॥ २९ ॥

स एव वासो रामस्य प्रवर्षणगिरावभूत् ॥

आत्मज्ञानं स्वपितरन्निर्मोहं भरतन्तथा ॥ ३० ॥

भाषा—ऐसा अंगदको युवराजपद देना सोई रामजीका प्रवर्षण पर्वतपर टिकना भया है, तथा रामजीने अपने पिता जो आत्मज्ञान तथा निर्मोह-रूप भरतको ॥ ३० ॥

शक्तिपुत्रं वशिष्ठं च जानकीविरहन्तथा ॥

एतेषां चिंतनस्पर्शनमःप्रीत्यातिहेतवे ॥ ३१ ॥

भाषा—शक्तिके पुत्र जो वसिष्ठ तिनको, जानकीके विरहका चिंतन जैसा पिताका चिंतन तथा भरतका मिलाप, वसिष्ठको नमस्कार जानकीकी प्रीति इन सब कर्मोंमें प्रीति होनेको ॥ ३१ ॥

विचारा वार्षिका मासास्तत्सुखाश्च मनोहराः ॥

संगतिम्प्राप्य दुष्टानां जानकी किं करिष्यति ॥ ३२ ॥

भाषा—विचार करना सोई चार मास वर्षा ऋतुके है उसी चार कर्मोंमें सुख सोई वर्षा ऋतुकी शोभा है रामजी ऐसे चार मास वर्षा में विचार करते भये कि दुष्ट जीवोंकी संगत पायके जानकी क्या करैगी ॥ ३२ ॥

भविष्यति स्वधर्माद्वा विच्युता साच्युताऽपि वा ॥

ईदृग्विलापो रामेण कृतः संगतिकारणात् ॥ ३३ ॥

भाषा—जानकीका धर्म ईश्वरकी भक्ति उस भक्तिरूप धर्मको छोड़ देवेगी कि नहीं छोड़ेगी ऐसा विलाप संगतिके कारणसे रामजी करते भये ॥ ३३ ॥

चतुर्णां च चतुर्णां च किञ्चिन्मासा गताः स्मृताः ॥

चत्वारो विगतान्मासान्नायान्तं कपिसत्तमम् ॥

दृष्ट्वा रामो द्रुतं प्रेम्णा प्रेषयामास लक्ष्मणम् ॥ ३४ ॥

भाषा—पहिले वर्णन भये जो चार महीने सो बीति गये कारण धीरज धरके रामजी पिताका वशिष्ठका भरतका जानकीका चिंतन मिलाप नमस्कार प्रीति इन सबके विचारका थोरा कर्म करते भये सोई चार मासका बीतना भया है परंतु सुग्रीव रामजीके पास नहीं आया तब प्रेम करके लक्ष्मणको भेजते भये ॥ ३४ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे पंचशिवसहायबुधविरचिते किष्किंधाकांडे
मोक्षारण्यः चतुर्थः सोपानः ॥ ४ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

प्रेषणम्प्रेमरूपश्च गमनं तद्विवर्द्धनम् ॥

क्षुत्तृषा सुखदुःखौ च हानिलाभौ प्रियाप्रिये ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि बोले । रामजीका प्रेम सुग्रीवके ऊपर बहुत है उसी प्रेमरूप सुग्रीवके पास लक्ष्मणका भेजना भया है प्रेमकी वृद्धि सोई लक्ष्मणका सुग्रीवके पास जाना भया है । क्षुधा, तृषा, सुख, दुःख, हानि, लाभ, प्रिय, अप्रिय ॥ १ ॥

जीवनम्मरणं निद्रा यशोऽपयश एव च ॥

इत्यादयश्च ये भावा संख्या येषां न विद्यते ॥ २ ॥

भाषा—जीवन, मरण, निद्रा, यश, अपयश इन आदि जो और सब जीवोंके कर्म हैं जिनकी गिनती नहीं है ॥ २ ॥

सर्वेपामंडजातानां नराणां च विशेषतः ॥

एते सर्वे गुरोर्दर्श्या मन्तव्याश्च विशेषतः ॥ ३ ॥

भाषा—सब जीवोंके ये कर्म हैं परंतु नरस्वरूप जीवोंके तो बहुत हैं ये सब कर्म गुरुमें देखना तथा मानना कि जैसा सब है तैसाही गुरुभी है ॥ ३ ॥

त एव कपयः प्रोक्तास्तै रूद्धो लक्ष्मणस्तथा ॥

गुरौ ये दुष्टभावाश्च तैर्ऋक्षैरपि सर्वशः ॥ ४ ॥

भाषा—सोई सब कर्म वानर हैं रामकी संगति जिनको भई थी वे तो स्वभावको छोड़ि देते भये और जिनको रामकी संगति नहीं भई सो दुष्ट रहे ऐसे दुष्ट कर्मरूप जो बंदर सो लक्ष्मणको रोकने लगे किष्किंधाके भीतर नहीं जाने दिया प्रथम कहे तृषा आदि आठ अवगुण गुरुमें देखना सोई ऋक्ष हैं वे भी लक्ष्मणको रोक लिये हैं ॥ ४ ॥

तेषां दुर्बुद्धिहरणं क्रोधं चक्रे रघूत्तमः ॥

ताराङ्गदाभ्यामानीतो मारुतेन विशेषतः ॥ ५ ॥

भाषा—तब सब दुष्ट कर्मोंकी दुष्टबुद्धिको हरणरूप क्रोध लक्ष्मण करते भये तब कपि लक्ष्मणका क्रोधरूप उपदेश पायके बुद्धिको सुंदर धर्ममें लगाते भये खोटा कर्म छोड़ देते भये गुरुको ईश्वर मानने लगे, तब तारा अंगद हनुमान् ये तीनों लक्ष्मणको आदर करिके सुग्रीवके पास लेगये ॥ ५ ॥

क्रोधशान्तिं कपीनां वै दृष्ट्वा बुद्धिं सुनिर्मलाम् ॥

अहं गुरूपदेशो वै नान्योऽस्ति पृथिवीतले ॥ ६ ॥

भाषा—सुग्रीवने लक्ष्मणको देखिके आदर किया तथा कपियोंके क्रोधकी शांति देखके और बुद्धि सुंदर कर्ममें देखिके सुग्रीवने ऐसा विचार किया कि विवेकरूप रामजी सरीखे मेरे मित्र और गुरुको उपदेशमें बड़े बंदर कर्म करनेवाले मेरे सब कपि ऋक्ष अब मेरे सरीखा पृथ्वीपर कोई दूसरा नहीं है ऐसा सुग्रीवको अभिमान भया ॥ ६ ॥

तन्माननाशनं त्रास कृत्वा रामानुजः कपिम् ॥

सर्वैः कपिवरैस्सार्द्धं युवराजादिमारुतैः ॥ ७ ॥

भाषा—तब लक्ष्मणके सामने सुग्रीवका अभिमान नाश होता भया सोई सुग्रीवका त्रास करिके सब वानर तथा सुग्रीव अंगदहनुमान्सहित ॥ ७ ॥

जांबवान्नलनीलाद्यैरानयित्वा त्वरान्वितः ॥

प्रवर्षणे निपेतुस्ते रामस्याग्रे च वानराः ॥ ८ ॥

भाषा—जांबवंत नल नील आदि वानर बहुत देशदेशके गुरुमें दुष्टकर्म देखनेवाले जो कर्म सोई वानर हैं तिनको संग लेके प्रवर्षण पर्वतपर रामजीके सामने सब पडते भये ॥ ८ ॥

विवेकदर्शनं विप्र तेषां तत्पतनं स्मृतम् ॥

पृष्ट्वा रामेण ते सर्वे स्वकर्मकरणं सदा ॥ ९ ॥

भाषा—सब गुरुमें दुष्टबुद्धि करनेवाले कर्म देशदेशसे आयके विवेकरूप रामजीके दर्शन करते भये सोई सबका पृथ्वीमें पडना है तब रामजी सबके कर्मकी कुशल पूछते भये ॥ ९ ॥

चतुर्दिशस्समायाताः कपीनां यूथपास्तदा ॥

असंख्या गणितुं शक्ता न शेषेणापि कर्हिचित् ॥ १० ॥

भाषा—तब चारों दिशासे और बहुत गुरुमें दुष्ट कर्म देखनेवाले जो दुष्ट कर्मरूप वानर सोभी आते भये जिन्होंकी गिनती करनेकी शेषजीको भी सामर्थ्य नहीं है ॥ १० ॥

पूर्वोक्ताः कपयः सर्वे दृष्ट्वा रामं च तत्यजुः ॥

नमस्कृत्य स्वभावन्ते प्रयाताः सर्वतो दिशम् ॥ ११ ॥

भाषा—सब कपि ऋक्ष रामजीको देखिके नमस्कार करिके अपना स्वभाव जो गुरुमें दुष्टकर्म देखना सो छोड़ देते भये, गुरुको ईश्वर मानते भये ॥ ११ ॥

सुग्रीवप्रेषिताः सर्वे जानकीशोधकारणे ॥

निर्वचनस्वभावश्च वृत्तिर्मासावधिः कृता ॥ १२ ॥

भाषा—सुग्रीव करिके भेजे जो सब वानर ऋक्ष जानकीको शोधने वास्ते चारों दिशाको जाते भये कपियोंका अपने स्वामीसे कपट नहीं करना ऐसे स्वभावकी वृत्ति सोई सुग्रीव एक मासका प्रमाण करते भये । श्लोक ग्यारह तथा बारहका अर्थ मिलाहै इसको कुलक कहते हैं ॥ १२ ॥

जांबवन्तं हनूमंतमंगदादीननेकशः ॥

दक्षिणं प्रेषयामास सुग्रीवो जानकीकृते ॥ १३ ॥

भाषा—जानकीको शोधने वास्ते सुग्रीव जांबवान्, हनुमान्, अगद आदि बहुत वानरोंको दक्षिणदिशाको भेजते भये ॥ १३ ॥

धर्मादीनां शुभा चिन्ताश्चतस्रश्च दिशः स्मृताः ॥

तत्प्राप्तिप्रेषणम्प्रोक्तं गच्छन्तं मारुतिम्प्रभुः ॥ १४ ॥

भाषा—धर्मकी चिन्ता सो पूर्वदिशा है, अर्थकी चिन्ता सो दक्षिणदिशा है, कामकी चिन्ता सो पश्चिम दिशा है, मोक्षकी चिन्ता सो उत्तरदिशा है, इन चारों अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष प्राप्ति होना सो कपियोंका भोजना भया है, हनुमान् जाने लगे तब रामजीने ॥ १४ ॥

रामो ददावाङ्गुलेयम्प्रीतिजम्प्रेमनिर्मलम् ॥

हनूमते प्रसन्नश्च प्रोवाच वचनं हरिः ॥ १५ ॥

भाषा—रामजीकी प्रीति जानकीपर बहुत है उसी प्रीति करके उत्पन्न जो निर्मल प्रेम सोई सुंदरी है उस सुंदरीको रामजी हनुमान्को देते भये, तथा प्रसन्न होके हनुमान्से बोले ॥ १५ ॥

देया जनकजायैषा त्वया तात सुचेतसा ॥

एतां प्राप्य ध्रुवं देवी विश्वासं ते कारिष्यति ॥ १६ ॥

भाषा—हे सुंदरकर्ममें मोहरूप हनुमान् ! यह सुंदरी तुम जानकीको देना. इस सुंदरीको पायके जानकी तुम्हारा विश्वास करेगी. कि यह कोई विवेकरूप रामजीका दास है ॥ १६ ॥

तामादाय ययुः सर्वं नमस्कृत्य रघूत्तमम् ॥

मासे पूर्णे निवृत्तास्तु त्रिदिग्भ्यः कपयः शुभाः ॥ १७ ॥

भाषा—तिस सुंदरीको लेके हनुमान् आदि सब कपि चलते भये एक मास बीत गया उसी दिन तीन दिशासे वानर आयके ॥ १७ ॥

समागत्य समाचख्युरप्राप्तिं कपिसत्तमाः ॥

जानक्याश्चुत्य तद्रामो लक्ष्मणश्च कपीश्वरः ॥

त्रयस्ते दुःखमापन्नास्स्वस्वकार्यविनाशनम् ॥ १८ ॥

भाषा—सुग्रीवसे कहते भये कि हम सब तो जानकीका अपनी २ दिशामें शोधन किया, परंतु जानकी नहीं मिली, ऐसे कपियोंके वचनकूं सुनके राम लक्ष्मण सुग्रीव बहुत दुःखी होते भये, रामजीका तो जानकीका वियोगरूप दुःख भया और लक्ष्मणको रामजीका दुःख देखके दुःख भया, तथा सुग्रीवको रामजीसे करार किया है, कि जानकीका शोधन मैं लगाऊंगा, सो दुःख भया ॥ १८ ॥

सुबोधितौ रामकपीश्वरौ तदा विमूर्छितौ तोषबलेन बन्धुना ॥

दुःखं परित्यज्य सुखेन संयुतौ बभूवतुर्धैर्यबलेन तौ तदा ॥ १९ ॥

भाषा—मूर्छाको प्राप्त भये जो रामजी तथा सुग्रीव इन दोनोंको संतोषरूप लक्ष्मण रामजीके भाई उन्हींको ज्ञान देते भये. तब ज्ञान पायके रामजी तथा सुग्रीव दुःखको त्यागिके धीरज धरके सुखको प्राप्त होते भये ॥ १९ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे किष्किंधाकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसं-
वादे जानकीशोधने पञ्चमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ५ ॥

समाप्तश्चायं किष्किंधाकांडः ।

अथ सुंदरकांडप्रारंभः ।

वरतन्तुरुवाच ।

युवराजादयस्सर्वे कपयो दक्षिणान्दिशम् ॥

चक्रुर्विशोधनं तस्या गिरिदुर्गेष्वनेकशः ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोलते भये अंगद आदि सब वानर दक्षिण दिशामें पर्वतोंकी बड़ी बड़ी कठिन गुहा तिनमें शोधते भये ॥ १ ॥

न केषामपि सूक्तं च गृह्यते येन कारणात् ॥

स गिरिः क्रताकर्मदुर्गमित्यभिधीयते ॥ २ ॥

भाषा—जिस मूर्खपनसे जीवमात्रकी सुंदर वाक्य न सुने तथा बुरी वाक्य सुने ऐसे स्वभावकी पर्वत संज्ञा है उसी स्वभावरूप पर्वतमें बहुत बुरा कर्म करै सो पर्वतोंकी कठिन गुहा है ॥ २ ॥

भ्रमतां कपिवीराणां शोधार्थं जानकीकृते ॥

निर्वचनास्वभावस्य गतो मासावधिस्तदा ॥ ३ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भये जो कपि तिन्हेंमें वीर जो अंगद आदि तिनका जानकीके वास्ते शोधन करते २ निष्कपटका स्वभावरूप जो मास एकका समाप्त हो बीत गया ॥ ३ ॥

तां व्यतीतां समालक्ष्य बभ्रुवुर्दुःखसंयुताः ॥

अंगदस्तु विशेषेण सरोद पितृवर्जितः ॥ ४ ॥

भाषा—जो प्रमाण सुग्रीवने करदिया था मास १ जानकीका शोधन करके आना ऐसे प्रमाणको बीतगया देख सब हनुमान् आदि कपि दुःखी होते भये तथा अंगद तो गुरुवियोगरूप पितासे हीन है इसवास्ते रुदन करता भया ॥ ४ ॥

जांबवान्दुःखितान् दृष्ट्वा समस्तान्कपिसत्तमान् ॥

उवाच वचनं वीरो मायाचेष्टोऽतिदुःसह ॥ ५ ॥

भाषा—बड़ा कठिन मायाका विचाररूप जांबवान् सो सब वानरोंको दुःखी देखके सब कपियोंसे बोलता भया ॥ ५ ॥

स्वभाववचनां त्यक्त्वा सर्वे जन्मावधिन्दृढम् ॥

कुर्वन्तां जानकीप्रातिर्ध्रुवन्नश्च भविष्यति ॥ ६ ॥

भाषा—अरे हे वानरो ! सुग्रीवने तौ निष्कपटस्वभावरूप एक मासका प्रमाण दिया सो तो बीत गया अब जबतक सब जीवै तबतककी प्रतिज्ञा करो विना जानकीकी शुद्धि लिये सुग्रीवके पास नहीं जावेंगे ऐसी दृढ़ता करोगे तब निश्चय जानकी प्राप्त होवेगी ॥ ६ ॥

ऋक्षेशवचनं श्रुत्वा तथोक्तं कृत्यसादरम् ॥

जानकीशोधने यत्ताः पुनर्वीरा ययुस्तदा ॥ ७ ॥

भाषा—जांबवान्के वाक्य सुनके कपि फिर जानकीको शोधनेके वास्ते जाते भये ॥ ७ ॥

मार्गे प्राप्ता तदा तेषां योगिनी योगतत्परा ॥

निर्वचनायास्तनुजाविलं कपटभेदनम् ॥ ८ ॥

भाषा—तब रस्तेमें एक योगिनी मिली कैसी योगिनी है निष्कपटकी लडकी कपटको काटनारूप योगिनीका बिल है ॥ ८ ॥

निवृत्तसिद्धिस्साख्याता पातालं तत्सुखं मुने ॥

तया विश्वासमार्गेण सर्वे निष्कासिता बिलात् ॥

अपक्वदद्याः पूर्वं ज्ञानपक्वास्तया कृताः ॥ ९ ॥

भाषा—मोक्षकी सिद्धिरूप सो योगिनी है उसी मोक्षकी सिद्धिमें जो सुख सो पाताल है कपटका नाश करनेवाला जो बिल सो पातालमें मिला है ऐसी निष्कपटकी लडकी योगिनी मोक्षकी सिद्धिरूप सो विश्वासरूप रस्ता करके वानरोंको उस बिलसे निकारके बाहर करदेती भई बाहर करना यह है कि प्रथम कपि कुछ ज्ञान नहीं जानते रहे सो योगिनीने कपियोंको ज्ञानमें पक्का करदिया ॥ ९ ॥

कपटोन्मूलनं तेषां तन्निःकाशन्निगद्यते ॥

लंकाकनकहर्षाब्धितटे तस्थुश्च वानराः ॥ १० ॥

भाषा—मोक्षकी सिद्धि रूप योगिनीने पूर्वोक्त जो वानर हैं तिन्होंके कपटका मूलसहित नाश किया सोही बिलसे कपियोंका निकसना हुआ, बिलसे निकसिके लंका सुखका हर्ष सो समुद्र है तिसके तटपर वानर टिकते भये ॥ १० ॥

रामांगुलेयविश्वासदर्भं विस्तीर्यते तदा ॥

पृथिव्यां त उपाविश्य प्राणान्त्यक्तुं समुद्यताः ॥ ११ ॥

भाषा—रामजीकी सुंदरी पास है इससे सब वानरोंको विश्वास है कि हम लोगोंको रामजी अपना कार्य सिद्ध विचारके तौ हमारे दलमें सुंदरी दिये हैं ऐसा विश्वास सोई कुश भया तिस कुशको जमीनमें बिछायके उसी कुश आसनपर बैठके सब वानर प्राण त्यागनेकी तयारी करते भये ॥ ११ ॥

स्वभावक्रूरताप्राणं त्यजतां वनचारिणाम् ॥

दैवयोगात्तदा प्राप्तस्संपातिर्गृह्यसत्तमः ॥ १२ ॥

भाषा—वानरोंका स्वभाव बड़ा क्रूर है तिसको त्यागते जो वानर उसी समयमें दैवयोगसे संपाति नाम गीध आता भया ॥ १२ ॥

दुर्लक्षणजटायोश्च भ्राता दुर्गतिवर्द्धनः ॥

तं दृष्ट्वा कपयः सर्वे स्वात्मानं तेन भक्षितम् ॥ १३ ॥

भाषा—खोटा लक्षण जो जटायु तिसका यह भाई खोटी गतिको बढ़ाने-वाला बड़ा लोभरूप संपाति गीध है तिस बड़े लोभरूप संपातिको वानर देखके अपनी २ देहका भक्षण ॥ १३ ॥

अमन्यन्त तदोक्तश्च युवराजेन गृद्धराट् ॥

संपातिश्चरितं भ्रातुः श्रुत्वा विह्वलमानसः ॥ १४ ॥

भाषा—मानते भये कि यह दुष्ट हम सब लोगोंको खावेगा तब अंगद संपातिसे पहिलेकी सब बात कहते भये संपाति जटायुका मरण सुनके विह्वल होगया विचार किया कि जीवोंको छोटा लक्षण जटायु बड़ा लोभ जो मैं हूँ तिस मेरा आदर करता था अब वह मरगया जीवमात्र सब सुलक्षण होगये मेरेको आदर कौन देवेगा इसवास्ते संपाति दुःखी भया ॥ १४ ॥

कथित्वा सस्ववृत्तांतं जानक्याश्च कपीन्प्रति ॥

प्राप्तपक्षो ययौ पक्षी स्वगतित्वरितं खगः ॥

स्वस्थावासार्जवौ प्रोक्तौ गृद्धपक्षौ शुभाशुभौ ॥ १५ ॥

भाषा—अतिलोभरूप संपाति अपना हाल तथा जानकीका प्राप्त होनेका हाल कहके सुंदर अवस्थामें वास तथा बड़े लोभकां दुष्टस्वभाव छोड़के कोमलस्वभाव ये दो पक्ष प्राप्त होके चला गया ॥ १५ ॥

कपीनां दर्शनफलादतिलोभं वित्यज्य सः ॥

गते गृद्धे निरीक्ष्याथ कपयस्सागरं तदा ॥ १६ ॥

भाषा—कपियोंके दर्शनके फलसे अति लोभको त्यागके संपाति महात्मा होगया तब गीधके गये पीछे वानर समुद्रको देखके सब ॥ १६ ॥

एनमुल्लङ्घ्य को वीरो लंकां गत्वा च जानकीम् ॥

दृष्ट्वा ख्यास्यति रामाय जानकीकुशलं सुधीः ॥ १७ ॥

भाषा—आपसमें विचारने लगे कि ऐसा वीर कौन है जो वीर इस समुद्रको कूदके लंकाको जायके जानकीको देखके जानकीकी कुशल रामचंद्रसे कहे ॥ १७ ॥

स्वस्ववीर्यं वदन्ति स्म सर्वे कपिवरास्तदा ॥

गुरुमानवभावं वै कार्य्यं कर्तुन्न ते क्षमाः ॥ १८ ॥

भाषा—गुरुको मनुष्यसरीखे देखतेथे वानर लोग सो वानरका पराक्रम है उसी अपने २ वीर्यको समुद्रके लांघन वास्ते आपसमें सब वानर कहते भये परंतु समुद्रको कूदिके लंकाको जाकर जानकीका हाल रामजीसे कहनेको किसीकी सामर्थ्य नहीं होती भई ॥ १८ ॥

दुःखितान्वानरान्वीक्ष्य प्रेरयामास मारुतिम् ॥

ऋक्षेशो रामचंद्रस्य प्रीतितृष्णासमुद्रवम् ॥ १९ ॥

भाषा—वानरोंको दुःखित देखिकै रामजीमें जो प्रीति तिसकी जो तृष्णा तिस तृष्णाके पुत्र जो हनुमान् तिसको जांबवंत आज्ञा देतेभये ॥ १९ ॥

रामपादरतेमौहं हनुमन्तं महाकापिम् ॥

आरुरोह गिरिं वरिो रामनिन्दनरूपिणम् ॥ २० ॥

भाषा—कैसे हनुमान् हैं रामजीके चरणोंकी जो रति तिस रतिमें मोहरूप है ऐसा जो हनुमान् है सो दुष्ट जन रामजीकी निंदा करते हैं सोई निंदारूप पर्वतपर चढिगये ॥ २० ॥

दासाभिमानपादेन तमापीड्य महागिरिम् ॥

सिन्धूलंघनकार्यार्थमारुरोह नभः कपिः ॥ २१ ॥

भाषा—हनुमान्ने विचारा कि मैं रामजीका दास हूं ऐसा दासको अभिमान सोई हनुमान्का पग है तिस पग करिके रामजीके निंदनरूप पर्वतको दाबिके समुद्रको कूदने वास्ते हनुमान् आकाशको चढिगये ॥ २१ ॥

कार्यसिद्धिं स्वतो ज्ञात्वा चिंताशून्यं नभः स्मृतम् ॥

पूर्वोक्तसागरे हर्षतोयवृद्धिप्रपूरिते ॥

तिष्ठन्ती वनिता काचित्कुर्मररीतिरद्भुता ॥ २२ ॥

भाषा—रामजीके कार्यकी सिद्धि हनुमान्ने आपमें जानिके चिंताको त्याग दिया सो चिंताहीन हनुमान्का चित्त सोई आकाश भया है प्रथम वर्णन भयाः हर्ष सोई जल है तिस जलकी वृद्धि करिके पूर्ण जो समुद्र तिसमें कुर्मरकी रीति रूप कोई स्त्री बड़ी अद्भुत ॥ २२ ॥

सिंहिका सा समाख्याता तया ग्रस्तस्तदा कपिः ॥

छायामार्गेण सा वीरञ्चकपं स्वान्तिकं हि सा ॥ २३ ॥

भाषा—सिंहिका उसका नाम सो स्त्री हनुमान्की छाया पकरिके अपने सामने हनुमान्को खँचि लेती भई ॥ २३ ॥

स्वछायां हनुमान्वीक्ष्य कार्यबुद्धिं दृढां कपिः ॥

शीघ्रं गमनक्रोधेन कार्यविघ्नेन मुष्टिना ॥ २४ ॥

भाषा—रामजीके काजमें हनुमानकी बुद्धि बहुत दृढ है सोई हनुमानकी छाया है तिस छायाको ग्रसित देखिके तब रामजीके काज वास्ते जल्दी जाना तिसमें विघ्न होना सो हनुमानके हाथकी मुष्टि है तिस मुष्टि करिके ॥ २४ ॥

तां हत्वा च पुनर्गुणमारेभे सहसा कपिः ॥

सुरैर्जग्राह तं वीरम्प्रेषिता सुरसा सती ॥ २५ ॥

भाषा—सिंहिकाको मारिके जल्दी चलते भये तब देवताओं करिके भेजी जो सुरसा उसने हनुमानको पकड़लिया ॥ २५ ॥

सुकार्य्यभ्रान्तिस्सा ज्ञेया मार्गन्देहीति तां कपिः ॥

प्रोवाच न ददौ मार्गं सुमनस्तञ्च सा यदा ॥ २६ ॥

भाषा—सुंदर काजमें जो भ्रांति होती है सोई सुरसा है तब सुरसासे हनुमान बोले हे सुरसे ! तू सुंदर काजकी भ्रांति है सो मेरे सुंदरमनरूप रस्ता दे रामजीके काज करनेमें मेरे मनमें भ्रांति रूप तू मति टिक ऐसा हनुमानने कहा तब सुरसाने रस्ता नहीं दिया ॥ २६ ॥

तदा कपिस्तान्निर्भर्त्स्य गंतुकामः प्रचक्रमे ॥

गच्छंतं सा कपिन्दृष्ट्वा भक्षितुं समनुद्यता ॥ २७ ॥

भाषा—तब हनुमान उसको त्रास करिके जबरदस्तीसे चलते भये तब चले जाते हुए जो हनुमान तिनको खानेवास्ते उपाय करती भई ॥ २७ ॥

रामकार्येषु विद्वेषन्तत्तस्या मुखवर्द्धनम् ॥

अहं द्रक्ष्यामि वैदेहीमिति हर्षवन्तनुः ॥ २८ ॥

भाषा—रामजीके काजमें वैर सोई सुरसाका सुखका बढ़ाना भया तथा हनुमान्जीने विचारा कि मैं जानकीको देखूंगा ऐसे हर्षकी वृद्धि सोई जलदी हनुमानकाभी देहका बढ़ाना हुआ ॥ २८ ॥

कपिना वर्द्धितस्तूर्णं ज्ञात्वा तस्य पराक्रमम् ॥

तदास्यमदनाशश्च तम्प्रविश्य तनुं कपिः ॥ २९ ॥

भाषा—सुरसा हनुमानके पराक्रमको देखिके तब सुरसाके सुख बढ़ानेका अभिमान नष्ट होगया तब हनुमान सुरसाके तनुरूप सुखमें प्रवेश करिके ॥ २९ ॥

गन्तुकाभन्निरीक्ष्यैव ददावाशिपमुत्तमाम् ॥

निर्माहताशिपन्दत्त्वा गताकाशं च सा पुनः ॥ ३० ॥

भाषा—यह श्लोक युग्म है हनुमानको जाता देखिके निर्माहरूप आशीर्वाद हनुमानको देती भई कि हे हनुमान् ! रामजीकी चरणके प्रीतिमें तुम्हारा मोह सदा बना रहेगा ऐसा कहिके आकाशको जाती भई ॥ ३० ॥

चिंतापानीयतद्वीर्यं सुरकार्यविवर्जनम् ॥

दुष्टकर्माण्यनेकानि तेषाम्मध्ये शतैस्तदा ॥ ३१ ॥

भाषा—तब हनुमान् समुद्रके पार जाते भये कैसा समुद्र है हनुमान्की चिंतारूप जल सोई समुद्रका पराक्रम है देवतोंके कार्यको करने नहीं देना सोई अनेक दुष्टकर्म हैं तिन दुष्टोंके मध्यमें सैकड़ों १०० दुष्ट करिके ॥ ३१ ॥

महाबलैर्विस्तृतं च दुरीहजन्तुसंकुलम् ॥

ईदृशं सागरन्तीर्त्वा गतः पारं च दक्षिणम् ॥ ३२ ॥

भाषा—बड़े बली करिके विस्तार होरहा है तथा दुष्टोंका रातिदिन खोटे कर्ममें भाव सोई जलके जीव हैं तिन जीवों करिके व्याप्त होरहा है ऐसे समुद्रको पार जायकै समुद्रके दक्षिण तटको हनुमान प्राप्त भये तीन श्लोक ३० तथा ३१ तथा ३२ का अर्थ मिला है सो कुलक है ॥ ३२ ॥

मंस्यन्ति मातरं मेऽद्य धन्यामेतच्चराचरम् ॥

इति हर्षं कपिर्मेने तदक्षिणतटं मुने ॥ ३३ ॥

भाषा—हनुमान्ने विचार किया कि अभी यह संसार चराचर जीव मेरी माताको धन्य मानेंगे ऐसा हर्ष हनुमान अपने हृदयमें मानते भये सोई समुद्रका दक्षिण तट है ॥ ३३ ॥

संस्मृत्य रामस्य स्वरूपमद्भुत कपोश्वरः सिंधुतटस्थितो बभौ ॥

अहं भविष्यामि द्वयोस्सुवीरयोस्सुकंठसन्तोषनुदोस्सदा प्रियः ॥ ३४ ॥

भाषा—हनुमान् रामचंद्रके अद्भुत स्वरूपको स्मरण करिके खुशी भये सोई समुद्रके तटपर टिके जो हनुमान तिनकी शोभा है, जानकीकूं देखिके रामजीके पास जाऊंगा, तब रामजीको तथा सुग्रीवको बड़ा प्यारा होऊंगा ऐसा आनंद मानते भये ॥ ३४ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे शिवसहायबुधविरचिते सुंदरकांडे
प्रथमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ १ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

सिंधोस्तटे समासीनो विचारं कृतवान्कपिः ॥

रामचन्द्रपदध्यानन्तद्विचारं हनूमतः ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोले हर्षरूप समुद्रके तटपर हनुमान् टिकिके राम-
जिके चरणका ध्यान करते भये, सोई ध्यान लंकामें प्रवेश करने वास्ते हनु-
मान्का विचार करना भया ॥ १ ॥

रामचन्द्रपदद्वंद्वप्रीतितृष्णा सुतस्य वै ॥

जगतो लघुज्ञानत्वं लघुरूपं च तद्धृतम् ॥ २ ॥

भाषा—रामजीके चरणमें जो प्रीति उसी प्रीतिकी तृष्णा तिसके पुत्र
हनुमान सो अपनी हृदयमें ऐसा विचार करते हैं कि तीन लोक चौदा भुवन विवेक-
रूप रामसे थोरा है ये रामजी सबसे बड़े हैं ऐसा विचार सोई छोटा रूप भया है
ऐसे रूपको हनुमान धरिके लंकामें प्रवेश करते भये ॥ २ ॥

दुष्टकर्मस्थितिः प्रीत्या हठात्सा रावणालया ॥

प्रविशन्तं कपिन्द्वि तर्जयामास सा निजैः ॥

चिरसंस्थैश्चरित्रैश्च दुष्टराक्षससंस्थितैः ॥ ३ ॥

भाषा—तब हठसे खोटे कर्ममें प्रीतिसे टिकना ऐसी जो लंकारूप राक्षसी सो लंकामें प्रवेश करके जो हनुमान् तिनको अपने चरित्र करके डराती भई, कैसा चरित्र है बहुत दिनोंसे दुष्ट राक्षसोंके संग वासरूप चरित्र ॥ ३ ॥

लंकाप्रवेशहर्षस्य या तृष्णाभूत्कपेस्तदा ॥

तया मुष्ट्या महावीरो हत्वा ताम्प्राविशत्पुरीम् ॥ ४ ॥

भाषा—हनुमानने लंकामें प्रवेश किया तब बड़ा हर्ष भया, उस हर्षमें जो तृष्णा सो हनुमान्के हाथकी मूठी भई उसी मूठी करके लंका राक्षसीको मारिके लंकामें प्रवेश करते भये ॥ ४ ॥

जानकीशोकसविता जगामास्तन्तदा कपिः ॥

कपेर्धैर्यमभूत्सायम्प्रवेशं हर्षवर्द्धनम् ॥ ५ ॥

भाषा—तब जानकीके शोकरूप सूर्यका अस्त होगया तथा हनुमानकी धीरता सोई सायंकाल होगया, हनुमान् अत्यंत खुशी भये सो खुशी होना लंकामें हनुमान्का प्रवेश भया है ॥ ५ ॥

मदांधबुद्धिर्दैत्यानां रावणादिप्रतापिनाम् ॥

सा निशा जानकीं द्रष्टुं तस्याम्बभ्राम वानरः ॥ ६ ॥

भाषा—रावण आदि लेके बड़े बड़े राक्षसोंकी बुद्धि अभिमान करके अन्धी होरही है सोई रात्रि भई तिस रात्रिमें जानकीके देखने वास्ते प्रेमरूप भ्रमण हनुमान् करते भये ॥ ६ ॥

नापश्यज्जानकीं तत्र ब्रह्मभक्तिं कपीश्वरः ॥

राक्षसानां दुरावृत्तिस्सा चिन्ताप्यभवत्कपेः ॥ ७ ॥

भाषा—ब्रह्मकी भक्तिरूप जानकीको नहीं देखे हनुमान् तब राक्षसोंकी खोटी वृत्तिरूप चिन्ताको हनुमान् प्राप्त भये ॥ ७ ॥

चिन्ताग्रस्तः कपीशश्च जगामाशोकवाटिकाम् ॥

कदापि दैवात्सत्संगो रावणस्यापि संभवेत् ॥ ८ ॥

भाषा—उसी चिन्ता करके ग्रसित जो हनुमान् सो अशोकबगीचामें गये, कभी दैवयोगसे रावणको भी सत्संग हो जावेगा ॥ ८ ॥

यत्रकुत्रापि तद्धर्षस्साऽशोकतरुच्यते ॥

तत्प्रीतिर्वाटिका प्रोक्ता चान्ये वृक्षास्त्वनेकशः ॥ ९ ॥

भाषा—जिसी किसी जगहपर ऐसा विचारमें जो हर्ष सो अशोक नाम वृक्ष है, उसी हर्षरूप अशोकवृक्षमें जो प्रीति सो अशोक बगीचा है तथा दूसरे कामके हर्षरूप वृक्ष तौ अनेक हैं ॥ ९ ॥

ते सर्वे शाकवृक्षानां सुखाश्चामितशाखिनः ॥

फलिनस्तरवश्चान्ये दुःकर्म्मामोदरूपिणः ॥ १० ॥

भाषा—और जो वृक्ष अनेक अनेक प्रकारके हैं सो अशोकवृक्षोंके सुखरूप हैं और खोटे कार्यमें आनंद माने ऐसा रूप वृक्ष फूलवाले भी हैं क्योंकि बगीचामें एकही रकमका वृक्ष नहीं रहता बहुत प्रकारके रहते हैं ॥ १० ॥

पूर्वोक्ता वाटिका मुख्या चेयमाभ्यन्तरस्थिता ॥

राक्षसानां विलासाय चान्यास्तासु च भूरिशः ॥ ११ ॥

भाषा—तथा अरण्यकांडमें जानकीके टिकाते समय अशोक वाटिकाका वर्णन भयाहै, असल वह है यह तो बगीचाके भीतर भी बगीचा रहता है सो यह है, राक्षसोंके आनंद करने वास्ते अशोकबगीचामें इससे भी और बहुत बगीचा हैं ॥ ११ ॥

समारुह्य कपिर्वीरो द्रढिमानं तरुं सुधीः ॥

ददर्श तदधो वीरो हर्षशोकस्वरूपिणीम् ॥ १२ ॥

भाषा—हनुमानके हृदयमें ऐसी दृढ़ता है कि मैं रामजीका कार्य करूंगा, सोई एक वृक्ष है जिसके नीचे जानकी रहती थी, तिसवृक्ष पर हनुमान चढ़िके कभी हर्ष कभी शोक ऐसा हनुमानके हृदयमें होता है। सोई उस वृक्षका नीचे-तल भया है। ऐसे वृक्षके नीचे जानकीको हनुमान देखते भये ॥ १२ ॥

जानकीं ब्रह्मणो भक्तिं जन्ममृत्युविनाशिनीम् ॥

एकवेणीधरान्देवीं रूपचिन्तास्वरूपिणीम् ॥ १३ ॥

भाषा—कैसी जानकी है ब्रह्मकी भक्ति है। जन्म तथा मरणके बाधाकी

नाश करनेवाली है । भगवानके रूपकी चिंता जानकी राति दिन करती है सोई शिरमें एक पाटी बनायकै उसी पाटीको शिरमें धारण किये है ॥ १३ ॥

कृशितां राक्षसानां वै मुक्तिदानस्य चिंतया ॥

बिभ्रतीम्मलिनं वस्त्रं रामचन्द्रवियोगजम् ॥

दुःखरूपं विलोक्याशु जहर्ष कपिसत्तमः ॥ १४ ॥

भाषा—इन दुष्ट राक्षसोंका मोक्ष कैसा होवेगा ऐसी चिंतारूप सोई जानकी दुर्बल होरही है. रामजीका वियोगरूप मैला वस्त्र जानकीने धारण किया है ऐसा दुःखरूप जानकीका स्वरूप हनुमान जलदी देखिके बहुत खुशी भये कि जानकी दुःखी है परंतु मैंने जानकीका दर्शन पाया. इसवास्ते खुशी भये ॥ १४ ॥

आजगाम तदा वीरो रावणो राक्षसेश्वरः ॥

जानकीं स्वास्त्रिय कर्तुं तन्दृष्ट्वा पिहितः कपिः ॥ १५ ॥

भाषा—तब उसी समय जानकीको रावण अपनी स्त्री बनाने वास्ते आता भया. तिसको देखिके हनुमान छिपि गये ॥ १५ ॥

दर्शयित्वा च सामादि रावणो वै पराजितः ॥

न स्वीकृतन्तया सर्वा राक्षसीः प्रत्युवाच ह ॥ १६ ॥

भाषा—रावणने साम दान दंड भेद जानकीको देखायके हारि गया, जानकी रावणके वाक्यको नहीं मानती भई, तब रावण बोला हे देवि ! मैंभी भगवानका अश हूं इति साम । हे देवि ! मैं भी तुम्हारा नाम लेऊंगा इति दान । हे देवि ! मेरी विनती नहीं मानो तो मैं तो भ्रष्ट होगया हूं परंतु तुमको भी भ्रष्ट करिदेऊंगा इति दंड । अपनी प्रकृतिरूप राक्षसियोंको भेजिके जानकीके पास चुगली कराया, मेरी मंडलीमें आ जावो यह चारं भेद जानकीने नहीं माने तो राक्षसियोंसे रावण बोला ॥ १६ ॥

द्विमासाभ्यन्तरे सीता न मद्भ्रशमुपैष्यति ॥

तदास्याः कर्तव्यं चांगानि राक्षसेभ्यः प्रदास्यथ ॥

पूर्वाक्ता राक्षसाः प्रोक्तास्त्यागन्तत्तनुकृन्तनम् ॥ १७ ॥

भाषा—दो महीनेके बीचमें सीता हमारे वशमें नहीं आवेगी तो इस जानकीकी देहको काटके राक्षसोंको तुम सब मिलके देदो, जानकीको लंकासे निकालि देना यही देहका काटना है पहिले कहे हुए राक्षसोंको जानकीके रक्षा वास्ते देना सोई देह काटके देना है ॥ १७ ॥

इंद्रियाणां च द्वे चेष्टे कर्मज्ञानेति सर्वदा ॥

इत्युक्त्वा राक्षसीं रक्षो जगाम स्वालय शठः ॥१८॥

भाषा—दश इंद्रियोंकी दो चेष्टा हैं पांच ज्ञानेन्द्रिय स्वभाव पांच कर्मेन्द्रिय स्वभाव यह सदा है सोई दो महीने भये हैं ज्ञानसे तथा कर्मसे समझाओ ऐसा राक्षसियोंसे कहिके रावण जो शठ है सो अपने घरकू गया ॥ १८ ॥

गते दृशानने सीतान्निर्देष्टव्यास्त्वनैकशः ॥

राक्षस्यस्त्रासयामासुस्त्रासनन्तन्मदक्षयम् ॥ १९ ॥

भाषा—रावणके गये पीछे परनिंदा पराई ईर्ष्या इन्हों आदि लेके गिनती रहित जो राक्षसी हैं सो सब अपना अनेक प्रकारकी मदका क्षयरूप जो त्रास सो जानकीको देनेलगीं ॥ १९ ॥

वर्जयित्वा च तास्सर्वास्त्रिजटा वाक्यमब्रवीत् ॥

शत्रुत्रयविनाशाय त्रिधा बुद्धिश्च सा स्मृता ॥ २० ॥

भाषा—काम क्रोध लोभका नाश करनेकी बुद्धि जो त्रिजटा है सो रामजीकी प्यारी है वह सब राक्षसियोंको मना करके बोलती हुई ॥ २० ॥

मा त्रासयथ वैदेहीं रावणस्य कुलक्षयम् ॥

अचिरेणैव मे दृष्टो राज्याप्तिश्च विभीषणे ॥ २१ ॥

भाषा—अरे दुष्टिनी राक्षसियो ! जनकपुत्रीको त्रास मत करो रावणके कुलका नाश थोडेही दिनमें मैं देखती हूं और लंकाका राज्य विभीषणका होवेगा यह भी मैं देखती हूं ॥ २१ ॥

एवमुक्तास्तया सर्वा बभूवुर्निद्रया युताः ॥

जानक्यै शमनीम्बुद्धिन्दत्त्वागात्रिजटा गृहम् ॥ २२ ॥

भाषा—त्रिजटा करके इस प्रकार कही जो राक्षसी हैं सो सब निद्रासे व्याकुल होयके सो गईं त्रिजटा जानकी प्रति शांतिबुद्धि देके अपने घरकूं गई राक्षसियोंका बुरा कर्म छूटना सो निद्रा सोना है ॥ २२ ॥

संसारसुखत्यागश्च त्रिजटागेहमुत्तमम् ॥

तदादि सर्वं रामस्य चरितं कपिरभाषत ॥ २३ ॥

भाषा—संसारके सुखका त्याग सोई त्रिजटाका घर है त्रिजटाके गये पछि आदिसे रामजीका सब चरित्र हनुमान् कहते भये ॥ २३ ॥

श्रुत्वापि सर्वं रामस्य चरितं कपिवर्णितम् ॥

स्वपतिप्रीतिसन्त्यागाविश्वासं प्राप जानकी ॥ २४ ॥

भाषा—कपिके मुखसे कहा जो रामजीका चरित्र सो संपूर्ण जानकीने सुना तो भी चित्तमें विचार किया कि मैंने अपने पतिकी प्रीति रक्षा करनेके वास्ते दूसरेका वचन नहीं सुनती हूं दूसरेका वचन सुननेसे अपने पतिकी प्रीतिका त्याग होता है ऐसा अविश्वास किया विश्वास नहीं मानती हुई ॥ २४ ॥

जानक्या रामचंद्रस्य प्रीतिरत्यंतवल्लभा ॥

तदुत्पन्नं च यत्प्रेम ददौ तद्धनुमान् कपिः ॥ २५ ॥

भाषा—जानकीके ऊपर रामजीकी बड़ी प्यारी प्रीति है तिस प्रीतिसे जो उत्पन्न भया प्रेम सो मुद्रिका है उस मुँदरीको हनुमान् जानकीकूं देते भये ॥ २५ ॥

रामांगुलीयं संगृह्य सुतं मेने कपिं सती ॥

तितिक्षारूपसंवादं चक्रतुः पुत्रमातरौ ॥ २६ ॥

भाषा—रामजीकी मुँदरी लेके जानकी हनुमान्कूं अपना पुत्र मानती हुई दुष्टके कर्मको देखके क्रोध नहीं करना ऐसी बात पुत्र जो हनुमान् माता जो जानकी ये दोनों करते भये ॥ २६ ॥

क्षुद्रावणमिलापेच्छा तयातौ राजकन्यया ॥

अनुज्ञातो बभक्षाशु फलानि निर्भयः कपिः ॥ २७ ॥

भाषा—हनुमान्जीकी रावणसे मुलाकात करनेकी इच्छा सोई भूख है तिस

भूखमें बड़ा दुःखी होके हनुमान् जनककी कन्या जो जानकी तिससे आज्ञा मांगके और भय छोडके फल खाते भये ॥ २७ ॥

दुष्टकर्मादितरवः फलं तेषां परार्दनम् ॥

तानुत्पाद्य कपिवीरि भक्षित्वा तत्फलानि च ॥ २८ ॥

भाषा—जुआ चोरी जहर देना आग लगाना इनको आदि लेके और जो बुरे कर्म हैं सो सब वृक्ष भये हैं तिनको हनुमान् मूलसे तोडता हुआ इन वृक्षोंका फल क्या है दूसरेकुं दुःख देना ऐसे फलोंको भी खाया. त्रेता द्वापरमें ये नष्ट होगये. कलियुगमें पुनि भये ॥ २८ ॥

जगर्ज दुष्टनाशं च राक्षसीभिर्निवेदितः ॥

गर्जन्वीरो मनश्चक्रे रावणं हंतुमुद्यतः ॥ २९ ॥

भाषा—बुरे कर्मका नाशरूप हनुमान्का गर्जना भया. तथा राक्षसियां रावणसे सब हाल कहती भई गर्जना करते करते हनुमान्जी मनरूप रावणको मारनेका विचार करते भये ॥ २९ ॥

विवेकरूपस्य रघूत्तमस्य तृष्णासुतः प्रेमरसस्य मोहः ॥

गर्जन्यपीशाधिपतेश्च दूतो वितर्कयामास दशास्यमृत्युम् ॥ ३० ॥

भाषा—विवेकरूप रामजीके भजनकी तृष्णाके पुत्र हनुमान् तथा रामजीके प्रेमके मोहरूप सुग्रीवके दूत ऐसे हनुमान् रावणका मरण विचारते हुए ॥ ३० ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे सुन्दरकांडे संवर्तवरतन्तुसंवादे शिवसहायबुधविरचिते
अशोकवाटिकानाशे द्वितीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ २ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

राक्षसीभिः समाश्रुत्य कपेः कर्म च रावणः ॥

स्वपुत्रमक्षनामानं कलिं याहीत्यनोदयत् ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि बोलते भये राक्षसियों करके कथित जो हनुमान्का किया कर्म तिसको रावण सुनके अपना पुत्र जो सब जीवोंसे लडाईरूप अक्ष नाम तिसको भेजता हुआ उससे कहा कि त जायके हनुमान्को पकड लावो ॥ १ ॥

पित्राज्ञातो ययौ शीघ्रं कलहो रामपादयोः ॥

तृष्णात्मजं च तन्मोहं ददर्श स्वस्वरूपिणम् ॥ २ ॥

भाषा—पिताकी आज्ञाको पायके जलदी अक्षकुमार गया, जायके बहुत हुशियार होयके टिके जो हनुमान् तिसको देखा, कैसे हनुमान् हैं रामजीके दोनों चरणोंकी जो तृष्णा तिसका बेठा है, तथा रामजीके पगका जो मोह सोई हनुमान् है ॥ २ ॥

सद्रोहो राक्षसेन्द्रस्य प्रासादो वाटिकास्थितः ॥

तमारूढं कपिन्दृष्ट्वा हन्तुं सोऽभिप्रदुदुवे ॥ ३ ॥

भाषा—मनरूप रावणने सुंदर कार्यमें द्रोह किया, सोई द्रोहरूप अशोक-बगीचामें हवेली है अक्षकुमार तिस हवेलीपर बैठा जो हनुमान् तिनको मारनेके वास्ते दौडता भया ॥ ३ ॥

स हतः कपिर्वीरेण पपात धरणीतले ॥

विरुद्धबुद्धिसम्भूते दुर्वाक्ये रावणात्मजः ॥ ४ ॥

भाषा—रावणका पुत्र हनुमान् करके मारा थका सो भूमिमें पड गया खोटी बुद्धिसे उत्पन्न जो खोटा वचन सो भूमिका तल कहाता है तहां पडके मर गया ॥ ४ ॥

किंचित्कालिं स्वतनयं हतं दृष्ट्वा च रावणः ॥

दुश्श्रेष्ठितं मेघनादं प्रेरयामास सत्वरः ॥ ५ ॥

भाषा—रावण थोडा कलहरूप अपना बेठा अक्ष तिसको मरा देखके जलदी खोटे काजकी प्रीति जैसा दूसरेका सुख देखके जलना सोई मेघनाद है तिसको भेजता भया ॥ ५ ॥

स तेन कृतवान्युद्धं स्वस्वकर्मप्रशंसनम् ॥

सत्तिरस्कारपाशेन बबन्ध त्वरितं कपिम् ॥ ६ ॥

भाषा—मेघनादने अपने कुलकी तारीफ तथा हनुमान्ने रामजीके समाजकी

तारीफ की, ऐसा युद्ध दोनों करते भये तिस पीछे साधुलोगोंका जो अनादर सोई पाश भया है तिस पाश करके हनुमानको बांधता भया ॥ ६ ॥

रामचन्द्रविरुद्धेच्छा सा सभा रावणस्य च ॥

कपिर्बद्धो ययौ तां च तेनानीतो दुरात्मना ॥ ७ ॥

भाषा—रामजीके संग विरुद्ध करनेकी इच्छा सोई रावणकी सभा है सो खोटे काजमें प्रेमरूप मेघनाद उसी सभामें बंधे हुए हनुमान्कू लगेया ॥ ७ ॥

मनसा रावणेनैव पृष्टः कस्त्वमिहागतः ॥

किमर्थं काननन्नष्टं कृतं ते मे सुतो हतः ॥ ८ ॥

भाषा—मन रावण हनुमान्से पूछने लगा तू कौन है यहाँ क्यों आया और अशोकवाटिकाका नाश क्यों किया तथा हमारे पुत्रको क्यों मारा ॥ ८ ॥

इति पृष्टस्तदोवाच निर्भयो हनुमान्कपिः ॥

दूतोऽहं रामचन्द्रस्य निर्मोहो हनुमान्कपिः ॥

जानकीदर्शनायात्र प्राप्तस्सुग्रीवप्रेरितः ॥ ९ ॥

भाषा—मैं विवेकरूप रामजीका दूत हूं हनुमान् मेरा नाम है गुरुका उप-देशरूप जो सुग्रीव उसने जानकीको देखनेके वास्ते मेरेको लंकामें भेजा है ॥ ९ ॥

इत्युक्तस्ताडयामास रावणो राक्षसैस्तदा ॥

कपिं विषयजैस्सौख्यैर्गणनावर्जितैर्मुहुः ॥ १० ॥

भाषा—हनुमान्का वाक्य सुनके गिनतीसे हीन जो विषयका सुख तिस करके रावण राक्षसोंसे हनुमान्को मराता भया ॥ १० ॥

रामचन्द्रपदं प्रीतितृष्णापुत्रस्य दाहनम् ॥

विचार्य राक्षसाश्चक्रुस्तत्पुच्छे वस्त्रवेष्टनम् ॥ ११ ॥

भाषा—रामचंद्रके चरणकी तृष्णा तिसके पुत्र हनुमान् मोह नाम ऐसे हनुमान्को भस्म करने वास्ते खोटा कर्मरूप वन सब राक्षस हनुमान्की पुच्छमें वस्त्र लपेटते भये ॥ ११ ॥

रामसेवासुखे हर्षं तल्लांगूलं कपेः स्मृतम् ॥

दुष्टकर्मसुखैर्वस्त्रैर्वेष्टित्वाग्निं समाददुः ॥ १२ ॥

भाषा—रामजीकी सेवामें जो सुख तिस सुखका हर्ष सोई हनुमान्की पुच्छ है तिस पुच्छमें खोटे कर्मोंमें जो सुख सोई कपडा भया है तिस कपडेको हनुमान्की पुच्छसे लपेटके अग्नि लगा देते भये ॥ १२ ॥

स्वशक्त्यभावः कार्येषु सोऽग्निरित्येव कीर्त्यते ॥

चिंताप्रजागरं तैलं रज्ज्वक्षशोकमुत्तमम् ॥ १३ ॥

भाषा—खोटे काजोंमें राक्षसोंकी शक्ति नष्ट होगई सो अग्नि भई तथा राक्षसोंको चिंता करके नींद नहीं आती सो तेल है अक्षकुमारका शोक सो बड़ी पुष्ट रस्सी है तिस रसीसे पूंछमें वस्त्रको बांधके अग्नि लगा देते भये ॥ १३ ॥

ग्रहणं हठसंवेगो भ्रमणं च दुरासदम् ॥

हसनं राक्षसानां वै रामचन्द्रपराजयः ॥ १४ ॥

भाषा—राक्षसीकों हठकी वृद्धि सोई राक्षसों करके हनुमान्का पकडना भया है राक्षस बड़े दुःखसे जीतने योग्य हैं ऐसा दुष्टोंका बल सोई लंकामें हनुमान्का भ्रमण करना भया है रामजीको हम जीति लेंगे ऐसा राक्षसोंका विचार सोई हास्य भया है ॥ १४ ॥

राक्षसानां कुकर्माद्यास्ते सर्वे न्यायकौशलाः ॥

त एव ताडना भूरि कपेर्हर्षविवर्द्धनाः ॥ १५ ॥

भाषा—राक्षसोंके खोटे कर्म आदि लेके चतुराई सोई हनुमान्का हर्ष बढ़ानेवाला ताडना भया है ॥ १५ ॥

एतैश्चान्यैश्च बहुभिर्झरीरस्थैश्च राक्षसैः ॥

प्रेरितैर्दशभालेन संमोहस्त्रासितः कपिः ॥ १६ ॥

भाषा—इनसे और भी जो शरीरमें बहुतसे राक्षस टिके हैं सो सब मनरावणकी आज्ञा पायके रामजीके प्रेमका मोहरूप जो हनुमान् तिसको त्रास देते भये ॥ १६ ॥

भ्रामितो हसितश्चैव ताडितोऽपि प्रकुत्सनैः ॥

संमोहो हनुमानाप शान्तिं रामप्रकोपतः ॥ १७ ॥

भाषा—रामके प्रेममें मोहरूप जो हनुमान् सो दूसरे जीवोंको दुख देनेवाले राक्षसों करके घुमाये गये तथा मारेजाते भये तथा हँसे जाते भये तौभी विवेकरूप रामजीके क्रोधसे शांतिको प्राप्त भये विचार किये कि लंकामें जो मैं कुछ ज्यादा उत्पात करूंगा तो रामजी मेरी दुर्गति करेंगे ॥ १७ ॥

न किञ्चिद्राक्षसान्सर्वान्मन्यते कपिसत्तमः ॥

लघुना कृतरूपेण पाशान्निर्गत्य तत्क्षणे ॥ १८ ॥

भाषा—हनुमान् राक्षसोंको कुछभी बलवान् नहीं गिनते थे यह जो राक्षसोंकी लघुता सो हनुमान्का लघुरूप भया है ऐसा लघुरूप धरके हनुमान् उसी समय राक्षसोंके पाशसे निकल गये ॥ १८ ॥

दुष्टकार्यस्थितिं प्रीत्या हठजां हनुमान्कपिः ॥

ददाह लंकाव्रगरीं राक्षसानां प्रपश्यताम् ॥ १९ ॥

भाषा—बुरे काजोंमें हठसे प्रीतिसे टिकना ऐसी लंका है तिस लंकाको राक्षसोंके देखते २ हनुमान् जन्म करदेते भये ॥ १९ ॥

पूर्वबुद्धिपरित्यागस्सैव दाहो विकथ्यते ॥

निन्देष्ट्या भूरितृष्णाद्या दुष्टकर्मरतिस्सदा ॥

परवित्तकलत्रादिस्पृहा च सततं हृदि ॥ २० ॥

भाषा—हनुमान्के त्राससे राक्षसोंकी प्रथमवाली बुद्धिका थोडा थोडा त्यागना सोई लंकाका जलाना भया है तथा परजीवकी निंदा ईर्ष्या बहुत तृष्णा बुरे काजोंमें प्रीति सदा करना दूसरेका धन स्त्री आदि हरण करनेकी सदा इच्छा करना ॥ २० ॥

एवमाद्यास्त्वसंख्याता राक्षस्यो भुवनत्रये ॥

ग्रन्थवृद्धिभयाच्चैव नोक्तास्सर्वा मयाऽधुना ॥ २१ ॥

भाषा—इनको आदि लेके गिनती नहीं जो कुकर्ममें प्रीति सो राक्षसी तीन

लोकमें भई हैं सब राक्षसियोंका वर्णन करै तो ग्रंथ बहुत बड़ा होजावेगा इस भयसे मैंने वर्णन नहीं किया ॥ २१ ॥

भयं तासां विलापश्च मदहानिश्च रक्षसाम् ॥

पुच्छशीतलता सा च लंकादुःखमनेकधा ॥

रूपभक्तेश्च जानक्याः सैवाश्वासनकं पुनः ॥ २२ ॥

भाषा—लंकाको जरती देखके राक्षसी सब बहुत डर गई सोई राक्षसियोंका विलाप हुआ तथा राक्षसोंके मदका नाश भया सोई हनुमान् पूंछ बुझायके ठंडी करते भये और जो जीव लंकामें बसेथे सबको बहुत दुःख भया सोई हनुमान् फिर जानकीको विश्वास देते भये ॥ २२ ॥

पुत्रप्रीतिं महावीरे तं माणिं जानकी ददौ ॥

तं गृहीत्वा नमस्कृत्य तूर्णं चलितुमुद्यतः ॥ २३ ॥

भाषा—जानकी हनुमानमें पुत्रसरीखी प्रीति करती भई सोई चूडामणि है जानकीने तिस मणिको हनुमान्को दिया उस मणिको हनुमान् लेके रामके पास चलते भये ॥ २३ ॥

कार्यसिद्धिं स्वतो वीक्ष्य हर्षं चक्रे कपिस्तदा ॥

तदेव लंघनं सिन्धोः पुनराभून्मुनीश्वर ॥ २४ ॥

भाषा—हनुमान् अपने पराक्रमको देखके खुशी भये सोई फिर समुद्रके पार उत्तर आये ॥ २४ ॥

गुरुदेववियोगस्य शान्त्युपायांगदस्य च ॥

आश्वासनं कपिश्चक्रे स्वचरित्रप्रवर्णनैः ॥ २५ ॥

भाषा—गुरुके वियोग शान्तिका उपाय जो अंगद तिसको हनुमान् जो लंकामें कर्म किया उस कर्म रूप विश्वासको देते भये ॥ २५ ॥

कर्पेर्गुरूपदेशस्य विशुद्धाचरणं गुरौ ॥

तत्ख्यातं काननं तस्य कदापि विच्युतं फलम् ॥ २६ ॥

भाषा—गुरुका उपदेशरूप सुग्रीव तिसका नित्य गुरुके पूजनमें शुद्ध आचार सोई सुग्रीवका मधुनाम बगीचा है दैवयोगसे सोई आचार कभी क्षण भरको नष्ट हो जाता है सोई फल है ॥ २६ ॥

तस्यैव भक्षणं चक्रुः कपयोंऽगदप्रेरिताः ॥

गुरावाचारमननध्यानचिन्तनकीर्तनाः ॥ २७ ॥

भाषा—क्षणभरको आचार नष्ट होजाताहै सोई फलोंको अंगदकी आज्ञा पायके कपि खाते भये गुरुके चरणोंमें आचार मानना ध्यान चिन्तन कीर्तन करना ॥ २७ ॥

एते वनेशाः कपिना कृता रक्षापरायणाः ॥

एतेषु च कदालस्यास्ते न्यूनवनपादिताः ॥ २८ ॥

भाषा—ध्यान आदि इन्हेंको सुग्रीवने वनका मालिक किया है ये सब गुरुके आचारके रखनेमें बड़े चतुर हैं इनको जो कभी आलस्य होजाता है सो वनके रक्षा करनेमें छोटे मालिक हैं उनको कपिलोग मारते भये ॥ २८ ॥

निपीडितास्ते वनपाः कपीश्वरैर्विप्लाव्यमानाः स्वलिप्ता मुहुः पथि ॥

सुग्रीवमूचुः करुणापरास्तदा तत्काननस्यैव विनाशनं मुने ॥ २९ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! कपियोंसे पीडित जो प्रथम वर्णन हुए बगीचाकी रक्षा करनेवाले सो सब अपना दुःख तथा बगीचाका नाश सुग्रीवसे कहते भये ॥ २९ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे सुन्दरकाण्डे संवर्तवरतन्तुसंवादे पं० शिवसहायबुध-
विरचिते कपिमधुवनफलभक्षणे तृतीयो मोक्षारख्यः सर्गोपानः ॥ ३ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

ते न्यूनवनपाः सर्वे प्रेरितैः कपिभिस्तदा ॥

अंगदेन भृशं चैव ताडिता विप्र दुद्रुवुः ॥

तेषां विस्मरणं नष्टं स्मरणात्तिश्च ताडना ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतु सुनि बोले अंगदकी आज्ञाको पायके कपि वनमें जो छोटे २ मालिक तिनको मारते भये, मारना क्या है ये सर्व ध्यान आदि सुंदर कर्मोंको गुरुदेवमें भूलजाते रहे सो भूलना नष्ट होगया, अब ध्यान आदिका स्मरण नित्य करेंगे यह मारना हुआ, इस प्रकारसे ताड़नाको प्राप्त होकर जो वनके रखवाले सो भागते भये ॥ १ ॥

कम्पनं प्लवनं प्रोक्तं प्लाव्योचुः कपिसत्तमम् ॥

सर्वं कपिकृतं श्रुत्वा कपीशो हर्षमाययौ ॥ २ ॥

भाषा—वनके रखवालोंके हृदयमें ध्यान आदिका आलस्य रूप पाप कांपने लगा, सोई तिनका भागना हुआ, इस प्रकारसे भागके सुग्रीवसे सब हाल कहते भये कि हमारी सबकी अब पूर्वदेहका लक्षण नष्ट होगया सोई कहना भया है, वानरोंके कर्मको सुनके सुग्रीवको बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ ॥ २ ॥

स्वात्मानमचलं मेने कविस्तद्धर्षमुच्यते ॥

स्वपक्षवर्द्धनं ज्ञानं तत्प्रश्रं राघवस्य च ॥ ३ ॥

भाषा—सुग्रीव अपने रूपको अचल मानते भये कि जो दुष्टकर्म गुरुदेवकी आज्ञासे मेरेको दूर करते थे सो धीरे २ नाश भये चले जाते हैं यह सुग्रीवका हर्ष है तथा रामजी अपना पक्ष जो ज्ञान, विराग, सत्संग, यम, नियम, इन्होंसे आदि लेके सुंदर कर्मोंकी वृद्धि मानते भये सोई सुग्रीवसे रामजीका प्रश्र भया है ॥ ३ ॥

एतस्मिन्नंतरे चैव कपयस्ते समागताः ॥

स्वस्वभावं परित्यज्य पतिता राघवान्तिके ॥ ४ ॥

भाषा—ऐसे आनंदसमयमें प्रथम कहे हुए जो वानर सो सब अपने अपने स्वभावको छोड़के रामजीके सामने पड जाते भये ॥ ४ ॥

पृष्टा रामेण ते सर्वे कुशलं वव्रिरे तदा ॥

कृपया तव राजेंद्र वयं निर्मलिनः कृताः ॥ ५ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजीने वानरोंसे कुशल पूँछा तो वानर बोले कि, हे रामजी ! जिस दिन हमारे सबके ऊपर आपकी कृपा भई उसी दिन गुरुमें बुरा कर्म देखना इससे आदि और जो कर्म ऐसे वानर वृक्ष हम सर्व जो हैं सो अपने मलरूप स्वभावसे छूट गये ॥ ५ ॥

प्रोवाच हनुमान्सर्वं लंकावृत्तांतमादितः ॥

स्वस्मिन्तनयप्रीतिं च जानक्या मणिमाददौ ॥ ६ ॥

भाषा—लंकाका सब समाचार हनुमान् रामजीसे कहते भये, अपनेकूं जानकी लडका मानके पुत्रवाली प्रीति करती हुई सोई पुत्रकी प्रीति मणि भई है, सो मणि हनुमान्को देती भई, सोई मणि हनुमान्ने रामजीको दिया, रामजी मणि पायके खुशी भये ॥ ६ ॥

जानकीबालकोऽयं वै प्रेमरूपः पुनः पुनः ॥

उवाच रामस्तं प्रीत्या तत्तदादरमुच्यते ॥ ७ ॥

भाषा—रामजी वारंवार सबसे कहते भये कि जानकीका ब्रह्ममें जो प्रेम सो पुत्ररूप हनुमान् है, ऐसा रामका वाक्य सो हनुमान्का आदर भया है ॥ ७ ॥

गुरौ दुर्भावनं त्यक्त्वा कप्यक्षैश्च सुभावनं ॥

कृता च सैव सेनाया योजना गणना शुभा ॥ ८ ॥

भाषा—जीवोंका गुरुदेवमें दुष्टभाव छूट गया, सुंदर भाव करने लगे कि हमारे गुरु साक्षात् ईश्वर हैं ऐसी जीवोंकी बुद्धि सोई सेनाकी गिनती तथा लंकाको जाना भया है ॥ ८ ॥

दुष्टकर्मस्थितिप्रीतिलंकासौख्यस्य कांचनम् ॥

तद्धर्षवारिधेर्नाशचिंता सा तत्र संस्थितिः ॥ ९ ॥

भाषा—खोटे काजोंमें हठ करके टिकना ऐसी जो लंका तिसका सुख सो सुवर्ण तिसका हर्ष सो समुद्रके नाश करनेकी चिन्ता सोई समुद्रके तटपर रामजीकी फौजका उतरना होता भया ॥ ९ ॥

कुकर्मत्रासरूपेण बोधितश्च दशाननः ॥

भ्रात्रा विभीषणेनैव तेन निष्कासितो बलः ॥ १० ॥

भाषा—बुरे कार्यमें डरना सो विभीषण है, सो मनरूप रावणको विभीषणने ज्ञान दिया, कि भाई सुंदर कर्म करो, बुरा कर्म छोड़ देवो ऐसा वचन सुनके लंकासे विभीषणको रावणने निकाल दिया, बुरा कर्म करनेमें राक्षस भयसे हीन भये सोई विभीषणका लंकासे निकालना हुआ ॥ १० ॥

सत्यार्जवनिरानन्दा हिंसनास्तस्य मंत्रिणः ॥

समायान्मंत्रिभिश्चैतैः शरणं राघवस्य वै ॥ ११ ॥

भाषा—सत्यवचन, कोमलस्वभाव, अभिमानहीन चित्त, जीवमात्रपर दया यह चार विभीषणके मंत्री हैं इन चारोंको संग लेके विभीषण रामजाकी शरणमें आया ॥ ११ ॥

नाम्रश्चार्थमविज्ञातं कपिभिस्तस्य कर्हिचित् ॥

त्रासं दास्यत्ययं तस्मान्नोऽतश्चक्रुर्निवारणम् ॥ १२ ॥

भाषा—त्रासरूप विभीषणके नामका अर्थ कपियोंने कभी नहीं जानाथा यह त्रासरूप राक्षस सबको त्रास देता है, ऐसा विचार किया कि, यह आवेगा तो हम सबको त्रास देवेगा, इस वास्ते रामजीके सामने विभीषणको नहीं आने दिया ॥ १२ ॥

आज्ञाता रामचन्द्रेण बोधिताश्चापि वानराः ॥

कपयश्चानयामासुस्तं च राक्षससत्तमम् ॥ १३ ॥

भाषा—रामजी वानरोंसे बोले कि यह विभीषण सबको त्रास नहीं देता यह तो खुद बुरे कार्यसे डरता है इसको लावो, ऐसा रामजीसे ज्ञान पायके विभीषणको रामजीके पास ले आये ॥ १३ ॥

ईश्वरप्राप्त्युपायस्य मूलं प्राप्य जहर्ष सः ॥

स एव पातो रामस्य पादाग्रे तस्य वर्णितः ॥ १४ ॥

भाषा—ब्रह्ममें प्राप्त होनेके उपायका मूल रूप विवेकरूप रामजी जिनको पायके विभीषण खुशी भया सोई रामजीके चरणके सामने विभीषणका पड जाना हुआ ॥ १४ ॥

लंकायाः शिक्षणार्थाय लंकाराज्यं ददौ हरिः ॥

भविष्यति च सा लंका साधूनां प्राणवल्लभा ॥ १५ ॥

भाषा—लंकाको भगवान्का सेवन आदि सुंदरकर्म सिखानेके वास्ते लंकाका राज्य रामजीने विभीषणको दिया कि लंकाका राजा विभीषण होवेगा तो यह लंका साधुलोगोंको प्राणसे प्यारी होवेगी ऐसा विचारके ॥ १५ ॥

लंकामुखहिरण्यस्य हर्षवारिधितारणे ॥

ईश्वरप्रार्थनारूपं विचारं कृतवान्प्रभुः ॥ १६ ॥

भाषा—लंकाका मुख सोई सुवर्ण है तिस करके लंका जडी है, उस सुवर्णमें हर्ष मानना सो समुद्र है जैसा समुद्रका पार नहीं तैसेही हर्षका पार नहीं ऐसे समुद्रके पार जानेके वास्ते ईश्वरकी विनतीरूप विचार रामजी करते भये ॥ १६ ॥

एतस्मिन्प्रेरितौ शीघ्रमागतौ शुकसारणौ ॥

रामसेनां रावणेन कृतघ्नगुरुद्रोहिणौ ॥ १७ ॥

भाषा—ऐसा विचार रामजी कर रहे हैं कि उसी समय रावणकी आज्ञा पायके जलदी शुक सारण ये दो राक्षस रामजीकी फौजमें आये शुक तो कृतघ्नरूप है जो उपकार करे उसको नहीं माने और सारण गुरुसे द्रोह करता है तिसका रूप है ॥ १७ ॥

दूतौ दशाननस्यैतो कृतघ्नगुरुद्रोहिणौ ॥

कपयस्ताडयाञ्चकुर्वात्वा कपिनृपाज्ञया ॥ १८ ॥

भाषा—ये दोनों कृतघ्न तथा गुरुद्रोहरूप रावणके दूत हैं ऐसा विचारके सुग्रीवकी आज्ञा पायके वानर इनको मारने लगे ॥ १८ ॥

स्वकर्मणि द्वयोः प्रीतिर्या पुरा जन्मतोऽप्यभूत् ॥

रामदर्शनमात्रेण विनष्टा सा च ताडना ॥ १९ ॥

भाषा—ऊतन्न तथा गुरुद्रोहरूप शुक सारणका स्वभाव है कि उपकारको नहीं मानना तथा गुरुका द्रोह करना ऐसी जो दूतोंकी अपने २ कर्ममें प्रीति रही सो प्रीति रामजीके दर्शनसे नष्ट होगई सोई शुक सारणकी ताडना हुई ॥ १९ ॥

मोचितौ रामचंद्रेण गतौ रावणसन्निधिम् ॥

ख्यापयांचक्रतुः सर्वे रावणाय यथाक्रमम् ॥ २० ॥

भाषा—रामजीने दूतोंको कपियोंके त्राससे छुड़ा दिया तब दोनों दुष्ट निर्मल होके रावणसे रामजीका हाल जो देख गये सो सब कहते भये ॥ २० ॥

पूर्वप्रकृतिनिर्मुक्तौ तदेव मोचितौ तदा ॥

तिरस्कृतौ रावणेन कुसंगत्यागकारणात् ॥ २१ ॥

भाषा—गहिलेके दुष्ट स्वभावसे दोनों छूट गये सोई कपियोंके त्राससे रामजीका छुड़ाना हुआ तथा खोटी संगतिसे छूट गये सोई रावणसे अनादर पायके ॥ २१ ॥

शरणं रामचन्द्रस्य समायातौ पुनर्द्रुतम् ॥

रामसंगतिजं सौख्यं प्रापितौ मुक्तिकारणम् ॥ २२ ॥

भाषा—शुकसारण जलदी रामजीकी शरणमें आते भये मुक्तिका बीज ऐसा जो रामजीका संग तिसमें उत्पन्न हुआ सुख उस सुखको प्राप्त होते भये ॥ २२ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे सुंदरकाण्डे संवर्तवरतन्तुसंवादे पं० शिवसहाय-
बुधविरचिते शुकसारणमोक्षे चतुर्थो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ४ ॥

इति सुंदरकांडः समाप्तः ।

अथ युद्धकांडप्रारंभः ।

वरतन्तुरुवाच ।

सर्वेषां मतमागृह्य रामः सत्यव्रतसुधीः ॥

लंकासुखहिरण्यस्य हर्षपालनहेतवे ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि बोलते भये सब वानर तथा ऋक्षोंके मतको लेके

बड़े बुद्धिमान् रामजी है सो लंकापुरीका सुखरूप सुवर्ण तिसका हर्ष सोई समुद्र तिसकी रक्षा करनेके वास्ते ॥ १ ॥

प्रेमोत्कंठाः शमादीनां ते कुशा विजयं रिपोः ॥

तद्रूपमासनं कृत्वा व्रतं रामः समादधे ॥ २ ॥

भाषा—शम यम दम दया इन्होंसे आदि लेके और जो ईश्वरके प्यारे कर्म हैं तिन कर्मोंमें प्रेमसे गद्गद होना वचन न कहा जाना ऐसा स्वभाव कुश है तथा रावणको जीतके अपना विजय सोई आसन है ऐसा कुशके आसनपर बैठके जीवमात्रके मोक्ष करनेका विचाररूप व्रत रामजी धारण करते भये ॥ २ ॥

त्रयः काला दिनाः प्रोक्ताः सर्वानाकृष्य मंडले ॥

सत्सङ्गस्य नयिष्यामि सर्वाञ्जीवाञ्चराचरे ॥ ३ ॥

भाषा—भूत भविष्यत् वर्तमान ये तीन काल तीन दिन भये हैं रामजीने विचारा कि, मनरूप रावणका नाश करके तिस पीछे सब जीवोंको ज्ञानकी रस्सीसे पकड़के सत्संगमें ले आवेंगे मोक्ष होनेके वास्ते ऐसा उत्तम व्रत रामजी धारण करते भये ॥ ३ ॥

मूलमालस्यमुक्तं च फलं तत्सुखवर्धनम् ॥

सत्कर्मनाशकौ ज्ञात्वा तत्त्यजे द्वौ रघूत्तमः ॥ ४ ॥

भाषा—दो प्रकारका आलस्य है एक तौ बुरे काममें दूसरा सुंदर कर्ममेंसे ब्रह्ममें प्रीति तिसमें आलस्य करना सोई वनके मूल हैं तिसको रामजी त्याग देते हुए उसी आलस्यमें हर्ष मानना सो फल है उन फलकोभी त्यागके रामजी निराहारव्रत करते भये ॥ ४ ॥

लंकासुखहिरण्यस्य हर्षवारिधिमुत्तमम् ॥

हानिरूपं महामार्गमयाचत रघूत्तमः ॥ ५ ॥

भाषा—लंकाका सुख सोई सुवर्ण उसमें हर्ष सोई समुद्र तिस समुद्रका हानिरूप बड़ा रस्ता रामजी समुद्रसे मांगते भये कि तूं हानि मानके सूख जावो तौ लंकामें हमारा राज्य होजावै ॥ ५ ॥

अदृष्ट्वा हर्षहानिं वै रावणस्य वधोद्यतः ॥

तद्धानिश्मनोपायं क्रोधञ्चक्रे च राघवः ॥ ६ ॥

भाषा—समुद्रकी हानि रामजी नहीं देखते हुए रावणके मारनेके वास्ते उपाय करते हैं ऐसे रामजी तिस हर्षकी शांति होनेके वास्ते उपायरूप क्रोध करते हुए ॥ ६ ॥

लंकां शुभां पुरीं कर्तुं विचारं प्रकरोति सः ॥

अनेकयत्नं रामश्च तत्सागरविशोषणम् ॥ ७ ॥

भाषा—रामजीने लंकापुरीको सुंदर बनानेके वास्ते रोज विचार करते हैं सोई समुद्रका शोषण है ॥ ७ ॥

धैर्येण विचकर्षाशु तेजोरूपं शरं प्रभुः ॥

विकर्षतं शरं दृष्ट्वा रामं सत्यपराक्रमम् ॥ ८ ॥

भाषा—धीरज करके तेजरूप जो शर है तिसको रामजी हर्षरूप समुद्रके शोषण करने वास्ते खेंचते भये ॥ ८ ॥

परपीडादयः सर्वे व्यथिता जलजन्तवः ॥

अपश्यन्तस्स्वशरणं दुःखिताश्च मुहुर्मुहुः ॥ ९ ॥

भाषा—परको दुःख देनेवाले जो खोटे कर्म हैं सोई सब जलजीव हैं सो सब अपनी रक्षा करने वास्ते जीवको नहीं देखे तो वारंवार दुःखी होते भये ॥ ९ ॥

न रामो मानवोऽयं वै विवेको मोक्षदायकः ॥

इति ज्ञानं समुद्रस्य द्विजरूपं तदेव च ॥ १० ॥

भाषा—समुद्रको ऐसा ज्ञान हुआ कि रामजी मनुष्य नहीं है ये तो मोक्ष देनेवाले विवेक है ऐसा ज्ञान सोई ब्राह्मणका रूप है ॥ १० ॥

तत्रासौ धारणन्तस्य पात्री तत्प्रीतिरुत्तमा ॥

मया संतोषिते रामे पूर्ववन्मे सुखस्थितिः ॥ ११ ॥

भाषा—रामजीका त्रास सोई ब्राह्मणके रूपका धारण भया है तिसको धारिके

उसी ब्राह्मणके रूप धारणमें प्रीति सोई थाली भई है समुद्रने विचार किया कि जो मैं रामजीको प्रसन्न कर लेऊंगा तब प्रथम सरीखी मेरी स्थिति ॥ ११ ॥

वर्तिष्यन्ति च सौख्याद्या भविष्यन्ति च मे तदा ॥

एते चान्ये च तस्यासन्विचारा रत्नसंचयाः ॥ १२ ॥

भाषा—बनी रहैगी. तथा बडे बडे सुखभी मेरेको होवेंगे इस सरीखे और जो अनेक प्रकारके समुद्रके विचार सोई अनेक प्रकारके बहुतसे रत्न भये हैं ॥ १२ ॥

सागरस्तान्समादाय संप्राप राघवान्तिकम् ॥

स्वस्यापि राघवे प्रेमवर्द्धनं स्तवनं कृतम् ॥ १३ ॥

भाषा—पूर्वोक्त ब्राह्मणका रूप धारिके तथा पूर्वोक्त थालीमें पूर्वोक्त रत्न धारिके समुद्र रामजीके पास आता भया, समुद्रका भी प्रेम रामजीमें बहुत होगया सोई समुद्र रामजीकी स्तुति करता भया ॥ १३ ॥

समुद्रेनैव रामस्य कृता या विस्मृतिः पुरा ॥

दिगुत्तरा च सा ज्ञेया पूर्वमानो रिपुः स्मृतः ॥ १४ ॥

भाषा—समुद्र प्रथम रामजीको भूलि गया था सोई उत्तर दिशा है राम-जीसे प्रथम समुद्रने अभिमान किया था, सो समुद्रका वैरी है, जिसने समुद्रका ज्ञान हरिलिया था ॥ १४ ॥

पूजितः संस्तुतो रामः क्षामितः सिंधुना मुहुः ॥

तेन संप्रार्थितो रामो जघान तद्विपुन्तदा ॥

राक्षसानां विनाशाय भूभारहरणाय च ॥ १५ ॥

भाषा—समुद्रने रामजीकी पूजन स्तुति की तथा अपना अपराध रामजीसे क्षमा कराया. वैरीको मारने वास्ते प्रार्थना की, तब रामजी प्रथम वर्णन हुआ जो समुद्रका वैरी तिसको मारने भये राक्षसोंका नाश करने वास्ते तथा पृथ्वीका भार हरने वास्ते ॥ १५ ॥

पणं चक्रे स्वयं रामः सः सेतुस्सागरेऽभवत् ॥

क्षमारूपञ्च पाषाणं रामस्य सेतुबंधने ॥

अन्ये सत्संगवीर्याद्यास्साहित्यास्तत्प्रबंधने ॥ १६ ॥

भाषा—रामजी प्रतिज्ञा करते हुए सोई समुद्रमें पुल भयाहै, रामजीके चित्तमें क्षमा बहुत है सो क्षमा पुल बांधने वास्ते पत्थर भयाहै, तथा पुल बांधनेमें और जो अनेक प्रकारकी सामग्री चाहिये सो सत्संगके अनेक प्रकारके सुंदर कर्म हैं सो सब सामग्री भई है ॥ १६ ॥

बंधनं रामचंद्रस्य दृढत्वं स्वपणेऽभवत् ॥

ईदृशः सागरे सेतुर्बद्धो रामेण वै तदा ॥ १७ ॥

भाषा—रामजी अपनी प्रतिज्ञासे चलायमान कभी नहीं होते सोई पुलका बांधना भयाहै, तब ऐसा पुल समुद्रमें रामजी बांधते भये ॥ १७ ॥

रावणस्यातिबलिनो युद्धे ज्ञात्वा रघूत्तमः ॥

महादुःखं भवेत्तत्र क्रूरे क्रूरतरेऽपि च ॥ १८ ॥

भाषा—बड़ा बली रावण तिसके युद्धमें क्रूरसे क्रूर युद्धमें बड़ा दुःख होवैगा ऐसा रामजी जानिके ॥ १८ ॥

चक्रे संस्थापनं तस्य स्वकर्मशिवरूपिणः ॥

अचलत्वं च विश्वासम्पूजनं तत्र निश्चितम् ॥ १९ ॥

भाषा—तब अपने स्वभावके अचल विश्वासरूप शिवकी स्थापना करते भये कि या तो रावणको मारेंगे या हम मारेंगे पण युद्ध नहीं छोड़ेंगे ऐसा स्वभाव पुष्ट करते भये अपने स्वभावमें रामजीका निश्चय है कि मैं स्वभावको जैसा राखूंगा तैसा रहेगा, ऐसा निश्चय सोई शिवका पूजन भया है ॥ १९ ॥

एवं कृत्वा विधिं तत्र विवेको राघवस्तदा ॥

संस्मृत्य च मनोरूपरावणं प्रबलं प्रभुः ॥ २० ॥

भाषा—विवेकरूप रामजी मनरूप रावणको बड़ा बली जानिके ऐसा उपाय करते भये ॥ २० ॥

स्वभावन्तत्यजुस्सर्वे पूर्वोक्तं गुरुसत्तमे ॥

पूर्वोक्ताः कपयश्चैव ऋक्षाश्च रामसंश्रयात् ॥ २१ ॥

भाषा—तथा वानर ऋक्षभी रामजीकी संगति पायकै प्रथम जो गुरुमें दुष्ट-स्वभाव था उसको त्यागदेते भये ॥ २१ ॥

गुरौ सद्भावन् चक्रुर्ऋक्षाश्च कपयोऽनिशम् ॥

तत्सैन्योत्तारणं ब्रह्मन्वभूव राघवस्य च ॥ २२ ॥

भाषा—वानर तथा ऋक्ष गुरुमें सुंदर कर्म देखने लगे रातिदिन सोई राम-जीकी सेनाका समुद्रके दक्षिण पार जाना भया है ॥ २२ ॥

दुष्टे कार्ये दशास्यस्य सदा प्रेमाचलम्मुने ॥

सः सुवेलो गिरिः प्रोक्तो युद्धचिंता दशानने ॥ २३ ॥

भाषा—हे मुनि ! खोटे कर्ममें रावणका प्रेम कभी चलायमान नहीं होता सोई सुवेल नाम पर्वत है तथा रावणके भी रामजीके संग युद्ध करनेमें चिंता रहती है ॥ २३ ॥

सा स्थिती रामसैन्यानामभवत्तत्र पर्वते ॥

महानंदयुतो रामो बभूव मुनिसत्तम ॥ २४ ॥

भाषा—सोई सुवेल पर्वतपर रामजीकी सेनाका टिकना भया है. हे मुनिजी ! समुद्रके पार जायके सेनाका सुवेलपर वास देखिके रामजीको बहुत आनंद होता भया ॥ २४ ॥

दुःकर्मप्रीतिहृष्टसंस्थितिसौख्यहर्षसिंधुं व्यतीर्य कपिसैन्ययुतो

विवेकः ॥ तस्थौ विभीषणमतेन विभीषणाढ्यो भूमारहारकुशलो

रघुवंशकेतुः ॥ २५ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन हुआ जो समुद्र तिसके पार जायके विभीषणके मतसे विवेकरूप रामजी सुवेलपर टिकिके भूमिके भार नाश करनेमें बड़े चतुर खुशी होते भये ॥ २५ ॥

इति श्रीवेदांतरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुधविरचिते ससैन्यरामस्य सुवेल-
द्विस्थितिवर्णने प्रथमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ १ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

तृष्णा रतिर्मतिर्भूतिर्दुष्टकार्येषु सर्वदा ॥

वर्तते मुनिशार्दूल मनसो रावणस्य वै ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि बोले । हे मुनियोंमें श्रेष्ठ ! खोटे कर्मोंमें सदा तृष्णा प्रीति बुद्धि विभूति ये सब रावणकी बनी रहती है ॥ १ ॥

ताश्चतस्रो दिशः प्रोक्ता लंकाया दुष्टकर्मणि ॥

पणप्रीतिस्थितेः पूर्वं कथितायाः सविस्तरम् ॥ २ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भई जो लंका तिसकी ये चार चार दिशा भई हैं ॥ २ ॥

सत्संगनिन्दनन्नित्यं तद्विनाशाय चिन्तनम् ॥

क्वचित्क्वचित्कृतं चापि सतां हासादिताडनम् ॥ ३ ॥

भाषा—सत्संगकी निंदा रोज करना सत्संगका नाश करने वास्ते चिन्ता करना किसी जगह संसृष्टका नाशभी कर देना साधु लोगोंको देखिके हसना आदि ताडन करना ॥ ३ ॥

एते द्वाराश्च चत्वारो लंकाया मुनिनायक ॥

तेषु तासु च जीवानामकरोन्मतिवारणम् ॥ ४ ॥

भाषा—ये लंकाके चार दरवाजे हैं इन दरवाजोंमें तथा चारों दिशामें रामजीने दुष्टजीवोंकी बुद्धिका नाश करके सुंदर बुद्धि करदिया है ॥ ४ ॥

तदेव रोधनं विप्र लंकायाश्च चतुर्दिशः ॥

चतुर्षु द्वारदेशेषु राघवेण कृतं मुने ॥ ५ ॥

भाषा—सो हे मुनिजी ! ऐसा कर्म सुंदर जीवोंको सुख देनेवास्ते रामजीने किये सोई लंकाके चार दरवाजे तथा चारों दिशा रामजी घेरिलेते भये ॥ ५ ॥

सत्संगनाशनं चैव राक्षसैश्च क्वचित् क्वचित् ॥

कृतन्तदेव लंकायाश्चोत्तरं द्वारमुच्यते ॥ ६ ॥

भाषा—राक्षसोंने किसी किसी जगहपर सत्संगका नाश करदिया सोई लंकाका उत्तर तरफ दरवाजा है ॥ ६ ॥

विनष्टस्य पुनः कर्तुं वर्धनोपायचिंतनम् ॥

सैव स्थितिः समाज्ञेया रामचंद्रस्य चोत्तरे ॥ ७ ॥

भाषा—नष्ट भया जो सत्संग तिसकी फिर वृद्धि होनेके उपायको चिंतन रामजी नित्य करते हैं सोई लंकाके उत्तर दरवाजे पर रामजीका टिकना भया है ॥ ७ ॥

सज्ज्ञानशिक्षणं रामे लक्ष्मणे च कपिष्वपि ॥

ऋक्षेष्वपि विशेषेण संगत्या शोधितेषु च ॥ ८ ॥

भाषा—रामजीमें लक्ष्मणमें तथा वानरोमें भी तथा राक्षसी संगतिको पायके शुद्ध भये जो ऋक्ष तिन्होंमेंभी सुंदर ज्ञान सिखानेकी बुद्धि बहुत है ॥ ८ ॥

चक्रस्ते शिक्षणं स्वस्वकर्मणो राक्षसेषु च ॥

दुष्टकर्माणि सर्वाणि विधिना निर्मितानि च ॥ ९ ॥

भाषा—राम लक्ष्मण वानर ये सब अपने अपने सुंदर कर्मको राक्षसोंको सिखाते भये जैसी जिसकी बुद्धि है तिस माफिक तथा तीन लोक चौदह भुवनमें जो ब्रह्माके बनाये हुए बुरे कर्म जितने हैं ॥ ९ ॥

रावणे तानि वर्तते कुम्भकर्णे विशेषतः ॥

दुष्टसंगादिकर्माणि सुरेशविजये तथा ॥ १० ॥

भाषा—सो सब रावणमें बसते हैं कुम्भकर्णमें तो विशेषसे बसते हैं तथा मेघनादमें कुम्भकर्णसे ज्यादा बुरे कर्मोंका वास है ॥ १० ॥

अन्येषु राक्षसेष्वेवमन्यायास्सर्वदा स्थिराः ॥

शिक्षणन्ते प्रकुर्वन्ति विवेकादीन्स्वकर्मणः ॥ ११ ॥

भाषा—इसी प्रकारसे और जो राक्षस हैं तिन्होंमेंभी बुरा कर्म रातिदिन टिका रहता है रावण आदि लेके सब राक्षस जो हैं सो सब विवेकरूप रामजी आदि लेके जो मोक्षके मित्र हैं तिन्होंको बुरा कर्म सिखाते हैं ॥ ११ ॥

एवं परस्परं युद्धं रामरावणयोर्मुने ॥

संकृत्य जीवन्धूतन्द्रौ रामरावणवैरिणौ ॥ १२ ॥

भाषा—इस प्रकारका अपना अपना कर्म सिखावनरूप युद्ध राम रावणका होता भया राम रावण ये दोनों आपसमें वैर मानिके जीविका जुवा करिके युद्ध करते भये ॥ १२ ॥

सुयोन्यै स्वर्गमोक्षाय महदेश्वर्यभुक्तये ॥

सर्वसौख्याय जीवस्य प्राप्तये रघुनन्दनः ॥ १३ ॥

भाषा—जीवोंको सुंदर योनिमें जन्म लेनेवास्ते तथा स्वर्गप्राप्ति होने वास्ते तथा बहुत स्वर्ग भोगने वास्ते तथा बहुत सुख भोगने वास्ते तथा मोक्ष होने वास्ते रामजी रण करते भये विवेककी इच्छा तो जीवोंको मोक्ष देनेकी है परंतु जो मोक्षकी उपायमें जीव भ्रष्ट होजावे तो संसारको सुख तो होवै ऐसा विचारके रामजी युद्ध करते भये ॥ १३ ॥

सहित्वानेकदुःखानि युद्धं चक्रे रघूत्तमः ॥

कुर्यान्न्यै नरकायैव रौरवाद्यातिहेतवे ॥ १४ ॥

भाषा—अनेक दुःख सहिके रामजी युद्ध करते भये तथा जीवोंको खोटी योनि प्राप्त होने वास्ते तथा रौरव आदि नरक प्राप्त होने वास्ते ॥ १४ ॥

अनेकदुःखभोगाय जन्ममृत्युभवाय च ॥

जीवस्यानेकदुःखाप्त्यै युद्धं चक्रे च रावणः ॥ १५ ॥

भाषा—गिनतीसे हीन दुःख जीवोंको भोग करने वास्ते, तथा बारंवार जीवोंको जन्म लेने वास्ते तथा शरीरको छोड़ने वास्ते और अनेक प्रकारके दुःख जीवोंको देने वास्ते रावण युद्ध करता भया ॥ १५ ॥

परितापान्यनेकानि सहित्वा परतापनः ॥

कामः क्रोधश्च लोभश्च मोहमानावहन्तथा ॥ १६ ॥

भाषा—दूसरे जीवोंको दुःख देनेवाला जो रावण अनेक दुःख सहता है परंतु जीवोंको दुःख देनेवास्ते युद्ध करता भया, तथा काम क्रोध लोभ मोह मान अहंकार ॥ १६ ॥

सदसत्सु प्रवर्तते कर्मस्वेते निरंतरम् ॥

असत्कर्मस्वसत्प्रोक्तास्सत्कर्माणि च सज्जनाः ॥ १७ ॥

भाषा—ये सब सुंदर कामोंमें भी रहते हैं तथा बुरे कामोंमें भी रहते हैं खोटे कर्ममें खोटा कहाते हैं तथा सुंदर कर्मोंमें सज्जन कहाते हैं ॥ १७ ॥

असज्जाः कामवर्गाश्च युद्धचेष्टाश्च सज्जनैः ॥

कुर्वति राक्षसा भूत्वा सद्धर्मान्पीडयन्ति च ॥ १८ ॥

भाषा—खोटे कर्मों करिके उत्पन्न जो खोटे कर्म जैसा काम क्रोध आदि कर्म सो सब राक्षस होके सज्जन लोगोंसे युद्ध करते हैं तथा सुंदर धर्म जैसा कथाश्रवण स्नान दान दया जप पूजन इनको आदि लेके और जो सुंदर धर्म तिन्होंको नाश करते भये उसी वास्ते युद्ध करते भये क्योंकि विवेकरूप रामजी सुंदर धर्मका नाश नहीं करने देते ॥ १८ ॥

एव परस्परं युद्धं बभूवाहर्निशम्मुने ॥

रामरावणयोः क्रूरं जन्ममोक्षातिहेतुकम् ॥ १९ ॥

भाषा—इस प्रकारसे जीवको मोक्ष होने वास्ते रामजी युद्ध करते भये तथा जीवको वारंवार जन्म लेने वास्ते मनरावण युद्ध करता भया सुंदर तथा बुरे कर्मका करना यही युद्ध भया है ॥ १९ ॥

छिन्नं विवेकेन पुनः पुनश्शिरः ज्ञानासिना राघववर्यसूनुना ॥

मनोदशास्यस्य महाहवे मुने तच्चंचलत्वं च तदेव तच्छिरः २० ॥

भाषा—मनकी चंचलता जो है सोई मनरूप रावणका शिर है तिस शिरको रामजी वारंवार काटते भये ॥ २० ॥

लज्जाश्रमविहीनश्च रावणो राक्षसेश्वरः ॥

स एव वर्द्धनस्तस्य शिरसश्चंचलस्य वै ॥ २१ ॥

भाषा—मनरावण लज्जा तथा श्रमसे हीन है सोई रावणके शिरकी युद्धमें वृद्धि होती भई ॥ २१ ॥

कापथात्तं समाकृष्य सत्पथे चञ्चलं शठम् ॥

रामो निवेशयामास चासकृद्दयया हठात् ॥ २२ ॥

भाषा—रामजी दया करिके रावणको खोटे रस्तासे खँचिके सुंदर रस्तामें हठसे टिकाते भये ॥ २२ ॥

तदेव छेदनं तस्य कृतं रामेण संगरे ॥

प्रवेशितोऽपि तेनाशु सत्पथे हरिवल्लभे ॥ २३ ॥

भाषा—सोई राम करके शिरका काटना भयाहै युद्धमें मन्तरूप रावणको रामजी भगवान्‌का प्यारा रस्ता जो सत्संग तिसमें टिकाते भये तौ भी ॥ २३ ॥

तत्परित्यज्य सहसा कापथम्पुनराश्रितः ॥

तत्तस्य भूमिपतनमाकाशे व्याप्तिरेव च ॥ २४ ॥

भाषा—उस रस्ताको त्यागके खोटे रस्तामें फिर टिकता भया सोई शिरका भूमिमें पडना भया तथ आकाशको जाना भया ॥ २४ ॥

कदा तृष्णां कदा निद्रां कदा शान्तिं कदा क्षमाम् ॥

कदा हानिं कदा ग्लानिं नीत्यनीती कदा मुने ॥ २५ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! मन्तरूपरावण कभी तृष्णा कभी निद्रा कभी शान्ति कभी मोक्ष कभी हानि कभी ग्लानि कभी नीति कभी अनीति ॥ २५ ॥

ज्ञानाज्ञानसुखं दुःखं मूर्खतां सुज्ञतां कदा ॥

एवमादीन्यनेकानि येषां संख्या न विद्यते ॥ २६ ॥

भाषा—कभी ज्ञान कभी अज्ञान कभी सुख कभी दुःखको प्राप्त होता है कभी मूर्खबुद्धि कभी सुंदर बुद्धि इन्होंका आदि लेके गिनतीसे हीन और जो चीज है ॥ २६ ॥

प्राप्नोत्यज्ञानतो नित्यं कदा राजा कदा प्रजाः ॥

धनाढ्यो वित्तहीनश्च दानी च कृपणस्तथा ॥ २७ ॥

भाषा—मन्तरूप जो रावण है सो अज्ञानके वश होके नित्य कभी राज्यको प्राप्त होता है कभी प्रजाकी रीतिको प्राप्त होता है कभी बड़ा धन-

वान् हो जाता है कभी दरिद्री होजाता है कभी दानी होजाताहै कभी कृपण हो जाता है कभी ईश्वरसे वैर रखता है इस वैरके प्रतापसे अनेक दुःख सहता है तौभी ईश्वरसे प्रीति नहीं लगाता इस वास्ते दुःख भोगता है ॥ २७ ॥

क्षणे क्षणे भवत्येवं सा माया दर्शिता मुने ॥

संग्रामे रावणेनैव राक्षसेन मुहुर्मुहुः ॥ २८ ॥

भाषा—क्षण क्षणमें अनेक प्रकारका जंजाल मन करता है सोई युद्धमें रावणकी माया देखना हुआ है ॥ २८ ॥

प्राणनाशो भवेन्मे चेत्तथापि न त्यजाम्यहम् ॥

स्वकर्मरक्षसान्नाश करिष्यामि हठादपि ॥ २९ ॥

भाषा—रामजीने ऐसी प्रतिज्ञा की है कि चाहे मेरा प्राणरूप सत्संग नाश होजावे परंतु मेरा कर्म जो राक्षसोंका नाश करना है सो तो मैं कखंगा नहीं छोडूंगा ॥ २९ ॥

रामेणेति प्रतिज्ञातं रावणेनापि तत्तथा ॥

रामादिसर्वसाधूनां कर्ताहं मूलकृन्तनम् ॥ ३० ॥

भाषा—तैसेही रावणनेभी प्रतिज्ञा की कि चाहे मेरा प्राणरूप खोटा कर्म नाश होवे परन्तु तौभी रामजी आदि लेके जो साधु हैं जैसा विवेक राम संतोष हरिमें प्रेम तीर्थ इन आदिको जडसे उखाड नाश कर देऊंगा ॥ ३० ॥

द्वयोः पणो रामदशास्ययोर्मुने सैवेदृशः संगरवर्द्धनस्तदा ॥

बभूव पेतुश्च परस्परं हता भूमौ कपीशाः खलु राक्षसा मुने ॥ ३१ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! रामरावणकी ऐसी प्रतिज्ञा सोई युद्धकी वृद्धि भई रामकी सेनासे मारे हुए जो राक्षस तथा रावणकी सेना करके मारे हुए जो वानर भूमिमें पडके मरजाते भये ॥ ३१ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे
द्वितीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ २ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

दुस्संगकुम्भकर्णस्य सदा प्रीतिस्स्वकर्माणि ॥

सत्संगनाशनं चैवं सा निद्रा तस्य वै मुने ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुमुनि बोलते भये खोदी संगतिरूप जो कुंभकर्ण है तिसकी बुद्धि खोटे कर्ममें जो प्रीति रोज लगी रहती है तथा सत्संगका नाश करनेमें नित्य प्रीति रहती है सोई कुंभकर्णकी निद्रा है ॥ १ ॥

तस्य लोभगृहीस्य स्वप्नो मत्तस्य सः स्मृतः ॥

अहर्निशं न तज्ज्ञातं कदापीत्थम्बभूव ह ॥ २ ॥

भाषा—सत्संगके नाश करनेके लोभसे कुंभकर्ण दुःखी होरहा है सोई उसका शयन करना है, रात दिन कुंभकर्णको मालूम नहीं होता ऐसा सोनेमें मत्त होरहा है ॥ २ ॥

चिन्तनं च द्वयोर्नित्यं करोति द्विज मानसे ॥

दुःसंगपणवर्षे च द्वाविमौ चिंतनौ मुने ॥ ३ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! कुंभकर्ण भले और बुरे दोनों कर्मका चिंतन करना है यही दोनों कर्मोंका चिंतन बारह महीने करता रहताहै ॥ ३ ॥

निद्राक्षयदिनौ प्रोक्तौ कुंभकर्णस्य दुर्मतेः ॥

भविष्यति जयो युद्धे रावणस्योति निश्चितम् ॥ ४ ॥

भाषा—कुंभकर्णके जागनेको दो दिन भये हैं रावणको ऐसा निश्चय है कि युद्धमें मेरा निश्चयसे जय होवेगा ॥ ४ ॥

कुंभकर्णेन तत्तस्य कारयामास रावणः ॥

प्रोक्तं जागरणं विप्र दुस्संगहर्षगर्जनम् ॥ ५ ॥

भाषा—परंतु कुंभकर्ण करके जय होवेगी ऐसा रावणका विचार सोई कुंभकर्णका जगाना भया है, खोटे कर्मरूप कुंभकर्णको खोटे कर्ममें हर्ष है सोई कुंभकर्णका गर्जना भयाहै ॥ ५ ॥

सत्कार्यालस्य द्यूताद्यैः सत्तिरस्कारनिन्दनैः ॥

असंख्यैर्विधिना सर्वैर्निर्मितैश्च कुकर्मभिः ॥ ६ ॥

भाषा—ब्रह्मा करके बनाये हुए गिनतीसे हीन कुकर्म जैसा सुंदर काजमें आलस्य तथा जुआ खेलना तथा साधुजनोंका अनादर करना निंदा करना ॥ ६ ॥

एतेषां प्रेमसौख्याद्यैः शस्त्रैरस्त्रैश्च भूरिशः ॥

संयुतः सैनिकैरागाद्युद्धाय रघुनन्दनम् ॥ ७ ॥

भाषा—इन कर्मोंका प्रेम तथा सुख सोई हथियार भया है. तथा येही दुष्ट-कर्म फौज हुई है. ऐसी फौज तथा हथियार करके युक्त कुंभकर्ण रामजीसे युद्ध करनेको आता भया ॥ ७ ॥

शीघ्रं दुस्संगरूपश्च कुम्भकर्णो महाबली ॥

तं समायान्तमालोक्य विवेको राघवस्तदा ॥ ८ ॥

भाषा—शीघ्रही दुस्संगरूप कुंभकर्ण युद्धमें आता भया. तिसको देखके विवेकरूप रामजी भी ॥ ८ ॥

कपीनयोजयच्छूरानंगदादींश्च कोटिशः ॥

स्वयं भ्रातृसमायुक्तो युद्धं चक्रे रघूत्तमः ॥ ९ ॥

भाषा—अंगद आदि वानरोंको युद्ध करने वास्ते आज्ञा देते भये तथा आप दोनों भाई युद्ध करने वास्ते चलते भये ॥ ९ ॥

पैशुन्यमत्सरशुभाशुभद्विपातैस्तत्सैनिकाः कपिवरान्विभिदुः

कुकार्याः ॥ अज्ञानवीर्यमदिरां मदवर्द्धिनीं वै पीत्वा च सोऽपि

विभिदे कपिवर्यवीरान् ॥ १० ॥

भाषा—चुगली करना, दूसरे जीवोंके सुखको देखके बुरा मानना, सुंदरकाजमें खोटा कर्म देखना तथा खोटे काजमें सुंदर काज देखना. ऐसी आंखोंसे खूब तरहसे निशान लगाय लगाय दुष्ट काजरूप प्रथम वर्णन भये जो राक्षस सो सब वानरोंको मारते भये. अभिमानको बढ़ानेवाली जो अज्ञानका पराक्रमरूप मदिरा तिसको पीके कुंभकर्णभी वानर ऋक्षोंको मारता भया ॥ १० ॥

ते वै इताश्च कपयः पतिताः पृथिव्यां सत्संगचिन्तनमयीं गमि-
ताश्च मूर्च्छाम् ॥ तादृयस्य रावणसहोदरनाशनाय प्रोत्थाय
सर्वदितिजान्बिभिदुर्नखाग्रैः ॥ ११ ॥

भाषा—राक्षसों करके मारे गये जो वानर तथा ऋक्ष सो सब पृथ्वीमें पडके
सत्संगकी चिन्तारूप मूर्च्छाको प्राप्त होते भये. क्षणमात्रमें सत्संगकी चिन्तारूप
मूर्च्छाको त्यागके कुंभकर्णके नाश करनेके वास्ते उठके सब राक्षसोंको अपने
अपने नखके अग्रभाग करके छेदन भेदन करते हुए ॥ ११ ॥

संचिन्तनं निजगुरोर्वहुधा नखानि तत्पादध्यानबहुप्रेमनखाग्रमु-
क्तम् ॥ तन्मानसार्चनमहागिरिभिश्च वृक्षैर्जघ्नुर्गुरुपवसनामृत-
चिन्तनैस्तान् ॥ १२ ॥

भाषा—वानर अपने अपने गुरुका बहुत प्रकारसे ध्यान करते हुए तथा
गुरुका ध्यान नखका अग्र भाग भया है, मन करके गुरुका पूजन करना सोई
बड़े पर्वत भये हैं, गुरुके सामने टिकनेका चिन्तवन सो वृक्ष भये हैं, ऐसे वृक्ष
पर्वत करके वानर राक्षसोंको मारते भये ॥ १२ ॥

तान्स्वान्निरीक्ष्य कपिभिर्विगतांश्च प्राणैः सम्यग्द्रुतान्निपतिता-
न्भुवि सैनिकांश्च ॥ मूर्च्छागतान्कपिवरांश्च मदावलीढान्दुद्राव
दुष्टगमनः खलु कुंभकर्णः ॥ १३ ॥

भाषा—कुंभकर्ण अपनी दुष्टकर्मरूपी फौजको वानरोंसे नष्ट भई तथा
भगी पतित देखके युद्ध करनेको दौडता भया ॥ १३ ॥

सज्जनैस्तत्तिरस्कारो गतिवेगो निगद्यते ॥

तं द्रवन्तं विलोक्याशु कपीन्हंतुं रघूत्तमः ॥ १४ ॥

भाषा—सुंदरकर्म जो साधु है सो कुंभकर्णका अनादर करदिया सोई
कुंभकर्णका दौडना भया है, वानरोंको मारने वास्ते दौडते हुए कुंभकर्णको
देखके रामजी ॥ १४ ॥

सज्जनार्चनद्रावेण द्रुत्वा तत्सन्निधिं गतः ॥

पूर्वोत्तैरस्त्रशस्त्रैश्च कुंभकर्णं च राघवौ ॥ १५ ॥

भाषा—सुंदर कर्मका पूजन करना सोई रामजीका दौडना है इस प्रकारसे दौडके कुंभकर्णके सामने आते हुए, कुंभकर्णभी सामने राम लक्ष्मणको देखके प्रथम कहे हुए बाण करके ॥ १५ ॥

स्वसंगभ्रष्टमतुलं क्रोधं कृत्वा जघान तौ ॥

जघ्नतुस्तावपि क्रोधात्तस्य कर्मविचिन्तनात् ॥ १६ ॥

भाषा—कुंभकर्ण अपनी संपूर्ण संगतिको भ्रष्ट देखके सोई बेप्रमाण क्रोध है ऐसे क्रोध करके रामलक्ष्मणको मारता भया, कुंभकर्णके कर्मका चिंतवन राम लक्ष्मण करते भये कि इस दुष्टने सज्जनोंको खूब दुःख दिया है सोई चिन्तवन राम लक्ष्मणका क्रोध है ऐसा क्रोध करके राम लक्ष्मण कुंभकर्णको मारते भये ॥ १६ ॥

सुशिक्षासायकैर्दुष्टं कुभकर्णं मदाकुलम् ॥

तयोर्युद्धं समीक्ष्याथ साधवो दुर्जनास्तदा ॥ १७ ॥

भाषा—रामजी दुष्टको सुंदर धर्म सिखाते भये सोई बाण करके दुष्टको मारते भये रामजी और कुंभकर्णके युद्धको देखके साधुजन तथा दुष्टजन ॥ १७ ॥

विस्मयं परमं जग्मुः किन्त्वेतद्वै भविष्यति ॥

पुण्यपापौ च संज्ञातौ तेनापि राघवेण च ॥ १८ ॥

भाषा—बड़े विस्मयको प्राप्त भये यह क्या होवेगा, पुण्यको तथा पापको रामजीभी जानते हैं तथा कुंभकर्ण जानता है ॥ १८ ॥

द्वाविमार्वाश्वराधानाविति युद्धं त्रिवासरम् ॥

बभूव च द्वयोर्ब्रह्म वीरयोर्वीरतापनम् ॥ १९ ॥

भाषा—कि यह दोनों कर्म भगवान्‌के अधीन हैं जिससे जो चाहै सो करवावे ऐसा जानना सोई तीन दिन युद्धमें भये हैं ॥ १९ ॥

चतुर्थदिवसे प्रातः द्वयोर्मनविवर्द्धने ॥

कुंभकर्णं महावीर्य्यन्दुस्संगरौरवैधनम् ॥ २० ॥

भाषा—रामजीको तथा कुंभकर्णको युद्धमें अभिमान बहुत है सोई अभिमान चौथा दिन भया है तिस चौथे दिन युद्धमें आया जो रौरवनरक सो अग्नि भया तिसकी वृद्धि करनेवाले खोटी संगरूप कुम्भकर्णको ॥ २० ॥

पूर्वात्तिस्सैनिकैः सर्वैः संयुतं मृतशौषिकैः ॥

युद्धं चक्रे पुनर्वीरौ विवेको रघुनन्दनः ॥ २१ ॥

भाषा—मरेसे बची जो फौज तिसकरके संयुक्त कुम्भकर्णसे रामजी युद्ध करते भये ॥ २१ ॥

सत्कर्मशिक्षणैर्बाणैस्तं जघान रघूत्तमः ॥

पैशुन्याद्यस्त्रशस्त्रैश्च जघान रघुनन्दनम् ॥ २२ ॥

भाषा—सुंदर कर्मका सिखावनरूप बाण करिके रामजी कुम्भकर्णको मारते भये चुगली करना आदि लेके बुरे कर्मरूप बाण करिके रामजीको कुम्भकर्ण मारता भया ॥ २२ ॥

बभूवतुश्च द्वौ वीरौ बाणच्छिन्नकलेवरौ ॥

स्वस्वकार्य्यस्य प्राप्त्यर्थचिन्तनं बाणछेदनम् ॥ २३ ॥

भाषा—अपने अपने काजकी प्राप्ति होनेका चिंतवन सोई बाण करिके देहछे काटना दोनोंभी वीरोंका होता भया ॥ २३ ॥

सत्संगवासनासौख्यरक्तांगो रघुनन्दनः ॥

दुस्संगचिन्तनारक्तरंजितो राक्षसोत्तमः ॥ २४ ॥

भाषा—सत्संगकी प्रीतिका सुख सोई रक्त भया है तिस रक्त करिके रामजीकी देह लाल होगई है । तथा कुम्भकर्णको मालूम पडगया कि, दुःसंगका नाश रामजी करेंगे उसी दुःसंगका नाश होनेकी चिंता सो रक्त है तिस रक्त करिके कुम्भकर्णकी देह लाल होगई है ॥ २४ ॥

एवं युद्धे समद्भूते पृथिवी करुणा तदा ॥

स्वधर्मगिरिभिश्चैवं वृक्षैश्चैव चचाल ह ॥ २५ ॥

भाषा—रामजीका तथा कुंभकर्णका ऐसा कठिन युद्ध देखिके जीवमात्रके ऊपर दया राखना सोई पृथ्वी है उस पृथ्वीका धर्म क्षमा आदि सुंदर कर्म सोई पर्वत तथा वृक्ष है तिन सहित पृथ्वी कांपती भई ॥ २५ ॥

विधूयमानाम्पृथिवीन्निरीक्ष्य जघान रामः खलु कुम्भकर्णम् ॥

सदौपदेशेन शरेण दुर्मातिं पपात सा भूमितले सदा लये ॥ २६ ॥

भाषा—दयारूप पृथ्वीको कंपायमान रामजी देखिके सुंदर कर्मका उपदेश-रूप बाण करिके कुंभकर्णको मारते भये । रामजी करिके मारा जो दुस्संगरूप कुंभकर्ण सो सुंदरधर्मरूप जो पृथ्वीतल तिसमें पड़िके मारि गया खोटी संगतिका नाश भया । सुंदर संगतिकी वृद्धि भई यही कुंभकर्णका मरण भया ॥ २६ ॥

कुंभकर्णे हते दुष्टे दुःसगे साधुदुःखदे ॥

रामेण धर्मजा देवाः पूर्वोक्ताः सज्जनादयः ॥ २७ ॥

भाषा—साधुजनोंको दुःख देनेवाला दुस्संगरूप कुंभकर्णके मरे पछि प्रथम वर्णन भये जो धर्मसे उत्पन्न देवता तथा सज्जन ये ॥ २७ ॥

चक्रुर्जयजयारावं ते वै दुंदुभयस्तदा ॥

नेदुस्तद्वर्षमतुलं सुमनास्तं निगद्यते ॥ २८ ॥

भाषा—सब जयजयकार करते भये सोई दुंदुभी बाजती भई तथा इन साधुजनोंको तथा देवताओंको बहुत हर्ष भया सोई पुष्प भया है ॥ २८ ॥

शंका विरहिता प्रीतिस्सज्जनानामभूत्तदा ॥

सत्संगे मुनिशार्दूलपुष्पवृष्टिश्च साभवत् ॥ २९ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! सत्संगमें सज्जनोंकी प्रीति दुष्टोंकी शंकासे हीन होती भई सो पुष्पवृष्टि होती भई ॥ २९ ॥

दुःसगरूपे खलु रावणानुजे हते च रामेण ससैन्यके खले ॥

सुखं प्रपेदुः खलु सज्जनादयो निःशंकरागं परमेश्वरेऽचलम् ॥ ३० ॥

भाषा—खोटी संगतिरूप कुंभकर्ण रावणका छोटा भाई तिसको रामजीने मार डाला तब साधुजनोंको भयरहित भजनमें प्रेम होता है ऐसा सुख साधुओंको होताभया तथा शंकारहित प्रेम परमेश्वरमें होताभया ॥ ३० ॥

इति श्रीविदान्तरामायणे युद्धकांडे पं० शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे
कुंभकर्णवधे तृतीयो मोक्षारख्यः सोपानः ॥ ३ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

कुंभकर्ण हतन्हृद्वा रामेण रावणस्तदा ॥

स्वसुतं च समाहूय दुश्चेष्टितमथाब्रवीत् ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तुसुनि बोले रावण दुःसंगरूप कुंभकर्णको रामजीसे मरा जानिके खोटे कर्मका प्रेमरूप जो मेघनाद तिसको बुलायके बोलता भया ॥ १ ॥

दुश्चेष्टित महाबाहो याहि युद्धाय सत्वरम् ॥

विवेकेन हतो भ्राता कुम्भकर्णो ममानुजः ॥ २ ॥

भाषा—हे खोटे कर्मके प्रेम मेघनाद ! मेरे भाई कुंभकर्णको विवेकरूप रामजीने मार डाला है सो युद्ध करने वास्ते जलदी जावो ॥ २ ॥

दुष्टकर्मणि यत्प्रेम तदिंद्रमर्दनस्मृतः ॥

स श्रुत्वा स्वपितुर्वाक्यं शीघ्रं युद्धाय निर्य्ययौ ॥ ३ ॥

भाषा—खोटे कर्ममें प्रेमरूप मेघनाद पिताका वाक्य सुनिके उसी समय युद्ध करनेको गया ॥ ३ ॥

चकार युद्धमतुलं ताभ्यां च कपिभिः सह ॥

जारद्युतमहामोहहास्यास्त्रिधादिकर्माभिः ॥ ४ ॥

भाषा—व्यभिचार जुआ खोटे कर्ममें बड़ा मोह साधुओंकी मस्करी करना इन कर्मोंमें स्नेह आदि लेके बुरे कर्म बाण है इन बाणों करिके राम लक्ष्मण तथा वानरोंसे युद्ध इंद्रजित करता भया ॥ ४ ॥

मंदस्मितादिवाक्यैश्च शरैश्चिच्छेद वानरान् ॥

राघवौ च विशेषेण जघानैभिःशरोत्तमैः ॥ ५ ॥

भाषा—मुसकुरायके बोलना यह बड़ा खोटा काम है इसीको बाण बना-
यके वानरोंको काटता भया इन्हों बाणों करिके राम लक्ष्मणकोभी
मारता भया ॥ ५ ॥

एषाम्प्रीत्या महाशक्त्या चान्यैश्च विविधैरपि ॥

जघान लक्ष्मणन्तोपं राघवं च विशेषतः ॥ ६ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भये बुरे कर्मरूप बाण तिन बाणोंमें प्रीति निर्दया सोई
सांग है उसी सांग करिके सन्तोषरूप लक्ष्मणको मारा तथा और अनेक बाण हैं
तिन्हों करिके विवेकरूप रामजीको तथा और योर्धोंको मारता भया ॥ ६ ॥

कदा स्वकार्ये स्वस्यैव वर्द्धनं न्यूनता कदा ॥

आविर्धानन्तिरोधानन्तस्य तत्कथितम्मुने ॥ ७ ॥

भाषा—वीर मेघनाद अपने युद्धमें कभी अपनी जयकी वृद्धि देखता है
तथा कभी जयकी हानि देखता है यही युद्धमें मेघनादका प्रगट होना
तथा गुप्त होना है ॥ ७ ॥

एवं कृत्वा महायुद्धन्तयोः शोकविवर्द्धनम् ॥

मूर्च्छितान्कपिवीरांश्च राघवौ चापि दुर्मदः ॥ ८ ॥

भाषा—इस प्रकारका महायुद्ध करके वानरोंको तथा राम लक्ष्मणको
मूर्च्छित करके ॥ ८ ॥

जगाम स्वालयं वीरः पिता पितृहर्षविवर्धनः ॥

रामेण घातितां सेनां सर्वा स्वस्य निरीक्ष्य वै ॥ ९ ॥

भाषा—पिता जो मनरूप रावण तिसके हर्षकी वृद्धि करनेवाला इन्द्रजित्
अपने मंदिरको गया, दुष्टोंकी मंडली सो उसका महल है, अपनी फौजको राम
करिके नष्ट भई देखके भाग गया ॥ ९ ॥

रामबाणैरर्दितश्च जगाम पितुरन्तिकम् ॥

तदाभूच्च द्रयोः सायं संशयं मुनिसत्तम ॥ १० ॥

भाषा—रामजीके बाण करिके मारा मेघनाद भागिके पिताके पास गया तब

राम रावण दोनों शूरवीरोंको संशय है कि हमारा जय होवैगा कि नहीं ऐसा दोनों वीर विचारते हैं सोई संशयरूप सायंकाल होगया ॥ १० ॥

रामरावणयोरस्तं प्रतापभास्करोऽगमत् ॥

किं भविष्यति युद्धेऽस्मिन्चिन्तयेतिविचिंततोः ॥ ११ ॥

भाषा—राम रावण ये दोनों अपने अपने चिन्तमें चिंतन करते हैं कि, युद्धमें क्या होवैगा कि हारेगे ऐसा चिंतनरूप राम रावणका प्रताप भया है सो प्रतापसूर्य सामको अस्त होगया ॥ ११ ॥

सन्तोषम्पतितन्दृष्ट्वा शक्त्या निर्दयया क्षितौ ॥

घातितन्दुष्टकार्यस्य प्रेम्णा रावणसूनुना ॥

मोक्षप्रेमाकुलत्वेन निरीक्ष्य श्वासवर्जितम् ॥ १२ ॥

भाषा—राम आदि लेके सुग्रीव विभीषण सुग्रीवसहित सब वानर रोते भये क्यों रोते भये खोटे कर्मोंमें प्रेमरूप ऐसा जो रावणका पुत्र मेघनाद तिसकरके लक्ष्मण संतोषरूपको मारा देखिके निर्दयरूप शक्ति करिके दुष्टने लक्ष्मणको मारा तब लक्ष्मण मोक्षके प्रेमसे कुछ थोरा व्याकुल होगये सोई श्वाससे हीन मूर्च्छाको प्राप्त होगये हैं ॥ १२ ॥

रामाद्या रुरुदुस्सर्वे सुग्रीवसविभीषणाः ॥

स्वस्वकार्येष्वधैर्यञ्च तदेव रोदनं स्मृतम् ॥ १३ ॥

भाषा—राम आदि अपने २ काजमें धरिजको छोड़ देते भये सो इन सबका रोना भया है । यह श्लोकयुग्म है ॥ १३ ॥

सत्याचलस्वभावश्च रामस्य तेन बोधितः ॥

सुषेणेन रघुश्रेष्ठो द्रौण्यानयनहेतवे ॥ १४ ॥

भाषा—द्रोणपर्वतपर संजीवन नाम औषधि लेआने वास्ते रामजीका स्वभाव कभी सत्यसे चलायमान नहीं होता सोई स्वभाव है रामजीने कहा द्रोणगिरिसे संजीवन औषधि मँगावो ॥ १४ ॥

सन्तापजीवनार्थाय रावणस्य कुलान्तकम् ॥

कर्तुं तेन प्रतिज्ञातं स प्रभातावधिः कृतः ॥ १५ ॥

भाषा—रामजीने प्रतिज्ञा की कि संतोषरूप लक्ष्मणको जियायके पछे रावणके कुलको नाश करूंगा ऐसी रामजीकी प्रतिज्ञा सोई प्रातःकालकी मर्यादा भई है कि रातिमें लक्ष्मण जिआवै तब तो अच्छा है नहीं तो प्रातःकाल सूर्य दीखते समय मरजावेंगे राम रावणकी सेनाकी चिंता सोई राति है ॥ १५ ॥

रामेण सच्चिदानन्दध्यानं द्रोणाचलः स्मृतः ॥

संजीवनन्तदानन्दमौषधञ्च कृतम्मुने ॥ १६ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! रामजी भगवान्का ध्यान करते हैं सोई द्रोणनामपर्वत हे तथा ध्यानमें आनंद होताहै सोई संजीवनी नाम औषधी है ॥ १६ ॥

रामेण प्रेषणम्प्रेममोहरूपस्य कथ्यते ॥

गतिवेगो हनुमतो विवेकानुग्रहस्तथा ॥ १७ ॥

भाषा—रामजीके प्रेमके मोहरूप जो हनुमान तिसके ऊपर रामजीका प्रेम बहुत है सोई औषधि लेने वास्ते हनुमान्को भेजना भया है हनुमान्के ऊपर विवेकरूप रामकी कृपा बहुत है सोई संजीवन औषध लेआने वास्ते हनुमान्का दौडना भया है ॥ १७ ॥

रामध्यानमभूत्पंथा दुष्टार्थो मुनिसत्तमः ॥

भगवद्वाक्यशास्त्रस्य निन्दनं तत्कमंडलुः ॥ १८ ॥

भाषा—हनुमान्जी रामजीको ध्यान करते भये सोई औषध लेने वास्ते जानेका रस्ता है, तथा खोटे कर्मोंके अर्थ जैसा जाते २ अनेक दुःख सहना सोही विघ्न करनेवास्ते कालनेमि मुनि भया है ईश्वरका वाक्यरूप शास्त्र तिसकी निंदा करना सोई कालनेमिका कमंडलु है ॥ १८ ॥

ददौ हनुमते तोयं तत्सुखं बुद्धिनाशनम् ॥

तत्त्यक्त्वा हनुमान्चे विज्ञाय दम्भिनं मुनिम् ॥ १९ ॥

भाषा—हनुमान्को प्यासा जानिके शास्त्रनिर्दयरूप कमंडलु है तिस कमंडलुका सुख सोई जल है सज्जनोंकी बुद्धिको नाश करनेवाला जल तथा कमंडलु हनुमान्को मुनिने दिया, और कहा कि जल पीओ, हनुमान् मुनिको चंडाल जानिके कमंडलु त्यागिके दुष्टमुनिसे बोले ॥ १९ ॥

नानेन मे भवेच्छांतिस्तृषस्सा च बलीयसी ॥

चित्तं तदौषधं दत्तं तदेव वचनं कपेः ॥ २० ॥

भाषा—हनुमान्का चित्त तो औषधिमें लगिरहा सोई हनुमान्का बोलना भया, यह बोले कि दुष्टमुनि ! इस जलसे हमारी प्यासकी शान्ति नहीं होवेगी क्योंकि हमारेको बड़ी प्यास लगी है ॥ २० ॥

संतोषलक्ष्मणस्यैव वर्द्धनेच्छा तृषा स्मृता ॥

इत्युक्तो दर्शयामास दुष्टार्थः कपये तदा ॥ २१ ॥

भाषा—संतोषरूप लक्ष्मणकी वृद्धि होनेकी इच्छा रामजीके प्रेममें मोहरूप हनुमान्की बनीरहती है सोई हनुमानकी तृषा भई है ऐसा कपिसे कहा जो मुनि सो हनुमानके वास्ते तलाव देखाता भया ॥ २१ ॥

तडागं सज्जनानां वै दुःखरूपं विचिन्तनम् ॥

सदनादरतोयेन पूरितं सर्वदा सरः ॥ २२ ॥

भाषा—सज्जनजीवोंको दुःख देनेका चिंतवन सोई तलाव है साधु लोगोंका अनांदर सोई जल है तिस करके हमेशा वह तलाव भरा रहता है ॥ २२ ॥

सदसद्विचारणम्पानन्तोयस्याभूत्कपेस्तदा ॥

छायया सज्जनाप्रीत्या ग्रस्तस्तत्र कपिस्तदा ॥ २३ ॥

भाषा—खोटे कर्मका तथा सुंदर कर्मका निर्णय करना सोई हनुमानका जल पीना भया है ऐसा सुंदर कर्म तथा बुरे कर्मका निर्णय करते जो हनुमान तिसको साधु जीवोंमें अप्रीति सोई छाया नाम राक्षसी है सो छायाने हनुमानको खाने वास्ते पकडलिया ॥ २३ ॥

तां हत्वागान्मुनेश्शीघ्रमंतिकं गुरुदक्षिणा ॥

संतोषचितया मुष्ट्याहननं सत्सुभावना ॥ २४ ॥

भाषा—राक्षसीको मारिके मुनिके सामने गये तब मुनिने दक्षिणा मांगी तब हनुमानको संतोषकी चिंता बनी रहती है सोई मूठी है उसी मुष्टि करके दुष्टके अर्थरूप मुनिको मारे तथा साधुजीवोंमें प्रीतिरूप दक्षिणा देते भये तब दुष्टोंका अर्थ नष्ट होगया और सज्जनजीव भयसे रहित भये ॥ २४ ॥

संतोषपतनं कष्टमविज्ञानो वनस्पतेः ॥

विवेकसंगतौ हर्षं तद्द्रोणोत्पादनं कृतम् ॥ २५ ॥

भाषा—युद्धमें संतोषरूप लक्ष्मण बेहोश भये हैं ऐसा कष्ट सोई संजीवन औषधिका नहीं पहिचानना भया सोई विवेकरूप रामकी संगतिमें जीवोंको बड़ा हर्ष होताहै सोई द्रोणपर्वतका मूलसे उखाडना भयाहै ॥ २५ ॥

सत्संगवर्द्धनमहासुखमौषधश्च सत्याचलप्रकृतिजो गदहा सुषेणः ॥

तूर्णन्ददौ रघुपते खलु लक्ष्मणाय तज्जीवनं च समभूद्रिमतौ वियोगः ॥ २६ ॥

भाषा—तब द्रोणपर्वतको देखके रामजीका सत्यसे अचलस्वभावरूप गदहा कहिये वैद्य सुषेण जो है सो सत्संगकी वृद्धिमें सुख सोई संजीवन औषधको जलदी लक्ष्मणको देते हुए तब तुरंत लक्ष्मणजी जीवते भये खोटी मतिमें वियोग होना सोई लक्ष्मणका जीवन भया है बडे वैद्यको शास्त्रमें गदहा लिखाहै कोई शंका मति करना ॥ २६ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे युद्धकाण्डे पं० शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवर-
तन्तुसंवादे संतोषजीवनविधौ चतुर्थो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ४ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

लक्ष्मणं जीवितन्दृष्ट्वा हर्षिता वनचारिणः ॥

रामो विभीषणश्चैव तद्गिरिस्थापनम्पुनः ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतुमुनि बोले लक्ष्मणको संजीवित देखके रामजी सुग्रीव विभी-

षण सब कपि ऋक्षोंको बड़ा हर्ष भया सोई फिर द्रोणपर्वतका द्रोणके स्थानपर टिकाना भयाहै ॥ १ ॥

स्वस्वार्थलालसारात्रौ तद्धर्ष चिंतया द्वयोः ॥

पुनः प्रतापो ववृधे रामरावणयोस्तदा ॥ २ ॥

भाषा—तब अपने अपने जयका विचार सब करते हैं सोई विचारकी इच्छा रात्रि भईहै तिस रात्रिमें अपने अपने जयके सुखमें उसी हर्षकी चिंता करके राम रावणका प्रतापरूप सूर्य फिर उदय भया ॥ २ ॥

एतत्प्रभातं संवीक्ष्य द्वयोर्लोभन्दिनन्तथा ॥

युद्धाय पुनराजग्मुः कपयो राक्षसास्तदा ॥ ३ ॥

भाषा—ऐसा प्रतापरूप सूर्य उदयरूप प्रभातको देखिके तथा राम रावणकी अपने अपने काजमें लोभ सोई दिन भयाहै. ऐसे समयमें युद्ध करने वास्ते वानर राक्षस फिर रणभूमिमें आते भये. अपने २ काजकी प्रीति सोई रणभूमि है ॥ ३ ॥

चेद्विवेको बली रामः सन्तोषो लक्ष्मणोऽपि च ॥

तथापि नागपाशेन पंचेन्द्रियगुणेन वै ॥ ४ ॥

भाषा—राम लक्ष्मण बड़े बलवान हैं क्यों कि विवेक संतोष मोक्षके बड़े मित्र हैं तो भी पांच खोटी इंद्रियोंका गुण जो है सोई नागपाश भया है तिस नागपाश करके ॥ ४ ॥

बबंध राघवौ युद्धे मेघनादो महाबली ॥

किंचित्स्वकर्मचलनं तद्वयोर्विधनं मुने ॥ ५ ॥

भाषा—मेघनाद राम लक्ष्मणको बांधता भया. कुछ थोरा विवेकभी अपने कर्मसे चलायमान होगये हैं और लक्ष्मणभी थोरा चलायमान होगये हैं क्योंकि मनरूप रावणका युद्ध सहज नहीं है बड़े २ ज्ञानियोंको पकड़िके मनरावणने नरकमें पटाकि दियाहै सोई चलायमान रामलक्ष्मणको नागपाशमें बांधना भयाहै ॥ ५ ॥

स्ववीर्यस्मरणेनैव गरुडेन विमोचितौ ॥

नागपाशविमुक्तौ द्वौ निरीक्ष्य रावणात्मजः ॥ ६ ॥

भाषा—राम लक्ष्मण अपने वीर्यका स्मरण करते भये सोई गरुड भया है उस गरुडने नागपाशसे छुड़ाया दिया मेघनादने राम लक्ष्मणको नागपाशसे छुटा देखिके ॥ ६ ॥

प्राप्य युद्धान्निराशश्च प्लवनं स्वजये तथा ॥

दुष्टानां संगतिं देवीं नाम्नोक्तां च निकुंभिलाम् ॥ ७ ॥

भाषा—अपनी जय होनेमें मेघनादने आशा छोड़ दिया साई मेघनादका भागना भया है सो युद्धमें भागिके दुष्टोंकी संगतिरूप निकुंभिला देवी है तिसके पास गया ॥ ७ ॥

स्वकर्मप्रेमकुंडं च तत्सुखोऽग्निरितीर्यते ॥

तदुत्साहीश्च साहित्या हवने दारु तत्परम् ॥ ८ ॥

भाषा—मेघनादका जो कर्म बुरे कर्ममें प्रेम करना सोई होमका कुंड भया है उसी बुरे कर्मके प्रेममें सुख मानना सोई अग्नि है. मेघनादका उत्साह कि मैं बहुत सुखी हूं सोई होमकी सब सामग्री है मेघनादकी प्रतिज्ञा कि राम लक्ष्मणको मार डालूंगा ऐसा पण सोई होमका काष्ठ है ॥ ८ ॥

मरणे चिंतनं होमं कर्तुं तस्थौ च दुर्मतिः ॥

शमादिशिक्षाबाणेन लक्ष्मणेन विनाशितः ॥ ९ ॥

भाषा—मेघनादको निश्चय अपने मरणको होगया कि मैं युद्धमें मर जाऊंगा सोई होमका करना भया है शम, दम, यम आदि सुंदर कर्म लक्ष्मण मेघनादको सिखाते भये सोई सिखाना बाण करिके लक्ष्मण मेघनादके होमको नाश करते भये ॥ ९ ॥

किञ्चित्सकार्यं म्लानत्वं तदेव तद्विनाशनम् ॥

पुनश्चक्रे महायुद्धं लक्ष्मणेन हतौ भुवि ॥

स्वभावं पौर्विकं हित्वा सुस्वभावरतोऽभवत् ॥ १० ॥

भाषा—थोरा मेघनादका अपने कर्ममें लक्ष्मणकी शिक्षा पायके प्रेम नष्ट होगया। तथा सुंदर कर्ममें थोरा प्रेम भया सोई होमका नाश होनाहै होमके नाश भये पीछे फिर युद्ध करनेको आता भया तब लक्ष्मणने मारि डाला तब मेघनाद दयारूप पृथ्वीमें पडिगया। दयामें मिलि गया। प्रथमका स्वभाव खोटे कर्ममें प्रेम सो छूटि गया। सुंदर स्वभावमें प्रेम करने लगा यह मेघनादका मरण भया है ॥ १० ॥

तदेव मरणं तस्य पतनं धर्मसंस्थितिः ॥

भूमौ सद्भावनायां च मेघनादस्य सक्षयः ॥ ११ ॥

भाषा—धर्ममें बुद्धि टिक गई सो मेघनादका भूमिमें पडना है सुंदर कर्ममें प्रीति होगइ साइ भूमि है तिसमें पडिके खोटे कर्ममें प्रेमरूप जो मेघनाद तिसका नाश हुआ। दोनों श्लोकोंका अर्थ मिला है युग्म है ॥ ११ ॥

एवं संतोषरूपस्तु लक्ष्मणो राघवानुजः ॥

निहत्य चेन्द्रजेतारं सुखमाप स्वकर्मणः ॥ १२ ॥

भाषा—संतोष लक्ष्मण इस प्रकारसे इन्द्रजितको मारिके अपना कर्म जो संतोष तिसका सुख जो भगवानमें प्रेम तिसको प्राप्त भये ॥ १२ ॥

सिद्धिं वीक्ष्य विवेकाद्या हर्षं चक्रुश्च भूरिशः ॥

सा पुष्पवृष्टिः खाद्भ्रष्टा द्वयोरुपरि पातिता ॥ १३ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजी आदि सज्जन अपने कर्मोंकी सिद्धि देखिके बहुत हर्ष करते भये। सोई रामलक्ष्मणके ऊपर फलोंकी वर्षा आकाशसे होती भई ॥ १३ ॥

किंचित्किंचित्स्वमरणे कुलानां संक्षये तथा ॥

त्रासं प्राप दशग्रीवो विलापस्तस्य स स्मृतः ॥ १४ ॥

भाषा—रावण अपने मरणमें तथा कुलके क्षयमें थोरा थोरा डर मानता भया सोई रावणका विलाप हुआ है ॥ १४ ॥

हते मेघनादे कुनादे सुवादे गते प्रापिते लक्ष्मणेनैव मृत्युम् ॥

सुखं साधवस्सज्जनाः पेदिरे वै मही सर्वदानंदयुक्ता बभूव ॥ १५ ॥

भाषा—लक्ष्मणने मेघनादको मार डाला खोटा बोलना दुष्टजीवोंका नष्ट होगया सब जीवोंमें सुंदर बोलना होता भया साधुजन भगवानके भजनरूप सुखको प्राप्त भये तथा दयारूप पृथ्वी दयाके वृद्धिरूप आनंदको प्राप्त होती भई ॥ १५ ॥

मेघनादं हतं दृष्ट्वा पुत्रं प्राणसमं तदा ॥

जीविताशाम्परित्यज्य स्वकर्मप्रीतिभावनाम् ॥ १६ ॥

भाषा—रावण मेघनादको मरा देखिके अपने कर्ममें प्रीति सोई रावणके जीनेकी आशा उसको छोड़ दिया जाना कि अब मैं नहीं जीऊंगा ॥ १६ ॥

पूर्वोत्तैरस्त्रशस्त्रैश्च सैनिकैश्चापि संयुतः ॥

बभूव सुमहद्युद्धं रामरावणयोरपि ॥ १७ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भई जो सेना तथा अस्त्र शस्त्र तथा तिनको लेके बड़ा युद्ध राम रावणका होता भया ॥ १७ ॥

असत्यादिशरैर्दुष्टो जघान रामवाहिनीः ॥

राघवो च विशेषेण सुग्रीवं सविभीषणम् ॥ १८ ॥

भाषा—झूठ बोलना आदि जो अनेक बुरे कर्म हैं तिनको बाण बनायके रामजीकी सेना सुंदर कर्मरूप तिसको काटता भया तथा राम लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण इन चारोंको तो बहुत मारता भया ॥ १८ ॥

रामोऽपि सत्यादिशरैर्दृष्टाननं विभेदं सैन्यानापि तस्य चागतान् ॥

हता मृतास्संस्वलिताश्चष्ठावितास्स्वकर्मभ्रष्टाशुभबुद्धयोऽभवन् १९

भाषा—तथा रामजीभी सत्यवचन आदि अनेक सुंदर कर्मरूप बाण करके रावणको मारते भये तथा रावणकी सेना दुष्ट कर्मोंमें प्रीतिरूप तिसको भी मारते भये सेना कोई तो घायल हुई पृथ्वीमें पड़ी है कोई मर गई कोई भागि गई रावणकी सेना दुष्टकर्म छोड़िके सुंदर कर्ममें बुद्धि लगाती भई सोई सेनाका मरना भागना पडना भयाहै ॥ १९ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे

रामरावणकल्लोलयुद्धवर्णने पञ्चमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ५ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

युद्धे पराजयं प्राप्य रामेण रावणस्तदा ॥

स्वकर्मनाशचिन्तायां रात्रौ गत्वा च जानकीम् ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोले रावण राम करके युद्धमें हानिको पायके अपने कर्मके नाशकी चिन्ता सोई रात्रि भई है तिस रात्रिमें जानकी प्रति जाता भया ॥ १ ॥

उवाच वचनं राजा सामदानादि संयुतम् ॥

अहं चापि जगद्व्याप्तस्तस्यांशः प्राणवल्लभे ॥ २ ॥

भाषा—साम दान भेद दंडरूप वचन बोलता भया हे प्राणोंकी प्यारी जानकी ! संसारमें व्याप्त जो भगवान् तिसके अंशमें मैं भी हूँ ॥ २ ॥

कृपां करिष्यसे चेत्त्व तदा मुक्तो भवाम्यहम् ॥

अस्मात्कुतर्कनिचयान्नोचेत्वां भ्रष्टभावनाम् ॥ ३ ॥

भाषा—जो तू भगवान्की भक्ति भेरेको देगी ऐसी कृपा मेरे ऊपर करेगी तौ इस संसारके अनेक प्रकारके कुतर्कके समूहसे मैं छूटि जाऊंगा यह सामवचन, जो नहीं कृपा करेगी तो मैं तो भ्रष्टही हो रहा हूँ पर तेरेकोभी भ्रष्टकी प्रीतिमें ॥ ३ ॥

गमयिष्यामि दास्यामि निर्विघ्नं भजनं प्रभोः ॥

इत्याद्यनेकाविधिना तेनोक्ता जनकात्मजा ॥ ४ ॥

भाषा—प्राप्त कर देऊंगा यह दंड वचन, जो कृपा करेगी तो भगवान्का भजन निर्विघ्न देऊंगा तेरे भजनमें विघ्न नहीं होने पावेगा क्योंकि इन्द्रियोंका राजा तौ मैं हूँ यह दान वचन इन आदि और अनेक प्रकारके वचन जानकीसे रावण कहता भया परंतु जानकीने ॥ ४ ॥

तिरश्चकार तं दुष्टं ज्ञात्वा पक्वहृदं सती ॥

अनेकजन्मभ्रष्टत्वं तत्तिरस्कारमुच्यते ॥ ५ ॥

भाषा—रावणका अनादर करके जानकीने विचार किया कि यह मन रूप रावण अनेक जन्मका भ्रष्ट है इसका हृदय बहुत ज्ञानसे कच्चा है इसको

जो कुछ उपदेशभी करें तौ सुन लेवेगा पण मानेगा नहीं इसवास्ते अनादर कर दिया मन बहुत जन्मसे बिगड रहा ह सोई रावणका अनादर है ॥ ५ ॥

आजगाम तदा दुष्टः स्वालयं स्वपराजयम् ॥

ज्ञात्वा रामाद्भ्रुवं दुष्टस्तत्तस्य गमनालयम् ॥ ६ ॥

भाषा—जानकीसे अनादर पायके युद्धमें हार जाना ऐसे अपने घरको रावण चला गया रावणने रामजीसे अपना हार निश्चयसे जानि लिया सोई रावणका घर जाना हुआ ॥ ६ ॥

गते दृशानने देवी ब्रह्मभक्तिस्वरूपिणी ॥

चक्रे विलापं सुमहद्दुष्टानां मोक्षहैतुकम् ॥ ७ ॥

भाषा—रावणके गये पीछे ब्रह्मकी भक्ति रूप जानकी दुष्टोंके मोक्ष होनेके वास्ते चिन्तन करती है सोई विलाप जानकी करती भई ॥ ७ ॥

ज्ञानविज्ञानवैराग्यं मुक्तिदानं चराचरे ॥

आचारश्च विचारश्च त्रासो दुष्टस्वभावतः ॥ ८ ॥

भाषा—ज्ञान १ विज्ञान २ वैराग्य ३ आचार ४ विचार ५ खोटे स्वभावसे डर राखना ६ ॥ ८ ॥

अनाहर्षालसो नित्यं श्रीमद्भगवदर्चने ॥

कुक्कर्मनाशने यत्नं स्वचित्तनियमन्तथा ॥ ९ ॥

भाषा—भगवान्के पूजनमें हर्ष त्यागना नहीं ७ तथा आलस्य करना नहीं ८ खोटे कर्मोंका नाश होनेके वास्ते उपाय करना ९ तथा अपने चित्तको थिर राखना १० तथा और अनेक विघ्नसे चित्तको बन्दोबस्तसे राखना ११ ॥ ९ ॥

एते चैकादशा मासाः प्रोक्ता जनकनंदिनी ॥

स्थित्वा च रावणारामे विललाप भृशं सती ॥ १० ॥

भाषा—येही ग्यारह मास जानकी रावणके बगीचेमें टिकके वारंवार विलाप करती भई ॥ १० ॥

पूर्वोक्तां रजनीन्दुवा व्यतीतां रावणस्तदा ॥

पुनर्युद्धं च रामेण कर्तुं प्रायान्महाबली ॥ ११ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भई जो रात्रि तिसको बीती देखके रावण रामसे युद्ध करनेको फिर आता भया ॥ ११ ॥

योगध्यानौ शमदमौ जीवानां सद्विशिक्षणम् ॥

परोपकारो मोक्षस्य चिंतनं सततं हृदि ॥ १२ ॥

भाषा—योग ध्यान शम दम जीवोंको सुंदरकर्म सिखाना दूसरे जीवका उपकार करना रातदिन मोक्ष होनेका चिंतन करना ॥ १२ ॥

दुष्टत्रासं सदा मौनी रामस्यैते महागुणाः ॥

दुष्टानां कर्मणां भावस्तेषु रागो निरंतरम् ॥ १३ ॥

भाषा—दुष्टजीवोंसे भय मानना खोटे कर्ममें कोई बुलावे तो बोलना नहीं ये नव गुण रामजीके युद्धमें नौ दिन भये तथा खोटे कर्मोंमें प्रेम उसी प्रेममें नित्य स्नेह करना ॥ १३ ॥

अनृतं चञ्चलत्वं च सत्कर्मनाशचिन्तनम् ॥

सत्कर्मणि महालस्यं वेदनिन्दनमेव च ॥ १४ ॥

भाषा—झूठ बोलना स्वभावकी चंचलता बहुत राखना सुंदर कर्मका नाश करनेकी चिन्ता सदा राखना सुंदर कर्मोंमें सदा आलस्य करना वेदकी निंदा करना ॥ १४ ॥

जीवानां दुःखदायाशु सदोपायवितर्कनम् ॥

प्रसह्य करणं चैते गुणा रावणदेहजाः ॥ १५ ॥

भाषा—जीवोंको दुःख देनेवास्ते सदा उपाय करना सब जीवोंसे जबरदस्ती करना ये नव गुणोंकी उत्पत्ति रावणकी देहसे है सोई युद्धमें नव दिन भये हैं ॥ १५ ॥

अष्टादशदिनं युद्धं रामरावणयोरभूत् ॥

किञ्चिच्छेषान्निरीक्ष्यैव स्वसेनां राक्षसाधिपः ॥

हत्पुत्रप्रपौत्राञ्च सभ्रातृगणसयुताम् ॥ १६ ॥

भाषा—इस प्रकार अठारह दिन राम रावणका युद्ध भया तब रावण अपनी फौजमें देखा तो भ्राता पुत्र पौत्र संग रहनेवाले सब मरगये अब थोड़ी फौज रही है ॥ १६ ॥

विद्रुत्य संगरान्मूढो व्याकुलत्वं च प्लावनम् ॥

स्वभावं स्वगुरुं शुक्रं पृष्ट्वा यज्ञं समारभत् ॥ १७ ॥

भाषा—ऐसी सेना देखके रावण व्याकुल होगया सोई रावणका संग्रामसे भागना है सो संग्रामसे भागिके रावणका स्वभाव सोई रावणका गुरु शुक्राचार्य तिसमें पूछके यज्ञ करनेको प्रारंभ रावण करता भया ॥ १७ ॥

केनोपायेन विजयो मे भवेदिति चिन्तनम् ॥

शोकः कुंडं महामोहो काष्ठमग्निर्वितर्कनः ॥ १८ ॥

भाषा—मेरी जय राममें युद्धमे किस प्रकारसे होवै ऐसा रातदिन रावण चिंतवन करता है सो चिंतवनरूप शोक सोई यज्ञमें होम करनेका कुंड भया है खोटे कर्मोंमें रावणका बड़ा मोह है सोई होमकी लकड़ी भई हैं तथा रामजीको मैं जीतूंगा कि रामजी मेरेको जीत लेंवेंगे ऐसा रातदिन रावण तर्क करता भया सोई तर्क यज्ञमें अग्नि भई है ॥ १८ ॥

पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां सेनानामपि घातनम् ॥

एवं विषादा बहवो होमसाहित्यमंडलाः ॥ १९ ॥

भाषा—पुत्र पौत्र प्रपौत्र भाई फौज इन सबका मरण देखके रावणके हृदयमें बहुत दुःख हुवा सोई दुःख होमकी अनेक प्रकारकी सामग्री भई है ॥ १९ ॥

एवं यज्ञं च संकर्तुं तस्थौ राक्षससत्तमः ॥

तदा गत्याशु कपयो भगवदज्ञानमाददुः ॥ २० ॥

भाषा—ऐसी यज्ञ करनेको रावण एकांतमें बैठता भया तब वानरोनें शीघ्र जायके रावणको भगवान्का ध्यानरूप ज्ञान देते भये ॥ २० ॥

तदेव यज्ञविघ्नं च कृतं वानरसत्तमैः ॥

भगवद् ज्ञानरूपं वै विघ्नं प्राप्य दशाननः ॥ २१ ॥

भाषा—सोई ज्ञान देना वानरों करके रावणके यज्ञका नाश करना भया, शोकरूप यज्ञ रावणका नाश होगया तब भगवान्‌का भजनरूप ज्ञान अपनी यज्ञका नाश रावण पायके ॥ २१ ॥

किञ्चिज्ज्ञानं च संप्राप्य स्वकर्मस्मरणं कृतम् ॥

रावणेन तदेवास्य विलापः प्रोच्यते बुधैः ॥ २२ ॥

भाषा—थोड़े ज्ञानको प्राप्त होके फिर पीछे अपना जो बुराकर्म तिसका स्मरण किया. तौ पहिले तौ अज्ञानसे बुरा कर्म अच्छा लागता रहा. अब थोड़ा ज्ञान प्राप्त भया तौ वह बुरा कर्म खोटा मालूम पडा तौ मनरूप रावणने विलाप किया. यह विलाप शोकरूप भया तथा परलोक वास्तेभी भया ॥ २२ ॥

संकृत्वैवं विलापं च रामेण संगरे हतः ॥

सच्चिदानंदरूपस्य ध्यानबाणेन तत्क्षणे ॥ २३ ॥

भाषा—ऐसा विलाप करके युद्ध करनेको आया तब रामजीने परमेश्वरका ध्यानरूप तिस बाण करके रावणको मारडाला तब मनरूप रावण मरगया ॥ २३ ॥

एवं हतश्च रामेण सामात्यपुत्रपौत्रकः ॥

ससैन्यः सकुटुंबश्च सदा सानुजसंयुतः ॥ २४ ॥

भाषा—इस प्रकारसे मंत्री पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र, कुटुंब, सेना, दास, छोटा भाई सहित रावणको रामजीने मार डाला ॥ २४ ॥

मंदोदर्यादिभिः स्त्रीभिस्त्यक्तं कर्म च पौर्विकम् ॥

विलापश्चैव तासाम्भो कथितो मुनिसत्तम ॥ २५ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! मंदोदरी आदि रावणकी जो स्त्री हैं सो सब राक्षसियोंने प्रथम खोटाकर्म त्याग देती भई सो राक्षसियोंको रावणके मरे पीछे विलाप करना भया ॥ २५ ॥

जनिष्यन्ति पुनर्दुष्टा दास्यन्ति व्यसनं महत् ॥

जीवानामेतदर्थं हि लंकाराज्यं विभीषणे ॥ २६ ॥

भाषा—रामजीने विचार किया कि ये दुष्टलोग फिर उत्पन्न होवेंगे तो जीवोंको दुःख देवेंगे इस वास्ते लंकाका राज्य विभीषणको देते भये ॥ २६ ॥

ददौ पूर्वोक्तभावं च लंकाराज्यं रघूत्तमः ॥

महानंदयुतो रामस्तदेव सैन्यजीवनम् ॥ २७ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भया जो लंकाका राज्य सो रामजी विभीषणको देते भये. और बहुत भगवान्‌के रूपका स्मरण करके बड़े आनंदको प्राप्त भये. सोई रामजीका सैन्यको जिआना भया है ॥ २७ ॥

चराचरस्यैव हते रिपौ तदा रामेण सत्कर्मविनाशने शठे ॥

प्राप्सुस्सुखं सर्वचराचरात्मका जीवा मनोरावणपातिते क्षितौ ॥ २८ ॥

भाषा—रामजीने चराचरका वैरी तथा सुंदर कर्मका नाश करने वाला शठ ऐसा जो मनरूप रावण तिसको मार डाला तब सब चराचर जीव बड़े सुखको प्राप्त होते भये ॥ २८ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवत्वरतन्तुसंवादे
रावणमरणरामविजयवर्णने षष्ठो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ६ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

रामचंद्रेण निहतस्सच्छिक्षासायकेन वै ॥

कुवासनां परित्यज्य संश्रितश्च सुवासनाम् ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोले सुंदर भगवान्‌का कर्म मन रावणको रामजी सिखाते भये उस सिखावनरूप बाण करके रावण मारा गया, रावण खोटे कर्मकी प्रीतिको छोड़के सुन्दर कर्मोंकी प्रीतिका सेवन करने लगा ॥ १ ॥

तदेव मरणं प्रोक्तं मनसो रावणस्य वै ॥

अन्येषां चैव सर्वेषां राक्षसानामपीदृशम् ॥ २ ॥

भाषा—सोई मनरावणका मरण भया है तथा और जो प्रथम वर्णन हुवा है गिनतीसे हीन खोटे कर्मरूप राक्षस वोभी सब बुरे कर्मको छोड़के भगवान्‌में प्रीति करने लगे, सोई सब राक्षसोंका मरण भया है ॥ २ ॥

मरणं शुद्धरूपं च बभूव मुनिसत्तम ॥

मनसो रावणस्यैव दृष्ट्वा मरणमद्भुतम् ॥ ३ ॥

भाषा—तब बुरे कर्मरूप मलसे छूटके शुद्ध रूप होते भए, सोई राक्षसोंका मरण भया है मनरावणका मरण देखके ॥ ३ ॥

वेदशास्त्रपुराणोक्तास्सर्वे धर्मास्सनातनाः ॥

स्वस्वकर्मणि ते सौख्यं प्रापुः सुखमनेकधा ॥ ४ ॥

भाषा—वेदशास्त्र पुराणमें कथित जो सनातनधर्म है सो सब अपने २ कर्ममें अनेक प्रकारका सुख पाते भये ॥ ४ ॥

तदेव दुंदुभेः शब्दं पुष्पवर्षणमेव च ॥

सत्संगवृद्धिः संजाता सर्वयोनौ चराचरे ॥

सा स्तुती रामचंद्रस्य कृता देवैर्मुनिश्चिर ॥ ५ ॥

भाषा—सोई दुंदुभीका बाजना तथा फूलोंकी वर्षा होती भई चराचर योनिके जीवोंमें सत्संगकी वृद्धि होती भई, सोई सब देवता आदि रामजीकी स्तुति करते भए ॥ ५ ॥

प्रीतिश्चराचराणां वै सत्संगे निर्भयाभवत् ॥

सर्वेषामेव वैदेहपुत्रीरामसमागमः ॥ ६ ॥

भाषा—सब जीवोंकी प्रीति मलसे हीन सत्संगमें भयरहित होती भई सोई रामजीका तथा जानकीका लंकामें मिलाप होता हुआ ॥ ६ ॥

धैर्याविचलनं रामस्सर्वेषां वै मुहुर्मुहुः ॥

चराचराणां प्रददौ दुःखितानां च भूरिशः ॥ ७ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! अनेक जन्मसे मनरावण करके दुःखी जो चराचर जीव तिन सब जीवोंको रामजीने सुखी किया ॥ ७ ॥

जन्मजन्मान्तराद्विप्र मनरावणतापिनाम् ॥

सुखान्वितानां स्वेनैव कृतानां रघुनन्दनः ॥ ८ ॥

भाषा—धीरजमें स्थिर करके वारंवार वास देते भये कि हे जीव! धीरज हृदयमें धरके ईश्वरको भजन करो यह युग्म है ॥ ८ ॥

तदेव कपिवीराणामृक्षाणां च तथैव च ॥

सलक्ष्मणस्य जानक्याः पुष्पकारोहणं स्मृतम् ॥ ९ ॥

भाषा—सोई जीवोंको धीरजमें स्थिरता देना वानरोंका तथा ऋक्षोंका लक्ष्मण-सहित जानकीकों पुष्पक विमानमें बैठना भयाहै ॥ ९ ॥

मृतावशेषिनां चैव राक्षसानां मतिः शुभा ॥

सर्वेषां राक्षसीनां च तद्रणस्थलदर्शनम् ॥ १० ॥

भाषा—युद्धमें मरे नहीं जो राक्षस राक्षसी तिनकीभी सुंदर कर्ममें बुद्धि लगजाती भई सोई रामजीने पुष्पक विमानमें जानकीको ऊपरसे युद्धकी भूमि देखाते भये ॥ १० ॥

सत्संगवर्द्धनं दृष्ट्वा दुष्टसंगक्षयं तथा ॥

पुनस्स्वपुर्यागमनमेतद्रामस्य कथ्यते ॥ ११ ॥

भाषा—रामजीने राक्षसोंका नाश करे पीछे सत्संगकी वृद्धि देखे तथा दुष्टोंकी क्षय देखते भये ऐसा देखना रामजीका सोई लंकासे फिर सुमतिरूप अयोध्या पुरीको चलना भया ॥ ११ ॥

सर्वेषां विमलञ्चितं जीवानां सततं हृदि ॥

सत्कर्मवर्द्धनं प्रेम तद्रामगमनं पुनः ॥ १२ ॥

भाषा—नित्य सब जीवोंका चित्त हृदयमें मलहीन रहता है तथा सुंदर कर्ममें सब जीवोंके प्रेमकी वृद्धि भई ये कर्म रामजीका लंकासे भरद्वाज मुनिके आश्रमपर आना भया ॥ १२ ॥

स्थितिश्च रामचंद्रस्य भरद्वाजाश्रमेऽभवत् ॥

सत्कर्मशुचीनञ्च बभूव मुनिसत्तम् ॥ १३ ॥

भाषा—हे मुनिजी सुंदर कर्म जो है सो वैरीसे हीन होगये सोई भरद्वाजके आश्रमपर रामजीका टिकना भया है ॥ १३ ॥

तदेव वायुपुत्रस्य प्रेषणं भरतं प्रति ॥

राक्षसोद्वेगरहितान्दृष्ट्वाजनकनन्दिनीम् ॥ १४ ॥

भाषा—सो रामजीको भरद्वाजके आश्रम वास करनेको सुख सो भरतके पास रामजी हनुमान्को भेजते भये तथा रामजीने परमेश्वरकी भक्तिरूप जानकीको राक्षसोंके दुःखसे रहित देखिके ॥ १४ ॥

इति प्रीतिर्विवेकस्य द्वयोरुक्तिश्च साभवत् ॥

निर्मोहवायुसुतयोर्महदानंदमेव च ॥ १५ ॥

भाषा—रामजीकी प्रीति परमेश्वरमें बहुत होती है सोई हनुमान्की तथा भरतजीकी वार्ता होती भई निर्मोहरूप भरतके आश्रमको देखिके हनुमान्को बहुत आनंद भया, तथा हनुमान्से रामजीकी कुशल सुनिके भरतको बहुत आनंद भया ॥ १५ ॥

तत्पुष्पकप्रयाणं च नंदिग्रामे मुनीश्वर ॥

दुःकर्मणां विनाशश्च मोक्षस्य वर्द्धनं तथा ॥ १६ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! यही जो दोनोंका आनंद है सोई भरद्वाजके आश्रमसे रामका दलसहित पुष्पकविमान नंदिग्राममें आना भया दुष्टकर्मोंका नाश तथा सत्संगकी वृद्धि होना ॥ १६ ॥

एषो हर्षः प्रजानां वै पूर्वोक्तपुरवासिनाम् ॥

राक्षसानां विनाशाय चक्रे रामोऽतिबुद्धिमान् ॥

प्रतिज्ञा सा जटा बद्धा रामेण जाह्नवीतटे ॥ १७ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन हुए जो पुरवासी तिनको यही हर्ष भया है राक्षसोंका नाश करनेवास्ते रामजीने प्रथम प्रतिज्ञा किया है सोई प्रतिज्ञारूप जटा गंगाके तटपर रामजी भ्रातासहित बांधेरेहे हैं ॥ १७ ॥

शृंगवेरपुरे ब्रह्मन् लक्ष्मणेनापि तत्तथा ॥

ग्रंथं वृद्धिभयाच्चैवन्न तत्र लिखितं मया ॥ १८ ॥

भाषा—शृंगवेरपुरकी एक कथा जो बारंवार लिखिजावैगी तौ ग्रंथ बड़ा हो जावैगा इस भयसे मैंने जटा बांधनेकी कथा शृंगवेरपुर वर्णनमें नहीं लिखा विचारा कि युद्धकांडके अंतमें तौ जटा उतारनेकी कथा आवैगी. इसवास्ते नहीं लिखा ॥ १८ ॥

रामलक्ष्मणयोर्ब्रह्मजटाया बंधनं शुभम् ॥

रामस्य दुःखवृद्धिस्सा जटा चैव सहोदरैः ॥ १९ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! राम लक्ष्मणका जटाबंधन राक्षसोंका नाश करनेका सुंदर पण है तथा रामजकि दुःखकी वृद्धि सो भरतकी वा शत्रुघ्नकी तथा भाईका पक्ष मानके लक्ष्मणका भी जटाको बांधना है. ॥ १९ ॥

त्रिभिर्बद्धा च सेदानीं पूर्णा नष्टा वभूव च ॥

प्रातिज्ञा रामचंद्रस्य दुःखवृद्धिश्च पौर्विका ॥ २० ॥

भाषा—रावणके मरे पीछे रामजीकी प्रातिज्ञा पूर्ण होगई तथा दुःखकी वृद्धि भी नष्ट होगई ॥ २० ॥

तज्जटाकृन्तनं तत्र भ्रातृणामभवन्मुने ॥

मोक्षेच्छा सर्वजीवानां वर्तते हृदयेनिशम् ॥

तदेव रामचंद्राय दत्तं राज्यं मुनीश्वरैः ॥ २१ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! सोई रामलक्ष्मण भरत शत्रुघ्नकी जटाओंका उतारना भया, जटा उतारिके राजपुत्रोंका रूप धारण करते भये रातदिन सब जीवोंको मोक्ष होनेकी इच्छा होने लगी, सोई सुमतिरूप अयोध्याका राज्य मुनिलोग रामजीको देते भए ॥ २१ ॥

सत्कर्मचिन्तनसमाधिवनौषधैश्च रामस्य चक्रुरतिमोदयुता
मुनीशा ॥ राज्याभिषेकमवनेः करुणान्वितायाः संरक्षणे सुमति-
भूषशिरोमार्णि च ॥ २२ ॥

भाषा—सुंदर कर्मोंका चिंतवन तथा परमेश्वरका ध्यान आदि और सुंदरकर्म सोई बनकी दवा है तिस दवा करके मुनिजनोंने रामजीको राज्य देनेवास्ते दया-

रूप भूमिकी रक्षा करनेवास्ते सुमतिरूप अयोध्यापुरीका राजा करने वास्ते राम-
जीको औषधिसे स्नान करवायके राजगद्दी पर बैठायके राज देते भए ॥ २२ ॥

रामे भूते सुमतिनृपतौ सच्चिदानंदप्रीतिर्जीवेजीवे समभवदतिप्रेम-
संवृद्धिकर्त्री ॥ सर्वं स्वस्थं सुखमयमहो साधवस्ते बभूवुर्ज्ञाने
मग्नस्सुचरितसुधापूर्णचित्तास्सुचित्ताः ॥ २३ ॥

भाषा—सुमतिरूप अयोध्याके राजा रामजी हुए तब परमेश्वरकी प्रीति
जीवजीवमें होती भई तथा भगवान्‌के प्रेमकी वृद्धि करनेवाली प्रीति होते लगी
तीन लोक चौदह भुवन भगवान्‌में चित्त लगाते हुए, साधुजन ज्ञानमें मगन
होगये भगवान्‌का चरित्र सोई अमृत भया है तिसको पीके भगवान्‌के भजनमें
आनंद होरहे हैं ॥ २३ ॥

इति श्रीविद्वान्तरामायणे युद्धकांडे पं० शिवसहायबुधविरचिते संवत्‌वरतंतुसंवादे
विवेकरामराज्याभिषेके सप्तमो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ७ ॥

इति युद्धकाण्डम् ।

अथोत्तरकांडप्रारंभः ।

वरतन्तुरुवाच ।

स्वभावनिश्चलत्वं च सैवराज्यासनस्मृतः ॥

पुष्टिस्तस्य समाख्याता स्थितिर्राज्यासने मुने ॥ १ ॥

भाषा—वरतंतुमुनि बोले हे मुनिजी ! सुंदर कर्मोंमें रामजीके स्वभावकी वृत्ति
निश्चल है सोई राजाको बैठनेवास्ते समय है तिस निश्चल वृत्तिकी पुष्टाई जैसा
कभी निश्चलवृत्ति भ्रष्ट नहीं होवै सो तखतपर बैठना है ॥ १ ॥

राज्यासनस्थं श्रीरामं पूर्वोक्ता मुनयस्तथा ॥

आजग्मुर्दृष्टुकामास्तं पुरस्कृत्य महामुनिम् ॥ २ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भये जो मुनिजन सो सब राज्यासनपर बैठे जो रामजी
तिनका दर्शन करनेके वास्ते आते भये ॥ २ ॥

जीवस्वभावदीनं वै कुंभजं मुनिसत्तमाः ॥

ईश्वरे प्रेमनिर्विघ्नं पूजां चक्रे रघूत्तमः ॥ ३ ॥

भाषा—जीवका स्वभाव गरीब है सोई अगस्त्य मुनि हैं भगवान्‌में जीवोंका प्रेमरावणके मरे पीछे निर्विघ्नसे होता भया, सोई मुनियोंका पूजन करते भये ॥ ३ ॥

पूजिता मुनयः प्रोचुर्वचनं ब्रह्मकीर्तनम् ॥

ते प्रापिता वयं धर्मं निर्विघ्नं रघुनन्दन ॥ ४ ॥

भाषा—हे रामजी ! अब हम सर्व विघ्नसे हीन ऐसा भगवान्‌का भजनरूप धर्मको प्राप्त करते हुए ऐसी ब्रह्मकी कीर्तिरूप वचन रामजीसे पूजित जो मुनि हैं सो सब रामजीसे बोलते भये ॥ ४ ॥

मुनीनां वचनं श्रुत्वा कीर्तनं परमात्मनः ॥

प्रोवाच कुंभजं रामो जीवानां सद्विशिक्षणम् ॥ ५ ॥

भाषा—भगवान्‌ कीर्तनरूप वचन मुनियोंका रामजी मुनिके मनरावणके राज्यमें भट्टहुये जो जीव तिन जीवोंको भगवान्‌का भजन सिखावन सोई वचन रामजी अगस्त्य मुनिसे बोलते भये ॥ ५ ॥

विदेहजायाश्चोत्पत्तिं वालिसुग्रीवयोरपि ॥

वदत्वं श्रोतुमिच्छामि हृदये चिरकालतः ॥ ६ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! जानकीकी उत्पत्ति तथा बाली सुग्रीवकी उत्पत्ति सुन-बेकी इच्छा मेरेको बहुत दिनोंसे लगरही है सो आप कृपा करके कहो ॥ ६ ॥

रामचन्द्रवचः श्रुत्वा कुंभजो वाक्यमब्रवीत् ॥

सन्तोषवर्द्धनं जीवे निर्मोहं कुंभजेरितम् ॥ ७ ॥

भाषा—जीवोंके हृदयमें संतोषकी वृद्धि करना सोई रामका वचन है तिस वचनको सुनके जीवोंके हृदयमें संसारसे मोह छुडाना सोई वचन अगस्त्य मुनि रामजीसे बोलते भये ॥ ७ ॥

एकदा मनरूपश्च रावणो रघुनन्दन ॥

चक्रे विचारं दुष्टात्मा मुनयो दंडवर्जिताः ॥ ८ ॥

भाषा—अगस्त्यमुनि बोले हे रघुनन्दन ! एकदिन मनरूप रावणने विचार किया कि सब जीवोंको मैंने दंड दिया पर मुनिजन मेरे दंडसे बचे हैं ॥ ८ ॥

चिंतकाः परमेशस्य सद्धर्मा मुनयो मया ॥

त्रासितास्तपसा हीना भक्षिताश्च कृता मया ॥ ९ ॥

भाषा—रावणने विचार किया कि भगवान्का चिंतवन करनेवाले सुंदर धर्म-रूप मुनियोंको मैंने त्रास दिया तथा ईश्वरके भजनरूप तपस्यासे हीन कर दिया तथा ईश्वरके चिंतवन करनेसे बंद कर दिये सोई बंद करना मुनियोंका हमसे भक्षण करना भया ऐसी दुर्गति मुनिजनोंकी हमनें किया ॥ ९ ॥

न द्रव्य दंडितास्ते वै तानद्य दंडयाम्यहम् ॥

एवं विचार्य दैत्येशः किंचिद्ब्रह्मणि भावनम् ॥ १० ॥

भाषा—परंतु मुनि लोगोंसे कोई चीज नहीं दंड लिया सो अब कोई चीज मैंगवाँवेंगे जबरदस्तीसे किसी जन्मके पुण्यसे रावणके चित्तमें उस समय भगवान्में थोरा प्रेम भी उत्पन्न भया सोई प्रेम मुनिलोगोंसे कोई चीज मैंगानेको रावणका विचार भया है ॥ १० ॥

राक्षसान्प्रेरयामास मुनीनां दुःखहेतवे ॥

ते गत्वा ब्राह्मणानूचुः किंचित्प्रेमबलं प्रभौ ॥

तदेव प्रेषणं तेषां गमनं तद्विवर्द्धनम् ॥ ११ ॥

भाषा—मुनिजनोंको दुःख देनेवास्ते राक्षसोंको रावण भेजता भया राक्षस जायके मुनियोंसे बोलते भये भगवान्के चरणमें थोडा रावणका प्रेम भया उसी प्रेमके बलसे राक्षसोंको भोजना भया है प्रेमके बलकी वृद्धि जो है सोई राक्षसोंको मुनि लोगोंके पास जाना भया है ॥ ११ ॥

बलसौख्यमभूत्तत्र राक्षसानां वचस्तदा ॥

युष्माकं चोत्तमं द्रव्यं देयं राक्षससत्तमे ॥ १२ ॥

भाषा—प्रेमके बलका सुख सोई राक्षसोंका वचन हुआ है मुनियोंसे राक्षस बोले कि तुम्हारे सबके पास जो उत्तम चीज है सो चीज रावणने मंगाया है शीघ्र देओ ॥ १२ ॥

श्रुत्वा तेषां वचो विप्रा ज्ञानात्तं चैव रावणे ॥

तदेव वचनं प्रोक्तं तद्धर्षं श्रवणं तथा ॥ १३ ॥

भाषा—रावणको कुछ ज्ञानकी प्राप्ति भई सोई राक्षसोंका वचन है तथा रावणका थोरा ज्ञान प्राप्त होनेमें हर्ष मानना सोई राक्षसोंके वचनको मुनियोंसे सुनना भया ऐसे राक्षसोंके वाक्यको मुनि लोग सुनके ॥ १३ ॥

विचार्य मुनयस्ते तु किं दास्यामोऽद्य रावणे ॥

रावणाद्व्यसनं प्राप्तं तन्मुनीनां विचारणम् ॥ १४ ॥

भाषा—मुनिजन आपसमें विचार करते भये कि रावणको अभी क्या वस्तु दें हमारे लोगोंके पास तो कुछ वस्तु है नहीं मन रावण मुनिजनोंको दुःख देता भया. सोई मुनिजनोंका विचार भया है ॥ १४ ॥

स्वस्वदेहाद्भगवतो भजनात्प्रीतिजं रसम् ॥

सर्वेनिःकाश्यमुनयस्तदेव रुधिरं स्मृतम् ॥ १५ ॥

भाषा—ईश्वरका भजन सोई मुनिजनोंकी देह है ऐसा भजनरूप अपना अपना देह और भगवान्की प्रीतिसे उत्पन्न जो हर्ष सोही शरीरमें प्रेम होना. सो प्रेम-समूह रक्त भया है ऐसे रक्तको निकालके ॥ १५ ॥

सर्वेषां प्राणिनां विप्र शरीरं वर्द्धनाकरम् ॥

रुधिरं चैतदर्थं हि दृष्टान्तोऽत्र समीरितः ॥ १६ ॥

भाषा—सब प्राणियोंके शरीरकी वृद्धि करनेमें रक्त खानि है रक्त सूख गये पीछे शरीर नष्ट हो जाता है. इसवास्ते सुंदरकर्मोंका रक्तका दृष्टांत वर्णन किया गया है ॥ १६ ॥

भगवद्भक्तिरूपस्य शरीरस्य विवर्द्धनम् ॥

भवत्यनेन रक्तेन कुंभन्तं निश्चयं मुने ॥ १७ ॥

आच्छाद्याज्ञानवस्त्रेण दूतेभ्यः प्रदुर्घटम् ॥ १७ ॥

भाषा—भगवान्‌का भजनरूप जो साधुजनोंका देह है तिसकी वृद्धि इसी गद्गद आदि प्रेम रक्तसे होती है ऐसा निश्चय सो घड़ा भया है तिस घड़ेमें प्रथम वर्णन भया जो रक्त सो राक्षसोंका अज्ञान सो वस्त्र है तिस वस्त्र करके घड़ेको ढाँपिके रावणके दूतोंको मुनिजन देते भये ॥ १७ ॥

दूतैः पृष्टाः किमस्मिन् भो रक्तमस्माकमद्भुतम् ॥

किं भविष्यत्यनेनैव रावणस्य कुलक्षयः ॥ १८ ॥

भाषा—दूत पूँछते हुए कि हे मुनिजनों ! इस घड़ेमें क्या चीज है तब मुनि बोले हमारा सबका बड़ा आश्चर्य रक्त है दूत बोले इस रक्तसे क्या होवेगा. तब मुनि बोले रावणके कुलका नाश होगा. ॥ १८ ॥

महदज्ञानहर्षं च राक्षसां प्रश्नमुच्यते ॥

भगवद्भक्तिजं ज्ञानं मुनीनां वचनं च तत् ॥

रक्तांकुरायां द्रोहं च रावणस्य कुलान्तकम् ॥ १९ ॥

भाषा—राक्षसोंके हृदयमें बड़ा अज्ञान तथा उसी अज्ञानमें हर्ष सोई राक्षसोंका मुनिजनोंसे पूँछना भया है तथा मुनियोंने विचार किया कि इसी रक्तसे भगवान्‌की भक्ति उत्पन्न होवेगी. ऐसा विचार सो मुनिजनोंका राक्षसोंसे बोलना भया. तथा रक्तसे उत्पन्न भई जो परमेश्वरकी भक्ति तिसमें द्रोह करना सो रावणके कुलका नाश भया है ॥ १९ ॥

तद्गृहीत्वा गतास्ते तु प्रोचुः सर्वं च रावणे ॥

त्रासनिश्चयम्लानादि ग्रहणादि निगद्यते ॥ २० ॥

भाषा—दूतोंने घड़ेको लेके रावणके सामने जायके सब मुनियोंका चरित्र रावणसे कहते हुए मुनिजनोंके वाक्यको सुनके दूत डर गये सोई घड़ेको ग्रहण करना भया है दूत निश्चयसे जान लेते भये कि रावणका नाश होगा ऐसा जानना रावणके पास दूतोंका जाना भया है तथा दूत लोग अपना नाश जानके उदास होगए सोई रावणसे मुनिजनोंके चरित्रको दूत कहते हुए ॥ २० ॥

श्रुत्वा जनक जीवस्य राज्ये दीनस्वभावके ॥

दया बुद्धि क्षितौ कुंभं खानयित्वा च रावणः ॥ २१ ॥

भाषा—दूतोंके वचनको रावण सुनके जीवरूप जनकराजा तिस जीव राजाका गरीब स्वभाव सोई जीव जनकका राज्य है तिस राज्यमें दयारूप भूमिको खोदायके ॥ २१ ॥

दयायां स्थापयित्वा तं भूमावूर्द्धमृदा धिया ॥

जीवस्य पूरयित्वा च स्वनाशे निर्भयोऽभवत् ॥ २२ ॥

भाषा—तिस घडेको दयारूप भूमिमें धरायके ऊपरसे जीवकी बुद्धि सोई मृत्तिकासे पूर्ण करायके अपने कुलके नाशका भय छोडके लंकामें रावण आनंद करने लगा इस श्लोकका अर्थ यह है कि घडेको रावण जमीनमें गडाय लेता भया ॥ २२ ॥

जीवस्य जन्ममरणं सुख दुःखाद्यनेकधा ॥

एतद्रूपे व्यतीते च काले महति चागते ॥ २३ ॥

भाषा—जन्ममरण दुःख सुख आदि लेके अनेक कर्म जीवरूप जनकराजाके होते हैं सोई पल घडी प्रहर दिन राति पक्ष मास वर्ष युग प्रलय काल हुए हैं ऐसे काल बडे बडे आये तथा गये घडा गाडे पछि बहुत दिन बीतगये ॥ २३ ॥

पंचेन्द्रियकृतं कर्म तथा द्विगुणसंभवम् ॥

पंचसु पंच रागाद्याश्चैतद्वादशवार्षिकम् ॥ २४ ॥

भाषा—पांच ज्ञान इंद्रियों करके किये हुए जो पांच खोटे कर्म तथा रजोगुण तमोगुण करके किये हुए दो खोटे कर्म तथा पांच इंद्रियोंके पांच कर्ममें स्नेह आदि करना जैसा वाक्य मानयुक्त बोलना हाथसे खोटा कर्म करना इंद्रियोंसे बुरे कर्म करना पगसे बुरे रस्तेको जाना सुंदर जगहपर मल करदेना ये राग आदि पांच कर्म तथा पांच कर्म इंद्रियोंका जिसमें राग आदि कर्म करना तथा दोऊ कर्म गुणका येही बारह कर्म बारह वर्ष हुए हैं ॥ २४ ॥

एषु प्रीतिरनादृष्टिरभूज्जनकभूपतेः ॥

राज्ये पूर्वोक्तभावे तं दृष्ट्वाऽभूत्सोऽपि व्याकुलः ॥ २५ ॥

भाषा—इन खोटे कर्मोंमें जीवकी प्रीति सोई प्रथम वर्णन भया जो जीव रूप राजा जनकका राज तिसमें बारह वर्ष वर्षा नहीं होती भई ऐसी वर्षाहीन अपने राज्यको जीवरूप राजा जनक देखिके दुःखी होगया ॥ २५ ॥

पूर्वोक्तैर्ब्राह्मणैरुक्ताश्चिकीर्षुर्ब्रह्मयाजनम् ॥

तद्धर्षलांगलेनैव चकर्ष करुणां महीम् ॥ २६ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भये जो ब्राह्मण तिन्होंका सुन्दर कर्मरूप वचन मानिके खोटे कर्मोंमें जीवकी प्रीतिरूप अनावृष्टिनाश होने वास्ते भगवानके विनयरूप यज्ञ करने वास्ते उसी यज्ञमें हर्षरूप सुवर्ण है तिसको हल बनायके दयारूप भूमिका जीव जनक जोतते भये ॥ २६ ॥

जिवस्य यजने प्रेम लांगलं तन्निगद्यते ॥

फालं च तत्सुखं ज्ञेयं तदग्रादीनभावनात् ॥ २७ ॥

भाषा—यज्ञमें जीव जनकका प्रेम बहुत है सोई हल भया है उसी हलमें सुख मानना सोई फाल भया है जीवका सुभाव गरीब है सोई फालका अग्रभाग भया है तिस अग्रभागसे ॥ २७ ॥

पूर्वोक्तं निःसृतं कुंभं तस्माज्जाता च बालिका ॥

ब्रह्मभक्तिः समाख्याता पालिता जनकेन सा ॥

अतः सा जानकी प्रोक्ता तवेयं प्राणवल्लभा ॥ २८ ॥

भाषा—प्रथम वर्णन भया जो घडा सो निकसता भया, तिस घडेमेंसे एक लडकी उत्पन्न भई उसको ब्रह्मकी भक्ति सज्जन कहते हैं जीवरूप जनक राजाने उस लडकीकी पालना की, इस वास्ते ब्रह्मकी भक्तिका जानकी नाम हुआ. सो जानकी यह आपकी प्राणप्यारी है ॥ २८ ॥

एतां कथां रघुपतिर्मुनिवर्यगीतां संश्रुत्य हर्षमगमत्ससभस्समित्रः ॥

सत्संगरागजननं च तदेव हर्षं पप्रच्छ वालिशुभकण्ठजनेश्चरित्रम् २९

भाषा—मुनिसे वर्णन भई सुंदर कथाको विवेकरूप रामजी सभा मित्रसहित सुनिके सब जीवोंको सत्संगमें खेहें बहुत उत्पन्न होता भया, सोई हर्ष

भया तिस हर्षको प्राप्त होते भये तथा रामजी वालिसुग्रीवके जन्मका चरित्र पूछते भये ॥ २९ ॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे उत्तरकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे
जानकीसंभववर्णने प्रथमो मोक्षारख्यः सोपानः ॥ १ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

वालिसुग्रीवयोर्जन्म श्रोतुकामं रघूत्तमम् ॥

तयोः स्नेहं च श्रवणं मुनिर्वाक्यमथाब्रवीत् ॥

सत्कर्मणि विवेकस्य संगो मुनिवचस्मृतः ॥ १ ॥

भाषा—वरतन्तु मुनि बोले गुरुका वियोगरूप वालि तथा गुरुका उपदेशरूप सुग्रीव इन दोनोंके जन्मकी कथाके सुननेकी इच्छा है जो विवेकरूप रामजी तिससे मुनि बोलते भये वालिसुग्रीवमें रामजीका स्नेह है सोई रामजीका श्रवण करना भया, प्रथम वालिसे रामजीका द्रोह था सो महात्मा होगया वालि मरे पीछे तब रामजीका वालिसे स्नेह भया, सुंदर कर्ममें रामजीका प्रेम है सोई मुनिका वचन भया ॥ १ ॥

निर्दयायाश्च मायायाः स्वभावो रघुनंदन ॥

सैवक्षराट् समाख्यातो दुरानंदकृतश्शठः ॥ २ ॥

भाषा—मायाका दयासे हीनस्वभाव सोई प्रथम वर्णन हुए वानर ऋक्षोंका उत्पत्ति करनेवाला राजा है राजाका राजा नाम है तथा गुरुके दादाकाभी राजा नाम है ऐसा जो वानर ऋक्षोंका दादा तिसका खोटे काममें आनंद मानना ऐसा जो ब्रह्मा सो रचता भया ॥ २ ॥

बभ्राम स दयाभूमौ भ्रमणं जीवतापनम् ॥

जीवानां तापनोपाये चैकस्मिन् दिवसे च सः ॥ ३ ॥

भाषा—हे रामजी ! दयारूप भूमिमें ऋक्षराज भ्रमण करता भया जीवोंको ताप देना सोई भ्रमण भया जीवोंको संताप देनेका उपाय सोई दिन भया है उसी एक दिन ॥ ३ ॥

स्वेच्छाचाराशुभे कूपे जडभावजलावृते ॥

जीवसंतापनेच्छां च ददर्शाशु महाबली ॥ ४ ॥

भाषा—बड़ा बलवान् मायाका निर्दय स्वभाव है सो अपनी इच्छामें आवे सोई कर्म करिलेना वेद पुराण और सज्जनके वाक्यको नहीं मानना ऐसा जो अशुभकर्म सोई कुआ भया उसी ऋक्षका मूर्ख स्वभाव सो जल है तिस जल करिके कूप भया है ऐसे कूपमें अपनी छायाको ऋक्ष देखता भया ॥ ४ ॥

छायां स्वस्य प्रकुर्वन्तीमृक्षस्य सदृशीं क्रियाम् ॥

कुक्कर्मगारनेत्राभ्यां दृष्ट्वा क्रोधसमाकुलः ॥ ५ ॥

भाषा—कैसी छाया है ऋक्षके चित्तमें रातिदिन सब जीवोंको संताप देनेकी इच्छा बरी रहती है तथा जैसा कर्म कुएके ऊपरसे ऋक्ष करता है तैसे कर्म जलमें छाया करिरही है ऐसी छायाको खोटे कर्मोंका संग सोई ऋक्षकी आंखि है तिस आंखि करिके देखिके अज्ञानरूप क्रोधसे व्याकुल होगया. यह दो श्लोकका अर्थ मिला है इसवास्ते युग्म है ॥ ५ ॥

महामानाभिसंयुक्तो मादृशोऽयं च कश्शठः ॥

एवं पपात कूपेऽसौ मानान्धम्पतनं प्रभो ॥ ६ ॥

भाषा—हे प्रभो ! रामजी ऋक्षराजने बड़ा अभिमान करके विचार किया कि मेरे सरीखा बलवान् संसारमें दूसरा कोई नहीं है. यह मेरे सरीखा कौन है ऐसा विचारके उसी कुएमें ऋक्ष पडिगया, अभिमानसे अंधा होरहा है ऋक्षराज सोई उसका कुएमें पडना भया है ॥ ६ ॥

नापश्यत्तत्र तं चापि व्याकुलत्वमदर्शनम् ॥

पश्यन्स्त्रियं स्वमात्मानं मायाप्रीतिस्वरूपिणीम् ॥

कूपान्निर्गत्य स तूष्णं बभ्राम पूर्ववद्भुवि ॥ ७ ॥

भाषा—कुएमें उस अपने शत्रुको नहीं देखा, तब ऋक्षराज व्याकुल होगया, सोई नहीं देखना भया, तथा अपनी शरीरकी मायामें प्रीतिरूप सोई स्त्री भया है तिसकूं देखिके जलदी कुएसे निकसिके प्रथम सरीखे दयारूप भूमिमें होके भ्रमण करता भया ॥ ७ ॥

भ्रमणन्तस्य क्रूरत्वमविचारो सतां सदा ॥

जीवत्रासे सतां चैव कूपात्स तद्विनिर्गमः ॥ ८ ॥

भाषा—ऋक्षका स्वभाव क्रूर है सोई ऋक्षका भ्रमण करना भया, तथा

मायाका निर्दयस्वभावरूप जो ऋक्षराज है तिनको ऐसा विचार नहीं है कि यह जीव खोटा है इसको त्रास देवे तथा यह जीव साधु है इसको त्रास नहीं देना चाहिये ऐसा विचार नहीं है सोई कुण्से ऋक्षका निकसना भया है ॥ ८ ॥

नानाकुकर्माचरणास्ते तत्केशाश्च नीलिनः ॥

अविवेकशिरस्थाश्च जडभावजलार्द्रिणः ॥ ९ ॥

भाषा—खोटे कर्मोंके आचरणका रूप काला है ऋक्षराज अनेक प्रकारके खोटे कर्मोंके आचरणको करते थे पुरुष रहे तब सोई आचरण नील सरीखे काले केश ऋक्षके होते भये, स्त्रीरूपमें ऋक्षके हृदयमें विवेक नहीं है सोई अविवेक ऋक्षका शिर भया, उसी शिरमें केश टिके हैं. ऋक्षका जडस्वभाव जो जल है तिस जल करिके केश गीले हो रहे हैं ॥ ९ ॥

केशादरो मज्जनञ्च बालया च तया कृतः ॥

मज्जने पणबुद्धिश्च सा कार्या जानकीपते ॥ १० ॥

भाषा—ऋक्षराज स्त्री होगया सो स्त्री अपने केशोंको आदर बहुत करती है सो बालोंका धोना भया. आदररूप बालके धोनेमें प्रतिज्ञा सोई केशका धोवना करना है इस प्रकारसे केश धोयेके ॥ १० ॥

शोषयन्ती च तान्बाला केशान्सज्जनदुःखदान् ॥

सर्वेषां प्राणिनां दुःखं केशशोषणमुच्यते ॥ ११ ॥

भाषा—साधुजनोंको दुःख देनेवाले जो खोटे कर्म आचरण केश तिन्होंके धोये पीछे सो स्त्री सुखाय रही है सब जीवोंको मायाके निर्दयपनसे दुःख होना सोई केशका सुखाना भया है ॥ ११ ॥

कुधर्मस्सुरनाथश्च तान्दृष्ट्वा काममोहितः ॥

एकत्वं तस्य तस्याश्च कामिनीदर्शनं च तत् ॥ १२ ॥

भाषा—खोटा धर्म इंद्र प्रथम वर्णन भया है सो ऋक्षराज स्त्री होगया तिसको देखिके कामसे मोहित होगया इंद्रका तथा इस स्त्रीका एक लक्षण है जैसा किसी जीवको तप आदि सुंदरकर्म करते इंद्र देखेगा तो जानेगा कि मेरा राज्य लेनेवास्ते यह तप कर रहा है उसको अनेक यत्नसे भ्रष्ट करेगा इसी वास्ते इंद्रका खोटा धर्म कहाता है तैसेई उस स्त्रीका लक्षण है सोई इंद्रसे स्त्रीका देखना भया है ॥ १२ ॥

तस्या दुर्भावनं कामस्तेन ग्रस्तश्शचीपतिः ॥

यावदायाति रंतुं ताम्प्रीतिरागं च मैथुनम् ॥ १३ ॥

भाषा—तिस स्त्रीका दुष्टकर्ममें स्नेह है सोई कामदेव भया है तिस कामदेव करके इंद्र मोहित होके जबतक उस स्त्रीके संग रमण करनेको आने लगा स्त्रीमें इन्द्रकी प्रीतिका मोह बहुत है सोई मैथुन भया है ॥ १३ ॥

तावत्पपात तद्वीर्यं सुकार्येणाप्रवंचनम् ॥

तत्केशे पूर्वकथिते तस्माद्बालिः प्रजज्ञिवान् ॥ १४ ॥

भाषा—तबतक इन्द्रका वीर्य उस स्त्रीके प्रथम वर्णन भये केशोंमें पड़गया उस वीर्य तथा केशके संयोगसे वाली होता भया सुंदर कर्ममें इंद्रकी ईर्ष्या बनी रही है उसी ईर्ष्यामें कपट सोई इंद्रका वीर्य होता भयाहै ॥ १४ ॥

मायानिर्दयभावरूपवनिताकेशेषु जातो बली

दौःकर्म्याचरणेषु वीर्यपतनादिद्रस्य काधर्मिणः ॥

सत्कार्येर्ष्यप्रवंचनात्कपिपतिर्बालिर्वियोगो बली

जीवानां भवतारणस्य च गुरोर्यो वै त्वया घातितः ॥ १५ ॥

भाषा—मायाका दयासे हीन जो स्वभाव सोई स्त्री भई है तिसके खोटे कर्मके आचरणरूप केशमें खोटा कर्मरूप इन्द्रका वीर्य पड़नेसे वाली होता भया कैसा वीर्य है सुन्दर कर्ममें ईर्ष्या करके कपट रूप सोई वीर्य है कैसा वाली है जीवोंको संसारसे तारण करनेवाले जो गुरु तिसका वियोग है ॥ १५ ॥

सतां चैवासतां वापि सततं दुःखदाय च ॥

तस्या विचारो जीवानां स द्वितीयो दिनं स्मृतः ॥ १६ ॥

भाषा—मायाका निर्दयस्वभावरूप स्त्रीका नित्य रातिदिन ऐसा विचार रहता है कि सुंदर जीवोंको तथा दुष्टजीवोंको भी दुःख देना ऐसा विचार सोई दूसरा दिन भया है ॥ १६ ॥

तद्दिने पूर्ववत्केशमार्जनं साकरोत्सती ॥

आत्मप्रकाशः सविता दृष्ट्वा तां कामतापितः ॥ १७ ॥

भाषा—तिस दिनमें पहिले वर्णन हुई स्त्री पहिले सरीखे बालोंको धोयके

सुखाय रही है तिस स्त्रीको आत्मप्रकाशरूप सूर्य देखिके कामदेवसे जलने लगे ॥ १७ ॥

सज्ज्ञानशिक्षणं तस्यै दातुं सूर्यमनोरथः ॥

तत्तस्या दर्शनं प्रोक्तमुपकारश्च मन्मथः ॥ १८ ॥

भाषा—सूर्यका ऐसा विचार है कि इस स्त्रीको हम सुंदर ज्ञान सिखावे कि तू जीवोंके ऊपर निर्दयपन छोड़ि दे और दया कर ऐसे सूर्यका विचार सोई स्त्रीको सूर्यका देखना भया तथा जो सूर्यके वाक्यको वो स्त्री मानि लेवे और मानिके जीवमात्रपर दया करे तब सब जीव मोक्षको चले जावेंगे और बड़ा उपकार होवे सोई उपकार रूप काम भया तिस करके सूर्य जलि रहे वह चिंतवनरूप जलना है कार्य सिद्ध जबतक नहीं होता तबतक मनको ताप होता है काज भये पर आनंद होता है ॥ १८ ॥

एवं कामार्दितस्सूर्यो मैथुनं कर्तुमागतः ॥

तया सार्द्धं च तद्वर्षो मैथुनं गमनं सुखम् ॥ १९ ॥

भाषा—इस प्रकारसे जीवोंके उपकाररूप कामसे दुःखी होके आत्मप्रकाश-रूप सूर्य तिस स्त्रीके संग रममाण होनेके वास्ते आते भये. उपकारमें हर्ष मानना सोई रममाण होना है उस हर्षमें सुख मानना सोई स्त्रीके पास आत्मप्रकाशरूप सूर्यका आना भया है ॥ १९ ॥

यावत्कर्तुं समुद्युक्तो हर्षमैथुनमद्भुतम् ॥

तावत्पपात तद्वीर्यं भगवत्प्रेमनिर्मलम् ॥

श्रीवायां स्मृतिरूपायां संस्था भगवतस्तदा ॥ २० ॥

भाषा—सूर्य जबतक हर्षरूप क्रीडा तिस स्त्रीके संग करनेको तयार भये तबतक भगवानके प्रेमरूप मलसे हीन ऐसा जो सूर्यका वीर्य है सो उस स्त्रीके श्रीवामें पड गया, तब स्त्रीभी कभी कभी विचारती है कि मैं भगवानकी दासी हूं ऐसी सुरति सोई स्त्रीकी श्रीवा भई है. श्रीवा नाम गला ॥ २० ॥

ग्रहणं वीर्यपतनं तस्माज्जातो महाबली ॥

गुरूपदेशस्सुश्रीवस्सखायं ते रघूत्तम ॥ २१ ॥

भाषा—हे रघुनंदन ! सूर्यकी शिक्षाको सो स्त्री ग्रहण करती भई सोई ग्रहण

सूर्यके वर्यिका पडना भयाहै. उसी वर्यिसे गुरुका उपदेशरूप यह आपका मित्र तथा नरकबाधासरीखे अनेक शूरवीरोंको नाश करनेको बड़ा बलवान ऐसा सुग्रीव जन्मता भया ॥ २१ ॥

कपीशयोर्जन्मकथानकं त्विदं प्रोक्त्वा च रामाय गता मुनीश्वराः ॥

ध्याने सुखं तद्गमनं प्रकीर्तितं बभूव रामोऽपि सदावलीढः ॥ २२ ॥

भाषा—वाली सुग्रीवके जन्मकी कथा रामजीसे मुनिजन वर्णन करके भगवानके ध्यानके सुखमें मत्त हो गये सोई मुनिजनोंका रामजीके पाससे अपने अपने आश्रमको जानाभया, तथा रामजीभी गुरुके वियोगरूप वालीको तथा गुरुके उपदेशरूप सुग्रीवकी जन्मकथा सुनिके भगवानके रूपमें मत्त होगये सोई श्रवण करना भयाहै ॥ २२ ॥

इति श्रीवेदांतरामायणे उत्तरकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुमंवादे
वालिमुग्रीवजन्मकथने द्वितीयो मोक्षारख्यः सोपानः ॥ २ ॥

वरतन्तुरुवाच ।

कुधर्माश्च कुकर्माणि विधिना निर्मितानि च ॥

नाशमाप्तानि सर्वाणि सुमते राघवे नृपे ॥ १ ॥

भाषा—सुमतिरूप अयोध्याका राजा विवेकरूप रामजी भये तब ब्रह्मा करके रचे जितने खोटे कर्म तथा खोटे धर्म सो सब नाशको प्राप्त भये ॥ १ ॥

सर्वे जीवाः प्रकुर्वन्ति सत्संगादीननेकशः ॥

प्राप्तास्ते सच्चिदानंदतेजोरूपमयं वपुः ॥ २ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजीके राज्यमें सब जीव सत्संग आदि गिनतीहीन सुंदर कर्म करते भये उसी कर्मके प्रभावसे तेजरूप जो ब्रह्मका शरीर तिसको प्राप्त होते भये ॥ २ ॥

न शरीरं भगवतस्तेजश्चापि न ज्ञायते ॥

अनेकजन्मनोऽभ्यासादुर्गमन्तत्तथापि च ॥ ३ ॥

भाषा—न भगवानके शरीर है तथा तेजभी जीवों करके नहीं मालूम होता है, बड़ा अद्भुत तेज है, अनेक जन्मतक ईश्वरके तेजकों मालूम करनेवाले सत्संग आदि लेके अनेक सुंदर कर्म करे तौभी बड़े कठिनासे ईश्वरका तेज मालूम पड़ेगा ३ ॥

मुमुक्षुवो बभूवुस्ते सर्वे जीवाश्चराचरे ॥

तद्विघ्नकारका नष्टाश्चैतद्राज्यं रघूत्तमः ॥

चक्रे प्रेम सदा तेषामीश्वरे तत्प्रजासुखम् ॥ ४ ॥

भाषा—तीन लोक चौदह भुवनमें सब जीवोंकी सुक्ति होनेकी इच्छा होती भई तथा मोक्षके विघ्न करनेवाले दुष्ट जीव नष्ट होगये, यही राज्य विवेकरूप रामजी करते भये, सब जीवोंका प्रेम ईश्वरमें बहुत होताभया सो प्रजाका सुख भया है ॥ ४ ॥

कामादिशत्रवो नष्टास्ते षण्मासा मुनीश्वर ॥

जीवानान्निर्भयन्तेभ्यस्तन्तेषां गमनं स्मृतम् ॥ ५ ॥

भाषा—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ये छः जीवोंके वैरी हैं सो रामजीके राजमें ये छहों नष्ट होगये, सोई छः मास भये, तथा इन छः वैरियोंसे जीव निर्भय होगया सोई छः मासका बीतना भया है, विवेकरूप रामजीको राज्य करते इस प्रकार छः महीने बीत गये ॥ ५ ॥

पूर्वोक्ताः कपयश्चापि भगवत्प्रेमनिर्भराः ॥

बभूवुः कृतवान् रामस्तन्तेषां च विसर्जनम् ॥ ६ ॥

भाषा—पहिले वर्णन भये जो कपि ऋक्ष हैं सोभी भगवानके प्रेममें मत्त हो रहे हैं सोई रामजी कपि और सब ऋक्ष उनको विदा करते भये ॥ ६ ॥

अनेके तारिता जीवा रामेण भुवनत्रये ॥

त एव यज्ञा रामेण कृताश्च सुमतौ मुने ॥ ७ ॥

भाषा—हे मुनिजी ! तीन लोक चौदह भुवनमें विवेकरूप रामजी गिनतीहीन जीवोंको संसारसे उद्धार करिके मोक्ष करते भये सोई सुमतिरूप अयोध्यामें अनेक यज्ञ करते भये ॥ ७ ॥

जीवे जीवे ददौ भक्तिं चेश्वरस्य रघूत्तमः ॥

स्वयं चापि विरक्तोऽभूदेष सत्त्याग उच्यते ॥ ८ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजीने जीवोंका उद्धार होने वास्ते दया करिके सब जीवोंको परमेश्वरकी भक्तिका दान करते भये दान करना यह है कि सब जीवोंमें भक्तिको टिकाते भये तथा आप भगवानके चरणोंमें रमित भये सोई जानकीका त्याग रामजी करते भये ॥ ८ ॥

द्वौ पुत्रौ रामचन्द्रस्य जानक्यां च बभूवतुः ॥
ज्ञानवैराग्यनामानौ जीवोत्तारणकारकौ ॥ ९ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजीके ईश्वरकी भक्तिरूप जानकीमें दो पुत्र होते भये, कैसे पुत्र हैं एक ज्ञान, दूसरा वैराग्य, कैसे हैं जीवोंको संसारसे उद्धार करनेवाले हैं ॥ ९ ॥

स्वपदं गन्तुकामस्य भगवद्रूपदर्शनम् ॥
विवेकराघवस्यैव चिंतनो मुनिसत्तमः ॥
दुर्वासागमनं तस्य रामोत्साहश्च तत्पदे ॥ १० ॥

भाषा—परमेश्वरका दर्शनरूप जो विवेकका स्थान है तिसको प्राप्त होनेको रामजी चिंतन करते हैं कि मनरूप रावण आदि राक्षस नष्ट होगये अब अपने स्थान हम जावें ऐसा रामजीका विचार सोई दुर्वासा मुनि भया है ॥ १० ॥

आज्ञातो मुनिना तेन तद्रूपस्यावलोकने ॥
गंतुं तल्लक्ष्मणस्यैव मुनिवाक्यम्परस्परम् ॥ ११ ॥

भाषा—रामजीके चिंतनरूप दुर्वासामुनिने रामजीको भगवानके दर्शनरूप जो स्थान तिसपर जानेकी आज्ञा दी कि रामजी ! राक्षसोंका नाश होगया अब तুম भगवानका दर्शनरूप जो तुम्हारा स्थान तिसको जावो ऐसा मुनिका वाक्य सोई लक्ष्मणका तथा दुर्वासामुनिका संवाद भया है ॥ ११ ॥

स्वस्वकर्मणि हर्षेण बभूवुर्लक्ष्मणादयः ॥
भ्रातरो रामचंद्रस्य वियोगस्सोऽयमुच्यते ॥
सर्वेषां लक्ष्मणादीनां भ्रातॄणां राघवस्य च ॥ १२ ॥

भाषा—विवेकरूप रामके तीनों भाई लक्ष्मण संतोष संतोषकी वृद्धि देखिके हर्ष मानते भये निर्मोहरूप भरत निर्मोहकी वृद्धि देखिके हर्षित भये सहनरूप शत्रुघ्न सब जीवोंमें क्षमाकी वृद्धि देखिके खुशी भये रामजीके भाइयोंका ऐसा हर्ष सो रामजीसे तीनों भाइयोंका वियोग होताभया ॥ १२ ॥

जानक्या प्रार्थिता भूमिर्दया रामे च निश्चला ॥
स्थितिर्ददौ च जानक्या विवरस्सैव कथ्यते ॥ १३ ॥

भाषा—दयारूप पृथ्वीकी प्रार्थना जानकीने की तब पृथ्वी रामजीमें अचलवास जानकीको देतीभिई सोई रस्ता भया है ॥ १३ ॥

दयायां सर्वदा प्रीतिर्जानक्यास्सा च प्रार्थना ॥

दयादत्तेन मार्गेण वासश्चक्रे च जानकी ॥

विवेके निश्चलत्वं च तस्यास्तद्रमनं स्मृतम् ॥ १४ ॥

भाषा—सदा दयारूप पृथ्वीमें जानकीकी प्रीति है सोई पृथ्वीकी प्रार्थना जानकीने की दयापृथ्वी करिके दीन जो रस्ता सो अचलवास रामजीमें जानकीका हे उसी रस्ता करिके विवेकमें जानकीने अचल वास किया सोई रामजीके पाससे जानकीका जानाभया ॥ १४ ॥

सर्वेषां लक्ष्मणादीनाम्प्रातृणां रघुनन्दनः ॥

वियोगं हर्षरूपं च जानक्याश्च तथैव च ॥

दृष्ट्वा प्रवर्द्धनं तेषां तद्वर्षो दर्शनं स्मृतम् ॥ १५ ॥

भाषा—रामजीने सब लक्ष्मण आदि लेके अपने भाइयोंका हर्षरूप वियोग देखिके तथा जानकीको देखिके अपने सत्संगवाले सब जीवोंको सबके कर्ममें हर्षकी वृद्धि भई सोई रामजीका भाइयोंका वियोग देखना भयाहै ॥ १५ ॥

स्वपदं भगवद्रूपदर्शनं स्वात्मसंस्थितम् ॥

तत्प्रेम प्रापणं तस्य कथ्यते तं समुत्सुकः ॥ १६ ॥

भाषा—रामजी अपने हृदयमें विराजमान जो भगवानका दर्शनरूप स्थान तिसको जानेके वास्ते आनंद मानते भये सोई रामजीका परंपदको जाना भया ॥ १६ ॥

कौसल्याद्याश्च सम्मग्रा भगवच्चिंतने सदा ॥

तत्तासां गमनम्प्रोक्तं वैकुण्ठे भगवत्प्रिये ॥ १७ ॥

भाषा—कौसल्या आदि लेके रामजीकी सब माता जो हैं सो सब भगवानके चिंतवनमें राति दिन मन होरही हैं सोही तिन्होंकाभी भगवानको प्यारा जो वैकुण्ठ तिसमें जाना भया है ॥ १७ ॥

कुमतेर्निर्भयां चक्रे सुमतिं स्वाम्पुरीम्प्रभुः ॥

तदेव रामचंद्रस्य पुरीत्यागोऽभिधीयते ॥ १८ ॥

भाषा—खोटी मतिकी त्राससे सुमतिरूप अयोध्याकूं रामजी निर्भय करते भये सोई रामजीका अयोध्याका त्यागना भया ॥ १८ ॥

सर्वान्मोक्षस्य साहित्यान्विवेको रघुनन्दनः ॥

चकार स्ववशे नित्यं प्रजानां ग्रहणं त्विदम् ॥ १९ ॥

भाषा—मोक्षकी संपूर्ण सामग्री ज्ञान ध्यान आदि लेके गिनतीसे हीन तिसको नित्य रामजी अपने वश करते भये सो प्रजाका संग लेना भया ॥ १९ ॥

तास्समादाय राजेंद्रो जगाम सरयूतटम् ॥

तत्प्रेम गमनं प्रोक्तं तज्जले निमज्ज ह ॥ २० ॥

भाषा—पहिले वर्णन भई प्रजाको रामजी संग लेके भगवानमें निश्चल प्रेम-रूप सरयूके तटपर जाते भये सुवासनारूप सरयूमें रामजीका प्रेम सोई रामका सरयूतटपर जाना भया अभिमानसे हीन कर्मरूप सरयूका जल तिसमें प्रजासहित रामजी गोता लगाते भये ॥ २० ॥

निर्मानभगवद्ध्यानं राममज्जनमुच्यते ॥

मज्जित्वा सर्वजीवेषु चिदंशेषु तदा प्रभुः ॥

वासं चक्रे तदेवं वै गमनं सत्पदेऽभवत् ॥ २१ ॥

भाषा—विवेकरूप रामजी अभिमानसे हीन होके ईश्वरका ध्यान करते भये सोई रामजीका सरयूके जलमें स्नान करना भया ऐसा ध्यानरूप स्नान करके ईश्वरका अंश जो जीव अनेक प्रकार करिके अनेक शरीरमें दुःख पाय रहा तिस सब जीवोंको मोक्षरूप देनेवास्ते सब जीवोंमें विवेकरूप रामजी टिकते भये सोई प्रजासहित रामजीका परमपदको जाना भयाहै ॥ २१ ॥

एवं रघूत्तमदशाननयोश्चरित्रं वेदांतसारगदितं च विश्रुत्य जीवः ॥

सम्यग्विचार्य गुरुणा च विशिष्य नित्यं मोक्षं प्रयाति रघुनंदना-

भावबद्धः ॥ २२ ॥

भाषा—इस प्रकारका विवेकरूप रामजीका तथा मनरूप रावणका चरित्र वेदांतका सार जो ज्ञान है तिसको आदि लेके अनेक प्रकारके जो सुंदर धर्मरूप जो

शास्त्र हैं तिन्हों कारके कथित हुआहै ऐसे चरित्रको जीव सुनके तथा मनमें विचार करके तथा गुरुके मुखसे ऐसे बहुत प्रकारसे सिखिके विवेकरूप जो रामजी हैं तिसका भाव जो सत्संग तिसमें बंधनरूप प्रेम लगाके जीव मोक्षको प्राप्त होवेगा॥२२॥

इति श्रीवेदान्तरामायणे उत्तरकांडे संवर्तवरतन्तुसंवादे पं० शिवसहायबुध-
विरचिते रामचन्द्रस्वपदप्राप्तिवर्णने तृतीयो मोक्षाख्यः सोपानः ॥ ३ ॥
समाप्तश्चायमुत्तरकाण्डः ।

श्रीमद्वेदान्तरामायणं समाप्तिमगमदिदम् ।

बाणा १ बिध ४ रंघ्र ९ शशि १ वत्सरवैक्रमीये चापाढशुक्ल-
विवासरशम्भुतिथ्याम् ॥ श्रीमन्महेशकृपया दयया च तस्य
ग्रन्थस्समाप्तिमयमेवमगात्सुपूर्णः ॥ १ ॥ श्रीमच्छंकरार्पणमस्तु ॥

प्रश्न—पप्रच्छुस्सज्जना मां वै जीवश्चैकश्चिदंशवान् ॥

स चराचरवर्ती च त्वयोक्तो भूरिशः कथम् ॥ १ ॥

अर्थ—सज्जनलोग हमसे पूछे कि भगवान् का अंश जीव एक है तुमने इस
ग्रन्थमें बहुत जीव वर्णन किये हैं इसका कारण क्या है ॥ १ ॥

उत्तर—जलद्रव्यन्यायार्ज्वावाश्चानेकशः ॥

अर्थ—जैसा पानीका एक रंग है पर जिस चीजमें मिलावेगे उसी चीजसरीरा
पानीका स्वरूप होजावेगा दूधमें दूध छछमें छछ काजरमें काला पीलेमें पीला
शक्करमें मीठा कटु चीजमें कटु इस प्रकार गिनतीसे हीन चीजोंमें मिलके वैसाही
होजाता है तैसेही जीव एक है पर जिस योनिमें जन्मेगा उसी प्रकारका होजावेगा
यह दृष्टांत महासांख्य आदि शास्त्रोंका है कपोलकल्पित नहीं है ॥

२०११०१९६०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
‘लक्ष्मीवैङ्केश्वर’ स्टीम् प्रेस—कल्याण—मुम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
‘श्रीवैङ्केश्वर’ स्टीम् प्रेस—मुम्बई.

